B.Ed.SE.-72

श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या अभिकल्प, अनुकूलन एंव मूल्यांकन

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय, प्रयागराज

श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या अभिकल्प, अनुकूलन एंव मूल्यांकन

खण्ड़–1 पाठ्यक्रम और इसकी संरचना		
इकाई–1	पाठ्यक्रम डिजाइनिंग की अवधारणा और चरण	5–16
इकाई–2	पाठ्यक्रम संरचना के उपागम और चरण	17–22
इकाई–3	शैक्षिक और गैर क्षेत्र में पाठ्यचर्या सम्बंधी आवश्यकताएँ	23–30
खण्ड़–2 साक्षरता कौशल विकसित करना–वाचन कौशल		
इकाई–4	वाचन क्षमता और इसका मूल्यांकन	31–36
इकाई–5	वाचन कौशल के विकास के उपागम तथा रणनीतियां तथा स्वतंत्र वाचन	37–46
इकाई–6	पढ़ने के कौशल और उपचारात्मक रणनीतियों को विकसित करने के प्रकार, मॉडल और चुनौतियाँ	47–56
खण्ड़–3 साक्षरता कौशल विकसित करनाःलिखना		
इकाई–7	लेखन कौशल	57–68
इकाई–8	लेखन के घटक और प्रकार	69–84
इकाई–9	लेखन को विकसित करने के चरण, चुनौतियाँ और रणनीतियाँ	85–98
खण्ड़–4 पाठ्यचर्या अनुकूलन		
इकाई–10	पाठ्यचर्या अनुकूलन– अर्थ, सिद्धांत, प्रकार और अनुकूलन की प्रक्रिया	99–108
इकाई–11	अनुकूलन के लिए मूल्यांकन और निर्णय लेना	109–119
इकाई–12	पाठ्यचर्या को अनुकूलित करना– सामग्री, शिक्षण, सीखने की सामग्री और निर्देश	120–132
खण्ड़–5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन		
इकाई–13	पाठ्यचर्या मूल्यांकनः अवधारणा और आवश्यकता	133–140
इकाई–14	पाठ्यचर्या मूल्यांकन के तरीके, उपकरण और क्षेत्र	141–151
इकाई–15	पाठ्यचर्या मूल्यांकन में चुनौतियाँ	152–160

उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

B.Ed.SE.72 श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या अभिकल्प, अनुकूलन एवं मूल्यांकन

संरक्षक एवं मार्गदर्शक

प्रो0 सत्यकाम — **कुलपति,** उ0प्र0 राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय, प्रयागराज

विशेशज्ञ समिति

प्रो0 पी0के0 स्टालिन — निदेशक, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो0 पी0के0 पाण्डेय — आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो0 छत्रसाल सिंह — आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो0के0 एस0 मिश्रा — पूर्व कुलपति एवं पूर्व विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो0 धनन्जय यादव — आचार्य, विभागाध्यक्ष, शिक्षाशास्त्र विभाग, इलाहाबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रो0 मीनाक्षी सिंह — आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

डॉ0 जी0 के0 द्विवेदी — सह–आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

डॉ0 दिनेश सिंह — सह–आचार्य, शिक्षाशास्त्र विभाग, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

लेखक

डॉ0 संजय कुमार सिंह — सहा0 आचार्य (विशेष शिक्षा) शिक्षा विद्याषाखा उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (इकाई 1,2,3,4,5,6,)

डॉ0 मृत्युंजय मिश्रा — सह–आचार्य, विशिष्ट शिक्षा, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ,उ.प्र. (इकाई 7,8,9,10,11,12,13,14,15)

सम्पादक

डॉ0 कौशल शर्मा — सह–आचार्य, विशिष्ट शिक्षा, डॉ0 शकुन्तला मिश्रा राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय, लखनऊ,उ.प्र.

डॉ0 शकुन्तला मिश्रा — (इकाई 1,2,3,4,5,6,7,8,9, 10,11,12,13,14,15)

परिमापक

प्रो0 छत्रसाल सिंह — आचार्य, शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज (इकाई 1,2,3,4,5,6,7,8,9,10,11,12,13,14,15)

समन्वयक

डॉ. नीता मिश्रा — सहा0 आचार्य, (विशेष शिक्षा), शिक्षा विद्याशाखा, उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रकाशक

© उ0प्र0 राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय, प्रयागराज

ISBN-978-93-48270-17-7

उ0प्र0 राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय, प्रयागराज सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पाठयसामग्री का कोई भी अंश उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति लिए बिना मिमियोग्राफ अथवा किसी अन्य साधन से पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

नोट : पाठय सामग्री में मुद्रित सामग्री के विचारों एवं आमड़ों आदि के प्रति विश्वविद्यालय उत्तरदायी नहीं है।

प्रकाशन–उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन विश्वविद्यालय, प्रयागराज

प्रकाशक–कुलसचिव, विनय कुमार उ0प्र0 राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय, प्रयागराज–2024

मुद्रक : चंद्रकला यूनिवर्सल प्राइवेट लिमिटेड, 42/7 जवाहरलाल नेहरू रोड, प्रयागराज–211002

खण्ड परिचय

श्रवण बाधित बच्चों के लिए पाठ्यचर्या, अभिकल्प, अनुकूलन एंव मूल्यांकन

खण्ड़–1:7 पाठ्यक्रम और इसकी संरचना

इस खण्ड में आप पाठ्यक्रम और इसकी संरचना से अवगत हो सकेंगे। इस खण्ड में कुल तीन इकाई या है।

इकाई–01 : में आप पाठ्यक्रम की अवधारणा पाठ्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व, पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या में अन्तर, उद्देश्यों से अवगत हों सकेगें।

इकाई–02 : में आप पाठ्यक्रम संरचना के उपागम, पाठ्यचर्या विकास के चरण,शैक्षिक आवश्यकताओं को समझ सकेगें।

इकाई–03 : में आप पाठ्यचर्या सम्बन्धि शैक्षिक क्षेत्र और गैर शैक्षिक क्षेत्र, मूल्यांकन के शैक्षिक और गैर शैक्षिक क्षेत्र, स्कूल–आधारित शैक्षिक और गैर शैक्षिक गतिविधियों को समझ सकेगें।

खण्ड़–2 : साक्षरता कौशल विकसित करना–वाचन कौशल

इस खण्ड में आप श्रवण बाधित बच्चों के वाचन कौशल सें अवगत हो सकेंगे। इस खण्ड में कुल तीन इकाईयां है।

इकाई–04 : में आप श्रवण बाधित बच्चों के वाचन क्षमता और इसके मूल्यांकन को समझ सकेंगे ।

इकाई–05 : में आप वाचन कौशल के विकास के उपागम तथा रणनीतियां तथा स्वतंत्र वाचन से अवगत हो सकेंगे।

इकाई–06 : में आप पढ़ने के कौशल और उपचारात्मक रणनीतियों को विकसित करने के प्रकार, मॉडल और चुनौतियाँ को समझ सकेंगे ।

खण्ड़–3 :– साक्षरता कौशल विकसित करनाःलिखना

इस खण्ड में आप श्रवण बाधित बच्चों के साक्षरता कौशल विकसित करनाःलिखना कौशल में प्रशिक्षण से अवगत हो सकेंगे। इस खण्ड में कुल तीन इकाईयां है।

इकाई–07 : में आप श्रवण बाधित बच्चों के लेखन कौशल से अवगत हो सकेंगे।

इकाई–08 : में आप श्रवण बाधित बच्चों के लेखन के घटक और प्रकार को समझ सकेंगे।

इकाई–09 : में आप श्रवण बाधित बच्चों के लेखन को विकसित करने के चरण, चुनौतियाँ और रणनीतियाँसे अवगत हो सकेंगे।

खण्ड़–4 : पाठ्यचर्या अनुकूलन

इकाई–10 : में आप श्रवण बाधित बच्चों के पाठ्यचर्या अनुकूलन– अर्थ, सिद्धांत, प्रकार और अनुकूलन की प्रक्रिया से अवगत हो सकेंगे।

इकाई–11 : में आप श्रवण बाधित बच्चों के अनुकूलन के लिए मूल्यांकन और निर्णय लेना को समझ सकेंगे।

इकाई–12 : में आप श्रवण बाधित बच्चों के पाठ्यचर्या को अनुकूलित करना– सामग्री, शिक्षण, सीखने की सामग्री और निर्देशँ से अवगत हो सकेंगे।

खण्ड़–5 : पाठ्यचर्या मूल्यांकन

इकाई–13 : में आप श्रवण बाधित बच्चों के पाठ्यचर्या मूल्यांकनः अवधारणा और आवश्यकता से अवगत हो सकेंगे।

इकाई–14 : में आप श्रवण बाधित बच्चों पाठ्यचर्या मूल्यांकन के तरीके, उपकरण और क्षेत्र को समझ सकेंगे।

इकाई–15 : में आप श्रवण बाधित बच्चों के पाठ्यचर्या मूल्यांकन में चुनौतियाँसे अवगत हो सकेंगे।

B.Ed.-SE.-72/4

इकाई–01 पाठ्यक्रम–पाठ्यक्रम डिजाइनिंग की अवधारणा और चरण

इकाई संरचना

1.1 प्रस्तावना

1.2 उद्देश्य

1.3 पाठ्यक्रम का अर्थ

1.4 पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ

1.5 पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या में अन्तर

1.6 पाठ्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व

1.6.1 उद्दश्यों की प्राप्ति

1.6.2 शिक्षार्थियों की सीखने के लक्ष्यों, प्रक्रियाओं और विषयों को निर्धारित करने में

1.6.3 शिक्षकों के लिए सामग्री चयन, शिक्षण योजना निर्माण और कार्यान्वय

1.6.5 कार्यक्रमों के निर्माण एवं क्रियान्वयन का आधार

1.6.6 नवीन प्रवृत्तियों का साहचर्य

1.6.7 शिक्षार्थियों के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का संवर्धन

1.6.8 शैक्षणिक एवं स्थानीय स्त्रोतों का प्रयोग

1.7 पाठ्यक्रम के प्रकार

1.7.2 विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम

1.7.3 क्रिया आधारित पाठ्यक्रम

1.7.4 एकीकृत पाठ्यक्रम

1.7.5 मूल पाठ्यक्रम

1.7.6 प्रच्छन्न/छिपा पाठ्यक्रम

1.7.7 जमा पाठ्यक्रम

1.8 सारांश

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

1.10 अभ्यास कार्य

1.11 चर्चा के बिंदु/स्पष्टीकरण

1.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

1.1 प्रस्तावना

शिक्षा एक ऐसी प्रक्रिया है जो जीवन पर्यन्त चलती रहती है जिसके द्वारा शिक्षार्थी के व्यवहार में लगातार परिवर्तन व परिमार्जन होता हैं।पाठ्यक्रम किसी भी शैक्षिक प्रक्रिया की हृदय व आत्मा हैं या हम कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम शिक्षा का आधार है जिसकी राह पर चलकर शिक्षा के सभी उद्देश्यों की पूर्ति की जाती हैं। समाज की आवशकता की देखते हुए ही किसी भी पाठ्यक्रम का निर्माण किया जाना आवश्यक हैं। विद्यालय में आयोजित होने वाले समस्त क्रियाकलापों को पाठ्यक्रम के रूप में ही देखा जाना चाहिए।

पाठ्यक्रम को सिर्फ विषयों के आधार पर ही देखा व समझा जाता हैं परतुं इसका क्षेत्र इससे अधिक व्यापक हैं। पाठ्यक्रम के अन्तर्गत वे सभी कियाएं आती हैं जो कक्षा, कक्षा के बाहर या उससे भी परे होती हैं। यह कहना गलत नही होगा कि विद्यालय/विश्वविद्यालय के समस्त कार्य ही एक प्रकार का पाठ्यक्रम हैं।

आपने देखा होगा कि सभी राष्ट्र अपने राष्ट्रीय, अंतराष्ट्रीय, स्थानीय, सांस्कृतिक, धार्मिक इत्यादि जरूरतों के अनुसार शिक्षा नीतियों का निर्माण करता हैं। जैसा कि भारत ने भी हाल ही में राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 का निर्माण किया हैं। इन नीतियों के अनेक उद्देश्य होते हैं। पाठ्यक्रम इन उद्देश्यों के प्राप्ति का बहुउपयोगी साधन बनता हैं। अतः हम कह सकते है कि एक अच्छे पाठ्यक्रम से हम किसी भी शिक्षार्थी के अन्दर संवैधानिक मूल्यों के साथ–साथ राष्ट्र–भाव भी जागृत कर सकते हैं एवं राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय जरूरतों के अनुसार शिक्षार्थी को तैयार कर सकते हैं।

1.2 उद्देश्य इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो जायेंगे कि

- पाठ्यक्रम का अर्थ समझ सकेंगे।
- पाठ्यक्रम को परिभाषित कर सकेंगे।
- पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या में अन्तर कर सकेंगे।
- पाठ्यक्रम की आवश्कता एवं महत्व को समझ सकेंगे।
- पाठ्यक्रम के प्रकारों को समझ सकेंगे।

1.3 पाठ्यक्रम का अर्थ

करिकुलम (Curriculum) शब्द की उत्पत्ति एक लैटिन शब्द, 'Curricere/Currere' से हुई हैं, जिसका अर्थ है दौड़ का मैदान (A Racecourse)। अर्थात पाठ्यक्रम वह उपागम है जिसे व्यक्ति को अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचने के लिए पार करना होता हैं। जब हमें किसी गन्तव्य तक जाना होता हैं तो उसके लिए हमें बहुत से रास्तों से गुजरना पड़ता है,यदि हम इन रास्तों का उपयोग ना करे तो हम अपनी मंजिल तक नहीं पहुँच सकते। शिक्षा के क्षेत्र में इन्हीं रास्तों को पाठ्यक्रम कहते हैं, जो कि शिक्षा के उद्देश्यों (मंजिल) को प्राप्त करने में सहायक होती हैं।

1.4 पाठ्यक्रम की परिभाषाएँ

शिक्षा शास्त्रियों ने पाठ्यक्रम को अनेकों प्रकार से परिभाषित किया हैं। जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण परिभाषाएँ इस प्रकार हैं–

कनिंघम के अनुसार, "पाठ्यक्रम कलाकार (शिक्षक) के हाथ में एक साधन है जिससे वह अपनी सामग्री (शिक्षार्थी) को अपने आदर्श (उद्देश्य) के अनुसार अपने स्टूडियों (स्कूल) में ढ़ाल सकता हैं।

माध्यमिक शिक्षा आयोग (1952–53) के अनुसार, पाठ्यक्रम का अर्थ केवल उन सैध्दान्तिक विषयों से नहीं है जो विद्यालयों में परम्परागत रूप से पढ़ाए जाते हैं बल्कि इसमें अनुभवों की वह संम्पूर्णता भी सम्मिलित होती है, जिनको विद्यार्थी विद्यालय, कक्षा, पुस्तकालय, प्रयोगशाला, कार्यशाला, खेल के मैदान तथा शिक्षक एंव छात्रों के अनेक अनौपचारिक सम्यको से प्राप्त करता है। इस प्रकार विद्यालय का सम्पूर्ण जीवन पाठ्यक्रम हो जाता है जो छात्रों के जीवन के सभी पक्षों को प्रभावित करता है और उनके सन्तुलित व्यक्तित्व के विकास में सहायता देता हैं।"

पाल हिस्ट के अनुसार, " उन सभी क्रियाओं के प्रारुप जिनके द्वारा छात्र शौक्षिक लक्ष्यों अथवा उद्देश्यों को प्राप्त कर लेंगे पाठ्यक्रम की संज्ञा दी जाती हैं।"

फ्रॉबेल के अनुसार," पाठ्यक्रम सम्पूर्ण मानव जाति का ज्ञान एंव अनुभव का प्रतिरूप होना चाहिए।"

होर्नी के अनुसार, "पाठ्यक्रम वह है जो शिक्षार्थी को पढाया जाता हैं। यह सीखने की क्रियाओं तथा

शान्तिपूर्वक अध्ययन करने से कहीं अधिक है। इसमें उद्योग, व्यवसाय, ज्ञानोपार्जन, अभ्यास तथा क्रियाएँ सम्मिलित होती है। इस प्रकार यह विद्यार्थी के स्नायुमण्डल में होने वाले गतिवादी एवं संवेदनात्मक तत्वों को व्यक्त करता हैं। समाज के क्षेत्र में यह उन सब की अभिव्यक्ति करता है जो कुछ जाति ने संसार के सम्पर्क में आने से किये हैं।"

मुनरो के अनुसार, "पाठ्यक्रम उन सारे अनुभवों को अपने में सम्मिलित करता है जिसका प्रयोग विद्यालय द्वारा शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में किया जाता हैं।"

सैमुअल के अनुसार, "पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी के वे समस्त अनुभव समाहित होते हैं जिन्हें वह कक्षाकक्ष में, प्रयोगशाला में, पुस्तकालय में, खेल के मैदान में, विद्यालय में सम्पन्न होने वाली अन्य पाठ्येत्तर क्रियाओं द्वारा तथा अपने अध्यापकों एवं साथियों के साथ विचारों के आदान–प्रदान के माध्यम से प्राप्त करता हैं।"

कैसबैल के अनुसार, "पाठ्यक्रम में वे सभी वस्तुयें आती हैं जो शिक्षार्थी के, उनके माता–पिता एवं शिक्षकों के जीवन से होकर गुजरती हैं। पाठ्यक्रम उन सभी चीजों से बनता है जो सीखनें वालों को काम करने के घण्टों मे घेरे रहती हैं। वास्तव में पाठ्यक्रम को गतिमान वातावरण कहा जाता हैं।"

जॉन एफ कर्र के अनुसार, "विद्यालय द्वारा सभी प्रकार के अधिगम तथा निर्देशन का नियोजन किया जाता है चाहे वह व्यक्तिगत रूप में या सामूहिक रूप में, विद्यालय के अन्दर एवं बाहर व्यवस्थित की जाएँ वे सभी पाठ्यक्रम का प्रारूप होती हैं।"

फिलिप एच. टेलर के अनुसार, पाठ्यक्रम के अन्तर्गत, पाठ्यवस्तु शिक्षण, शिक्षण विधियाँ तथा उद्देष्यों को सम्मिलित किया जाता है तथा इन क्रियाओं को कैसे आरम्भ किया जाये इसकी परिभाषा तैयार हो सकती है। परस्पर क्रिया करने वाले ये तीन आयाम परिचालनात्मक (Operational) पाठ्यक्रम हैं। उपर्युक्त परिभाषाओं का अवलोकन करने पर यह कहा जा सकता है कि सभी शिक्षा शास्त्रियों ने पाठ्यक्रम को केवल कक्षा–कक्ष की क्रियाओं तक सीमित नहीं रखा हैं। अपितू उन्होनें कक्षा–कक्ष एवं कक्षा–कक्ष के बाहर या यूँ कहे विद्यालय, विद्यालय के बाहर की सभी गतिविधियों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित किया हैं जो शिक्षार्थी के समग्र विकास में सहायक हों। अतः यह कहा जा सकता हैं कि पाठ्यक्रम एक संकुचित विषयवस्तु नहीं हैं अपितु यह एक व्यापक रूप लिए हुए हैं

1.5 पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या में अन्तर (DIFFERENCE BITWEEN CURRICULUM AND SYLLABUS)

किसी भी शैक्षिक कार्यक्रम में पाठ्यचर्या एवं पाठ्यक्रम दो आवश्यक घटक हैं। पाठ्यक्रम एक स्कूल या अन्य शैक्षणिक संस्थान में पेश किए जाने वाले अध्ययनक्रम, शोध कार्यों और उनकी सामग्री का समूह हैं। जबकि पाठ्यचर्या किसी भी विषय की केंद्रित रूपरेखा है। इसलिए, पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम के मध्य प्रमुख अंतर यह है कि पाठ्यक्रम शिक्षकों के लिए निर्धारित दिशा निर्देशों का एक समूह है, जबकि पाठ्यचर्या अवधारणाओं की वर्णनात्मक सूची है जिसे एक कक्षा में पढ़ाया जाना हैं।

पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या के बीच के अन्तर को हम सारणीय–रुप में निम्न प्रकार से समझेंगे

अन्तर का आधार	**पाठ्यक्रम**	**पाठ्यचर्या**
अर्थ	दिशा निर्देशों का एक समूह जिसमें विभिन्न शैक्षणिक सामग्री और अध्याय होते है, जो किसी कार्यक्रम या कोर्स के लिए तैयार किया जाता हैं।	किसी विषय विशेष में अन्तर्निहित विभिन्न समप्रत्ययो या प्रकरण के बारे में सुचनाओं का समूह।
उत्पत्ति	लैटिन शब्द	ग्रीक शब्द

प्रकृति	निर्देशात्मक	वर्णनात्मक
परिवर्तन	आसानी से परिवर्तित नही किया जा सकता	आसानी से परिवर्तित कर सकतें हैं।
उपयोगिता स्तर	बड़े स्तर पर उपयोग होता हैं।	छोटे स्तर पर उपयोग होता हैं।
तैयार करने वालें	सरकार या संस्थान के प्रशासन द्वारा तैयार किया जाता है।	परीक्षा बोर्ड द्वारा या व्यक्तिगत स्तर पर विषय अध्यापक द्वारा तैयार किया जाता है।
किसके लिए	पूरे कोर्स के लिए	विषय के लिए
अवधि	पूरा कोर्स खत्म होने तक	तय समय के लिए ज्यादातर एक वर्ष या छः महीने के लिए
एकरुपता	सभी अध्यापको के लिए एकसमान	एक अध्यापक से दूसरे अध्यापक के लिए बदल सकता हैं।
लागू होगा	अधिगम से सम्बन्धित सभी व्यक्तियों पर, खास तौर से शिक्षकों पर	शिक्षार्थियों पर

बोध प्रश्न—टिप्पणी—अपने उत्तरों के लिए निचे दिए गये स्थान का प्रयोग करे।

प्रश्न 1:— कनिंघम द्वारा दिये गये पाठ्यक्रम की परिभाषा को लिखिए।

....

....

प्रश्न 2:— पाठ्यक्रम और पाठ्यचर्या में दो अन्तर लिखिए।

....

....

1.6 पाठ्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व

आजकल, पाठ्यक्रम को मोटे तौर पर एक शैक्षिक संस्थान के कार्यक्रम की रुपरेखा माना जाता है। हम कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम शिक्षक की शिक्षण योजना के माध्यम से शिक्षार्थी के सम्पूर्ण अनुभवो एवं कौशलों को शामिल करती हैं। पाठ्यक्रम यह भी सुनिश्चित करता हैं कि क्या और क्यों पढाना है, कैसे और कब पढ़ाना है एवं शिक्षार्थियों ने क्या सीखा, कितना सीखा और क्या नही सीखा का आकलन या मूल्यांकन कैसे करना है।

पाठ्यक्रम में बच्चों को पढ़ायी जाने वाली विषय –वस्तु और उसे पढ़ाने के लिए शिक्षक की योजना के साथ–साथ शिक्षार्थियों के अनुभव और जरूरतें भी शामिल होती हैं। इसलिए पाठ्यक्रम को एक शैक्षिक संस्थान के जीवन चक्र का सबसे महत्वपूर्ण पहलू माना जाता हैं क्योंकि शैक्षिक संस्थान या स्कूल की क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं का उद्देश्य भी पाठ्यक्रम द्वारा निर्धारित उद्देश्यों को प्राप्त करना हैं। इस अर्थ में, चूँकि पाठ्यक्रम स्वयं विद्यालय के शैक्षिक और प्रबंधकीय कार्यों को निर्धरित करती है, पाठ्यक्रम की शिक्षण अधिगम प्रक्रिया में आवश्यकता और महत्व विल्कुल स्पष्ट हो जाता हैं।

निम्नलिखित बिन्दु पाठ्यक्रम की आवश्यकता को और सुस्पष्ट करेंगे–

1–6–1 उद्देश्यों की प्राप्ति :–

हर शैक्षणिक व्यवस्था का अपना उद्देश्य होता हैं। उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सभी शैक्षणिक व्यवस्थओं को पाठ्यक्रम के रास्ते से होकर गुजरना पड़ता हैं। अर्थात उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए एक उचित पाठ्यक्रम का होना अत्यन्त आवश्यक हैं।

1.6.2 शिक्षार्थियो की सीखने के लक्ष्यों, प्रकियाओं और विषयों को निर्धारित करने में:–

पाठ्यक्रम शिक्षार्थियों के भ्रम को दूर करती है कि क्या पढ़ना हैं, क्यों पढ़ना हैं और, कैसे पढ़ना है। अतः पाठ्यक्रम एक ओर जहाँ निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार विषयों और प्रक्रियाओं के चयन की सुविधा प्रदान करती है, वहीं दूसरी ओर, यह अधिगम लक्ष्यों, विषयों और प्रक्रियाओं को निर्धारित करने और आवश्यक सुधार करने के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान करती है।

1.6.3 शिक्षार्थियों के लिए सामग्री चयन, शिक्षण योजना निर्माण और कार्यान्वयन :–

पाठ्यक्रम शिक्षण और सीखने की गतिविधियों को संचालित करने में मुख्य उद्देश्यों को निर्धारित करता है, साथ ही विषय वस्तु, शिक्षण विधियों और मूल्यांकन प्रक्रियाओं को भी निर्धारित करता है। इससे स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम शिक्षक को अपनी कक्षा की विशिष्टता के अनुसार शिक्षणयोजना बनाकर योजना को प्रभावी ढ़ंग से लागू करने में मदद करती हैं। इस प्रकार, पाठ्यक्रम एक ओर शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया में एकरूपता के स्तर को बनाए रखने में मदद करती है तो दूसरी ओर ठोस स्थिति और विविधता के चयन और कार्यान्वयन का मार्ग प्रशस्त करती है।

1.6.4 सीखने में सुधार का अवसर :–

पाठ्यक्रम यह पता लगाने के लिए मूल्यांकन प्रक्रिया को इंगित करता है कि क्या शिक्षण और सीखने के बाद इच्छित उद्देश्यों को प्राप्त किया गया है। यदि मूल्यांकन के माध्यम से अपेक्षित उपलब्धि प्राप्त नहीं होती है तो शिक्षक अपने शिक्षण योजना में आवश्यक संशोधन करता है जिससे शिक्षार्थी को सीखने में सुधार का अवसर प्राप्त होता हैं। इस प्रकार, पाठ्यक्रम शिक्षको और शिक्षार्थियों दोनों के लिए सीखने के अवसर प्रदान करती हैं।

1.6.5 कार्यक्रमों के निर्माण एवं क्रियान्वयन का आधार :–

प्रभावी शिक्षण और सीखने के लिए, शैक्षिक संस्थान या स्कूल के भौतिक, शैक्षिक और मानवीय संबंधो का बेजोड़ होना आवश्यक है। इस तरह के अनुकूलन के विकास के लिए, शैक्षिक और प्रबंधकीय कार्य की प्रक्रियाओं को निर्धारित करना और उन्हें उचित तरीके से लागू करना आवश्यक है। पाठ्यक्रम इस आवश्यकता की पूर्ति के लिए एक संस्थागत योजना और योजना के कार्यान्वयन के लिए एक दिशा निर्देशन प्रदान करता है। पाठ्यक्रम के लक्ष्य और उन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए चुने जा सकने वाले विषयों और गतिविधियों को एक थिंक टैंक द्वारा तैयार और कार्यान्वित किया जा सकता है। इस प्रकार पाठ्यक्रम स्वयं किसी भी शैक्षिक संस्थान के कार्यक्रमों के निर्माण एवं क्रियान्वयन का आधार बनती है।

1.6.5 व्यक्तिगत विभिन्नता का अधिकतम प्रतिनिधित्व :–

पाठ्यक्रम न केवल विषय वस्तु और उसके स्तर में एकरुपता बनाए रखता है बल्कि शिक्षार्थियों के अनुभवों को लगातार शामिल करते हुए व्यक्तिगत विभिन्नता के अनुसार सीखने की गतिविधियों को संचालित करने का अवसर भी प्रदान करता है। वास्तव में पाठ्यक्रम एक गतिशील प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षार्थियों के अनुभव के साथ–साथ निरंतर संशोधन शामिल है। इस प्रकार शमिल किए गए सीखने के अनुभव में शिक्षार्थियों रुचियों को अधिकतम कर सकते हैं। अतः पाठ्यक्रम विविध एवं व्यक्तिगत दोनों होगा।

1.6.6 नवीन प्रवृत्तियों का साहचर्य :–

पाठ्यक्रम हर समय एक जैसा नहीं होता । इसमें समय के साथ परिवर्तन होता ही रहता है। इस वजह से पाठ्यक्रम एक व्यापक अवधारणा का रुप लेता जा रहा है। इसलिए वर्तमान समय में प्रचलित अनेक नवीन प्रवृत्तियों का साहचर्य भी पाठ्यक्रम में होता जा रहा है।

1.6.7 शिक्षार्थियों के सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य का संवर्धन :–

हम जानते हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, अतः उसे समाज के कुछ नियमों का पालन, अधिकारों का उपभोग एवं कर्तव्यों का निर्वहन करना ही पड़ता हैं। इन सभी चाजों पाठ्यक्रम में शामिल किया जाता है ताकि शिक्षार्थी के स्वास्थ्य को भी पाठ्यक्रम ध्यान में रखता है, इसलिए ही तो विद्यालय में योग, कराते, व्यायाम खेल आदि गतिविधियाँ कराई एवं सीखाई जाती है ताकि शिक्षार्थी शारीरिक एवं मानसिक रुप से सुदृढ़ हो सकें। अतः हम कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम द्वारा शिक्षार्थियों का सामाजिक विकास एवं मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य संवर्धन किया जाता है।

1.6.8 शैक्षणिक एवं स्थानीय श्रोतों का प्रयोग :–

पाठ्यक्रम समय के साथ–साथ बदलता जरूर हैं पर जो शिक्षार्थियों के लिए उचित है उसे अपने साथ लेते हुए। अर्थात पाठ्यक्रम वर्तमान स्थानीय श्रोतों के साथ–साथ प्राचीन ज्ञानवर्धक शैक्षणिक श्रोतों को भी अपने में शामिल किए रहता हैं। पाठ्यक्रम को जब शिक्षार्थी सीखते हैं तो उनको अपने वर्तमान स्थानीय श्रोतों एवं प्राचीन शैक्षणिक श्रोतों का ज्ञान प्राप्त होता हैं। जिसे वह अपने दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं।

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि पाठ्यक्रम अनेकों कार्य सम्पादित करता है। यदि हम कहें कि शिक्षा–तंत्र की नीव ही पाठ्यक्रम हैं तो कोई अतिशंयोक्ति नही होगी। अन्य शब्दों में कहे तो पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं को शब्दों की सीमाओं में बांधना बहुत ही मुश्किल कार्य हैं। बिना पाठ्यक्रम के शिक्षा के किसी भी उद्देश्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। पाठ्यक्रम ही हैं जो उपर्युक्त बातों के अलावा शिक्षार्थियों में लोकतान्त्रिक मूल्यों, राष्ट्रभाव उत्तम नागरिकता इत्यादि का विकास करता हैं। अतः हम कह सकते हैं कि पाठ्यक्रम द्वारा ही शिक्षार्थी, परिवार, समाज व राष्ट्र का सर्वांगीण विकास सम्भव हैं।

1.7 पाठ्यक्रम के प्रकार (TYPE OF CURRICULUM)

पाठ्यक्रम को सीखने के सिद्धांतों के चार परिवारों के सामान्य मनोवैज्ञानिक वर्गीकरण के अनुसार वर्गीकृत किया जा सकता है **''सामाजिक, सूचना प्रसंस्करण, व्यक्तिगत और व्यवहार।''** लॉन्गस्ट्रीट और शेन ने पाठ्यक्रम उन्मुखीकरण का विभाजन इस रूप में किया है : बाल–केन्द्रित, समाज–केन्द्रित, ज्ञान–केन्द्रित और उदार। पाठ्यक्रम के सामान्य दार्शनिक अभिविन्यास उन मान्यताओं के समानांतर हैं जो विभिन्न दार्शनिक उन्मुखताओं आदर्शवाद, यथार्थवाद, प्रयोगवाद, रचनावाद, अस्तित्ववाद इत्यादि द्वारा समर्पित हैं। इन सभी श्रोतों से यह स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम कई प्रकार के होते है। पाठ्यक्रम के विभिन्न प्रकार निम्नवत है–

1.7.1 शिक्षार्थी केन्द्रित पाठ्यक्रम (Learner. Centered Curriculum):–

वर्तमान काल मे शिक्षार्थी को ही शिक्षा का केंद्र माना जाता है। वर्तमान एवं पूर्व मनोवैज्ञानिकों का मत हैं कि शिक्षार्थी को ही केंद्र मानकर शिक्षा देनी चाहिए। इसकी प्रमाणिकता के लिए उन्होंने बहुत से शोध किए हैं। शिक्षार्थी को शिक्षा उसकी रुचियों आवश्यकताओं, क्षमताओं इत्यादि को ध्यान में रखकर देनी चाहिए। इसलिए शिक्षार्थी केंद्रित पाठ्यक्रम का अभिप्राय उस पाठ्यक्रम से लिया जाता है जिसका निर्माण शिक्षार्थी की आवश्यकताओं, क्षमताओं एवं रूचि इत्यादि के अनुसार की गई हों। इस सन्दर्भ में माथुर जी कहतें हैं कि, ''शिक्षार्थी केंद्रित पाठ्यक्रम का अभिप्राय उस पाठ्यक्रम से लिया जाता है जिसमें पाठ्यक्रम का संगठन,

आयोजन आदि शिक्षार्थी की आवश्यकताओं एवं रूचियों के अनुरूप किया जाता हैं।'' इसी सन्दर्भ में भाटिया और नारंग का कहना है कि, ''यह शिक्षार्थी के अभिवृत्तियों क्षमताओं, रूचियों तथा उनकी आवश्यकताओं पर आधारित है! शिक्षार्थी उसकी केंद्र बिंदु है जिसके चारों ओर संपूर्ण शिक्षा प्रक्रिया घूमती है!''

1.7.2 विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम (Subject Centered Curriculum):–

आज के आधुनिक युग में भी विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम पर सबसे ज्यादा ध्यान दिया जाता हैं। यह खास तौर से संज्ञानात्मक विकास को ज्ञान और सूचना के अग्रिहण के रूप में मानता हैं। इस पाठ्यक्रम में निर्देश के लिए सभी विषयों को अलग कर दिया जाता है। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विषयों को एकीकृत न करके अलग–अलग पढ़ाया जाता है। जिससे कि शिक्षार्थी को सभी आवश्यक विषयों का ज्ञान हो सकें।

यह स्पष्ट हैं कि विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम एक विशेष विषय वस्तु पर ध्यान केन्द्रित रखता हैं। उदाहरण के लिए, एक विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम गणित या इतिहास पर केन्द्रित हो सकता हैं। अतः हम कह सकते हैं कि विषय केन्द्रित करती है ना कि शिक्षार्थी। आमतौर पर विद्यालयों के अधिकांश कार्यक्रम आवश्यक विषयों जैसे कि गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, इतिहास, भुगोल, भाषा इत्यादि ही बनाते है और शिक्षार्थियों को पाठ्यक्रम चुनने के बहुत कम अवसर विकल्प दिए जाते है।

विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम का लाभ यह हैं कि यह आसानी से मानकीकृत है और शिक्षार्थियों को संस्थानों के बीच स्थानांतरित करने और प्राथमिक स्तर से माध्यमिक और माध्यमिक से उच्च स्तर में प्रगति करने में मदद करता है। यह पाठ्यक्रम भी शिक्षार्थियों को अपने स्वयं के कौशल और कमजोरियों को पहचानने की अनुमति देता है जिससे वे अपने सीखने के तरीके को और प्रभावी बना सकते हैं।

विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम का प्रथम व सर्वमान्य दोष यह है कि यह शिक्षार्थी केन्द्रित नहीं हैं। इस पाठ्यक्रम का निर्माण शिक्षार्थियों के सीखने की शैलियों को ध्यान में रखे बिना किया जाता है। यह शिक्षार्थियों के जुड़ाव और प्रेरणा के साथ समस्याएं पैदा कर सकता है और यह शिक्षार्थियों के पिछड़ने का कारण भी बन सकता है।

1.7.3 क्रिया आधारित पाठ्यक्रम (Activity Based Curriculum):–

क्रिया आधारित पाठ्यक्रम में करके सीखने पर बल दिया जाता हैं। इस पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी स्वयं को कई प्रकार की क्रियाओं में सम्मिलित करके सीखता है। परन्तु यह अवश्य ध्यान रखना चाहिए कि क्रियाएँ शिक्षार्थी के रूचिकर एवं उद्देश्यपूर्ण हो। इस प्रकार के पाठ्यक्रय में प्रयोगशाला, क्षेत्रीय भ्रमण एवं वास्तविक जीवन से सम्बन्धित क्रिया कलापों को अधिक से अधिक सम्मिलित किया जाता है।

क्रिया आधारित पाठ्यक्रम का आधार पुस्तकीय ज्ञान न होकर शिक्षार्थी की योग्यता, आवश्यकता, रूचि, प्रेरणा क्रिया आदि होती हैं। विभिन्न मनोवैज्ञानिकों का भी मत यही है कि अगर कोई व्यक्ति किसी चीज को करके सीखता है तो वह उसको अच्छे से तो सीखता ही है साथ ही साथ वह उसे लम्बे समय तक याद भी रखता है और जरूरत पड़ने पर उसका उपयोग भी कर लेता है । जैसे कि यदि आपने साइकिल चलाना बचपन में सीख लिया और यदि कुछ समय बाद साइकिल चलाना छोड़ भी दिया तो भी आप कई वर्षों बाद भी साइकिल आसानी से चला सकते हैं।

क्रिया आधारित पाठ्यक्रम में, एक शिक्षक सूत्रधार का कार्य करता है, शिक्षार्थियों को सीखने की प्रक्रिया के माध्यम से सहायता प्रदान करता है और उनको मार्ग दर्शन प्रदान करता हैं, जिससे शिक्षार्थी निष्क्रिय न होकर सीखने की प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाते हैं। इसलिए सीखने की प्रक्रिया उबाऊ न होकर रूचिकर बनी रहती हैं। अतः इस पाठ्यक्रम के माध्यम से प्राप्त अधिगम अधिक टिकाऊ एवं उपयोगी होता हैं।

क्रिया आधारित पाठ्यक्रम संचालन आसान नहीं होता है। इसके अच्छे से संचालन के लिए शिक्षक का कुशल होना अति आवश्यक होता हैं। इस प्रकार के पाठ्यक्रम में समय भी अधिक लगता है, जिसके कारण कभी–कभी शिक्षक और शिक्षार्थी दोनों का क्रियाओं में मन नही लगता। अतः पाठ्यक्रम में सम्मिलित सभी गतिविधियों का रूचिकर होना अतिआवश्यक हो जाता हैं। हम जानते हैं कि शिक्षा जीवन प्रर्यन्त चलने वाली प्रक्रियाँ है एवं जीवन के आयाम और आवश्यकताएँ बदलती रहती हैं। जिसके वजह से मनुष्य की गतिविधियाँ भी बदलती रहती हैं। अतः हमें क्रिया आधारित पाठ्यक्रम में लगातार परिवर्तन करते रहना चाहिए।

1.7.4 एकीकृत पाठ्यक्रम (Integreted Curriculum):-

इस पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी केन्द्रित, विषय केन्द्रित एवं क्रिया आधारित पाठ्यक्रमों को एकीकृत किया जाता हैं। इस पाठ्यक्रम में विषयों को अलग–अलग न करके एकीकृत करके पढ़ाया जाता हैं। परन्तु यह ध्यान रखा जाता है कि इस एकीकरण की प्रक्रिया से विषयों के बीच कोई अवरोध उत्पन्न ना हो।

एकीकृत पाठ्यक्रम एकीकरण के सि्द्धान्त पर कार्य करता है जिसके अनुसार कोई भी विचार, क्रिया इत्यादि तभी प्रभावशाली एवं उपयोग होती है जब उसके विभिन्न भागों में एकता होती है। इस प्रकार पाठ्यक्रम के विभिन्न विषयों के ज्ञान को विभिन्न खण्ड़ों में न प्रस्तुत करके सभी विषय मिलकर ज्ञान को एक इकाई के रूप में प्रस्तुत करते है।

मनोवैज्ञानिकों का मानना है कि मस्तिष्क एक इकाई है। अतः मस्तिष्क ज्ञान या सुचनाओं को छोटे–छोटे टुकडों में ग्रहण नहीं करता है, बल्कि ज्ञान के पूर्ण रूप को आसानी से ग्रहण कर लेता हैं। अर्थात वह वस्तु, ज्ञान या सुचना मस्तिष्क में स्थिर रहती है जो कि पूर्ण अर्थ प्रदान करती हो। अतः यह आवश्यक है कि विषयों को परस्पर सम्बन्धित किया जाय और इस प्रकार सम्बन्धित किया जाए कि उनके बीच कोई अवरोध उत्पन्न ना हो। इस कार्य का उत्तरदायित्व मुख्यतः शिक्षक के ऊपर होता हैं।

हेण्डरसन (Henderson) के अनुसार ''एकीकृत पाठ्यक्रम वह पाठ्यक्रम है जिसमें विषयों के बीच कोई अवरोध रूकावट अथवा दीवार नहीं होती है।''

एकीकृत पाठ्यक्रम से शिक्षार्थी समझ एवं प्रशंसा के साथ सीखते है। इस पाठ्यक्रम में अलग–अलग तथ्यों की तुलना में सोच पर अधिक बल दिया जाता हैं। यह पाठ्यक्रम ज्ञान प्रस्तुत करने के लिए तार्किकता को बढ़ावा देता है। यह पाठ्यक्रम शिक्षार्थी के पूर्वज्ञान से नवीनज्ञान को सम्बन्धित करने मे आसानी होती है। इससे शिक्षार्थियों को जीवनोपयोगी शिक्षा मिलती है। यह तो एकदम स्पष्ट हैं कि इस एकीकृत पाठ्यक्रम के गुण तो बहुत हैं परन्तु इसमें कुछ खामियाँ होती है जैसे कि इस पाठ्यक्रम से शिक्षकों का उत्तरदायित्व एवं कार्यभार बढ़ जाता है। इस पाठ्यक्रम की सफलता के लिए शिक्षक को बहुत अधिक एवं व्यापक अध्ययन की आवश्यकता होती हैं। ऐसे पाठ्यक्रम में सभी विषयों का एकीकरण ठीक ढ़ंग से कर पाना असम्भव होता है। इस पाठ्यक्रम द्वारा शिक्षार्थियों के विशिष्ट क्षमताओं एवं रूचियों को बढ़ावा देना सम्भव नही हो पाता। ऐसे पाठ्यक्रम के क्रियान्यवन के लिए प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव देखने को मिलता हैं।

इन सब दोषों के बावजूद एकीकृत पाठ्यक्रम की माँग आज के समय में पूरी दुनिया में बढ़ती जा रही है। NEP-2020 ने भी बहु विषयक उपागम पर बहुत जोर दिया हैं। जिसके वजह से भारत में भी एकीकृत पाठ्यक्रम की आवश्यकता महसूस की जा रही हैं। समय की माँग को देखते हुए जल्द ही इस आवश्यकता को पूर्ण संसाधनों के साथ पूरा करना सुनिश्चित किया जाना चाहिए।

1.7.5 मूल पाठ्यक्रम (Core Curriculum) :-

इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत कुछ विषय शिक्षार्थियों के लिए अनिवार्य होती है एवं कुछ विषय ऐच्छिक होते है। अनिवार्य विषयों को सभी शिक्षार्थियों को सीखना अनिवार्य होता है। ऐच्छिक विषयों को शिक्षार्थी अपनी रूचि, क्षमता जरूरत इत्यादि के आधार पर चयन करता है। इस विषय का प्रमुख उद्देश्य शिक्षार्थी का व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास करना होता है। इसमें उन विषयों को अनिवार्य रखा जाता हैं जो कि समाजोपयोगी होते है तथा उन विषयों को ऐच्छिक रखा जाता है जो कि शिक्षार्थी के व्यक्तिगत हित में होते हैं।

ए. ए. डगलस (1990) के अनुसार, ''मूल पाठ्यक्रम प्रारम्भिक विद्यालय के सभी बुनियादी सामान्य प्रशिक्षण का एक प्रक्षेपण हैं।''

कैसवेल के शब्दों में देखें तो, ''मूल पाठ्यक्रम अनुभवों की एक निरंतर सावधानीपूर्वक नियोजित श्रृंखला है जो महत्वपूर्ण व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं पर आधारित है और जिसमें सभी युवाओं के सामान्य मामलों का सीखना शामिल हैं।''

एन. एल. बॉसिंग के अनुसार, ''मूल पाठ्यक्रम सीखने के ऐसे अनुभवों को निर्दिष्ट करता है जो कि सभी शिक्षार्थियों के लिए मौलिक हैं।''

एच. अल्बर्टी कहते हैं कि ''ऐसा लगता हैं कि सभी कार्यक्रमों का एक उभयनिष्ट तत्व है जिसे कोर/मूल कहा जाता है। यह शब्द किसी न किसी प्रकार से पाठ्यक्रम के सभी या कुछ हिस्सों में लागू होता है जो सभी शिक्षार्थियों के लिए दिए गए स्तर पर आवश्यक होता है। दूसरे शब्दों में, सामान्य शिक्षा के सभी भाग या कुछ भाग को निर्दिष्ट करने के लिए कोर/मूल का उपयोग किया जाता है।''

इस पाठ्यक्रम की कुछ प्रमुख विशेषताओं कि बात करे तो हम कह सकते है कि एक ही कौशल को अनेक विषयों के माध्यम से प्रदान किया जाता है, जिससे शिक्षण–अधिगम प्रक्रिया प्रभावी होती है। मूल पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी की विभिन्न क्रियाओं के फलस्वरूप वर्तमान और भावी समस्याओं का समाधान करने का प्रशिक्षण दिया जाता है, ताकि वे अपने जीवन में आने वाली सभी समस्याओं का निपटारा कर सकें। मूल पाठ्यक्रम में शिक्षकों को शिक्षण विधियों के चयन में स्वतंत्रता दी जाती है और पाठ्यक्रम के ज्ञान के विभिन्न क्षेत्रों में सह संबंध स्थापित रहता है। हम यह भी कह सकते हैं कि, यह पाठ्यक्रम सीखने के उन सभी अनुभवों पर जोर देता है, जो शिक्षार्थी एवं समाज दोनों के लिए हितकारी होता है। इन्हीं विशेषताओं के वजह से यह पाठ्यक्रम सबसे अधिक प्रचलित हैं।

गुडलैन्ड ने इस पाठ्यक्रम की सीमाओं के बारे में कहा है कि, ''दो या दो से अधिक विषयों का सम्मिश्रण शिक्षक पर शिक्षण की आवश्यकताओं का भार बढ़ाता है तथा प्रायः सहयोगियों से सहायता की अपेक्षा करता है। माध्यमिक स्तर पर जहाँ पाठ्यक्रम का स्तर एवं परिभाषा बढ़ जाता है, कोर पाठ्यक्रम के कार्यान्यवयन में विशेष कठिनाई होती है। इसीलिए माध्यमिक स्तर पर कक्षा–शिक्षक के स्थान पर विषय शिक्षक की व्यवस्था प्रचलित है। अतः यह पाठ्यक्रम प्राथमिक तथा निम्न माध्यमिक स्तर तक ही उपयुक्त होता हैं।'' गुडलैन्ड के इस व्यक्तव्य का विश्लेषण करें तो हम पायेंगे कि इस पाठ्यक्रम के शिक्षण में समय अधिक लगता हैं एवं यह पाठ्यक्रम उच्च माध्यमिक तथा उच्च शिक्षा के लिए उपयुक्त नहीं हैं।

1.7.6 प्रच्छन्न/छिपा पाठ्यक्रम (Hidden Curriculum) :–

छिपे हुए पाठ्यक्रम को पाठ्यक्रम की वैचारिक अवधारणा में से एक माना जाता है। इस अवधारणा पर हाल के पाठ्यक्रम की परिघटना ने सतही दृष्टिकोण को कम कर दिया है। इस पर अब न केवल डिजाइन के दृष्टिकोण से बल्कि कार्यान्वियन के दृष्टिकोण से भी ध्यान दिया जाता है। अतः इसके विकास का बारीकी से पालन किया जाना चाहिए। इस अवधारणा को पहली बार 1968 में फिलिय जैक्सन द्वारा प्रयोग में लिखा गया था। इसने पिछले कुछ दशकों से पाठ्यक्रम सिद्धांतकारो का ध्यान आकर्शित किया है, जिनमें से प्रत्येक इसे अलग दृश्टिकोण से देखते है–

रेमण्ड हार्न प्रच्छन्न पाठ्यक्रम को परिभाषित करते हुए कहते हैं कि, ''प्रच्छन्न पाठ्यक्रम एक व्यापक अनुभाग है जिसमें सभी अपरिचित व अक्सर अधोशित ज्ञान, मूल्य व विकास शामिल होते हैं जो कि विद्यालयों व कक्षाओं में अधिगम प्रक्रिया का एक अंग है।''

ब्लैकवेल डिक्शनरी के अनुसार, ''प्रच्छन्न पाठ्यक्रम एक अवधारणा है जिसका प्रयोग उन अबूझी व मौखिक चीजों का वर्णन करने में किया जाता है जिन्हें विद्यालय में शिक्षार्थियों को सिखाया जाता है।''

थॉमस सिल्वा के अनुसार, ''प्रच्छन्न पाठ्यक्रम वह हैं, जिसमें विद्यालयी वातावरण के वे सभी पहलू शामिल होते हैं जो बिना किसी अधिकारिक पाठ्यक्रम के सार्थक सामाजिक अधिगम को प्रकट करते हैं। वर्तमान व्यवहार, मूल्य तथा दिशा निर्देश प्रच्छन्न पाठ्यक्रम में सिखाए जाते है।''

मइकल हरालैम्बोस के शब्दों में कहें तो, ''प्रच्छन्न पाठ्यक्रम में वे सभी वस्तुएँ शामिल हैं जिन्हें छात्र संस्थानों द्वारा कथित शिक्षक उद्देश्यों की अपेक्षा विद्यालय में उपस्थिति के दौरान अपने अनुभवों से सीखते हैं।''

उपर्युक्त परिभाषाओं से यह स्पष्ट है कि प्रच्छन्न पाठ्यक्रम कोई लिखित पाठ्यक्रम नहीं है बल्कि इसे शिक्षार्थी स्वयं के अनुभवों से सीखते है। इससे ऐसे अनुभव प्राप्त होते हैं जो शिक्षार्थी एवं समाज की संस्कृति और मूल्यों को आकार देते हैं। इन अनुभवों की प्रभावशीलता प्रत्यक्ष विधियों और सूचित शैक्षिक प्रयासों से कहीं अधिक हैं। प्रच्छन्न पाठ्यक्रम में ऐसे शिक्षण सामाग्रियां शामिल हैं जो अधिकारिक तौर पर स्कूल और शैक्षिक प्रणाली द्वारा लक्षित और विकसित नही किए गए हैं। अतः हम कह सकते हैं कि प्रच्छन्न पाठ्यक्रम एक व्यापक

अर्थ में परिपूर्ण है जिसमें सभी प्रकार के अबूझ और अनजाने ही प्राप्त ज्ञात मूल्यों व विश्वासों का समावेश होता है जो विद्यालयों व कक्षाओं की अनजाने ही सही परन्तु अधिगम प्रक्रिया का अंग होते है।''

1.7.7 जमा पाठ्यक्रम (Plus Curriculum) :–

श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के श्रवण बाधित होने के कारण उत्पन्न होने वाली सीमाओं को करने तथा सामान्य शिक्षार्थियों को प्राप्त पाठ्यक्रम तक पहुँच के लिए जो पाठ्यक्रम हम अपने श्रवण बाधित शिक्षार्थियों को देते है, उसे जमा पाठ्यक्रम कहा जाता हैं। इस पाठ्यक्रम के अन्तर्गत प्रमुख रूप से श्रवण बाधित शिक्षार्थियों भाषा कौशल , भाषा विकास , सम्प्रेषण विकास इत्यादि का बोध कराया जाता हैं। इन कौशलों को सीखकर एक श्रवण बाधित शिक्षार्थी आसानी से सामान्य पाठ्यक्रम तक अपनी पहुँच बना सकता हैं।

सामान्य तथा जमा पाठ्यक्रम कुछ गतिविधियों के साथ–साथ गणित, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान आदि जैसे कुछ विषयों को संदर्भित करता है। जमा पाठ्यक्रम किसी भी अतिरिक्तता को संदर्भित नहीं करता है। श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए यह एकीकृत या समावेशी शिक्षा कार्यक्रम में एक प्रतिपूरक अनुभव के अलावा और कुछ भी नहीं है। यह कुछ आवश्यक कौशलों को संदर्भित करता है जो कि श्रवण बाधित के लिए अनोखा है और श्रवण बाधित वाले व्यक्तियों को इन बुनियादी कौशलों की आवश्यकता नहीं हैं।

1.8 सारांश (Summary)

हम सभी जानते है कि मानव समाज के लिए शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक शिक्षा किसी न किसी रूप में विद्यमान रही है। जिसके संचालन के लिए लिखित या अलिखित पाठ्यक्रम ने सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। एक सुनियोजित पाठ्यक्रम यह सुनिश्चित करता है कि शिक्षार्थी एवं शिक्षक यह अच्छी तरह समझलें कि क्या क्यों और कितना सीखना–सीखाना हैं। इससे शिक्षार्थी एवं शिक्षक दोनों को एक दिशा मिलती हैं।

वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में एक पाठ्यक्रम ही है जिससे हम शिक्षार्थी के व्यक्तिगत एवं सामाजिक हितों को पूरा कर सकते है। पाठ्यक्रम ही एक ऐसा आधार है जिससे हम एक राष्ट्रवादी एवं सामाजिक मूल्यों पर खरा उतरने वाले समाज का निर्माण कर सकते है।

विभिन्न विद्वानों द्वारा दिए गए पाठ्यक्रम की परिभाषाओं से भी यह इंगित होता है कि वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एक अच्छे पाठ्यक्रम का होना अतिआवश्यक है क्योंकि यह शिक्षक के हाथ में एक साधन की तरह होता है और इसमें अनुभवों की वह सम्पूर्णता भी सम्मिलित होती है, जिनकों विद्यार्थी कक्षा, पुस्तकालय प्रयोगशाला, कार्यशाला, खेल के मैदान तथा शिक्षक एवं विद्यार्थी के अनेक अनौपचारिक सम्पर्कों से प्राप्त करता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि विद्यालय के सम्पूर्ण जीवन का आधार पाठ्यक्रम ही है।

हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या में कुछ मूलभूत अन्तर है। बहुत से लोग दोनों को एक ही समझ लेते है जो कि गलत है। पाठ्यक्रम का स्परूप और क्षेत्र बृहद होता है जबकि पाठ्यचर्या का संकीर्ण होता है। दोनों की प्रकृति एवं अर्थ इत्यादि भी अलग–अलग होता है।

पाठ्यक्रम के प्रकारों के बारे में विद्वानों में एकमतता न होने कारण हम इसका एक सीमा में नहीं बाध सकते। अर्थात हम यह नही कह सकते है कि पाठ्यक्रम के कितने प्रकार हैं या हो सकते हैं। शिक्षार्थी केन्द्रित पाठ्यक्रम, विषय केन्द्रित पाठ्यक्रम, क्रिया आधारित पाठ्यक्रम, एकीकृत पाठ्यक्रम, मूल पाठ्यक्रम, जमा पाठ्यक्रम आदि कुछ प्रमुख पाठ्यक्रम है। इन पाठ्यक्रमों के आलावा शास्त्रीय सम्बन्धी पाठ्यक्रम, अनुभव आधारित पाठ्यक्रम, सवंर्धित पाठ्यक्रम, आवश्यकता केन्द्रित पाठ्यक्रम आदि अनेकों प्रकार के पाठ्यक्रम होते है। स्थिति परिस्थिति, आवश्यकता, संसाधन इत्यादि को ध्यान में रखते हुए जो उपयुक्त रहता है उसका संचालन किया जाना चाहिए।

1.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1:– पाठ्यक्रम के किसी एक परिभाषा का विश्लेषण कीजिए।

प्रश्न 2:– पाठ्यक्रम एवं पाठ्यचर्या के बीच के अन्तर स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 3:– पाठ्यक्रम के किन्ही दो प्रकारों की चर्चा कीजिए।

1.11 चर्चा के बिंदु /स्पश्टीकरण

प्रश्न 1:–पाठ्यक्रम की प्रकृति पर चर्चा करे। .

प्रश्न 2:–पाठ्यक्रम की आवश्यकता और महत्व पर चर्चा करे ।

1.12 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- शर्मा, आर0 ए0 (2003). पाठ्यक्रम, शिक्षण कला तथा मूल्यांकन. चतुर्थ संस्करण. आर0 लाल0 बुक डिपा.
- मदान, पी0 यादव, पी0 सी0, यादव, पी0 के0 (2017–18). पाठ्यक्रम विकास एवं आकलन. अग्रवाल पब्लिकेशन्स.
- Dash, B.N. (2010). Curriculum Planning and Development. Dominant Publishers and Distributors.
- सोनकर, ए0 के0 (2017). शिक्षा के सिद्धान्त. उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय.

इकाई–2 पाठ्यक्रम संरचना के उपागम और चरण

इकाई संरचना

2.1 प्रस्तावना

2.2 उद्देश्य

2.3 पाठ्यक्रम संरचना के उपागम

2.3.1 प्रकरण उपागम

2.3.2 संकेद्रित उपागम

2.3.3 इकाई उपागम

2.4 पाठ्यचर्या विकास के चरण

2.4.1 शैक्षिक आवश्यकताओं की पहचान

2.4.2 शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण

2.4.3 विषय वस्तु का चयन व संगठन

2.4.4 अधिगम अनुभवो का चयन व संगठन

2.4.5 मूल्यांकन

2.5 सारांश

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.7 अभ्यास कार्य

2.9 चर्चा के बिंदु /स्पश्टीकरण

2.10 कुछ उपयोगी पुस्तके

2.1 प्रस्तावना

शिक्षा का उद्देश्य बालक के सर्वांगिंण विकास से है। पाठ्यचर्या तथा शैक्षिक उद्देश्यों में घनिष्ट सम्बंध है। पाठ्चर्या शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति का एक साधन है, इसके तहत समस्त क्रियाकलाप ही पाठ्यचर्या है। किसी भी विषय में पाठ्यक्रम के निर्माण के लिये महत्वपूर्ण चरणों, सावधानियों एवं योजनाओ को ध्यान में रखना पढ़ता है। राल्फ टाइफर (बैठक) ने पाठ्यक्रम के निर्माण के लिए मुख्य रूप से चार योजना बताये है।

1. उद्देश्यों को परिभाषित करना
2. उद्देश्यों से सम्बंधित शैक्षिक अनुभव
3. इन अनुभवो को संकलित तथा संगठित करना
4. उद्देश्यों का मूल्यांकन करना।

पाठ्यक्रम उपागम से अभिप्राय पाठ्य विकास एवं उसे क्रियान्वित करने सम्बंधी विविध पक्षो के विषय में निर्णय होने के लिए नियुक्त संगठन प्रतिमान का अपना अभिकल्पन है। इस प्रकार पाठ्यचर्या उपागम एक योजना है जिसका अपने छात्रों को अधिगम अनुभव यर्थात क्रियायें प्रदान करने के लिए अध्यापक अनुसरण करते है।

2.2 उद्देश्य इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो जायेंगे कि

- पाठ्यक्रम उपागम का अर्थ समझ सकेंगे।

- विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम उपागम को जान सकेंगे।
- पाठ्यचर्या विकास के चरण को जान सकेंगे।

2.3 पाठ्यक्रम संरचना के उपागम

पाठ्यचर्या डिजाइन एक शब्द है जिसका उपयोग किसी कक्षा या पाठ्यक्रम के भीतर पाठ्यक्रम के उद्देश्यपूर्ण, जानबूझकर और व्यवस्थित संगठन का वर्णन करने के लिए किया जाता है। दूसरे शब्दों में, यह शिक्षकों के लिए शिक्षण की योजना बनाने का एक तरीका है। जब शिक्षक पाठ्यक्रम तैयार करते हैं, तो वे पहचानते हैं कि क्या किया जाएगा, कौन करेगा और किस कार्यक्रम का पालन करना है।

पाठ्यक्रम के संगठन मे कुछ महत्वपूर्ण उपागमो का प्रयोग किया जा सकता है।

1. सामयिक प्रकरण उपागम (Topical Approach)
2. केंद्रित उपागम (Convention Approach)
3. इकाई उपागम (Unit Approach)

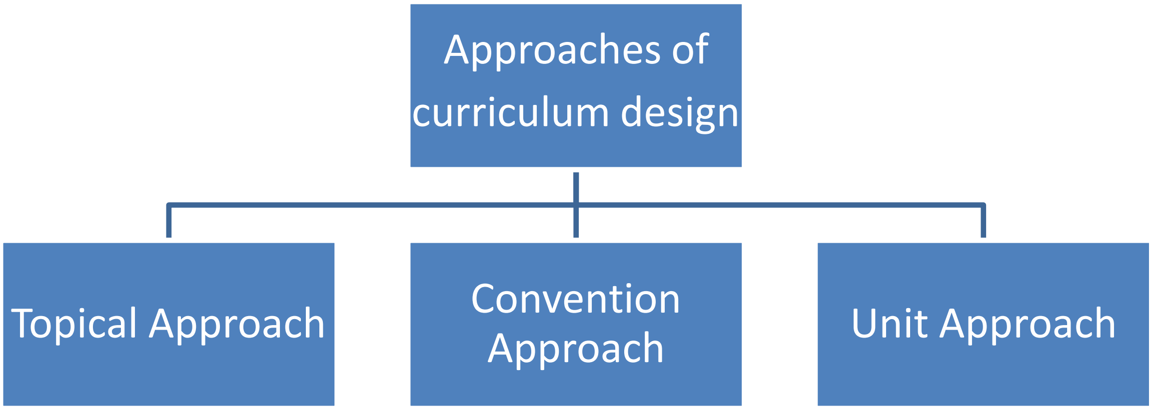

2.3.1 सामयिक प्रकरण उपागमः—

सामयिक प्रकरण उपागम अध्ययन की एक ऐसी विधि है जिसमें शिक्षक एक ऐसे प्रकरण का निर्माण करता है जिसे केंद्रीय प्रकरण के समान प्रयोग किया जाता हैं। तथा पुनः इस प्रकरण का प्रयोग किसी और कक्षा में नही होता। श्रृखला के विभिन्न शीर्षक एक दूसरे से आयाम में अर्न्तसम्बंध रखते है तथा शिक्षक द्वारा बनाये गये केंद्रीय प्रकरण में सभी समायोजित होते हैं। शिक्षक प्रकरण उपागम का निर्माण छात्रों के समक्ष उनकी उम्र, क्षमता एवं रूचि के अनुसार रखा जाता है।

2.3.2 संकेद्रित उपागमः—

संकेद्रित उपागम को हम सर्पित उपागम भी कहते है, यह उपागम सामजिक उपागम के प्रतिकूल चलती है इस उपागम में हम प्रकरण को सम्पूर्ण रचना से सामिल नही कर सकते बल्कि इसमे इस बात का विशेष ध्यान दिया जाता है कि छोटे स्तर की कक्षाओं मे सरल विषय वस्तु रखी जाय एवं उच्च स्तर की भी कक्षाओं में कठिन। इसमें पाठ्यक्रम निर्माण एवं संगठन करते समय छात्रो की शैक्षिक एवं मानसिक स्थिति को ध्यान में रखा जाता है।

इस प्रकार पाठ्यचर्या का संकेद्रित उपागम का सम्बंध विद्यालयी शिक्षण के सम्पूर्ण भावार्थ से है परन्तु इसके प्रभाव के प्रयोग दिन प्रतिदिन शिक्षण पर भी देखा जा सकता है। वर्तमान में दिया जाने वाला ज्ञान पूर्व में दिये गये ज्ञान पर आधारित होता है तथा भविष्य में दिये जाने वाले नवीन ज्ञान पर आधार होता है।

2.3.3 इकाई उपागम :—

पाठ्यक्रम के संगठन के लिए इकाई उपागम का प्रयोग भी किया जा सकता है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम में किसी विशिष्ट कक्षा के लिए चयनित सामग्री का इस प्रकार संगठन करना चाहिए जिसमें प्रत्येक

इकाई एक दूसरे से सम्बंधित हो तथा इस इकाई के संगठन में छात्रों की शैक्षिक स्थिति, रूचि एवं मानसिक स्तर का ध्यान रखा गया हो। इस प्रकार हम पाठ्यक्रम के संगठन में इकाई उपागम का प्रयोग कर सकते

किसी विशिष्ट वर्ग के लिए पाठ्यक्रम के विकास में विभिन्न विषय वस्तुओ अधिगम सामग्री तथा अधिगम अनुभवों के संगठन का कार्य बहुत कुछ पाठ्यक्रम विकास के समय उपलब्ध परिस्थतियों का सही विश्लेषण तथा पाठ्यक्रम के विभिन्न उपागमों का कौशल के साथ पाठ्यक्रम के संगठन में प्रयोग किया जाना चाहिए। उन उपागमों को पाठ्यक्रम की आवश्कता के अनुसार उपागमों के गुण एवं दोषों का विश्लेषण कर इसका प्रयोग करना चाहिए। इस प्रकार एक अच्छे पाठ्यक्रम का निर्माण इन उपागमों की सहायता के लिए किया जा सकता है।

बोध प्रश्नः– टिप्पणी–अपने उत्तरों के लिए निचे दिए गये स्थान का प्रयोग करे।

1 - सामयिक प्रकरण उपागम से आप क्या समझते है।

....

....

2- संकेद्रित उपागम से आप क्या समझते है।

....

....

3- इकाई उपागम से आप क्या समझते है।

....

....

2.4 पाठ्यचर्या विकास के चरण (Steps for Curriculam Design)

पाठ्यचर्या निर्माण की प्रक्रिया एक विशेष प्रक्रिया है इसके अन्तर्गत अधिगम अनुभवों तथा पाठ्यचर्या के क्रिया कलापों के द्वारा लाये जाने वाले परिवर्तनो के मूल्यांकन की साफ समझ होनी आवश्यक है। शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया है इसलिए सामाजिक भिन्नता को ध्यान में रख कर पाठ्यचर्या का स्वरुप विकसित किया जाता है। पाठ्यचर्या निर्माण का कार्य एक विशेष प्रकार का कार्य है इसके लिए इसमें प्राप्त किये जाने वाले उद्देश्यों तथा किये जाने वाले अधिगम अनुभवों और पाठ्यचर्या के क्रिया कलापो द्वारा लाये जाने वाले परिवर्तनो के मूल्यांकन आदि की साफ–सुथरी समझ होनी चाहिए। हमें उस क्रम को अपनाने की जरुरत है जिसमें पाठ्यचर्या विकास से सम्बद्ध निर्णय लिए जाते है। और हमें यह भी निश्चित कर लेने से पहले के सभी सम्बद्व और विचारणीय बिन्दुओ को ध्यान में रखा गया है। एक सुविचारित नियोजन और गतिशील पाठ्यचर्या निर्माण के लिए हमें निम्नलिखित सोपानो का अनुसरण करना चाहिए।

1 शैक्षिक आवश्यकताओ की पहचान

2 उद्देश्यों का निर्धारण

3 विषयवस्तु वाचन एवं संगठन

4 अधिगम अनुभवो का चयन एवं संगठन

5 मूल्यांकन

2–4 .1– शैक्षिक आवश्यकताओ की पहचान :–

पाठ्यचर्या तभी उत्तम कहलाती है, जब पहचान के व्यक्तियों के अनुरुप तैयार की जाय। साथ ही साथ पाठ्यचर्या के द्वारा तय किये जाने वाले महत्वपूर्ण सोपानो में से एक है, आवश्यकतओ का निर्धारण करना। वर्तमान समय को देखते हुए पाठ्यचर्या की आवश्यकता महसूस की जा रही है नये पाठ्यक्रम सामाजिक जीवन को ध्यान में रखकर विकास किया जाना चाहिए। इसके लिए हमें अपने पूर्व पाठ्यचर्या का गहन अध्ययन एवं मूल्यांकन करना होगा। साथ ही साथ लोकतांत्रिक देश की आवश्यकताओं, उपयोगिता, मानवीय मूल्यों आदि को आधार मान कर नवीन ज्ञान एवं अनुसंधान का सहारा लेते हुए पाठ्यचर्या का विकास करना होगा। जिससे देश के नौनिहालो के भविष्य को नवीन दिशा दी जा सकती है।

2–4 .2– शैक्षिक उद्देश्यों का निर्धारण :–

पाठ्यचर्या के उद्देश्यों के निर्धारण से शैक्षिक कार्यक्रमो को दिशा मिलती है। शैक्षिक कार्यक्रमो के नियोजन एवं व्यवस्थिकरण को निश्चित आधार मिलता है। शैक्षिक कार्यक्रमो को क्रमबध्द रुप से प्रस्तुत करने में सहायता मिलती है। अधिगम के विभिन्न पक्षो में विभेदीकरण सम्भव होता है। विकास एवं उपलब्धि के मापन को आधार मिलता है। शैक्षिक कार्यक्रमो की प्राथमिकताओ को सुनिश्यित करने में सहायता मिलती है। शैक्षिक उद्देश्यों के निर्धारण हेतु प्रमुख श्रोत समाज व्यक्ति एवं ज्ञान है। वी. एस. महोदय ने शैक्षिक उद्देश्यों को तीन पक्षो में वर्गीकृत किया जाता है।

(1) **ज्ञानत्मक पक्ष** ज्ञान अवबोध, अनुप्रयोग, विश्लेषण, संश्लेषण , मूल्यांकन।

(2) **भावात्मक पक्ष** आग्रहण या प्राप्ति, अनुक्रिया, अनुमूल्यन, व्यवस्थापन, मूल्य का लक्षण वर्णन।

(3) **क्रियात्मक पक्ष** अनुकरण, हस्तादि प्रयोग अथवा कार्यकरना, सुलक्ष्यता, सन्धियोग, नैसगिकरण।

2.4.3. विषय वस्तु का चयन व संगठन :–

विषय वस्तु के चयन का उद्देश्य इस प्रकार की समझ विकसित करना है कि कैसे एक विषय किसी राष्ट्र के समाज संस्कृति और मूल्यो से प्रभावित होता है। शिक्षको को स्कूली विषय के बारे में जानने के लिए, उन्हे सामग्री के सिद्धान्त सामग्री का चयन कैसे किया जाता है, पाठ्यक्रम कैसे तैयार किया जाना चाहिए और इसमें कैसे बदलाव लाया जा सकता है ताकि शिक्षार्थियों तक इसके माध्यम से अपने ज्ञान की पहुच बनायी जा सके, का अभियान आवश्यक है। पाठ्यचर्या के तत्व के रुप में विषय वस्तु का चयन समाज में शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में महत्वपूर्ण तत्व के रुप में देखा जाता है।

विषय वस्तु का चयन में आमतौर पर लागू किये जाने वाले कुछ मानदण्ड़ है जो विषय वस्तु चयन के लिए आवश्यक है।

(1) शिक्षार्थियों का आत्मसम्मान

(1) सीखने के पक्ष का महत्व

(3) विषय वस्तु की वैद्धता

(4) शिक्षार्थियों के हित

(5) विषय वस्तु की उपयोगिता

2.4.4 अधिगम अनुभवो का चयन एवं संगठनः–

पाठ्यचर्या प्रकल्प आयोजन व ढाँचा व संरचना है जिसका विद्यालय में शैक्षिक अनुभवों के आधार पर चुनने, नियोजित करने तथा क्रियान्वित करने में उपयोग किया जाता है। इस प्रकार प्रकल्प वह योजना हैं जिसका सीखने की क्रियाओं को प्रदान करने के लिए शिक्षक द्वारा अनुसरण किया जाता है।

2.4.5 मूल्यांकन :–

पाठ्यक्रम संरचना का अन्तिम सोपान सम्पूर्ण प्रक्रिया का उद्देश्यों की प्राप्त की दृष्टि से मूल्यांकन करना। पाठ्यक्रम मूल्यांकन का तात्पर्य शैक्षिक प्रयासो के परिणाम स्वरुप उत्पन्न व्यवहारगत परिवर्तनों की प्रकृति दिशा तथा सीमा के प्रमाण प्राप्त करना तथा उसको पाठ्यचर्या प्रक्रिया के पक्षो में सुधार लाने के लिए मार्ग

दर्शन के रुप में प्रयुक्त करना है। मूल्यांकन कार्य में मापन और परीक्षण सम्मिलित होता है। मूल्यांकन में क्रमबद्धता, वस्तुनिठता, विश्वसनीयता तथा वैद्यता होना प्रमुख विशेषता है। साथ ही साथ मूल्यांकन में व्यवहारिकता तथा शिक्षार्थी की सहभागिता भी प्रमुख होता है। इस प्रकार मूल्यांकन पाठ्यचर्या निर्माण की परिशिष्ट न होकर एक अनिवार्य अंग के रुप में है। मूल्यांकन चयन में सहायक आवश्यक प्रद्त्तों को उपलब्ध कराता है तथा यह व्यक्ति अथवा वर्ग की अधिगम त्तपरता बोध कराता है।

2.5 सारांश

हमारा समाज बहुत तेजी से बदल रहा है. कृषि प्रधान समाज से शुरुआत करके अब हम सूचना युग में प्रवेश कर चुके हैं। पाठ्यचर्या विकास एक बार की प्रक्रिया नहीं है। यह एक सतत प्रक्रिया है और मूल्यांकन के आधार पर हम समाज की वर्तमान मांगों के अनुसार पाठ्यक्रम को संशोधित या परिवर्तित करते हैं। किसी भी सामग्री क्षेत्र में नए विकास हो रहे हैं। यदि वर्तमान परिवर्तनों को वर्तमान पाठ्यक्रम में शामिल नहीं किया गया तो छात्र समाज के साथ सामना करने में असमर्थ होंगे। पाठ्यक्रम में परिवर्तन या विकास को शामिल करने के लिए वर्तमान पाठ्यक्रम के मूल्यांकन और नवीनीकरण का एक निश्चित प्रावधान होना चाहिए।

आप इस बात से सहमत हो सकते हैं कि कुछ अवधारणाएँ और प्रथाएँ हैं जो पुरानी हो चुकी हैं और वर्तमान सामग्री में उनका कोई उपयोग नहीं है। ऐसी अवधारणाओं या प्रथाओं को पाठ्यक्रम से पता लगाने की आवश्यकता है। यह तभी संभव है जब पाठ्यक्रम का समय–समय पर मूल्यांकन किया जाए। इच्छित पाठ्यक्रम और परिचालन पाठ्यक्रम के बीच अंतर हो सकता है। इच्छित पाठ्यक्रम से तात्पर्य पाठ्यक्रम दस्तावेज में क्या लिखा गया है, जिसमें इसके संचालन और मूल्यांकन प्रक्रियाएं शामिल हैं। परिचालन पाठ्यक्रम कक्षा में वास्तविक प्रक्रियाओं को संदर्भित करता है जिसके माध्यम से शिक्षक द्वारा इच्छित पाठ्यक्रम का संचालन किया जाता है। इच्छित शैक्षिक प्रणाली के सभी घटकों यानी इनपुट, प्रक्रियाओं और आउटपुट का विश्लेषण करने की आवश्यकता है ताकि आगे संशोधन संभव हो सके। यह पाठ्यक्रम के मूल्यांकन से ही संभव है।

पाठ्यचर्या सामग्री प्रभावी , सार्थक और आवश्यकता आधारित होनी चाहिए। इन्हें शिक्षार्थियों के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तनों में योगदान देना चाहिए, और शिक्षकों और शिक्षार्थियों दोनों के लिए स्वीकार्य होना चाहिए। पाठ्यक्रम विशेष रूप से शिक्षार्थियों और सामान्य रूप से समाज के लिए व्यावहारिक उपयोग का होना चाहिए, और मौजूदा पाठ्यचर्या सेटिंग में अच्छी तरह से फिट होना चाहिए। पाठ्यक्रम के व्यवस्थित मूल्यांकन के माध्यम से इसे सुनिश्चित किया जा सकता है। नए पाठ्यक्रम के विकास पर वस्तुनिष्ठ निर्णय लेने के लिए मौजूदा पाठ्यक्रम का मूल्यांकन भी आवश्यक है। मान लीजिए कि हम माध्यमिक स्तर पर छात्रों के लिए कंप्यूटर शिक्षा के लिए एक नया पाठ्यक्रम विकसित करना चाहते हैं। इसके लिए हमें विभिन्न स्कूल सेटिंग्स या विभिन्न क्षेत्रों में मौजूदा पाठ्यक्रम की समीक्षा करनी होगी । पाठ्यक्रम मूल्यांकन से कंप्यूटर शिक्षा पर मौजूदा पाठ्यक्रम में शामिल किए जाने वाले नए विकास और आवश्यकताओं का पता लगाया जा सकता है।

2.6 बोध प्रश्न के उत्तर

उत्तर –01 प्रकरण उपागम अध्ययन की एक ऐसी विधि है जिसमें शिक्षक एक ऐसे प्रकरण का निर्माण करता है जिसे केंद्रीय प्रकरण के समान प्रयोग किया जाता हैं।

उत्तर –02 संकेद्रित उपागम का सम्बंध विद्यालयी शिक्षण के सम्पूर्ण अवधि से है परन्तु इसके प्रभाव के प्रयोग दिन प्रतिदिन शिक्षण पर भी देखा जा सकता है।

उत्तर –03 पाठ्यक्रम के संगठन के लिए इकाई उपागम का प्रयोग भी किया जा सकता है। इस प्रकार के पाठ्यक्रम में किसी विशिश्ठ कक्षा के लिए चयनित सामग्री का इस प्रकार संगठन करना चाहिए जिसमें प्रत्येक इकाई एक दूसरे से सम्बंधित हो तथा इस इकाई के संगठन में छात्रों की शैक्षिक स्थिति, रूचि एवं मानसिक स्तर का ध्यान रखा गया हो। इस प्रकार हम पाठ्यक्रम के संगठन में इकाई उपागम का प्रयोग कर सकते है।

2.7 अभ्यास कार्य

प्रश्न (1) पाठ्यक्रम निर्माण के प्रमुख सोपान के समन्ध में ।

प्रश्न (2) पाठ्यक्रम संरचना के उपागम को विस्तार से समझाये ।

प्रश्न (3) पाठ्यक्रम पाठ्यचर्या विकास के चरण समझाये ।

प्रश्न (4) पाठ्यक्रम निर्माण विषय वस्तु का चयन व संगठन को विस्तार से समझाये ।

2.8 चर्चा के बिंदु /स्पष्टीकरण

प्रश्न (1) पाठ्यक्रम निर्माण के प्रमुख सोपान पर चर्चा करे .

प्रश्न (2) पाठ्यक्रम विकास के चरण पर चर्चा करे .

2.9 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- शर्मा, आर0 ए0 (2003). पाठ्यक्रम, शिक्षण कला तथा मूल्यांकन. चतुर्थ संस्करण. आर0 लाल0 बुक डिपा.
- मदान, पी0 यादव, पी0 सी0, यादव, पी0 के0 (2017–18). पाठ्यक्रम विकास एवं आकलन. अग्रवाल पब्लिकेशन –
- Dash, B.N. (2010). Curriculum Planning and Development. Dominant Publishers and Distributors.
- सोनकर, के0 (2017)– शिक्षा के सिद्धांत –उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय

इकाई–03 शैक्षिक और गैर शैक्षिक क्षेत्र में पाठ्यचर्या सम्बंधी आवश्यकताएँ

इकाई संरचना

3.1 प्रस्तावना

3.2 उद्देश्य

3.3 पाठ्यचर्या सम्बन्धि शैक्षिक क्षेत्र

3.4 पाठ्यचर्या सम्बन्धि गैर शैक्षिक क्षेत्र

3.5 मूल्यांकन के शैक्षिक और गैर शैक्षिक क्षेत्र

3.6 शैक्षिक मूल्यांकन

3.7 गैर शैक्षिक मूल्यांकन

3.8 शैक्षिक (शैक्षणिक) और गैर शैक्षिक (सह–पाठ्यक्रम) मूल्यांकन में अंतर

3.9 स्कूल–आधारित शैक्षिक और गैर शैक्षिक गतिविधियाँ

3.10 गैर शैक्षिक गतिविधियां

3.10.1 जीवन कौशल

3.10.2 प्रदर्शन और दृश्य कला

3.10.3 मूल्य और दृष्टिकोण

3.10.4 भावात्मक बुद्धि

3.10.5 भावनात्मक प्रबंधन

3.11 एक छात्र के जीवन में सह–शैक्षिक गतिविधियाँ क्यों महत्वपूर्ण हैं

3.12 सारांश

3.13 बोध प्रश्न के उत्तर

3.14 अभ्यास कार्य

3.15 चर्चा के बिंदु /स्पष्टीकरण

3.16 कुछ उपयोगी पुस्तकें

3.1 प्रस्तावना

वर्तमान समय में, हमने ऐसे कई युवाओं को देखा है जिन्होंने ओलंपिक से लेकर मिस यूनिवर्स जैसी प्रतियोगिताओं तक विभिन्न क्षेत्रों में नाम रोशन करके हमारे देश को गौरवान्वित किया है। यदि माता–पिता और मार्गदर्शक न होते तो वे अपरिचित रह जाते और अच्छे अंक प्राप्त करने के दबाव में रहते। पाठ्येतर गतिविधियों में किसी की उत्कृष्टता उन्हें बहुत आगे तक ले जा सकती है, जो कभी–कभी सिर्फ शिक्षा नहीं कर सकती। हमें यह बात भी ध्यान में रखनी होगी कि हर किसी में डॉक्टर या इंजीनियर बनने की चाहत नहीं होती। कुछ लोगों के पास अलग–अलग सपने हो सकते हैं जिनके लिए वे अपने छात्रों को प्राथमिकता देने में सक्षम नहीं हो सकते हैं। ऐसे में हमें उन्हें उनके पसंदीदा क्षेत्र में अपना करियर बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए और पढ़ाई के लिए भी समय निकालना चाहिए। इस तरह, वे दबाव महसूस नहीं करेंगे और दोनों में उत्कृष्टता प्राप्त कर सकते हैं।

पाठ्क्रम में शैक्षिक और गैर शैक्षिक क्षेत्र दोनो का अपना महत्व है। शिक्षण को रोचक, समझने में आसान और प्रभावी बनाने के लिए शैक्षिक में पाठ्यचर्या गतिविधियों का उपयोग किया जाता है। यह लक्ष्यो उद्देश्यों अधिगम अनुभवो, अनुदेशनात्मक संसाधनो और आंकलन को रेखांकित करता है, जो एक विशिष्ट शैक्षिक कार्यक्रम बनाता है।

3.2 उद्देश्य इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो जायेंगे कि

- पाठ्यक्रम के शैक्षिक क्षेत्र को समझ सकेंगे।
- पाठ्यक्रम के गैर शैक्षिक क्षेत्र को परिभाशित समझ सकेंगे।
- पाठ्यक्रम के शैक्षिक और गैर शैक्षिक क्षेत्र में अन्तर कर सकेंगे।
- मूल्यांकन के शैक्षिक और गैर शैक्षिक क्षेत्र को समझ सकेंगे।
- स्कूल–आधारित शैक्षिक और गैर शैक्षिक गतिविधियाँ जान सकेंगे।
- पाठ्यक्रम की आवश्यकता एवं महत्व को समझ सकेंगे।
- पाठ्यक्रम के प्रकारों को समझ सकेंगे।

3.3 पाठ्यचर्या सम्बन्धि शैक्षिक क्षेत्र

अमेरिका में, एक प्रवेश परीक्षा–स्कोलास्टिक एप्टीट्यूड टेस्ट होती है। यह शब्द लैटिन शब्द स्कोलास्टिकस से आया है जिसका अर्थ है स्कूल का। इस शब्द की उत्पत्ति ग्रीक शब्द स्कोलास्टिकोस से हुई है, जिसका अर्थ है सीखने के लिए अपना अवकाश समर्पित करना।

शैक्षिक गतिविधियाँ स्कूली शिक्षा से संबंधित हैं, वे स्कूल के अंदर या बाहर हो सकते हैं। ये गतिविधियाँ पाठ्यक्रम का हिस्सा हैं। इस शब्द की अलग–अलग परिभाषाएँ हैं। कुछ शोधकर्ताओं के अनुसार, स्कोलास्टिक का अर्थ एक ऐसी प्रथा है जो छात्र के मनोवैज्ञानिक, मानसिक, सामाजिक और गतिक प्रदर्शन को प्रभावित करती है। यह व्यापक रूप से इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है।

स्कूल प्रशासन और शिक्षक ऐसी गतिविधियों को करने में छात्रों का मार्गदर्शन करते हैं। ये गतिविधियाँ छात्रों को नैतिक, शारीरिक आदि समझ विकसित करने में मदद करती हैं। ये गतिविधियाँ उन्हें अपने जीवन में नए क्षेत्रों का पता लगाने में मदद करती हैं।

शैक्षिक क्षेत्र में उन क्रियाओ को समाहित करते है जो ज्यादातर कक्ष में सम्पन्न होती है। जैसे पढ़ाना, परीक्षा, पाठ्यक्रम संबंधी जानकारी प्रयोगिक क्रियाओ इत्यादि को समाहित करते है। इनमे हम छात्रो का सत्त मूल्यांकन उनके द्वारा बनाये जाने वाले नोट्स तथा सदन पाठन को समाहित करते है। शैक्षिक क्षेत्र में मुख्यतः विषय सम्बन्धित ज्ञान को ज्यादा प्राथमिकता देते है।

3.4 पाठ्यचर्या सम्बन्धि गैर शैक्षिक क्षेत्र

गैर–शैक्षणिक गतिविधि, जिसे पाठ्येतर गतिविधि के रूप में भी जाना जाता है, लैटिन उपसर्ग अतिरिक्त का एक संयोजन है–जिसका अर्थ है श्बाहर और पाठ्यक्रम शब्द, जिसका अर्थ है दौड़ना, पाठ्यक्रम, करियर कुछ ऐसा जो पाठ्येतर है। जब आप पाठ्येतर गतिविधि में शामिल होते हैं, तो आप अपेक्षा से बाहर जा रहे होते हैं। पाठ्येतर गतिविधियों को हमेशा किताबों के बाहर रुचि का विषय माना गया है और इसे खाली समय में किया जाने वाला कुछ माना जाता है और साथ ही कुछ ऐसा माना जाता है जो 'अच्छे अंक' नहीं लाता है। लेकिन अब समय आ गया है कि वर्जनाओं को खत्म किया जाए और इस तथ्य को स्वीकार किया जाए कि ये गतिविधियां किसी के जीवन का एक महत्वपूर्ण पहलू हैं जो किसी के व्यक्तित्व को आकार देती हैं और आत्मविश्वास का स्तर बढ़ाती हैं। शिक्षा का मतलब केवल कक्षा की चारदीवारी और शिक्षकों द्वारा दिए जाने वाले पाठ तक ही सीमित ज्ञान नहीं है। शिक्षा का अर्थ 'अज्ञानी ना होना' भी है जिसका अर्थ है 'ज्ञान' और हम

केवल तभी जानकार इंसान के रूप में पहचाने जा सकते हैं जब हम दायरे से बाहर जाते हैं, अपनी बाधाओं का विस्तार करते हैं और विभिन्न चीजों में अपना हाथ आजमाते हैं। विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए ये गतिविधियाँ आवश्यक हैं।

पाठ्यक्रम के गैर शैक्षिक क्षेत्र को ज्यादा महत्व देना बच्चो के सर्वागिण विकास के लिए आवश्यक होता है। आज के दौर में छात्रो के लिए गैर शैक्षिक क्रियाओ का अकेला महत्व है। आज विद्यालयों में इससे सयोजित उचित संसाधन उपलब्ध होता है। सुधार की गैर शैक्षिक क्रियाओ पर ज्यादा जोर दे रही है। गैर शैक्षिक क्रियाओ में मुख्यतया योगा, संगीत, नृत्य, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रतियोगिता आदि को समाहित किया गया है।

कभी–कभी जब कोई स्कूल खेल और अतिरिक्त गतिविधियों की पेशकश करता है तो माता–पिता अपने बच्चों को भाग लेने की अनुमति नहीं देते हैं। कुछ विद्यार्थियों को यह भी लगता है कि उन्हें गतिविधियों की आवश्यकता नहीं है। उन्हें बस अपनी किताबों पर ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। कई स्कूलों में, शिक्षकों को माता–पिता को अपने बच्चों को गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति देने के लिए राजी करना पड़ता है। माता–पिता को लगता है कि अतिरिक्त गतिविधियाँ उनके बच्चों का ध्यान उनकी पढ़ाई से भटका देंगी। शैक्षणिक गतिविधियों की तरह ही सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ भी महत्वपूर्ण हैं। जब एक छात्र को शैक्षणिक और सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ कराई जाती हैं तभी छात्र का सर्वांगीण विकास होता है। जो छात्र अतिरिक्त गतिविधियों में भाग लेते हैं उन्हें बेहतर ग्रेड मिलते हैं। इसका कारण वे कौशल हैं जो विभिन्न गतिविधियों में भाग लेने से सीखते हैं। छात्र समय का प्रबंधन करना, संगठनात्मक कौशल और आत्मविश्वास में सुधार करना सीखते हैं। छात्र खुद को बेहतर तरीके से अभिव्यक्त करना भी सीखते हैं। एक बार जब एक छात्र उन गतिविधियों के माध्यम से सफलता प्राप्त कर लेता है जिनके प्रति वह वास्तव में भावुक है तो उसका आत्मविश्वास बेहतर हो जाएगा। एक बार जब बच्चे का आत्मविश्वास बेहतर हो जाता है, तो वह अपने जीवन के सभी पहलुओं में जोखिम लेने के लिए अधिक खुला हो जाएगा।

शिक्षकों और परिवारों के बीच साझेदारी सफल और सर्वगुणसंपन्न छात्रों को विकसित करने में मदद करती है। यह साझेदारी छात्रों को व्यापक दृष्टिकोण और जीवन के अनुभवों से सीखने और बढ़ने के अधिक अवसर प्रदान करती है। खुले संचार और सहयोग के माध्यम से, माता–पिता और शिक्षक किशोरों के लिए सामाजिक, भावनात्मक और शैक्षणिक कौशल विकसित करने के महत्वपूर्ण अवसर पैदा करते हैं। स्कूल की भागीदारी से फर्क पड़ता है. पर वास्तविकता यह है कि सभी स्कूलों में समान संसाधन नहीं हैं। लेकिन अच्छी खबर यह है कि माता–पिता की भागीदारी हर जगह के स्कूलों में वास्तविक अंतर लाती है। हम एक ऐसे राष्ट्र की आशा करते हैं जिसमें सभी युवाओं के पास युवाओं को शिक्षित करने और तैयार करने के लिए आवश्यक संसाधनों वाले स्कूल हों। चाहे आपके स्कूल में वह सब कुछ हो जिसकी उसे आवश्यकता है या वह उससे अधिक का हकदार है, इससे जुड़े माता–पिता फर्क डालते हैं।

बोध प्रश्न–टिप्पणी–अपने उत्तरों के लिए निचे दिए गये स्थान का प्रयोग करे
पाठ्यक्रम सम्बंधित शैक्षिक क्षेत्र को बताये . ...
पाठ्यक्रम सम्बंधित गैर शैक्षिक क्षेत्र को बताये. ....

3.5 मूल्यांकन के शैक्षिक और गैर शैक्षिक क्षेत्र

शैक्षणिक क्षेत्र में ज्यादातर परीक्षा के अंक, नोटबुक रखरखाव और विषय संवर्धन शामिल हैं। दूसरी ओर, सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों में कौशल–आधारित गतिविधियाँ, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा और अन्य

सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ जैसे नृत्य, पेंटिंग, संगीत आदि शामिल हैं। यदि इन जीवन कौशलों को प्रभावी ढंग से विकसित और लागू किया जाए तो छात्र एक अच्छा दृष्टिकोण, आत्मनिर्भरता, मनोसामाजिक क्षमता और पारस्परिक कौशल हासिल करेंगे। सह–शैक्षिक क्षेत्रों में शामिल जीवन कौशल को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया हैरू सोच कौशल, सामाजिक कौशल और भावनात्मक कौशल। पाठ्येतर गतिविधियाँ अंतर्राष्ट्रीय छात्रों को नए लोगों से मिलने और उनके नेटवर्क को व्यापक बनाने में मदद करती हैं। यह युवाओं को यह भी सिखाता है कि अपनी भावनाओं को कैसे व्यक्त करें और उन्हें दबाने से उनके स्वास्थ्य को कैसे नुकसान पहुंच सकता है।

3.6 शैक्षिक मूल्यांकन

शैक्षणिक क्षेत्ररू सत्र के दौरान सभी विषयों के लिए छात्रों का मूल्यांकन विभिन्न विशेषताओं के आधार पर किया जाता है, जिसमें मौखिक और लिखित कक्षा परीक्षा, चक्र परीक्षण, गतिविधि परीक्षण और दैनिक कक्षा प्रदर्शन शामिल हैं। अंग्रेजी और हिंदी में पढ़ने, लिखने और संचार क्षमताओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है।

3.7 गैर शैक्षिक मूल्यांकन

स्कोलास्टिक शब्द का तात्पर्य स्कूलों और शिक्षण से है और इसका अर्थ है या संबंधित स्कूलों और शिक्षण निहितार्थ के आधार पर सह–शैक्षिक की व्याख्या स्कूलों और शिक्षण को प्रभावित नहीं करने वाला के रूप में की जा सकती है। आम तौर पर सह–शैक्षिक प्रतिभाएं वे होती हैं जिन्हें आमतौर पर स्कूलों में पढ़ाया और मूल्यांकन नहीं किया जाता है।

शैक्षिक और गैर शैक्षिक पहलुओं के लक्षण

शैक्षिक पहलुओं में पाठ्यचर्या या विषय–विशिष्ट क्षेत्र शामिल होते हैं, जबकि सह–शैक्षणिक पहलुओं में सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ, जीवन कौशल, मूल्य और दृष्टिकोण शामिल होते हैं। शैक्षणिक क्षेत्रों में, मूल्यांकन अनौपचारिक और आधिकारिक दोनों तरह से किया जाता है, जिसमें निरंतर और आवधिक आधार पर विभिन्न मूल्यांकन दृष्टिकोणों का उपयोग किया जाता है।

3.8 शैक्षिक (शैक्षणिक) और गैर शैक्षिक (सह–पाठ्यक्रम) मूल्यांकन में अंतर

शैक्षणिक क्षेत्र में ज्यादातर परीक्षा के अंक, नोटबुक रखरखाव और विषय संवर्धन शामिल हैं

दूसरी ओर, सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों में कौशल–आधारित गतिविधियाँ, कला शिक्षा, शारीरिक शिक्षा और अन्य सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ जैसे नृत्य, पेंटिंग, संगीत आदि शामिल हैं।

जबकि शैक्षिक पाठ्यक्रमों में दो भाषाएँ, विज्ञान, गणित और सामाजिक अध्ययन शामिल हैं, सह–शैक्षणिक गतिविधियों में मूल्य और दृष्टिकोण, जीवन कौशल, सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ और शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा शामिल हैं।

3.9 स्कूल–आधारित शैक्षिक और गैर शैक्षिक गतिविधियाँ

सतत और व्यापक मूल्यांकन (सीसीई) को व्यवहार में लाने के लिए स्कूली शिक्षा में सह–शैक्षिक और शैक्षिक गतिविधियों को मान्यता दी जानी चाहिए। सीसीई में श्व्यापकश शब्द का तात्पर्य बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का आकलन करना है, जिसमें शैक्षिक और सह–शैक्षिक दोनों आयाम शामिल हैं। शैक्षिक गतिविधियों को दो अलग–अलग श्रेणियों में विभाजित किया गया हैं। योगात्मक और रचनात्मक मूल्यांकन, जिसके दौरान विद्यार्थियों को शैक्षणिक विषयों का ज्ञान प्राप्त होता है। दूसरी ओर, सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ, कार्य शिक्षा, मूल्यों और दृष्टिकोण, दृश्य और प्रदर्शन कला, जीवन कौशल विशिष्ट सह–पाठ्यचर्या क्षेत्रों और शारीरिक और स्वास्थ्य शिक्षा के माध्यम से समाज की समझ विकसित करने पर ध्यान केंद्रित करती हैं। परिणामस्वरूप, स्कूलों को ऐसे पाठ्यक्रम विकसित करने चाहिए जिनमें छात्रों को जीवन की समस्याओं का सामना करने के लिए आवश्यक कौशल सीखने में मदद करने के लिए सह–शैक्षिक और शैक्षिक गतिविधियाँ शामिल हों।

3.10 गैर शैक्षिक गतिविधियां

3.10.1 जीवन कौशल

जीवन कौशल वे क्षमताएं हैं जो बच्चों को स्वस्थ शरीर, दिमाग और भावनाओं को बनाए रखने की अनुमति देती हैं। छात्र स्वयं को समझ सकते हैं और इन प्रतिभाओं का उपयोग करके सहपाठियों और अन्य लोगों के साथ संबंध बना सकते हैं। यदि इन जीवन कौशलों को प्रभावी ढंग से विकसित और लागू किया जाए तो छात्र एक अच्छा दृष्टिकोण, आत्मनिर्भरता, मनोसामाजिक क्षमता और पारस्परिक कौशल हासिल करेंगे। सह–शैक्षिक क्षेत्रों में दस जीवन कौशल शामिल हैं, जिन्हें तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया हैः–

- सोच कौशल
- सामाजिक कौशल और भावनात्मक कौशल।
- सोचने की क्षमता
- स्वयं के प्रति जागरूक होना
- मुद्दों का समाधान
- फैसला करना
- आलोचनात्मक ढंग से सोचना
- डिब्बे से बाहर की सोच
- सामाजिक क्षमताएँ
- दूसरों के साथ संबंध
- संचार जो काम करता है
- समानुभूति
- कार्यस्थल शिक्षा

3.10 .2 प्रदर्शन और दृश्य कला :–

ये क्षमताएं युवाओं को उनकी कलात्मक क्षमताओं को पहचानने और विकसित करने में सहायता करती हैं। यह उन्हें अपने अद्वितीय विचारों, सौंदर्य की भावना और रचनात्मक क्षमता का प्रदर्शन करने के लिए आदर्श स्थान प्रदान करता है।

3.10 .3 मूल्य और दृष्टिकोण –

एक छात्र की उम्र अच्छे दृष्टिकोण और मूल्यों को स्थापित करने के लिए आदर्श होती है। महान विचारों और उदाहरण मूल्यों का पोषण छोटे बच्चों में विभिन्न कहानियों, गीतों, ऐतिहासिक घटनाओं और रोजमर्रा की घटनाओं के माध्यम से ही किया जा सकता है। छात्रों के मूल्यों और दृष्टिकोण को चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है।

- शिक्षकों की धारणाएँ
- सहपाठियों के प्रति दृष्टिकोण
- स्कूल कार्यक्रमों और पर्यावरण के संबंध में दृष्टिकोण
- मूल्य प्रणाली दृष्टिकोण

3.10 .4 भावात्मक बुद्धि –

ये क्षमताएं युवाओं को उनकी भावनाओं, क्रोध और तनाव को समझने और उनसे निपटने में सहायता करती हैं।

3.10 .5 भावनात्मक प्रबंधन–

यह क्षमता युवाओं को उन कारकों को पहचानने में मदद करती है जो उत्तेजना और बेचौनी और तनाव के प्रभाव पैदा करते हैं। परिणामस्वरूप, व्यक्ति सकारात्मक दृष्टिकोण प्राप्त करते हैं और भावनाओं से निपटने के लिए कई तरीके अपनाते हैं

तनाव से निपटना

यह कौशल युवाओं को खुद पर और दूसरों पर अपनी भावनाओं के प्रभाव के बारे में सिखाता है। यह युवाओं को यह भी सिखाता है कि अपनी भावनाओं को कैसे व्यक्त करें और उन्हें दबाने से उनके स्वास्थ्य को कैसे नुकसान पहुंच सकता है। युवा यहां आराम करना भी सीखते हैं, ताकि अपरिहार्य तनाव के कारण होने वाला तनाव स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का कारण न बने।

3.11 एक छात्र के जीवन में सह–शैक्षिक गतिविधियाँ क्यों महत्वपूर्ण हैं?

छात्रों को इतनी सारी गतिविधियों में क्यों शामिल किया जाता है? उन्हें अपनी पढ़ाई पर ध्यान देना चाहिए और समय का सदुपयोग करना चाहिए। मेरे बच्चे को पढ़ाई के अलावा स्कूल में होने वाली हर चीज में गहरी दिलचस्पी है, ये कई माता–पिता की कुछ सामान्य चिंताएँ हैं। क्या वे महत्वपूर्ण हैं या नहीं या समय की बर्बादी हैं?

आइए सबसे पहले समझें कि सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ क्या हैं? वे शिक्षाविदों के साथ–साथ की जाने वाली गतिविधियाँ हैं। उन्हें कक्षाओं के अंदर और बाहर दोनों जगह ले जाया जाता है। सह–पाठयक्रम गतिविधियों को एक स्पष्ट उद्देश्य के साथ पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है।

- इन्हें अकादमिक पाठ्यक्रम के पूरक और अनुभवात्मक शिक्षा की सुविधा के लिए डिजाइन किया गया है जिससे विषय की समझ बढ़ती है।
- उनके द्वारा लाए गए अपार लाभों और महत्वपूर्ण सीख को प्राप्त करने के लिए

अध्यापक छात्रों का समस्या–समाधान, तर्क, आलोचनात्मक सोच, रचनात्मक सोच, संचार और सहयोगात्मक क्षमता विकसित करने में मदद करते हैं। यही कारण है कि शीर्ष सीबीएसई स्कूलों में सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ अनिवार्य हैं। ऐसी कई गतिविधियाँ हैं जो अनिवार्य हैं और साथ ही बहुत सारी गतिविधियाँ वैकल्पिक हैं जिनमें से छात्र अपनी रुचि के आधार पर चुन सकते हैं।

ट्रेंडिंग स्कूल छात्रों के लिए ढेर सारी गतिविधियों की पेशकश करते हैं जो छात्रों को न केवल अधिक रचनात्मक बनने में मदद करते हैं बल्कि खुद को, शक्तियों, रुचि के क्षेत्रों, जुनून आदि की खोज करने में भी मदद करते हैं। जो स्वाभाविक रूप से आता है। इसके अलावा यह व्यक्ति की संतुष्टि, उपलब्धि की भावना, खुशी की भावना को बढ़ाता है और काम करके सीखने की सुविधा भी देता है।

हमारी चिंताओं को शांत करें कि क्या सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों में भाग लेने से शिक्षाविदों का ध्यान भटक जाएगा, कृपया जान लें कि ऐसा नहीं है। जिस गतिविधि में आप रुचि रखते हैं उसमें सक्रिय भागीदारी से आपके मस्तिष्क की कार्यप्रणाली में सुधार होगा। बेहतर एकाग्रता, आत्मविश्वास, सकारात्मक दृष्टिकोण, जीत, हार, समय प्रबंधन कौशल आदि जैसे एक से अधिक तरीकों से लाभ, अंततः शैक्षणिक प्रदर्शन में भी सुधार होगा।

3.12 सारांश

सत्र के दौरान छात्रों का मूल्यांकन सभी विषयों के लिए विभिन्न विशेषताओं के आधार पर किया जाता है, जिसमें मौखिक और लिखित कक्षा परीक्षा, चक्र परीक्षण, गतिविधि परीक्षण और दैनिक कक्षा प्रदर्शन शामिल हैं। अंग्रेजी और हिंदी में पढ़ने, लिखने और संचार क्षमताओं पर विशेष ध्यान दिया जाता है। शैक्षिक पहलुओं में

पाठ्यचर्या क्षेत्र या विषय–विशिष्ट क्षेत्र शामिल होते हैं, जबकि सह–शैक्षणिक गतिविधियों में सह–पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ, जीवन कौशल, मूल्य और दृष्टिकोण शामिल होते हैं। सीसीई में श्व्यापकश शब्द का तात्पर्य बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व विकास का आकलन करना है, जिसमें शैक्षिक और सह–शैक्षिक दोनों आयाम शामिल हैं। जीवन कौशल वे क्षमताएं हैं जो बच्चों को स्वस्थ शरीर, दिमाग और भावनाओं को बनाए रखने की अनुमति देती हैं।

3.13 बोध प्रश्न के उत्तर

- शैक्षिक क्षेत्र में उन क्रियाओ को समाहित करते है जो ज्यादातर कक्ष में सम्पन्न होती है। जैसे पढ़ाना, परीक्षा, पाठ्यक्रम संम्बन्धि जानकारी प्रयोगिक क्रियाओ इत्यादि का समाहित करते है।
- गैर–शैक्षणिक गतिविधि, जिसे पाठ्येतर गतिविधि के रूप में भी जाना जाता है, लैटिन उपसर्ग अतिरिक्त का एक संयोजन है–जिसका अर्थ है श्बाहर और पाठ्यक्रम शब्द, जिसका अर्थ है दौड़ना, पाठ्यक्रम, करियर। गैर शैक्षिक क्रियाओ में मुख्यतया योग , संगीत, नृत्य, खेल, सांस्कृतिक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रतियोगिता आदि को समाहित किया गया है ।

3.14 अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 01–गैर शैक्षिक पाठ्यक्रम बतायें।

प्रश्न 02– शैक्षिक पाठ्यक्रम बतायें।

प्रश्न 03–शैक्षिक और गैर शैक्षिक पाठ्यक्रम में अन्तर।

प्रश्न 04–शैक्षिक और गैर शैक्षिक पाठ्यक्रम का महत्व बतायें।

प्रश्न 05– एक छात्र के जीवन में सह–शैक्षिक गतिविधियाँ क्यों महत्वपूर्ण हैं?

3.14 चर्चा का विषय/स्पष्टीकरण

प्रश्न 01–शैक्षिक और गैर शैक्षिक पाठ्यक्रम का महत्व पर चर्चा करे

प्रश्न 02–एक छात्र के जीवन में सह–शैक्षिक गतिविधियाँ क्यों महत्वपूर्ण हैं, चर्चा करे

3.16 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- शर्मा, आर0 ए0 (2003). पाठ्यक्रम, शिक्षण कला तथा मूल्यांकन. चतुर्थ संस्करण. आर0 लाल0 बुक डिपा.
- मदान, पी0 यादव, पी0 सी0, यादव, पी0 के0 (2017–18). पाठ्यक्रम विकास एवं आकलन. अग्रवाल पब्लिके'ान्स.
- Dash, B.N. (2010). Curriculum Planning and Development. Dominant Publishers and Distributors.
- सोनकर, ए0 के0 (2017). शिक्षा के सिद्धान्त. उत्तर प्रदेश राजर्षि टण्डन मुक्त विश्वविद्यालय।

इकाई–04 वाचन क्षमता और इसका मूल्यांकन

संरचना

4.1 प्रस्तावना

4.2 उद्देश्य

4.3 साक्षरता

4.4 वाचन

4.5 वाचन की पूर्व आवश्यकता

4.6 वाचन का मूल्यांकन

4.7 मूल्यांकन का उद्देश्य एवं महत्व

4.8 वाचन के आकलन के प्रकार

4.9 जाँच मूल्यांकन

4.10 नैदानिक मूल्यांकन

4.11 प्रगति निगरानी मूल्यांकन

4.12 योगात्मक आकलन

4.13 सारांश

4.14 बोध प्रश्न के उत्तर

4.15 अभ्यास प्रश्न चर्चा के बिंदु

4.16 चर्चा के बिंदु /स्पश्टीकरण

4.17 कुछ उपयोगी पुस्तकें

4.1 प्रस्तावना

मनुष्य में संप्रेषण को वाक्पटुता और साक्षरता में वर्गीकृत किया जा सकता है। वाक्पटुता, भाषा का प्राथमिक रूप, में बोलना और सुनना शामिल है, जबकि साक्षरता, संप्रेषण का द्वितीय रूप, में पढ़ना और लिखना शामिल है। वाचन के लिए एक सब्सट्रेट की आवश्यकता होती है जो लिखित सामग्री है। लिखने का अर्थ यह मान लेना है कि जो लिखा गया है उसे कोई पढ़ेगा। भाषा बोलने और सुनने के लिए आधार है, वैसे ही पढ़ने और लिखने के लिए भी आधार भाषा ही हैं। साक्षरता केवल लिखित भाषण नहीं है। यह संप्रेषण की अधिक विशिष्ट, औपचारिक और सटीक शैली पर निर्भर करता है।

मनुष्य का व्यवहार सम्प्रेशणात्मक होता है। केवल मनुष्य के पास जटिल भाषा का उपयोग करके एक–दूसरे से बात करने की क्षमता होती है। संप्रेषण करते समय, सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना जैसी विभिन्न पद्धतियों के माध्यम से ग्रहण और अभिव्यक्ति होती है। यदि सुनने की क्षमता प्रभावित होती है, तो अन्य क्षमताएं भी प्रभावित होती हैं। श्रवण बाधित बच्चों के लिए सुनने की प्राथमिक बाधा, भाषा और वाणी की द्वितीयक बाधा उत्पन्न करती है। चूंकि पढ़ना और लिखना मौखिक भाषा कौशल पर आधारित है, इसलिए साक्षरता कौशल भी प्रभावित होता हैं। श्रवण बाधित बच्चों के लिए पुनर्वास कार्यक्रम का उद्देश्य श्रवण कौशल, वाणी कौशल और साक्षरता कौशल का विकास करना है।

4.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो जायेंगे कि:–

- साक्षरता का अर्थ समझ सकेंगे।
- वाचन कौशल को जान सकेंगे।
- वाचन मूल्यांकन को जान सकेंगे।
- वाचन मूल्यांकन के प्रकार को जान सकेंगे.

4.3 साक्षरता

साक्षरता का अर्थ है साक्षर होना अर्थात पढ़ने और लिखने की क्षमता से सम्पन्न होना। अलग–अलग देशो में साक्षरता के अलग–अलग मानक है। भारत में राष्ट्रीय साक्षरता मिशन के अनुसार अगर कोई व्यक्ति अपना नाम लिखने और पढ़ने की योग्यता हासिल कर लेता है तो उसे साक्षर माना जाता है। साक्षर व्यक्ति खुद के बौद्धिक विकास के साथ–साथ सामाजिक और आर्थिक विकास में भी अपना योगदान देता है। केवल साक्षर व्यक्ति एक सभ्य समाज का निर्माण कर सकता है।

साक्षरता एक संवादात्मक प्रक्रिया है जिसमें पाठक और लेखक अर्थ का एक कार्यशील मॉडल बनाने या लिखने का प्रयास करते हैं। पढ़ने में ग्रहण शामिल है जबकि लिखने में अभिव्यक्ति शामिल है। अर्थ के निर्माण या संरचना के लिए एक साथ कई कौशलों के समन्वय की आवश्यकता होती है जिन्हें साक्षरता कौशल कहा जाता है–कौशल पढ़ने और लिखने दोनों में शामिल होते हैं। पढ़ना लिखित भाषा को समझने की एक प्रक्रिया है, जिसके लिए वर्तनी, शब्द, व्याकरण, संदर्भ नियम और पर्याप्त भाषा जैसे मुद्रित कारकों का ज्ञान आवश्यक है। हालाँकि, भाषा और प्रिंट का ज्ञान यद्यपि महत्वपूर्ण है, लेकिन पर्याप्त साक्षरता कौशल प्राप्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है। व्यक्ति को शब्द, सामाजिक स्थितियों, तार्किक अनुमान नियम और जिस विषय पर वह पढ़ रहा है उसके बारे में ज्ञान होना चाहिए।

4.4 वाचन

भाषा शब्द से ही ज्ञात होता है कि भाषा का मूल रूप उच्चारित रूप है। इसका दृश्टिकोण प्रतीक लिपीवद्ध होता है। मुद्रित रूप लिपीवद्ध रूप का प्रतिनिधि है। अब हम बच्चे को पढ़ाना प्रारम्भ करते है, तो अक्षरो के प्रत्यय हमारे मस्तिश्क को कक्षा भाग में क्रमवद्ध होकर एक तस्वीर बनाते है और हम उसे उच्चारित करते है। वह क्रिया जिसमें शब्दों का अर्थ ध्वनि भी निहित है, वाचन कहलाता है।

कैथरोन के अनुसार “वाचन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है जिसमें दृश्य, श्रव्य प्रतिको का मस्तिस्क के अधिगम केन्द्र से सम्बन्ध निहित हश्े।

लिखित भाषा के ध्वन्यात्मक पाठ को मौखिक पढ़न कहते है, पर विना अर्थ ग्रहण किये पढ़ने को पठन नही कहा जा सकता । पठन की क्रिया में अर्थ ग्रहण करना आवयक होता है। अर्थ ग्रहण किस सीमा तक होता है, यह तो पठन कर्ता के ज्ञान एवं कौशल पर निर्भर करता है।

4.5 वाचन की पूर्व आवश्यकता

- परिमित प्रतीको का ज्ञान होना आवश्यक है अर्थात वर्णमाला का ज्ञान होना जरूरी है।
- प्रतीको के उच्चारण का ज्ञान होना जरूरी है। जैसे क ख ग का उच्चरण कर सके
- वाचक को वर्णमाला या अक्षरो को देखना तथा उनको समझना जरूरी है। उदाहरण, वह जाता है। इसमें व और ह एक साथ है तभी इनका अर्थ समझा जा सकता हैं, जब हम इनको एक साथ पढ़ेंगे.

- बॉये से दॉए ऊपर से निचे पढ़ने की क्षमता और समझ होनी चाहिए .
- किसी भी विषय वस्तु में किसी शब्द का उस सन्दर्भ में अर्थ समझना जरुरी हैं। जैसे सोना के दो अर्थ होते हैं अब वाचक को यह जानना जरूरी होगा की सोना शब्द का प्रयोग किस सन्दर्भ में किया गया हैं।
- वाचन के समय विषय वस्तु के अनुरूप उच्चारण होना चाहिए, अर्थात अति–खड़ीय पहलू की समझ होना जरुरी हैं।
- वाचन के लिए स्मरण शक्ति का होना भी जरुरी हैं।

बोध प्रश्न– टिप्पणी–अपने उत्तरों के लिए निचे दिए गये स्थान का प्रयोग करे
साक्षरता से आप क्या समझते हैं। .   ...
वाचन को परिभाषित करे। .   ...
वाचन की पूर्व आवश्यकता को बताये।   ....

4.6 वाचन का मूल्यांकन

मूल्यांकन शिक्षा का एक अनिवार्य भाग है जिसका उपयोग निर्देश देने के लिए किया जाता है। अच्छे पढ़ने के निर्देश को लागू करने में पहला कदम छात्र के आधारभूत प्रदर्शन को निर्धारित करना है। छात्र विविध पृष्ठभूमियों और साक्षरता कौशल के साथ कक्षा में प्रवेश करते हैं। कुछ छात्र विशेष आवश्यकताओं के साथ कक्षा में प्रवेश कर सकते हैं जिनके लिए पढ़ने में बुनियादी कौशल की समीक्षा की आवश्यकता होती है, जबकि अन्य छात्रों को उस सामग्री में महारत हासिल हो सकती है जिसे शिक्षक पढ़ाना चाहता है। इन विभिन्न छात्र स्तरों के कारण, प्रत्येक छात्र की व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए साक्षरता निर्देश तैयार करना आवश्यक है। व्यक्तिगत आवश्यकताओं को प्रारंभिक और चल रहे पढ़ने के आकलन द्वारा निर्धारित किया जा सकता है।

ये मूल्यांकन शिक्षकों को दिव्यांग छात्रों सहित सभी छात्रों के लिए उचित पाठ विकसित करने और निर्देश में सुधार करने के लिए आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं। उचित मूल्यांकन से प्राप्त जानकारी शिक्षकों को असाधारण छात्रों को सामान्य शिक्षा पाठ्यक्रम तक बेहतर पहुँच प्रदान करने में सक्षम बनाती है।

4.7 मूल्यांकन का उद्देश्य एवं महत्व

अनुसंधान इस बात का प्रमाण प्रदान करता है कि विशिष्ट प्रारंभिक साक्षरता अवधारणाएँ युवा छात्रों की बाद में पढ़ने की उपलब्धि का अनुमान लगा सकती हैं। इन पढ़ने की अवधारणाओं में अक्षर ज्ञान, ध्वन्यात्मक जागरूकता, डिकोडिंग, प्रवाह और समझ शामिल हैं। एक प्रभावी पठन कार्यक्रम में कई उद्देश्यों के लिए इन सभी अवधारणाओं का आकलन शामिल होता है।

एक उद्देश्य उन कौशलों की पहचान करना है जिनकी समीक्षा की आवश्यकता है। मूल्यांकन शिक्षकों को यह

जानकारी प्रदान करता है कि छात्रों के पास कौन से कौशल हैं और उनमें महारत हासिल नहीं है। शिक्षकों को अपने छात्रों के कौशल स्तर को जानने में मदद करने की आवश्यकता है, क्योंकि छात्रों के पास अलग–अलग अनुभव और ज्ञान होते हैं।

दूसरा उद्देश्य छात्र प्रगति की निगरानी करना है। एक शिक्षक यह जान सकता है कि अतिरिक्त सामग्री को कवर करने से पहले किन छात्रों को समीक्षा की आवश्यकता है और कौन से छात्र आगे बढ़ने के लिए तैयार हैं।

तीसरा उद्देश्य शिक्षक निर्देश का मार्गदर्शन करना है। लगातार मूल्यांकन के माध्यम से, एक शिक्षक प्रत्येक छात्र के लिए कौन सा निर्देश उपयुक्त है, इसके बारे में सूचित निर्णय ले सकता है।

चौथा उद्देश्य निर्देश की प्रभावशीलता को प्रदर्शित करना है। मूल्यांकन से प्राप्त जानकारी से शिक्षकों को यह जानने में मदद मिलती है कि क्या सभी छात्र कवर की गई सामग्री में महारत हासिल कर रहे हैं। शिक्षकों के लिए निर्देशात्मक समय का प्रभावी ढंग से उपयोग करना महत्वपूर्ण है, और यह तब किया जा सकता है जब शिक्षकों को इस बात की जानकारी हो कि उनके छात्र क्या सीखने के लिए तैयार हैं और वे पहले से क्या जानते हैं। इसलिए, मूल्यांकन से प्राप्त जानकारी एक शिक्षक को अपने छात्रों के लिए उचित निर्देश बनाने की अनुमति देती है।

इसके अतिरिक्त, मूल्यांकन का पांचवां उद्देश्य शिक्षकों को यह जानकारी प्रदान करना है कि निर्देश को कैसे बेहतर बनाया जा सकता है।

4.8 वाचन के आकलन के प्रकार

यहां चार मुख्य प्रकार के पठन मूल्यांकन हैं जिनका उपयोग स्कूलों में किया जाता हैः–जाँच, नैदानिक, प्रगति, निगरानी, योगात्मक।

4.9 जाँच मूल्यांकन

जाँच मूल्यांकन आम तौर पर वर्ष की शुरुआत, मध्य और अंत में सभी छात्रों पर किया जाता है ताकि उन छात्रों की पहचान की जा सके जिन्हें पढ़ने में कठिनाई का खतरा हो सकता है। वे एक प्रारंभिक संकेत प्रदान करते हैं कि किन छात्रों को स्कूल वर्ष के अंत तक ग्रेड–स्तरीय पढ़ने के मानकों तक पहुंचने के लिए अतिरिक्त निर्देश या गहन हस्तक्षेप की आवश्यकता हो सकती है। इन मूल्यांकनों का लक्ष्य छात्रों के असफल होने से पहले ही उनकी पहचान करना है। कभी–कभी पिछले वर्ष के योगात्मक आकलन की जानकारी का उपयोग स्क्रीनिंग प्रक्रिया के हिस्से के रूप में किया जा सकता है। स्क्रीनिंग मूल्यांकन नैदानिक नहीं हैं–वे इस बारे में विस्तृत जानकारी नहीं देते हैं कि कोई छात्र संघर्ष क्यों कर रहा है।

4.10 नैदानिक मूल्यांकन

नैदानिक मूल्यांकन का उपयोग उन व्यक्तिगत छात्रों के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए किया जाता है जिन्हें पढ़ने में कठिनाई हो सकती है। इन मूल्यांकनों के परिणाम उस कठिनाई का कारण निर्धारित करने में मदद करते हैं, और शिक्षकों को व्यक्तिगत छात्र की जरूरतों के आधार पर उचित पूरक निर्देश या गहन हस्तक्षेप की योजना बनाने में मदद करते हैं। कई प्रकार के नैदानिक मूल्यांकन होते हैं जो अनौपचारिक पढ़ने के कार्यों से लेकर मनो–शैक्षिक परीक्षण के लिए उपयोग किए जाने वाले औपचारिक मूल्यांकन तक होते हैं। वे लंबे होते हैं, लेकिन आवश्यक पढ़ने के कौशल का गहन, विश्वसनीय मूल्यांकन प्रदान करते हैं।

टॉर्गेसन (2006) का कहना है कि नैदानिक परीक्षणों और नैदानिक जानकारी के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है। "नैदानिक जानकारी एक बच्चे के कौशल और क्षमताओं के बारे में कोई भी ज्ञान है जो निर्देश की योजना बनाने में उपयोगी है। यह छात्र कार्य, शिक्षक अवलोकन, या अन्य परीक्षणों के साथ–साथ नैदानिक परीक्षणों से भी आ सकता है। नैदानिक परीक्षण नैदानिक जानकारी प्राप्त करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है जो उन छात्रों के लिए हस्तक्षेप का मार्गदर्शन करने में मदद कर सकता है जो पढ़ना सीखने में कठिनाई का सामना कर रहे हैं। हालाँकि, विश्वसनीय और वैध नैदानिक जानकारी औपचारिक नैदानिक परीक्षणों के अलावा अन्य स्रोतों से भी आ सकती है।

नैदानिक मूल्यांकन केवल उन छात्रों के लिए किया जाना चाहिए जिन्हें पढ़ना सीखने में कठिनाई हो रही है।

4.11 प्रगति निगरानी मूल्यांकन

प्रगति निगरानी मूल्यांकन को कभी–कभी रचनात्मक मूल्यांकन कहा जाता है और यह निर्धारित करने के लिए समय–समय पर दिया जाता है कि छात्र पर्याप्त प्रगति कर रहे हैं या नहीं। इन मूल्यांकनों का प्राथमिक लक्ष्य यह निर्धारित करना है कि क्या उपयोग की जा रही शिक्षण पद्धतियाँ छात्रों को पढ़ने के कौशल के विकास से संबंधित पर्याप्त प्रगति करने में सक्षम बना रही हैं। छात्रों की सीखने की क्षमता को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है। प्रगति की निगरानी यह सुनिश्चित करने के लिए विशेष रूप से सहायक है कि पढ़ने में कठिनाई के जोखिम वाले छात्र पर्याप्त प्रगति कर रहे हैं और ऐसे किसी भी छात्र की पहचान करने के लिए जो पीछे रह सकते हैं।

प्रगति निगरानी परीक्षण दो प्रकार के होते हैं। पाठ्यचर्या– प्रगति परीक्षण यह आकलन करते हैं कि छात्रों ने पढ़ने के कार्यक्रम की वर्तमान इकाई में पढ़ाई गई सामग्री को किस हद तक सीखा है। वे शिक्षक को यह पहचानने में मदद करते हैं कि किन छात्रों ने सामग्री में महारत हासिल की है और क्या कक्षा कार्यक्रम में अगली इकाई पर जाने के लिए तैयार है। इन परीक्षणों की विश्वसनीयता या वैधता के बारे में जानकारी नहीं हो सकती है, लेकिन वे उपयोगी हैं क्योंकि वे इससे संबंधित जानकारी प्रदान करते हैं कि छात्रों ने क्या सीखा है जो अभी सिखाया गया है।

दूसरे प्रकार के प्रगति निगरानी परीक्षण पढ़ने के कौशल को मापते हैं (उदाहरण के लिए, ध्वन्यात्मक जागरूकता, ध्वन्यात्मकता, प्रवाह, शब्दावली, समझ) लेकिन पढ़ने के कार्यक्रम से बंधे नहीं हैं। विकासात्मक अनुसंधान पर आधारित ये आकलन, स्कूल वर्ष की शुरुआत, मध्य और अंत के लिए लक्ष्य स्थापित करते हैं जो ग्रेड–स्तरीय पढ़ने के मानकों को पूरा करने में सफलता की भविष्यवाणी करते हैं।

4.12 योगात्मक आकलन

योगात्मक आकलन को कभी–कभी परिणाम आकलन भी कहा जाता है। सबसे आम मानकीकृत परीक्षण हैं जो समूह प्रशासित होते हैं और स्कूल के नेताओं और शिक्षकों को उनके पढ़ने के पाठ्यक्रम और कार्यक्रम की समग्र प्रभावशीलता के बारे में प्रतिक्रिया देने के लिए उपयोग किए जाते हैं। वे आम तौर पर स्कूल वर्ष के अंत में दिए जाते हैं। किसी निश्चित समय पर विद्यार्थियों के सीखने को मापने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इन मूल्यांकनों के परिणाम यह निर्धारित करने में मदद करते हैं कि क्या स्कूल में सभी शिक्षकों द्वारा प्रदान किया गया निर्देश प्रत्येक वर्ष के अंत तक सभी छात्रों को ग्रेड–स्तरीय पढ़ने के मानकों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए पर्याप्त है।

4.13 सारांश

साक्षरता विकास आपके बच्चे के समग्र विकास का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह स्कूल में अच्छा प्रदर्शन करने, दूसरों के साथ मेलजोल बढ़ाने, समस्या सुलझाने, निर्णय लेने, स्वतंत्रता विकसित करने, पैसे का प्रबंधन करने और काम करने की नींव है।

लेकिन इससे पहले कि बच्चे पढ़ना और लिखना सीखें, उन्हें साक्षरता के लिए बुनियादी ढांचा विकसित करने की जरूरत है–बोलने, सुनने, समझने, देखने और चित्र बनाने की क्षमता।

संप्रेषण आपके बच्चे के बड़े होने पर बोलने, सुनने और समझने की क्षमता विकसित करने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, आप देख सकते हैं कि आपका शिशु आपकी मुस्कुराहट और आपके शब्दों पर प्रतिक्रिया करता है। आपका शिशु आपकी आवाज और चेहरे के भावों की नकल करने की कोशिश कर सकता है। जब आप प्रतिक्रिया देते हैं, तो यह दोतरफा बातचीत को प्रोत्साहित करता है और आपके बच्चे को शब्द सीखने और भाषा कौशल विकसित करने में मदद करता है।

4.14 बोध प्रश्न के उत्तर

उत्तर 01. साक्षरता का अर्थ है साक्षर होना अर्थात पढ़ने और लिखने की क्षमता से सम्पन्न होना।

उत्तर 02 कैथरोन के अनुसार "वाचन वह जटिल अधिगम प्रक्रिया है जिसमें दृश्य, श्रव्य प्रतिको का मस्तिस्क के अधिगम केन्द्र से सम्बन्ध निहित है।

उत्तर 03 परिमित प्रतीको का ज्ञान, विषय वस्तु के अनुरूप उच्चारण, किसी शब्द का उस सन्दर्भ में अर्थ समझना तथा वाचन के लिए स्मरण शक्ति का होना भी जरुरी हैं

4.15 अभ्यास प्रश्न

प्रश्न 1–साक्षरता को परिभाषित करे।

प्रश्न 2–वाचन कौशल से आप क्या समझते हैं।

प्रश्न 3–वाचन का मूल्यांकन कैसे करेंगे।

प्रश्न 4–वाचन मूल्यांकन के प्रकार बताये।

4.16 चर्चा के बिंदु /स्पष्टीकरण

प्रश्न 01– साक्षरता कौशल का विकास पर चर्चा करे।

प्रश्न 02– वाचन कौशल के विकास की विभिन्न गतिविधियों पर चर्चा करे।

4.17 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- शर्मा, आर0 ए0 (2003). पाठ्यक्रम, शिक्षण कला तथा मूल्यांकन. चतुर्थ संस्करण. आर0 लाल0 बुक डिपा.
- मदान, पी0 यादव, पी0 सी0, यादव, पी0 के0 (2017–18). पाठ्यक्रम विकास एवं आकलन. अग्रवाल पब्लिकेशन
- Dash, B.N. (2010). Curriculum Planning and Development. Dominant Publishers and Distributors.
- Ling D.and Ling A, (1980). Aural Habilitation. A.G. Bell Association for the deaf.
- Cochlear ltd. (2003). Listen, Learn and Talk.
- Pollock D. (1985). Educational Audiology for the limited learning infant.

इकाई–05 वाचन कौशल के विकास के उपागम तथा रणनीतियां तथा स्वतंत्र वाचन

इकाई संरचना

5.1 प्रस्तावना

5.2 उद्देश्य

5.3 वाचन कौशल को विकसितरने के लिए उपागम

- 5.3.1 ध्वन्यात्मकता–आधारित उपागम
- 5.3.2 संपूर्ण–भाषा पढ़ने का उपागम
- 5.3.3 बहुसंवेदी उपागम

5.4 वाचन कौशल विकसित करने के लिए रणनीतियाँ और तकनीकें

- 5.4.1 ध्वनिक हाइलाइटिंग
- 5.4.2. मॉडलिंग की नकल
- 5.4.3. श्रवण प्रतिक्रिया
- 5.4.4. रुकना और इंतजार करना
- 5.4.5. श्रवण, दृश्य, काइनेस्टेटिक
- 5.4.6. श्रवण प्रशिक्षण
- 5.4.7. पर्यावरणीय ध्वनियों का भेदभाव
- 5.4.8. भाषण शिक्षण
- 5.4.9. रचनात्मक लेखन

5.5. पढ़ने की समझ के कौशल को बेहतर बनाने के लिए रणनीतियाँ

- 5.5.1. अपनी शब्दावली में सुधार करें
- 5.5.2. आप जो पाठ पढ़ रहे हैं उसके बारे में प्रश्न पूछें
- 5.5.3. संदर्भ संकेत का प्रयोग करें
- 5.5.4. मुख्य विचार की तलाश करें
- 5.5.5. आपने जो पढ़ा है उसका सारांश लिखें
- 5.5.6. पढ़ने को छोटे–छोटे खंडों में बाँट लें
- 5.5.7. अपने आप को गति दें

5.6 पढ़ने की समझ के अभ्यास का अधिकतम लाभ उठाने के लिए युक्तियाँ

- 5.6.1. विकर्षणों को दूर करें
- 5.6.2. अपने पढ़ने के स्तर से नीचे की किताब पढ़ें
- 5.6.3. समझ सुनिश्चित करने के लिए पाठ को दोबारा पढ़ें
- 5.6.4. जोर से पढ़ें

5.7. स्वतंत्र वाचन

5.8. स्वतंत्र वाचन का उद्देश्य

5.9. सारांश

5.10. बोध प्रश्न के उत्तर

5.12. अभ्यास कार्य

5.13 चर्चा के बिंदु /स्पश्टीकरण

5.14. कुछ उपयोगी पुस्तकें

5.1 प्रस्तावना

वाचन की समझ के लिए सबसे अच्छा तरीका समझ रणनीतियों का अभ्यास करना है। इनमें आपके पढ़ने के कौशल में सुधार करना, आपकी शब्दावली को बढ़ाना और आपके आलोचनात्मक सोच कौशल को विकसित करना शामिल है, लेकिन यह इन्हीं तक सीमित नहीं है।

किसी भी पाठ को समझने के लिए पढ़ने की समझ महत्वपूर्ण है। यह बच्चों और वयस्कों दोनों के लिए महत्वपूर्ण है। इससे सीखने में सुधार होता है और काम में बेहतर प्रदर्शन होता है।

यदि आप ठीक से समझ नहीं पा रहे हैं कि पढ़ने की समझ क्या है और इसकी प्रमुख रणनीतियाँ क्या हैं, तो यह पोस्ट आपको कवर कर देगी।

इसके अलावा, यह लेख आपको पढ़ने की समझ के लिए सर्वोत्तम दृष्टिकोण की ओर मार्गदर्शन करेगा।

बच्चों के सामान्य विकास के लिए पढ़ने की समझ सिखाना जरूरी है। यह उनके दिमाग को पाठ से अर्थ निकालने और समस्या–समाधान के लिए इसका उपयोग करने के लिए मजबूत बनाता है। यह उन्हें किसी पाठ की सामग्री का वर्णन या सारांश करने में बेहतर बनाता है।

वयस्क भी अभ्यास के साथ अपनी पढ़ने की क्षमताओं को निखारकर अपनी समझ के कौशल में सुधार कर सकते हैं। इससे उनके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है। बेहतर समझ आपको अधिक स्पष्ट और अभिव्यंजक बना सकती है।

5.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप इस योग्य हो जायेंगे किः–

- वाचन कौशल को विकसित करना।
- वाचन कौशल के विकास के उपागम को समझना।
- वाचन कौशल के विकास की रणनीतियां।
- स्वतंत्र वाचन को समझना।

5.3 वाचन कौशल को विकसित करने के लिए उपागम

गिग्स (2000) के अनुसार, पढ़ना सीखने की चार मुख्य विधियाँ हैं। विधियों में ध्वन्यात्मक, शब्दांश और एक्लेक्टिक और 'देखो और कहने' की विधियाँ शामिल हैं। फोनिक विधि सबसे प्रसिद्ध और व्यापक रूप से उपयोग की जाने वाली विधि है। यह बच्चों द्वारा पहले एक साथ वर्णमाला सीखने पर निर्भर करता है। वे अक्षरों के नाम और उनसे निकलने वाली ध्वनियाँ सीखते हैं। जिसके बाद वे सरल शब्द बनाने के लिए दो अक्षरों को एक साथ मिलाना शुरू करते हैं। प्रत्येक शब्द को बच्चे द्वारा उच्चारित किया जाना चाहिए ताकि ध्वनि जिस छवि का प्रतिनिधित्व करती है, उसके साथ ध्वनि का मिलान करके उसका अर्थ निकाला जा सके। 'देखो और

कहो' विधि एक अन्य विधि है जहां बच्चे या शिक्षार्थी से लिखित शब्द को देखने और उसे कहने की अपेक्षा की जाती है। इसमें कभी–कभी अर्थ समझे बिना ही एक शब्द कहना शामिल हो जाता है। श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए, यह विधि केवल रूप और संकेत के बारे में है। दुर्भाग्य से कुछ शब्द अनायास कोई संकेत नहीं दे पाते जिससे शिक्षार्थियों के लिए समझ के लिए पढ़ना बहुत चुनौतीपूर्ण हो जाता है। सिलेबिक विधि एक ऐसी विधि है जहां व्यंजन और स्वर ध्वनियों का उपयोग करके एक शब्दांश या ध्वनि उत्पन्न करने के लिए एक साथ मिश्रित किया जाता है। शब्दांश या ध्वनियाँ शब्द, वाक्य और कहानियाँ बनाती हैं। पढ़ने की एक्लेक्टिक विधि पढ़ने की सभी विधियों को जोड़ती है जिसमें ध्वन्यात्मक, शब्दांश और देखो और कहो शामिल हैं।

श्रवण बाधित बच्चे से जब पढ़ने के उपरोक्त तरीकों का उपयोग करने की अपेक्षा की जाती है तो उसे नुकसान होता है। ध्वनि विधि में श्रवण प्रक्रिया के माध्यम से ध्वनि का उपयोग शामिल होता है जो उनके लिए क्षीण होता है। सिलेबिक विधि में अक्षरों की ध्वनि भी शामिल होती है जिसे बहरे नहीं कर सकते क्योंकि उनमें से कई के पास बोलने की क्षमता नहीं होती है। देखना और कहना या संकेत करना एक बेहतर तरीका है लेकिन फिर भी यह एक चुनौती है क्योंकि सभी शब्दों में उनके अनुरूप संकेत नहीं होते हैं। इसके अलावा, वे शब्द का अर्थ समझे बिना केवल संकेत प्रदान कर सकते हैं।

छोटे बच्चों के लिए पढ़ने के सबसे प्रभावी तरीके की पहचान करना लंबे समय से तीखी बहस का विषय रहा है। पढ़ने के कई तरीके हैं जो आमतौर पर उपयोग किए जाते हैं। मैक्कार्थी (2015) के अनुसार, शिक्षार्थियों द्वारा अधिकतर उपयोग किए जाने वाले कुछ पढ़ने के दृष्टिकोण ध्वनि–आधारित दृष्टिकोण, संपूर्ण–भाषा दृष्टिकोण और एक संतुलित दृष्टिकोण हैं।

5.3.1. ध्वन्यात्मकता–आधारित उपागम

ध्वन्यात्मक –आधारित उपागम बच्चे के दिमाग में भाषा के ग्रैफेम्स (लिखित प्रतीकों) और फोनेम्स (ध्वनियों) के बीच संबंध बनाने की कोशिश करता है । पाठ और ध्वनि के बीच इस संबंध को विकसित करने के लिए दोहराए जाने वाले अभ्यासों के उपयोग के माध्यम से, एक शिक्षार्थी से लिखित पाठ के बुनियादी निर्माण खंडों के साथ परिचित और सहज होने की उम्मीद की जाती है। एक बार जब बच्चा यह दक्षता हासिल कर लेता है, तो उसे पूरे शब्द बनाने के लिए अलग–अलग लिखित तत्वों को एक साथ मिलाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। हालाँकि, गंभीर श्रवण हानि वाले शिक्षार्थियों को ध्वन्यात्मक पढ़ने के उपागम से अधिक लाभ नहीं होता है क्योंकि यह उपागम ध्वनि के उपयोग पर जोर देता है क्योंकि वे ध्वनि के रूप में प्रस्तुत उत्तेजनाओं को नहीं समझते हैं।

5.3.2. संपूर्ण–भाषा पढ़ने का उपागम

संपूर्ण भाषा पढ़ने का उपागम शुरुआत से ही समझ पर केंद्रित होता है, जिसमें शब्दावली और अर्थ की समझ बनाने के लिए शिक्षार्थियों को पढ़ने के लिए निरंतर पाठ दिए जाते हैं। ये पाठ छोटे हैं, अक्सर कुछ प्रमुख शब्दों और अवधारणाओं से परिचित होने में मदद के लिए शब्दों को दोहराया जाता है (बोमेन्ज, 2010)। संपूर्ण भाषा उपागम शिक्षार्थी की समृद्ध शब्दावली की नींव पर आधारित है, जो दुर्भाग्य से श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए एक बड़ी चुनौती है, जिनकी मुख्य चुनौती सीमित शब्दावली और पढ़े गए पाठ का अर्थ निकालने की क्षमता है।

5.3.3. बहुसंवेदी उपागम

बहुसंवेदी उपागम एक ऐसा उपागम है जो एक समय में एक से अधिक इंद्रियों को शामिल करता है (मैककार्थी, 2015)। डिस्लेक्सिया जैसी पढ़ने की समस्या वाले बच्चों के लिए दृष्टि, श्रवण, गति और स्पर्श का उपयोग सीखने में सहायक हो सकता है। बोलने और पढ़ने के साथ गति के संयोजन का सिद्धांत भाषा सीखने के अन्य स्तरों पर भी लागू होता है। संज्ञा की परिभाषा याद रखने में मदद के लिए शिक्षार्थी हाथ के इशारे सीख सकते हैं। शिक्षार्थी वाक्य बनाने के लिए शब्द कार्डों में हेरफेर कर सकते हैं या वाक्यों में शब्दों को भौतिक रूप से श्रेणियों में स्थानांतरित करके वर्गीकृत कर सकते हैं। सिबर्ट एट अल (2004) के अनुसार, अधिकांश शिक्षण पाठ्यक्रम केवल श्रवण–दृश्य शिक्षार्थी को पूरा करते हैं। हालाँकि कुछ छात्रों के लिए सीखना स्वाभाविक नहीं है, इस तरह उन्हें अधिक आगे बढ़ने या स्पर्श परियोजनाओं के माध्यम से सीखने की आवश्यकता होती है। ये वही छात्र हैं जो पढ़ने, लिखने, सीखने और समझने के लिए इतना संघर्ष करते हैं,

उनके पास इतने सारे उपहार हैं जिन्हें वे नहीं देखते हैं। इसलिए पढ़ने के लिए बहु संवेदी उपागम श्रवण बाधित शिक्षार्थियों के लिए सबसे पसंदीदा उपागम है क्योंकि यह उन्हें अन्य इंद्रियों का उपयोग करने का अवसर प्रदान करता है क्योंकि उनका श्रवण चैनल खराब होता है।

यह बताना बहुत महत्वपूर्ण है कि पढ़ने में कई रणनीतियाँ हैं जैसे स्किमिंग, स्कैनिंग और विवरण के लिए पढ़ना। हेज (2000) में उद्धृत पुघ (1978) और लूंजर और गार्डनर (1979) ने पढ़ने की विभिन्न रणनीतियों का वर्णन किया है।

ग्रहणशील पढ़ना–

यह आनंद और मनोरंजन के लिए कोई कहानी या अखबार का लेख पढ़ना है।

चिंतनशील पढ़ना –

यह एक पाठ को पढ़ रहा है और फिर, जाँच के लिए बैकट्रैकिंग करके पुनः पढ़ रहा है।

स्किमिंग–

यह वह रणनीति है जिसमें शिक्षार्थी को ऐसी पठन सामग्री से अवगत कराया जाता है जिसके बारे में वह निश्चित या निश्चित नहीं होता है। यहां, शिक्षार्थी केवल मुख्य विवरण देखता है।

स्कैनिंग–

यह वह रणनीति है जिसमें शिक्षार्थी को किसी सामग्री से अवगत कराया जाता है कि उसे इसके बारे में कुछ जानकारी है। यहां, शिक्षार्थी कुछ जानकारी की तलाश करता है।

विवरण के लिए पढ़ना (गहन पढ़ना) सटीक जानकारी प्राप्त करने के लिए शिक्षार्थी ध्यानपूर्वक पढ़ते हैं

बोध प्रश्न

टिप्पणी–अपने उत्तरों के लिए निचे दिए स्थान का प्रयोग कीजिए।

प्रश्न 1. वाचन कौशल को विकसित करने के लिए कौन कौन से उपागम है

....

प्रश्न 2. बहुसंवेदी उपागम से आप क्या समझते है

....---

5.4. वाचन कौशल विकसित करने के लिए रणनीतियाँ और तकनीकें

हाथ के संकेतों का उपयोग ज्यादातर शिक्षक श्रवण बाधित बच्चों को सचेत करने के लिए करते हैं कि कोई उनसे बात कर रहा है और उन्हें ध्यान देने और सुनने की जरूरत है। शिक्षक मुंह को थोड़ा ढकने के लिए हाथ के संकेतों का उपयोग करते हैं, लेकिन ध्यान रखें कि हाथ के संकेतों से ध्वनिक जानकारी पर प्रतिकूल प्रभाव न पड़े। नकल या सहज भाषण के माध्यम से बच्चे को प्रतिक्रिया देने के लिए प्रेरित करने के लिए हाथ के संकेतों का भी उपयोग किया जाता है।

5.4.1. ध्वनिक हाइलाइटिंग–

ध्वनिक हाइलाइटिंग वह भाषण है जिसका उपयोग श्रवण हानि वाले छोटे बच्चों के साथ बात करते समय भाषण को अधिक श्रव्य बनाने के लिए किया जाता है। इससे उन्हें भाषा सीखने और भाषा को प्रासंगिक रूप से समझने में मदद मिलती है। शिक्षक किसी शब्द में ध्वनि या वाक्य में शब्दों को उजागर करते हैं, और ऐसा करते समय लय बदलते हैं। एक वाक्य में कुछ घटकों पर जोर दें यानी बोली जाने वाली भाषा में अति खंडीय पहलू।

5.4.2. मॉडलिंग की नकल–

मॉडलिंग नकल एक ऐसी तकनीक है जिसका उपयोग श्रवण हानि वाले बच्चों को भाषण या भाषा सिखाने के लिए किया जा सकता है। उन बच्चों के लिए जो व्याकरणिक रूप से सही वाक्य का उच्चारण या हस्ताक्षर नहीं करते हैं, शिक्षक वाक्य को पूर्ण या आंशिक रूप से मॉडल कर सकते हैं। सहकर्मी भी भाग ले सकते हैं।

5.4.3. श्रवण प्रतिक्रिया–

श्रवण प्रतिक्रिया का उपयोग बच्चों को दूसरों के भाषण पैटर्न के साथ उनकी आवाज उत्पादन का मिलान करके सहज भाषण का अनुकरण करने या उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है और इस प्रकार उनके स्वयं के भाषण उत्पादन की निगरानी की जाती है। इस प्रत्यक्ष श्रवण प्रतिक्रिया के अलावा, बच्चों को श्रोता की प्रतिक्रियाओं से उनके गायन और भाषण पर अप्रत्यक्ष प्रतिक्रिया मिलती है, जो उनके उत्पादन की गुणवत्ता को और मजबूत करती है।

5.4.4. रुकना और इंतजार करना–

रुकना और प्रतीक्षा करना श्रवण बाधित बच्चों को श्रवण संबंधी जानकारी संसाधित करने में अधिक समय लग सकता है, इसलिए रुकने और प्रत्याशा के साथ प्रतीक्षा करने की तकनीक बच्चे को वक्ता के दोहराने की प्रतीक्षा करने के बजाय सुनने और कार्य पूरा करने के लिए प्रोत्साहित करती है। सुनने पर जोर देने के लिए 'रुकें और फिर पूछें', आपने क्या सुना।

5.4.5. श्रवण, दृश्य, काइनेस्टेटिक

श्रवण, दृश्य, काइनेस्टेटिक (एवीके):– नए शब्द और ध्वन्यात्मकता सीखने के लिए श्रवण मार्ग सर्वोत्तम माना जाता है। इसलिए भाषण भाषा को पहले श्रवण के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है, फिर दृश्य रूप से और अंत में गतिज रूप से (स्पर्शीय रूप में)। इस क्रम को AVK कहा जाता है।

5.4.6. श्रवण प्रशिक्षण

शिक्षिक अपने होठों को ढक कर एक वाक्य कह सकता है और श्रवण बाधित बच्चे से यह अनुमान लगाने के लिए कह सकता है कि उसने जो कहा वह एक बयान, आदेश, अनुरोध या प्रश्न था।

5.4.7. पर्यावरणीय ध्वनियों का भेदभाव–

शिक्षक ऑडियो ध्वनि चला सकते हैं और बच्चे से अनुमान लगाने के लिए कह सकते हैंरू क्या ध्वनि किसी जार को तोड़ने या कप, तश्तरी, प्लेट, कटोरे को तोड़ने की है? क्या ध्वनि मक्खी की धीमी भिनभिनाहट है या तेज भिनभिनाहट या इससे भी तेज भिनभिनाहट?

5.4.8. भाषण शिक्षण–

उचित स्वर अर्थात ठहराव, लय, तनाव और विभक्तियों के साथ पढ़ें। शू में धे जैसी उच्च आवृत्ति ध्वनियों के मॉडलिंग अनुकरण की आवश्यकता हो सकती है

5.4.9. रचनात्मक लेखन–

मेयर को एक पत्र लिखें या अगर मैं एक मक्खी होती विषय पर एक निबंध लिखें

5.5 पढ़ने की समझ के कौशल को बेहतर बनाने के लिए रणनीतियाँ

ऐसी कई पढ़ने की रणनीतियाँ हैं जिन्हें आप अपने पढ़ने की समझ के कौशल को बेहतर बनाने के लिए आज ही लागू कर सकते हैं। आप जितना अधिक अभ्यास करेंगे, आप जो पढ़ रहे हैं उसे समझने में आप उतने ही बेहतर हो जायेंगे। निम्नलिखित सात सरल रणनीतियाँ हैं जिनका उपयोग आप अपने समझने के कौशल पर काम करने के लिए कर सकते हैं

5.5.1 अपनी शब्दावली में सुधार करें–

यह जानने से कि आप जो शब्द पढ़ रहे हैं उनका क्या मतलब है, पाठ के अर्थ को समझने की आपकी क्षमता में सुधार हो सकता है। अपनी शब्दावली सुधारने के लिए, आप यह कर सकते हैं अपनी शब्दावली समझ के वर्तमान स्तर का आकलन करने के लिए एक ऑनलाइन शब्दावली प्रश्नोत्तरी लें सप्ताह में एक या दो बार, उन शब्दों के बारे में खुद से पूछताछ करने के लिए फ्लैशकार्ड का उपयोग करें जिन्हें आप नहीं जानते हैं मौखिक और लिखित संचार में नए सीखे गए शब्दों का उपयोग करने का ध्यान रखें। किसी निश्चित संदर्भ में किसी शब्द का क्या अर्थ है, इसका अनुमान लगाने की अपनी क्षमता में सुधार करने के लिए जितना संभव हो उतना पढ़ें। पढ़ते समय अपरिचित शब्दों की एक सूची बनाएं और उन्हें शब्दकोश में देखें।

5.5.2. आप जो पाठ पढ़ रहे हैं उसके बारे में प्रश्न पूछें–

आप जो पढ़ रहे हैं उसके बारे में प्रश्न पूछने से आपको पाठ में निवेश करने की अनुमति देकर आपकी पढ़ने की समझ को बेहतर बनाने में मदद मिल सकती है। यह आपको उन विषयों, रूपांकनों और पाठ के अन्य घटकों का पता लगाने में सक्षम बनाकर जो आप पढ़ रहे हैं उसके बारे में आपकी समग्र समझ को व्यापक बना सकता है जिनके बारे में आप अन्यथा पूछताछ नहीं करेंगे। निम्नलिखित प्रश्नों के उदाहरण हैं जिन्हें आप पढ़ते समय पूछ सकते हैं

- लेखक ने उस स्थान पर पुस्तक की शुरुआत क्यों की?
- ये दोनों पात्र किस प्रकार का रिश्ता साझा करते हैं?
- पुस्तक में इस बिंदु तक हम मुख्य पात्र के बारे में क्या जानते हैं?
- क्या ऐसे कोई विषय हैं जो पूरी किताब में लगातार सामने आए हैं? यदि हां, तो उनका क्या मतलब है?

आपके प्रश्न जितने अधिक विशिष्ट होंगे, आपको पाठ और उसके अर्थ के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त होने की संभावना उतनी ही अधिक होगी।

5.5.3. संदर्भ संकेत का प्रयोग करें–

संदर्भ सुरागों का उपयोग यह समझने का एक शानदार तरीका है कि आप क्या पढ़ रहे हैं, भले ही आप उपयोग की जा रही सभी शब्दावली को नहीं जानते हों। संदर्भ सुराग उस शब्द के आसपास के शब्दों और वाक्यों में पाए जा सकते हैं जिनसे आप परिचित नहीं हैं। संदर्भ सुरागों का उपयोग करने के लिए, आप एक वाक्य में मुख्य वाक्यांशों या विचारों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और इस जानकारी के आधार पर एक वाक्य या पैराग्राफ का मुख्य विचार निकाल सकते हैं। आप आस–पास के ऐसे शब्दों को भी खोज सकते हैं जो उस शब्द के पर्यायवाची या विलोम हैं जिन्हें आप नहीं जानते हैं।

5.5.4. मुख्य विचार की तलाश करें–

किसी अनुच्छेद या लेख के मुख्य विचार की पहचान करने से आपको लेख के महत्व को निर्धारित करने में मदद मिल सकती है। यह समझने से कि आप जो पढ़ रहे हैं वह महत्वपूर्ण क्यों है, आपको इस बात की बेहतर समझ मिल सकती है कि लेखक क्या कहना चाह रहा है। पढ़ते समय, कुछ पैराग्राफ को रोकें और देखें कि क्या आप समझ सकते हैं कि मुख्य विचार क्या है। फिर, और अधिक समझने के लिए मुख्य विचार को अपने शब्दों में रखने का प्रयास करें।

5.5.5. आपने जो पढ़ा है उसका सारांश लिखें–

आपने जो पढ़ा है उसके बारे में अपना ज्ञान बढ़ाने का एक शानदार तरीका सारांश लिखना है। सारांश के लिए आपको यह तय करना होगा कि पाठ में क्या महत्वपूर्ण है और फिर उसे अपने शब्दों में कहें। संक्षेपण आपको यह निर्धारित करने की अनुमति देता है कि आपने जो पढ़ा है उसे आप वास्तव में समझते हैं या नहीं और जो आपने पढ़ा है उसे लंबे समय तक बेहतर ढंग से याद रखते हैं।

5.5.6 पढ़ने को छोटे–छोटे खंडों में बाँट लें–

यदि आप लंबा या अधिक चुनौतीपूर्ण पाठ पढ़ रहे हैं, तो इसे छोटे खंडों में विभाजित करने पर विचार करें। उदाहरण के लिए, आप एक समय में दो पैराग्राफ पढ़ सकते हैं और फिर जो कुछ आपने अभी पढ़ा है उसे तुरंत संक्षेप में बताने के लिए रुक सकते हैं। आप जो पढ़ रहे हैं उसे विभाजित करने से आपको कम तनाव महसूस करने में मदद मिल सकती है और आपको पाठ में दी गई जानकारी को सही मायने में समझने का बेहतर मौका मिल सकता है।

5.5.7. अपने आप को गति दें–

अपने पढ़ने के अभ्यास और आदतों के लिए यथार्थवादी लक्ष्य निर्धारित करने की अनुमति देकर अपने पढ़ने की समझ के कौशल पर काम करने के लिए खुद को गति देना भी एक प्रभावी तरीका है। यह उन किताबों या अन्य साहित्य के लिए विशेष रूप से सच है जो आपको चुनौतीपूर्ण लगते हैं। अपने लिए एक लक्ष्य निर्धारित करें जिसे आप जानते हैं कि आप हर दिन पूरा कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, यह कहने के बजाय कि आप दो दिनों में एक पूरी किताब पढ़ना चाहते हैं, कहें कि आप एक रात में तीन अध्याय पढ़ेंगे। यह आपको अपने लक्ष्यों तक पहुंचने की अनुमति देता है और प्रत्येक सत्र के बीच आप जो पढ़ रहे हैं उसे संसाधित करने के लिए पर्याप्त समय भी प्रदान करता है।

5.6. पढ़ने की समझ के अभ्यास का अधिकतम लाभ उठाने के लिए युक्तियाँ

पढ़ना रोजमर्रा की जिंदगी का एक मूलभूत हिस्सा है। जितना अधिक आप पढ़ने और जो पढ़ा है उसे समझने में शामिल करेंगे और प्राथमिकता देंगे, आपकी समग्र पढ़ने की समझ उतनी ही बेहतर होगी। ये युक्तियाँ आपके पढ़ने के कौशल का अभ्यास करते समय आपके समय का अधिकतम उपयोग करने में आपकी सहायता कर सकती हैं।

5.6.1. विकर्षणों को दूर करें–

जब आप विचलित होते हैं, तो आप जो पढ़ रहे हैं उसे समझने की आपकी क्षमता पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है। पढ़ते समय चाहे वह एक साधारण ईमेल ही क्यों न हो विकर्षण दूर करें और केवल पाठ पर ध्यान केंद्रित करें। इससे आपको अपना ध्यान उस पर केंद्रित रखने में मदद मिलेगी जो आप पढ़ रहे हैं और आपको यह जानने में मदद मिलेगी कि आप जो पढ़ रहे हैं वह समझ में आ रहा है या नहीं।

5.6.2. अपने पढ़ने के स्तर से नीचे की किताब पढ़ें–

अपने पढ़ने के स्तर से नीचे की किताबों से शुरुआत करने से आप अपनी पढ़ने की समझ की एक आधार रेखा विकसित कर सकेंगे और उस पर आगे बढ़ सकेंगे। उन किताबों या अन्य पाठों से शुरुआत करने के बजाय जो आपको चुनौतीपूर्ण लगते हैं, कुछ ऐसा पढ़ें जो आरामदायक हो और जिसे आप आसानी से समझ सकें। आप वर्तमान में पढ़ने के स्तर को स्थापित करने के लिए एक ऑनलाइन क्विज में भाग ले सकते हैं।

5.6.3. समझ सुनिश्चित करने के लिए पाठ को दोबारा पढ़ें–

यदि आप कोई वाक्य या पैराग्राफ पूरा कर लेते हैं और आपको एहसास होता है कि आप समझ नहीं पा रहे हैं कि यह क्या कहना चाह रहा है, तो इसे दोबारा पढ़ने के लिए समय निकालें। जब तक आप ऐसा न कर लें। दूसरी बार धीरे–धीरे पढ़ने का प्रयास करें और उन शब्दों की परिभाषा खोजें जिनका आप अर्थ नहीं जानते हैं।

5.6.4. जोर से पढ़ें–

जोर से पढ़ना आपके पढ़ने की समझ के अभ्यास में दृश्य और श्रव्य दोनों तरह की शिक्षा को शामिल

करता है। यह आपको धीमा करने के लिए भी मजबूर करता है और आप जो पढ़ रहे हैं उसे संसाधित करने के लिए आपको अधिक समय देता है।

5.7. स्वतंत्र वाचन

स्वतंत्र वाचन शैक्षिक तंत्र में उपयोग किया जाने वाला एक शब्द है, जहां छात्र अपने स्वतंत्र उपभोग और आनंद के लिए सामग्री (काल्पनिक किताबें, गैर–काल्पनिक, पत्रिका, अन्य मीडिया) चुनने और पढ़ने में शामिल होते हैं। जो छात्र स्वतंत्र रूप से पढ़ते हैं, उनके पास इस बात पर जोर देने वाली रचनात्मक पसंद होती है कि वे क्या पढ़ना चाहते हैं और क्या सीखना चाहते हैं। आमतौर पर, स्वतंत्र पठन कक्षा या होमस्कूल में चल रहे पाठ्यक्रम के साथ–साथ होता है। स्वतंत्र पठन को आकलन और मूल्यांकन से जोड़ा जा सकता है या यह अपने आप में एक गतिविधि के रूप में बना रह सकता है।

5.8. स्वतंत्र वाचन का उद्देश्य

- अधिक स्वेच्छा से और अधिक बार पढ़ें।
- सामान्यतः मुद्रित शब्दों में अधिक रुचि लें, जिसमें उनका स्वयं का लेखन भी शामिल है।
- उनके पढ़ने से संबंधित संवर्धन गतिविधियों के प्रति अधिक ग्रहणशील बनें।
- पता लगाएं कि वे अपने पढ़ने के बारे में सार्थक तरीके से सोच और लिख सकते हैं।
- जानें कि साहित्य उनके जीवन को समृद्ध बना सकता है।
- उनकी शब्दावली का विस्तार करें.।
- उच्च परीक्षण अंक प्राप्त करें.।

5.9. सारांश

सीखने के लक्ष्यों, पाठ्यक्रम मानकों और पाठ के प्रकार के अनुसार पढ़ने की रणनीति का चयन करना महत्वपूर्ण है। कोई रणनीति चुनने से पहले, विचार के लिए यहां कुछ प्रश्न दिए गए हैंः–

- छात्र कौन सा पाठ पढ़ेंगे?
- विद्यार्थियों को कितनी बार, यदि कोई हो, इस प्रकार के पाठ का अनुभव हुआ है?
- छात्रों को पाठ के साथ कैसे संवाद करना चाहिए? क्या उन्हें इस पर सवाल उठाना चाहिए? पाठ में प्रस्तुत जानकारी के बारे में अनुमान लगाना चाहिए?
- पाठ का कौन सा भाग विद्यार्थियों को सबसे अधिक चुनौती दे सकता है?
- किसी पाठ को पढ़ने से पहले शब्दावली जैसी प्रत्याशित चुनौतियों में छात्रों की मदद के लिए क्या सहायता प्रदान की जा सकती है?
- पाठ पढ़ने के दौरान या उसके बाद छात्रों को किस कौशल में सुधार या मजबूती की आवश्यकता है?
- रणनीति को कक्षा के अनुरूप कैसे बनाया जाएगा?

अनेक प्रकार के पाठों को पढ़ना और उनकी व्याख्या करना एक कठिन कार्य हो सकता है। इस अभ्यास में समय और धैर्य लगता है। सभी विषय क्षेत्रों में इन रणनीतियों के उद्देश्यपूर्ण कार्यान्वयन के साथ, छात्र आश्रित, निष्क्रिय पाठकों से उच्च कुशल विचारकों के रूप में प्रगति कर सकते हैं जो स्वतंत्र रूप से किसी पाठ से जानकारी संसाधित करते हैं।

5.10. बोध प्रश्नों के उत्तर

प्रश्न 1. वाचन कौशल को विकसित करने के लिए कौन कौन से उपागम है

ध्वन्यात्मक–आधारित उपागम

संपूर्ण–भाषा पढ़ने का उपागम

बहुसंवेदी उपागम

प्रश्न 2.. बहुसंवेदी उपागम से आप क्या समझते है।

बहुसंवेदी उपागम एक ऐसा उपागम है जो एक समय में एक से अधिक इंद्रियों को शामिल करता है। डिस्लेक्सिया जैसी पढ़ने की समस्या वाले बच्चों के लिए दृष्टि, श्रवण, गति और स्पर्श का उपयोग सीखने में सहायक हो सकता है। बोलने और पढ़ने के साथ गति के संयोजन का सिद्धांत भाषा सीखने के अन्य स्तरों पर भी लागू होता है।

5.11. अभ्यास कार्य

प्रश्न –1–वाचन को परिभाषित करे। .

प्रश्न –2–वाचन कौशल के विभिन्न उपागम को विस्तार से समझाओ। .

प्रश्न –3–स्वतंत्र वाचन से आप क्या समझते है। .

प्रश्न –4–वाचन कौशल के विकास की रणनीतियो को विस्तार से समझाए। .

15.12. चर्चा के बिंदु /स्पष्टीकरण

प्रश्न 01–वाचन कौशल को विकसित करने के लिए कौन कौन सी क्रियाये उपयोगी होगी .

प्रश्न 02–वाचन कौशल को विकसित करने की कौन कौन सी रणनीतियां अपनानी चाहिए चर्चा करे

1.13. कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Honing, B., L. Diamond, and L. Gutlohn. (2013). *teaching reading sourcebook, 2nd ed*. Novato, CA: Arena Press.
- Ogle, D. M. (1986). K-W-L: A teaching model that develops active reading of expository text. *The Reading Teacher* 38(6), pp. 564–570.
- Pressley, M. (1977). Imagery and children's learning: Putting the picture in developmental perspective. *Review of Educational Research* 47, pp. 586–622.
- Tierney, R. J. (1982). Essential considerations for developing basic reading comprehension skills. *School Psychology Review* 11(3), pp. 299–305.

इकाई–06 पढ़ने के कौशल और उपचारात्मक रणनीतियों को विकसित करने के प्रकार, मॉडल और चुनौतियाँ

इकाई संरचना

6.1 प्रस्तावना

6.2 उद्देश्य

6.3 पढ़ने के कौशल विकसित करने के प्रकार और मॉडल

6.3.1 टॉप–डाउन मॉडल

6.3.2 बॉटम–अप मॉडल

6.3.3 इंटरएक्टिव मॉडल

6.3.4 उभरते हुएवाचन मॉडल

6.3.5 तीन–चरणीय वर्णनात्मक मॉडल

6.3.6 पाँच–घटक मॉडल

6.4. पठन कौशल विकसित करने के प्रकार

6.4.1 डिकोडिंग

6.4.2. प्रवाह

6.4.3. शब्दावली

6.4.4. वाक्यों को समझना

6.4.5. पृष्ठभूमि ज्ञान और तर्क का उपयोग करना

6.4.6. ध्यान देना

6.5. चुनौतियाँ और उपचारात्मक रणनीतियाँ

6.6. अज्ञात समस्याएँ

6.7. श्रवण बाधितों को सिखाने के लिए उपयोगी संचार कौशल

6.8 माता–पिता का सहयोग

6.9. बोध प्रश्न के उत्तर

6.10. सारांश

6.11. अभ्यास प्रश्न

6.12. चर्चा के बिंदु/स्पश्टीकरण

6.13. कुछ उपयोगी पुस्तकें

6.1 प्रस्तावना

पढ़ने का कौशल या क्षमता, सरल शब्दों में, किसी व्यक्ति के लिए पाठ के साथ बातचीत करने और शब्दों को ग्रहण करने की क्षमता हैं। पढ़ना लिखित प्रतीकों और अक्षरों को देखने और उनका अर्थ समझने की प्रक्रिया है। यह सुनना, बोलना और लिखना के साथ–साथ चार मुख्य भाषा कौशलों में से एक है। पढ़ना आमतौर पर तीसरा भाषा कौशल है जो आप अपनी भाषा में सीखते हैं–यह सुनने और बोलने के बाद आता है।

जब हम पढ़ते हैं, तो हम लिखित प्रतीकों (अक्षर, विराम चिह्न, रिक्त स्थान) को देखते हैं और अपने दिमाग का उपयोग करके उन्हें उन शब्दों और वाक्यों में परिवर्तित करते हैं जिनका हमारे लिए अर्थ होता है। जो भी शब्द हम पढ़ते हैं उसे बोलकर या हम चुपचाप (अपने दिमाग में) पढ़ सकते हैं या जोर से पढ़ सकते हैं।पढ़ने में सक्षम होने के लिए, हमें यह करने में सक्षम होना चाहिएः–

- जो शब्द हम देखते हैं उन्हें पहचानें (शब्द पहचान)
- समझें कि उनका क्या मतलब है (समझ)
- शब्दों और उनके अर्थों को जोड़ें ताकि पढ़ना स्वचालित और सटीक (प्रवाह) हो।

6.2 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आप समझ सकेगें:–

- पढ़ने के कौशल के बारे में जानकारी प्राप्त के सकेंगे।
- पढ़ने के प्रकार के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे ।
- पढ़ने के कौशल के विभिन्न माडल के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- वाचन कौशल के विकास की विभिन्न चुनौतियों के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- वाचन कौशल के विभिन्न उपचारात्मक रणनीतियो के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।

6.3 पढ़ने के कौशल विकसित करने के प्रकार और मॉडल

शिक्षकों को पढ़ना कैसे सिखाना चाहिए यह प्रश्न शिक्षा के क्षेत्र में सबसे महत्वपूर्ण विषयों में से एक हो सकता है। यदि शिक्षक चाहते हैं कि उनके छात्र अच्छी तरह से पढ़ना सीखें, तो उन्हें ज्ञान और आनंद के लिए एक साथ पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करने का एक तरीका खोजना चाहिए।

रीडिंग मॉडल एक उपकरण है जिसका उपयोग पढ़ने का निर्देश देने के लिए किया जाता है। जीवन कौशल के लिए शिक्षा में पढ़ना एक मौलिक मूल्य है। जो चीज इसे एक सार्वभौमिक कौशल बनाती है वह यह है कि पढ़ने के पहलू दैनिक जीवन में अंतर्निहित होते हैं। पढ़ना एक जटिल कौशल है जिसमें एक प्रक्रिया शामिल होती है जिसमें अक्सर शब्द पहचान, वाक्यविन्यास और समझ जैसे पहलू शामिल होते हैं।

वाचन कौशल को विकसित करने के लिए तीन मॉडल का उपयोग किया जाता है.

6.3.1 टॉप–डाउन मॉडल

टॉप–डाउन मॉडल, जिसे इनसाइड–आउट मॉडल और संपूर्ण से आंशिक मॉडल भी कहा जाता है, इसमें पाठक का अनुभव और वह पढ़ने की सामग्री में क्या लाता है, शामिल होता है। ब्राउन (1998) ने स्पष्ट किया कि, श्यह मॉडल सुझाव देता है कि पाठक सामान्य अर्थ की भविष्यवाणी करने के लिए भाषा की संरचना और सार्थकता, कहानियों और अन्य शैलियों की संरचना और दुनिया के बारे में उनके ज्ञान के बारे में जो कुछ भी जानते हैं, उसके आधार पर पढ़ना शुरू करें। यह मॉडल व्यापक और अधिक यथार्थवादी है। यहां यह बता देना जरूरी है कि जब भी विद्यार्थियों के अनुभव को शामिल किया जाएगा, शिक्षण उतना ही अधिक प्रभावी होगा। इसके अलावा, यह मॉडल अनुमान लगाने को प्रोत्साहित करता है। हालाँकि, इसका एक नुकसान यह है कि ऐसे पाठों को पहचानने में अंतर–सांस्कृतिक पहचान प्रमुख भूमिका निभा सकती है। उदाहरण के लिए, कुछ संस्कृतियों में कुछ विषयों के बारे में जानकारी की कमी हो सकती है और पाठकों को यह पहचानने में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है कि विषय किस बारे में हैं।

इस मॉडल में चार घटक शामिल हैं, जिन्हें नीचे सूचीबद्ध तरीकें से समझाया गया है।

1– साक्षरता की अवधारणाओं और कार्यों में उन शब्दों का ज्ञान शामिल है जिनका उपयोग पढ़ने के बारे में बात करने के लिए किया जाता है। यहां प्रिंट के कार्यों को समझना, यह जानना कि पढ़ने का कार्य कैसे किया जाता है (यानी यह जानना कि कहां से शुरू करना है, और पन्ने पलटकर पढ़ना कैसे जारी रखना है), भाषण को शब्दों, शब्दांशों और अक्षरों में कैसे अलग करना है, साक्षरता की नींव बन जाते हैं। फिर, प्रिंट की एक पंक्ति को ट्रैक करने में सक्षम होना और पढ़ने के बारे में स्वयं की धारणाएं वक्ता बनने के महत्वपूर्ण घटक हैं। अंत में, शब्द पढ़ने के लिए संदर्भ–संवेदनशील रणनीतियाँ और परिचित संदर्भों में पर्यावरण प्रिंट का ज्ञान बच्चे को साक्षर बनने की अनुमति देता है। ये कार्य ऊपर से नीचे की ओर हैं और पढ़ने के बारे में बड़ी तस्वीर प्रदान करते हैं।

2–अक्षरों और शब्दों का ज्ञान साक्षर बनने के लिए शुरु से अंत तक सहायता के रूप में कार्य करता है। इस ज्ञान में अक्षर ज्ञान, शब्दों में आरंभ और अंतिम ध्वनियों के बारे में ध्वन्यात्मक जागरूकता, पत्राचार ज्ञान, और सामान्य शब्दों और सामान्य पैटर्न वाले शब्दों की शब्द पहचान शामिल है।

3– सुनने की समझ और शब्द की समझ फिर से संपूर्ण–से–आंशिक रणनीतियों को लाती है और इसमें कहानियों को पूर्ण या आंशिक रूप से दोबारा कहना, परिभाषित करना, वर्गीकृत करना, शब्दों के साथ समानताएं बनाना और पाठ पढ़ने के लिए कई रणनीतियों का विकास करना शामिल है।

4– लेखन साक्षरता के लिखित रूपों की ओर बढ़ती है, जिसमें शब्द लेखन, वाक्य श्रुतलेख और कहानी रचना पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। यहां भले ही शब्द पहचान और शब्द डिकोडिंग महत्वपूर्ण हैं, लेकिन मुद्दा यह है कि प्रारंभिक पढ़ना ध्वन्यात्मक जागरूकता और शब्दावली से अधिक व्यापक है। श्रवण बाधित बच्चों के लिए विस्तार से, प्रारंभिक पढ़ना एक संकेत से एक शब्द मानचित्रण कार्यक्रम के साथ शुरू नहीं होता है, बल्कि तब शुरू किया जा सकता है जब बच्चों के साथ हस्ताक्षरित बातचीत के माध्यम से चित्रों के साथ आसानी से पढ़ी जाने वाली किताबों में एक पूरी कहानी या अंश प्रस्तुत किया जाता है।

6.3.2 बॉटम–अप मॉडल

ब्राउन 1998 के अनुसार, यह मॉडल पढ़ने को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में वर्णित करता है जो सीखने वाले के अक्षरों, ध्वनियों और शब्दों के ज्ञान से शुरू होती है। इस मॉडल को आंशिक से संपूर्ण मॉडल कहा जाता है क्योंकि यह आंशिक से संपूर्ण ज्ञान की ओर जाता है। यह मॉडल प्रारंभिक बचपन में बहुत प्रभावी है, विशेषकर युवा शिक्षार्थियों के रूप में। क्योंकि यहां अक्षरों, उनके आकार की पहचान और अलग–अलग शब्दों को पढ़ने पर जोर दिया गया है। हालाँकि, यदि उच्च स्तर के लिए उपयोग किया जाता है तो इस मॉडल के कई नुकसान हैं क्योंकि यह पाठक की अपेक्षाओं, अनुभव और दृष्टिकोण को भूल जाता है। इसके अलावा, यह संदर्भ पर ध्यान नहीं देता क्योंकि यह केवल याद रखने को प्रोत्साहित करता है।

6.3.3 इंटरएक्टिव मॉडल

पढ़ने के आधुनिक शिक्षण में यह सबसे व्यापक रूप से उपयोग किया जाने वाला मॉडल है। स्टैनोविच (1980) ने तर्क दिया कि यह मॉडल नीचे–ऊपर और ऊपर–नीचे मॉडल की विशेषताओं को इकट्ठा करता है और पढ़ने को अधिक महत्व देता है। यहां पाठक पढ़ने में अधिक रुचि लेते हैं। वे पढ़ने वाले पाठ के बारे में भविष्यवाणियां करने के लिए विषय के अपने ज्ञान, लिखित शब्दों के अपने पूर्व अनुभव, अपने पढ़ने और अपनी अपेक्षाओं का उपयोग करते हैं। इसलिए, पाठ्य विवरण पाठ में शामिल शब्दों और अक्षरों की पहचान करने का सबसे अच्छा तरीका है। इस मॉडल का सबसे महत्वपूर्ण लाभ यह है कि संचार गतिविधियाँ और पढ़ने के कौशल एकीकृत हैं। मेरी राय में, यदि इस मॉडल को केवल इसलिए अपनाते, क्योंकि यह सभी प्रकार के छात्रों के लिए अधिक यथार्थवादी और आनंददायक है। इसके अलावा, जब भी छात्रों का अनुभव शामिल होगा, पढ़ना उतना ही दिलचस्प, रोमांचक और प्यारा होगा।

6.3.4 उभरते हुए वाचन मॉडल

पढ़ने के कौशल विकसित करने के संबंध में कई सिद्धांत सामने आए हैं। ये सिद्धांत ऐसे मॉडल हैं जो व्यापक, इंटरैक्टिव मॉडल से उपजे हैं।

1 - **रुमेलहार्ट मॉडलः**— इस मॉडल में, एक दृश्य सूचना भंडार ग्राफिक जानकारी लेता है और अर्थ उत्पन्न करने के लिए इसे संज्ञानात्मक समझ के साथ संश्लेषित करता है। पढ़ने में सफलता भाषा का अर्थ निर्धारित करने के लिए संवेदी (ग्राफिक) और गैर—संवेदी (संज्ञानात्मक) जानकारी के संयोजन से आती है।

2 -**स्टैनोविच मॉडलः**— टॉप—डाउन और बॉटम—अप मॉडल में खामियां देखने के बजाय, स्टैनोविच दोनों मॉडलों को एक साथ जोड़ता है। उन्हें अलग—अलग प्रथाओं के रूप में देखने के बजाय, विचार यह है कि कोई उन्हें साथ में मौजूद पठन सामग्री के आधार पर समानांतर या वैकल्पिक रूप से अपना सकता है।

3 -**स्कीमा—सैद्धांतिक मॉडलः**— 1984 में, एंडरसन और पियर्सन ने यह समझाने के लिए स्कीमा—सैद्धांतिक विकसित किया कि कोई नई जानकारी को एकीकृत करने के लिए पहले से संग्रहीत जानकारी का उपयोग कैसे किया जाता है। इस तरह, कोई व्यक्ति जो कुछ भी जानता है उसका उपयोग करके वह जो पहले ही सीख चुका है उसके आधार पर नए निष्कर्ष निकाल सकता है।

4 -**आर0 डब्ल्यू मॉडलः**— आर0डब्ल्यू मॉडल में पाठक और लेखक के बीच का संबंध अत्यंत महत्वपूर्ण है। यहां, लेखक के संदर्भ और परिप्रेक्ष्य को समझने के लिए पाठक को लेखक की भूमिका निभानी होती है।

6.3.5 तीन—चरणीय वर्णनात्मक मॉडल

हॉफमिस्टर और कैल्डवेल—हैरिस (2014) दृश्य भाषा और दृश्य सीखने पर आधारित एक और मॉडल का प्रस्ताव करते हैं। उनके मॉडल में, श्रवण बाधित बच्चे अंग्रेजी प्रिंट पढ़कर और लिखकर कुशल पाठक बन सकते हैं। उनका कहना है कि अंग्रेजी की ध्वनिविज्ञान आवश्यक नहीं है। लेखक इस बात पर जोर देते हैं कि क्या यह बहरापन नहीं है जो पढ़ने में कठिनाइयों का कारण बनता है, बल्कि दृश्य भाषा तक पूर्ण पहुंच की कमी है। दृश्य भाषा तक पहुंच की कमी के कारण श्रवण बाधित बच्चों को भाषा सीखने में अंतर्निहित कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, जब वे पढ़ने और लिखने की स्कूली गतिविधियों के बाहर इसका अभ्यास नहीं कर पाते हैं। इस मॉडल में, सीखने के तीन चरण हैं जो श्रवण बाधित बच्चों के लिए प्रिंट के माध्यम से अपनी दूसरी भाषा (हिंदी) सीखने के लिए क्रमिक, वैचारिक अंतर्दृष्टि का प्रतिनिधित्व करते हैं।

पहले चरण में, श्रवण बाधित बच्चे परिचित संकेतों और संकेत वाक्यांशों के अनुवादों को शब्द और वाक्यांश स्तर पर प्रिंट करना सीखते हैं।

दुसरे चरण में, बच्चे मुहावरों, रूपकों और कई अर्थों सहित शब्दों और वाक्यों में संकेतों का मानचित्रण करने में प्रगति करते हैं।

तीसरे चरण में, बच्चे द्विभाषी, इंटरैक्टिव शिक्षण मोड में प्रिंट के माध्यम से अतिरिक्त हिंदी सीखने के लिए अपनी द्विभाषावाद का उपयोग करते हैं। इस तरह, सांकेतिक भाषा में एक मजबूत नींव का उपयोग सांकेतिक और बाद में विकसित मौखिक भाषा दोनों में द्विभाषी बनने के लिए पुल के रूप में किया जाता है।

6.3.6 पाँच—घटक मॉडल

यह मॉडल एक वैकल्पिक मार्ग है, क्योंकि पढ़ने की समझ न केवल भाषा अधिग्रहण और उभरती साक्षरता कौशल पर आधारित है, बल्कि इस प्रक्रिया के हिस्से के रूप में एक नई भाषा भारतीय सांकेतिक भाषा सीखना भी है। इस प्रारंभिक पठन मॉडल में पांच घटक शामिल हैंः—

1—भारतीय सांकेतिक भाषा अधिग्रहण और दृश्य जुड़ाव,

2—उभरती साक्षरता,

3—अंग्रेजी प्रिंट के साथ सामाजिक मध्यस्थता,

4—साक्षरता और बधिर संस्कृति,

5—मल्टीमीडिया गतिविधियां।

इसमें बधिर माता—पिता द्वारा अपने हस्ताक्षर करने वाले परिवारों के भीतर स्वदेशी प्रथाओं का उपयोग भी शामिल है। ये अंतःक्रियाएँ बधिर बच्चों को वक्ता बनने के लिए प्रेरित करती हैं (कुंट्ज एट अल., 2014)। उनके मॉडल से पता चलता है कि हस्ताक्षर करने वाले बधिर बच्चे मौखिक भाषा तक पहुंच के बिना, दृश्य पद्धति के माध्यम से पढ़ना सीखते हैं, और पढ़ने के निर्देश को सीखने के इन दृश्य तरीकों को प्रतिबिंबित करते है।

भारतीय सांकेतिक भाषा लेखन

दृश्य भाषा का उपयोग करने वाला अंतिम मॉडल वह है जो सुनने में अक्षम बच्चों को भारतीय सांकेतिक भाषा ग्रेफेम्स और भारतीय सांकेतिक भाषा ग्लोस पढ़ना सिखाकर पढ़ने के निर्देश विकसित करता है। ग्लोसिंग एक लिखित अंकन प्रणाली है जो भारतीय सांकेतिक भाषा का प्रतिनिधित्व करने के लिए तैयार की गई है। पहले चरण में बच्चे वस्तुओं के चित्रों को हस्त चिन्हों के चित्रों से मिलाना सीखते हैं। फिर बच्चों को एक नई लेखन प्रणाली सिखाई जाती है, जिसमें ग्रैफेम का उपयोग किया जाता है जो संकेतों की दृश्य ध्वनिविज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है, जिसमें उनके हाथ का आकार, गति और स्थान शामिल है। तीसरे चरण में, बच्चों को भारतीय सांकेतिक भाषा संकेतों के लिए अंग्रेजी ग्लोस पढ़ना सिखाया जाता है, जिसे भारतीय सांकेतिक भाषा ग्लॉसिंग कहा जाता है।

बोध प्रश्न— टिप्पणी— अपने उत्तरों के लिए नीचे दिए गये स्थान का प्रयोग करे।

प्रश्न 1— वाचन कौशल से आप क्या समझते है।

....
....
....

प्रश्न 2— पढ़ने के कौशल विकसित करने के विभिन्न मॉडल कौन कौन से हैं?

....
....
....

6.4. पठन कौशल विकसित करने के प्रकार

6.4.1 डिकोडिंग

यह एक महत्वपूर्ण पढ़ने का कौशल है जो अन्य कौशलों के लिए नींव के रूप में कार्य करता है। यह ध्वनिविज्ञान के उपयोग के माध्यम से सीखे गए प्रारंभिक भाषा कौशल पर निर्भर करता है। बच्चे उन शब्दों को बोलने के लिए डिकोडिंग का उपयोग करते हैं जिनका उन्होंने पहले सामना किया हो लेकिन उन्हें जोर से नहीं पढ़ा हो।

बच्चों को अलग—अलग ध्वनियों को अक्षरों से जोड़ने में भी सक्षम होना चाहिए, ताकि वे उन सभी को एक साथ जोड़ सकें और पूरा शब्द बोल सकें।

स्कूल और घर पर कविताओं, ध्वनियों और किताबों के संपर्क में आने से अधिकांश बच्चों को ध्वनि संबंधी जागरूकता हासिल करने में मदद मिलेगी। कुछ बच्चों को स्कूल में विशिष्ट ध्वन्यात्मक पाठों के माध्यम से और सहायता की आवश्यकता हो सकती है।

6.4.2. प्रवाह

प्रवाह एक उपयोगी कौशल है जो बच्चे के पढ़ने और पाठ को समझने में तेजी लाता है। यह तब भी

महत्वपूर्ण है जब उनका सामना 'का' और 'द 'जैसे अनियमित शब्दों से होता है, जिनका उच्चारण नहीं किया जा सकता।

यदि कोई बच्चा धाराप्रवाह वाचक है, तो वह बिना ज्यादा रुके आसानी से और अच्छी गति से पढ़ता है। आप पाएंगे कि वे आसानी से शब्दों को एक साथ समूहित कर सकते हैं और जोर से पढ़ते समय सही ध्वनि का उपयोग कर सकते हैं।

जब प्रवाह की बात आती है तो शब्द पहचान एक बाधा हो सकती है। बच्चों को किसी शब्द को बोलने का तरीका याद रखने से पहले उसे कई बार देखना पड़ता है—डिस्लेक्सिया से पीड़ित बच्चे के लिए यह संख्या और भी बड़ी हो सकती है।

इस कौशल को बेहतर बनाने के लिए आपको बच्चों को नियमित रूप से पढ़ने का अभ्यास करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा। इसका मतलब यह है कि वे अधिक शब्दों के संपर्क में बार—बार आएंगे।

5.4.3. शब्दावली

बच्चों को यह समझने के लिए कि वे क्या पढ़ रहे हैं, पाठ के अधिकांश शब्दों को समझने की आवश्यकता है। इस समझ की कुंजी एक मजबूत शब्दावली है, जो बदले में पढ़ने की अच्छी समझ पैदा करती है।

वे कई तरीकों से शब्दावली सीखते हैं, जो वे अपने दोस्तों और परिवार को कहते हुए सुनते हैं, या शायद जो वे टेलीविजन, इंटरनेट या रेडियो पर सुनते हैं।

किसी बच्चे को अधिक शब्दों से परिचित कराकर उसकी शब्दावली को आसानी से बढ़ाया जा सकता है। यह बच्चे के जीवन में वयस्कों द्वारा विभिन्न आयु—उपयुक्त विषयों पर बातचीत करके एक सफल प्रयास होना चाहिए।

जब कोई बच्चा किसी वयस्क या बड़े भाई—बहन के साथ पढ़ता है तो अधिक कठिन या नए शब्दों पर रुकना और यह समझाना उपयोगी हो सकता है कि कुछ वाक्य बनाने के लिए उनका क्या मतलब है जिसे बच्चा वापस संदर्भित कर सके।

एक और अच्छा विचार यह है कि वयस्क पहले से ही पाठ पढ़ लें और उन शब्दों को नोट कर लें जिनसे बच्चे को कठिनाई हो सकती है। फिर, आप पाठ पढ़ने से पहले इस शब्दावली का अभ्यास कर सकते हैं।

नए शब्दों और उनके अर्थों का शब्दावली लॉगू रखना बच्चों के लिए यह ट्रैक करने का एक शानदार तरीका है कि उन्होंने कितने शब्द सीखे हैं। यह वापस संदर्भित करने के लिए भी एक बेहतरीन उपकरण होगा।

6.4.4. वाक्यों को समझना

वाक्य कैसे बनते हैं, इसके बारे में सीखना केवल लिखने के लिए ही उपयोगी नहीं है। यह जानना कि वाक्यों के भीतर एक विचार दूसरे से कैसे जुड़ता है, पढ़ने में भी मदद करता है। वाक्यों को एक साथ जोड़कर उनके अर्थ को आसानी से समझने से पढ़ने का प्रवाह बढ़ता है। इस कौशल को सामंजस्य कहा जाता है और यह आगे चलकर सामंजस्य स्थापित करने में मदद कर सकता है।

6.4.5. पृष्ठभूमि ज्ञान और तर्क का उपयोग करना

पृष्ठभूमि का ज्ञान होने और चीजों के संदर्भ को जानने से बच्चे की पढ़ने की क्षमता में काफी मदद मिल सकती है। यह उन्हें पंक्तियों के बीच में पढ़ने, अनुमान लगाने और पाठ से अर्थ निकालने की अनुमति देता है, तब भी जब अर्थ उनके लिए शाब्दिक रूप से नहीं बताया गया हो।

एक बच्चे के पृष्ठभूमि ज्ञान का निर्माण विभिन्न तरीकों से किया जा सकता है। वे जीवन के अनुभव से सीख सकते हैं, टीवी पर जो देखते हैं, या वे विशिष्ट विषयों पर शोध कर सकते हैं।

हालाँकि, यह ज्ञान होना बच्चे की पढ़ने की क्षमता विकसित करने का पहला कदम है। फिर उन्हें यह सीखना होगा कि इस ज्ञान का उपयोग अपने लाभ के लिए कैसे किया जाए, ताकि वे जो पढ़ते हैं उससे अधिक लाभ प्राप्त कर सकें। आप बच्चों से उनके द्वारा पढ़ी गई बातों के बारे में अनुमानात्मक प्रश्न पूछकर उनका समर्थन कर सकते हैं।

6.4.6. ध्यान देना

पढ़ते समय ध्यान देना और ध्यान केन्द्रित करना एक प्रमुख कौशल है। यदि आप पढ़ रहे हैं, लेकिन आपका मन कहीं और है, तो आप कुछ भी ग्रहण नहीं करेंगे। इसीलिए बच्चों की पढ़ने की क्षमता विकसित करते समय सीखना उनके लिए एक महत्वपूर्ण कौशल है।

साथ ही, यदि कोई बच्चा जो पढ़ रहा है उस पर ध्यान देता है, तो उसे यह याद रखने की अधिक संभावना होती है कि उसने उस पाठ से क्या सीखा है। उन्हें यह भी एहसास होगा कि यदि उन्होंने जो पढ़ा है वह समझ में नहीं आता है तो उन्हें वापस जाकर इसे पूरी तरह से समझने के लिए पाठ को दोबारा पढ़ना होगा।

हालाँकि, बच्चे को पढ़ते समय ध्यान आकर्षित कराना कहना जितना आसान है, करना उतना आसान नहीं है। मुख्य बात ऐसी पठन सामग्री ढूँढना है जिसमें उनकी वास्तव में रुचि हो और वे उससे आकर्षित हों।

6.5. चुनौतियाँ और उपचारात्मक रणनीतियाँ

श्रवण बाधित छात्रों के लिए सबसे बड़ी शैक्षणिक बाधाएँ संचार से जुड़ी हैं। आमतौर पर बोलने में मौखिक माध्यमों, होठों से पढ़ना और अवशिष्ट श्रवण के उपयोग और सांकेतिक भाषा जैसे मैन्युअल माध्यमों में बाधाएँ उत्पन्न होती हैं। संप्रेषित जानकारी को पंजीकृत करने में असमर्थता के कारण इन संचार रूपों को बदल दिया जाता है।

श्रवण बाधित छात्र के लिए निम्नलिखित कठिन हो सकती हैं।

- वर्तनी, व्याकरण और शब्दावली के विषय
- व्याख्यान सुनते समय नोट्स बनाना।
- कक्षा की चर्चाओं में भाग लें, शामिल हों या समझें।
- शैक्षिक वीडियो को समझना।
- मौखिक रिपोर्ट प्रस्तुत करना।

श्रवण हानि या हानि से बच्चे के प्रभावित होने की डिग्री काफी भिन्न हो सकती है। अत्यधिक श्रवण हानि वाला बच्चा 'बहरा' हो सकता है। श्रवण हानि को जन्म के समय या चोट, संक्रमण या लंबे समय तक तेज शोर के संपर्क में रहने के कारण पहचाना जा सकता है। शिक्षक बच्चों के व्यवहार, सीखने की चुनौतियों और कक्षा में प्रदर्शन के माध्यम से श्रवण हानि के शुरुआती लक्षणों की पहचान कर सकते हैं।

6.6. अज्ञात समस्याएँ

दुर्भाग्य से, कई स्कूली उम्र के बच्चों को पढ़ना सीखते समय सुनने की समस्याओं का पता नहीं चल पाता है। जिन बच्चों में सुनने की समस्याओं का निदान नहीं हुआ है, उनके पास संघर्षशील पाठक बनने का अच्छा मौका है। वे शब्दावली धीरे–धीरे विकसित करते हैं और वाक्य संरचना के साथ संघर्ष करते हैं। ये पढ़ने के दो महत्वपूर्ण घटक हैं। सुनने की समस्याओं के मानक संकेत हैं जिनमें शामिल हैंः–

आपको अपने बच्चे का ध्यान आकर्षित करने के लिए बार–बार आवाज उठानी पड़ती है। आपका बच्चा कान में दर्द या कान खींचने की शिकायत करता है। जब आप बोलते हैं तो आपका बच्चा आपके चेहरे को देखता है और यहां तक कि अपना सिर भी घुमा सकता है ताकि उसका एक कान आपकी आवाज की दिशा की ओर हो। बच्चा आपसे बार–बार बातें दोहराने के लिए कहता है। आपका बच्चा धीमी या तेज आवाज में बोलता है। टेलीविजन सेट और सीडी प्लेयर को तेज आवाज में चालू किया जाता है। आपका बच्चा अक्सर एक जैसी ध्वनियों को भ्रमित कर देता है। आपका बच्चा मौखिक रूप से स्कूल के प्रति नापसंदगी व्यक्त कर सकता है या स्कूल में ध्यान नहीं दे सकता है।

श्रवण भाषण, भाषा विकास, संचार और सीखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। श्रवण हानि के कारण होने वाली शैक्षणिक देरी अक्सर सीखने की समस्याओं का कारण बनती है। रोग नियंत्रण केंद्र (सीडीसी) की हालिया

जानकारी के अनुसार, एक हजार, आठ –वर्षीय बच्चों में से **1.3** में **40** डेसिबल (डीबी) या उससे अधिक की द्विपक्षीय श्रवण हानि होती है जो उनकी सीखने की क्षमता को गहराई से प्रभावित करती है। कई अध्ययन स्वस्थ और श्रवण–बाधित बच्चों में शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए शीघ्र हस्तक्षेप को महत्वपूर्ण बताते हैं। नया शोध शीघ्र हस्तक्षेप के विचार से सहमत है और सुझाव देता है कि पढ़ने में कठिनाई वाले बच्चों को सुनने की संभावित समस्याओं के लिए गहन जांच की आवश्यकता है।

6.7. श्रवण बाधितों को सिखाने के लिए उपयोगी संचार कौशल

कुछ कक्षाओं में, श्रवणबाधित शिक्षार्थी अप्रवासी या शरणार्थी भी होते हैं। एक अतिरिक्त भाषा सीखने का उनका कारण अंग्रेजी भाषी देश में जीवित रहना है। शिक्षकों को उत्तरजीविता कौशल पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए जिनकी सबसे अधिक आवश्यकता है, जिसमें निम्नलिखित में से कुछ शामिल हैं।

- निर्देश लिखना
- बिंदु रूप नोट्स लिखना
- फॉर्म भरना
- ऐसे इशारे सिखाना जिन्हें अंग्रेजी बोलने वाले पहचान सकें
- दूसरों को बुनियादी सार्वभौमिक संकेतों का उपयोग करना सिखाना
- संक्षिप्त रूप लिखना
- उपयोगी साइटों, ऐप्स या विजुअल सामग्रियों पर शोध करना जो ट्रांसक्रिप्ट या कैप्शनिंग के साथ आते हैं।
- उपयुक्त शिक्षण वातावरण स्थापित करना
- श्रवणबाधित छात्रों को अधिमान्य बैठने की जगह के साथ–साथ अन्य आवास की भी आवश्यकता होती है। आदर्श शिक्षण वातावरण बनाने के लिए यहां कुछ विचार दिए गए हैं।
- भाषण पढ़ना आसान बनाने के लिए छात्र को शिक्षक के करीब रखें
- एक चमकता हुआ फायर अलार्म स्थापित करें
- विशेष प्रकाश व्यवस्था या खिड़की कवर स्थापित करें जो छाया को कम करते हैं
- शब्दावली के लिए एक बड़ा वॉल चार्ट रखें जिसे छात्र देख सकें
- पृष्ठभूमि शोर को कम करें या समाप्त करें जो श्रवण उपकरणों में हस्तक्षेप कर सकता है (उदाहरण के लिए, जो कुछ भी गुनगुनाता या खड़खड़ाता है उसे बदल दें या अनप्लग कर दें, खिड़कियां बंद रखें)
- बातचीत करने वाले या आसानी से विचलित होने वाले छात्रों को सुनने में अक्षम शिक्षार्थी से दूर बैठाएं
- आसान पहुंच के लिए श्रवण बाधित छात्र के पास कंप्यूटर स्टेशन रखें
- सुनिश्चित करें कि एक विद्युत आउटलेट श्रवण बाधित शिक्षार्थी के करीब है।

6.8. माता–पिता का सहयोग

श्रवण बाधित बच्चों को पढ़ाते समय माता–पिता के लिए यहां कुछ सुझाव दिए गए हैं:– अपने बच्चे को अधिक से अधिक किताबें पढ़ाएं। यदि आपके बच्चे को दृश्य सहायता की आवश्यकता है, तो एक साथ बैठें और पढ़ते समय बच्चे को सुनने और अपना चेहरा देखने के लिए प्रोत्साहित करें। अपनी उंगली से शब्दों को ट्रेस करते

हुए पंक्ति को दोहराएं। अपने बच्चे के साथ शब्दों को ढूँढ़ते हुए पृष्ठ को दोहराएँ। बच्चे से कहानी के बारे में प्रश्न पूछें और अपने बच्चे से रिश्तेदारों और दोस्तों के सामने कहानी को दोहराने पर विचार करें। यदि आपका बच्चा सांकेतिक भाषा का उपयोग करता है, तो कहानी पढ़ते समय उस पर हस्ताक्षर अवश्य करें।

6.9. सारांश

पढ़ना सीखने की प्रक्रिया सभी बच्चों के लिए चुनौतीपूर्ण है, लेकिन सुनने की समस्या वाले बच्चे के लिए विशेष रूप से चुनौतीपूर्ण है। समावेशी शिक्षण रणनीतियों की एक श्रृंखला है जो सभी छात्रों को सीखने में सहायता कर सकती है लेकिन कुछ विशिष्ट रणनीतियाँ हैं जो एक समूह को पढ़ाने में उपयोगी होती हैं जिसमें श्रवण बाधित छात्र भी शामिल होते हैं। श्रवण बाधित छात्रों को व्याख्यान थिएटर के सामने की ओर बैठने के लिए प्रोत्साहित करें जहां उनकी दृष्टि अबाधित होगी। यह विशेष रूप से महत्वपूर्ण है यदि छात्र दुभाषिया का उपयोग कर रहा है, लिप–रीडिंग कर रहा है, दृश्य स्रोत पर भरोसा कर रहा है या श्रवण सहायता का उपयोग कर रहा है जिसकी सीमा सीमित है। श्रवण यंत्रों में व्याख्याता के लिए क्लिप–ऑन माइक्रोफोन के साथ ट्रांसमीटर, रसीवर सिस्टम शामिल हो सकते हैं। ऐसे माइक्रोफोन का उपयोग करने पर अपनी बोलने या पढ़ाने की शैली को बदलना आवश्यक नहीं है। शिक्षकों को प्रतिक्रिया देने से पहले व्याख्यान या कक्षा में छात्रों द्वारा पूछे गए किसी भी प्रश्न को स्पष्ट रूप से दोहराने की आवश्यकता हो सकती है।

6.10. बोध प्रश्न के उत्तर

प्रश्न 1. वाचन कौशल से आप क्या समझते है

सरल पढ़ने का कौशल या क्षमता सरल सरल शब्दों में, किसी व्यक्ति के लिए पाठ के साथ बातचीत करने और शब्दों को ग्रहण करने की क्षमता है।

प्रश्न 2. पढ़ने के कौशल विकसित करने के विभिन्न मॉडल कौन कौन से हैं

टॉप डाउन माडल

बॉटम–अप मॉडल

इंटरएक्टिव मॉडल

उभरते हुए वाचन मॉडल

तीन चरणीय वर्णात्मक मॉडल

पाँच–घटक मॉडल

6.11. अभ्यास प्रश्न

प्रश्न –1–वाचन कौशल को परिभाषित करे। .

प्रश्न –2 –वाचन कौशल के विभिन्न रणनीतियो को विस्तार से समझाओ। .

प्रश्न –3 –वाचन कौशल के विकास को विस्तार से समझाए।

6.12. चर्चा के बिंदु

प्रश्न –1–वाचन कौशल को विकसित करने के लिए कौन कौन सी क्रियाये उपयोगी होगी।

प्रश्न –2–वाचन कौशल को विकसित करने की कौन कौन सी रणनीतियां अपनानी चाहिए? चर्चा कीजिए।

6.14. कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Honing, B., L. Diamond, and L. Gutlohn. (2013). *teaching reading sourcebook, 2nd*

ed. Novato, CA: Arena Press.

- Ogle, D. M. (1986). K-W-L: A teaching model that develops active reading of expository text. *The Reading Teacher* 38(6), pp. 564–570.
- Pressley, M. (1977). Imagery and children's learning: Putting the picture in developmental perspective. *Review of Educational Research* 47, pp. 586–622.
- Tierney, R. J. (1982). Essential considerations for developing basic reading comprehension skills. *School Psychology Review* 11(3), pp. 299–305.

इकाई–7 लेखन कौशल (Writing Skill)

इकाई संरचना

7.1 परिचय
7.2 उद्देश्य
7.3 परिभाषा
7.4 महत्व
7.5 मूलभूत / बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन)
7.6 लेखन कौशल का उद्देश्य
7.7 लेखन कौशल के पहलू /आयाम
7.8 लेखन कौशल के मानदंड
7.9 लेखन प्रक्रिया लेखन प्रक्रिया
7.10 लेखन कौशल की पूर्वापेक्षाएँ
7.11 लेखन–पूर्व कौशल
- अनुकरण
- अनुरेखण
- नकल / कॉपी
7.12 लेखन कौशल विकसित करने के सिद्धांत
7.13 इकाई सारांश
7.14 बोधात्मक प्रश्नों के उत्तर
7.15 अभ्यास प्रश्न
7.16 चर्चा के बिन्दु / स्पश्टीकरण
7.17 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण
7.18 कुछ उपयोगी पुस्तकें

7.1 परिचय

लेखन कौशल संचार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। अच्छा लेखन कौशल आपको अपने संदेश को स्पष्टता के साथ संवाद करने और आमने–सामने या टेलीफोन वार्तालापों की तुलना में कहीं अधिक दर्शकों तक आसानी से संवाद करने की अनुमति देता है। साक्षरता का एक महत्वपूर्ण पहलू होने के नाते, श्रवण बाधित छात्रों के शिक्षाविदों में लेखन कौशल का बहुत महत्व है। लेखन कौशल में सुधार स्कूली शिक्षा के प्रमुख उद्देश्यों में से एक है। लेखन संचार का एक कार्य है, और दर्शकों को संबोधित करने का एक उद्देश्यपूर्ण साधन है। यह न केवल एक वाक्य लिखना है बल्कि एक संदर्भ में पाठ तैयार करने की एक गतिविधि है।

लेखन क्षमता की अवधारणा पर जाने से पहले, यह जानना बेहतर है कि लेखन क्या है?

लेखन क्षमता के कई अर्थ हैं। कई विशेषज्ञों ने लेखन की परिभाषा और स्पष्टीकरण का प्रस्ताव दिया है।

विडोवसन (1978) का कहना है कि लेखन सही वाक्यों को बनाने और उन्हें कागज पर निशान के रूप में दृ

श्य माध्यम से प्रसारित करने का कार्य है।

हॉर्बी (1974) का कहना है कि लेखन क्रिया ''लिखना'' के अर्थ में "एक सतह पर अक्षर या अन्य प्रतीकों को बनाना है, विशेष रूप से एक कागज पर, एक कलम या एक पेंसिल के साथ है।"

तारिगन (1985) के अनुसार लेखन अप्रत्यक्ष संचार लिखने के लिए एक उत्पादक कौशल है, और अक्षर की प्रकृति सीधे शब्दों में व्यक्त की गई प्रकृति से बहुत अलग होती है, इसलिए लेखन को एक क्षमता के रूप में शामिल किया जाता है।

हार्मर (2001) का कहना है कि लेखन विचार प्रदान करने या लिखित रूप से भावना व्यक्त करने के लिए संचार का एक रूप है।

संक्षेप में, लेखन संचार के लिए एक शक्तिशाली उपकरण के रूप में कार्य करता है, जिससे व्यक्तियों को लिखित शब्द के माध्यम से विचारों, ज्ञान और सूचनाओं को दूसरों तक पहुंचाने में सक्षम बनाता है। यह एक आवश्यक कौशल है जो मानव संपर्क के विभिन्न पहलुओं के लिए मौलिक है और हमारे व्यक्तिगत, शैक्षणिक और व्यावसायिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

7.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त अधिगमकर्ता / विद्यार्थीः–

- लेखन कौशल को परिभाषित कर सकेंगे।
- लेखन कौशल के महत्व को जान सकेंगे।
- मूलभूत / बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मकता (एफएलएन) के बारे में जान सकेंगे।
- लेखन कौशल का उद्देश्य को समझ सकेंगे।
- लेखन प्रक्रिया की व्यख्या कर पाएंगे।
- लेखन–पूर्व कौशल के बारे में बता पाएंगे।
- लेखन कौशल विकसित करने के सिद्धांतो को बता पाएंगे।

7.3 परिभाषा

कैम्ब्रिज डिक्शनरी (2022) के अनुसार, लेखन को एक सतह पर शब्दों और वाक्यों का निर्माण करने की कौशल या गतिविधि के रूप में परिभाषित किया गया है।

ट्रोइया (2014) बताते हैं कि लेखन छात्रों को गंभीर रूप से सोचने, विचारों में हेरफेर करने और बदलने में सक्षम बनाता है, और लिखित अभिव्यक्ति के माध्यम से उनके मौजूदा ज्ञान, विश्वास और अनिश्चितताओं को प्रतिबिंबित करता है।

व्हाइट (1986) के अनुसार, लेखन को ज्ञान प्राप्त करने या दूसरों से साझा करने और सीखने के लिए विचारों, सूचनाओं, ज्ञान या अनुभवों को व्यक्त करने की प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है।

नेशन (2009) लेखन की एक परिभाषा प्रस्तुत करता है जो अन्य भाषा कौशल से इसके संबंध को उजागर करता है। नेशन के अनुसार, सुनने, बोलने और पढ़ने की क्षमताओं के विकास के माध्यम से लेखन को प्रभावी ढंग से तैयार किया जा सकता है।

जोनाह (2006), लेखन को संचार के अप्रत्यक्ष रूप में देखते है , जो व्यक्तियों को दूसरों के साथ जानकारी साझा करने की अनुमति देता है।

वेइगल (2002), "लेखन एक ऐसे कार्य के रूप में है, जो एक संदर्भ के भीतर होता है, एक विशेष उद्देश्य को पूरा करता है, और जो अपने इच्छित दर्शकों के लिए उचित रूप से आकार लेता है ।" इसका मतलब है कि

लेखन न केवल एक व्यक्ति के उत्पाद के रूप में है बल्कि एक सामाजिक कार्य के रूप में भी है क्योंकि लेखन ऐसी गतिविधियाँ हैं जो सामाजिक और सांस्कृतिक रूप से आकार लेती हैं और व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से उद्देश्यपूर्ण होती हैं।

ब्राउन, (2001), लेखन के लिए कुछ सोचने की प्रक्रिया की आवश्यकता होती है। लेखन की प्रक्रिया को जानकर, छात्र एक अच्छा लिखित पाठ बनाने की अपनी क्षमता विकसित कर सकते हैं । लेखन सोचने की एक प्रक्रिया है जिसमें लेखक अपने विचारों को समझते हैं और फिर उन्हें लिखित भाषा में डालते हैं। सोचने की प्रक्रिया के दौरान कभी–कभी लंबे समय की आवश्यकता होती है, लेखकों को अपने ज्ञान, अनुभवों या यादों का पता लगाने और फिर लिखने के लिए एक विषय निर्धारित करने के लिए कहा जाता है।

इसके अलावा, **हार्मर (2004)** लेखन को एक प्रकार के प्रक्रिया चक्र के रूप में देखते है, जहां लेखक पहिये की परिस्थिति और तीलियों दोनों के चारों ओर घूमते हैं। यह उन जटिल चरणों का वर्णन करता है जिनसे लेखकों को कुछ लिखने के लिए गुजरना पड़ता है। प्रत्येक चरण को लगातार दोहराया जा सकता है जब तक कि लेखकों को पिछले चरणों में जाने की आवश्यकता महसूस न हो।

लेखन की उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर, यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि लेखन एक ऐसा कार्य है जो एक संदर्भ के बारे में होता है, जो एक विशेष उद्देश्य को पूरा करता है–जानकारी, राय, लाभ, भावनाओं, तर्क, स्पष्टीकरण और सिद्धांतों का अपेक्षाकृत स्थायी रिकॉर्ड होता है। इसके अलावा, लेखन विचारों को एक सुसंगत लिखित भाषा में विकसित करने की एक प्रक्रिया भी है।

7.4 महत्व

पूरे वर्ष, विद्यार्थी के द्वारा प्रयोग किए कौशलों में, लेखन एक प्रमुख स्थान रखता है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या (2013) के आधार पर, छात्रों को लेखन में महारत हासिल करने में सक्षम होना आवश्यक है।

यदि कोई छात्र लेखन कौशल में महारत हासिल कर सकता है तो कई लाभ हैं। **Ngabidatun (2013)** का कहना है कि अंग्रेजी लेखन कौशल में महारत हासिल करके, लोग दुनिया भर के लोगों के साथ अधिक आसानी से संवाद करने, विचारों को साझा करने, वार्ताकारों के साथ जानकारी साझा करने और तकनीकी उपकरणों में महारत हासिल करने में सक्षम होंगे, जिससे हमारे लिए दुनिया की घटनाओं पर अद्यतितन रहना आसान हो जाएगा।

लेखन सीखने से, छात्र सीखेंगे कि कैसे प्रभावी ढंग से लिखना, विचारों को व्यक्त करना और लेखन के माध्यम से किसी और के साथ अपने विचार साझा करना है **(कोमारियाह, 2015)**।

एक और परिभाषा **चौपल (2011)** से आती है, जिन्होंने तर्क दिया कि लेखन आवश्यक है क्योंकि इसके बहुत सारे फायदे है । यह मदद करता है:

क) किसी के व्यक्तित्व को व्यक्त करने में।

ख) संचार को बढ़ावा देना।

ग) चिंतन कौशल विकसित करने में।

घ) तार्किक और प्रेरक तर्क देने में।

ड़) स्कूल और रोजगार की तैयारी करने में।

शार्पल्स (1999) इस बात पर जोर देते है कि लेखन छात्रों को खुद को व्यक्त करने और अपने विचारों में तल्लीन होने का अवसर प्रदान करता है, जिससे अन्वेषण और स्पष्टीकरण की अनुमति मिलती है। लेखन एक माध्यम के रूप में कार्य करता है जिसके द्वारा छात्र अपने विचारों,दृष्टि कोणों और अंतर्दृष्टि को प्रभावी ढंग से व्यक्त कर सकते हैं।

जब छात्र लेखन की प्रक्रिया में संलग्न होते हैं, तो उनके पास अपने विचारों को अच्छी तरह से संरचित तरीके से व्यक्त करने का मौका होता है, जिससे वे अपने विचारों को अधिक सुसंगत रूप से संवाद कर सकते हैं।

7.5 मूलभूत / बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल (एफएलएन)

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.), पढ़ने, लिखने और गणित में बुनियादी कौशल को संदर्भित करता है। यह एक बुनियादी पाठ को पढ़ने और समझने एवं कक्षा 3 के अंत तक सरल गणितीय गणना करने की क्षमता है। मूलभूत साक्षरता में लिखित ग्रंथों को समझने, विचारों को लिखित रूप में सुसंगत रूप से व्यक्त करने और जानकारी का गंभीर विश्लेषण करने की क्षमता शामिल है। मूलभूत संख्यात्मकता में संख्यात्मक अवधारणाओं, गणितीय संचालन और उन्हें वास्तविक जीवन स्थितियों में लागू करने की क्षमता में प्रवीणता शामिल है। यह भविष्य के लिए सीखने की नींव बन जाता है जिस पर अन्य कौशल बनाए जाते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता की उपलब्धि को सर्वोच्च महत्व देती है।

7.5.1 एफ.एल.एन. विकास लक्ष्य

एफ.एल.एन. विकास लक्ष्यों को आगे सीखने और व्यक्तिगत विकास के लिए एक मजबूत नींव स्थापित करने के लिए डिजाइन किया गया है। यह लक्ष्य शिक्षकों, पाठ्यक्रम और नीति निर्माताओं के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में कार्य करते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि छात्रों को इन मूलभूत मील के पत्थर को प्राप्त करने के लिए आवश्यक समर्थन और निर्देश प्राप्त हों सके। सामान्य एफ.एल.एन विकास लक्ष्यों में शामिल हैं।

रीडिंग कॉम्प्रिहेंशनः लिखित ग्रंथों को समझने की क्षमता विकसित करना, जिसमें मुख्य विचारों, शब्दावली, विवरण और संदर्भ की समझ शामिल है।

नादविद्या और ध्वन्यात्मक जागरूकता (Phonics and Phonological Awareness) : अक्षरों और ध्वनियों के बीच संबंधों को समझना, शब्दों को डिकोड करने की क्षमता विकसित करना और ध्वन्यात्मक पैटर्न को पहचानना।

शब्दावली विस्तार (Vocabulary expansion): पढ़ने की समझ और संचार कौशल में सुधार के लिए एक व्यापक और विविध शब्दावली का निर्माण।

लेखन कौशलः व्याकरण, विराम चिह्न, वर्तनी और संगठन को कवर करते हुए, लेखन में विचारों और विचारों को तार्किक रूप से व्यक्त करने के लिए कौशल प्राप्त करना।

आलोचनात्मक सोच और विश्लेषण (Critical Thinking and Analysis): ग्रंथों का विश्लेषण करने, जानकारी का आकलन करने और तर्कपूर्ण राय बनाने के लिए गंभीर रूप से सोचने की क्षमता विकसित करना।

7.5.2 एफएलएन का महत्व

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक कौशल (एफएलएन) प्रत्येक बच्चे की शैक्षिक यात्रा और समग्र विकास के लिए आवश्यक है। यहां बताया गया है कि एफएलएन इतना महत्वपूर्ण महत्व क्यों रखता है।

मजबूत शैक्षिक नींव का निर्माण (Building strong educational foundations)

- **एफएलएन आजीवन सीखने की नींव बनाता है,** विशेष रूप से महत्वपूर्ण प्रारंभिक वर्षों (0–8) के दौरान, जो बच्चे के भविष्य के विकास और शैक्षिक सफलता को आकार देता है, जो उनके दीर्घकालिक व्यक्तिगत और आर्थिक कल्याण को दृढ़ता से प्रभावित करता है।
- **संज्ञानात्मक और सामाजिक–भावनात्मक विकास को बढ़ावा देना** (Promote cognitive and social&emotional development)
- **एफएलएन पढ़ने, लिखने, अंकगणित और संख्यात्मक समझ में मजबूत मूलभूत कौशल** का निर्माण करके संज्ञानात्मक विकास, महत्वपूर्ण सोच और समस्या को सुलझाने को बढ़ाता है। ये कौशल सामाजिक–भावनात्मक विकास को भी बढ़ावा देते हैं, संचार, सहानुभूति और आत्मविश्वास में सुधार करते हैं।
- **आजीवन सीखने और आर्थिक सशक्तिकरण सुनिश्चित करना** (Ensuring lifelong learning and economic empowerment)

- **आजीवन सीखने, आर्थिक सशक्तिकरण, शैक्षणिक सफलता और व्यक्तिगत विकास** के लिए मजबूत एफएलएन कौशल आवश्यक हैं, आधुनिक जीवन को नेविगेट करने, जानकारी तक पहुंचने, सूचित निर्णय लेने और नौकरी के अवसरों, आय और जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए महत्वपूर्ण हैं।

- **सीखने के कठिनाई को संबोधित करना** (Addressing the learning crisis) एनईपी 2020 भारत के सीखने के संकट को रेखांकित करता है, जहां लगभग 50 मिलियन बच्चों में बुनियादी साक्षरता और संख्यात्मक कौशल की कमी है। इस संकट को दूर करने और यह सुनिश्चित करने के लिए एफएलएन को प्राथमिकता देना आवश्यक है कि शैक्षिक सुधार प्रभावशाली हों, जिससे छात्रों को व्यापक पाठ्यक्रम से पूरी तरह से लाभ मिल सके।

- **शिक्षकों और समुदायों को सशक्त बनाना** (Empowering teachers and communities) एफएलएन को बढ़ाने के प्रयासों में शिक्षकों को आवश्यक कौशल और संसाधनों से युक्त करना शामिल है, जैसे व्यावसायिक विकास कार्यक्रम, गुणवत्ता शिक्षण सामग्री और चल रहे समर्थन। माता–पिता और समुदायों को शामिल करना शैक्षिक वातावरण को और समृद्ध करता है, बच्चों के सीखने के लिए एक समग्र दृष्टिकोण को बढ़ावा देता है।

बोध नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.1. लेखन कौशल की परिभाषा बताइए।

....

प्र0.2. एफएलएन से आप क्या समझते है?

....

....

7.6 लेखन कौशल का उद्देश्य

- विभिन्न रूपों में लेखन के माध्यम से विचारों को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करना।
- सुनिश्चित करना कि पाठक मुख्य बिंदुओं को समझते हैं और वांछित कार्रवाई करते हैं।
- कार्य स्थल के लिए उपयोगी मानव संसाधन बनाना।
- व्याकरण और शब्दावली कौशल में सुधार करना।
- विचारों को व्यवस्थित करना और प्रभावी निर्णय लेना।

7.7 लेखन कौशल के पहलू / आयाम

मूल रूप से, छात्रों को लेखन के कई पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए क्योंकि इन पहलुओं का पालन करके, छात्र लेखन कौशल को अधिक आसानी से और कुशलता से प्राप्त कर सकते हैं। ब्राउन (2010) के अनुसार, लेखन में कई तत्व शामिल होते हैंः सामग्री, संगठन, शब्दावली, भाषा का उपयोग और यांत्रिकी। प्रत्येक तत्व को नीचे समझाया गया है।

- **सामग्री**

सामग्री लेखन का सार है, लेखन के रूप में व्यक्त विचार। सामग्री मुख्य विषय की रचना, व्याख्या, चर्चा और सार है। एक अच्छा लेखन परिणाम प्राप्त करने के लिए, इस प्रकार पर अच्छी तरह से विचार किया जाना चाहिए।

- **संगठन**

संगठन विचारों, अवधारणाओं या विवरणों को सुचारू रूप से प्रवाहित करने के बारे में है। यह आवश्यक है क्योंकि संगठित लेखन पाठकों के लिए लेखन परिणाम को समझना आसान बना देगा। संगठन यह सुनिश्चित करता है कि जो लिखा गया है वह तार्किक रूप से व्यवस्थित और जुड़ा हुआ है।

- **शब्दावली**

शब्दावली उन शब्दों के चयन को संदर्भित करती है जो लिखित सामग्री के लिए उपयुक्त हैं। मजबूत और उपयुक्त शब्दावली पाठक को अधिक रुचि रखने और आपके लेखन पाठ में जो आप वर्णन करते हैं उसे कल्पना करने में मदद करेगी।

- **व्याकरण (भाषा का प्रयोग)**

व्याकरण उन नियमों और परंपराओं के बारे में है जो यह नियंत्रित करते हैं कि किसी शब्द को अर्थ बनाने के लिए कैसे जोड़ा जा सकता है। व्याकरण के बिना लिखित पाठ समझ से बाहर होगा।

- **यांत्रिकी (mechanics)**

यांत्रिकी लिखित पाठ के नियमों को संदर्भित करता है, जैसे विराम चिह्न और वर्तनी। यांत्रिकी नियमों और सिद्धांतों का एक समूह है जिसका पालन आपके लेखन को स्पष्ट और समझने योग्य बनाने के लिए किया जाना चाहिए।

लेखन में, कई पहलुओं को शामिल किया जाना चाहिए। वे सामग्री, विचारों का संगठन, यांत्रिकी और व्याकरण हैं। उन घटकों को एक अच्छा, गुणवत्तापूर्ण और सार्थक लेखन तैयार करने के लिए एकीकृत किया जाना चाहिए।

7.8 लेखन कौशल के मानदंड (Criteria of Writing Skills)

लेखन कौशल का मूल्यांकन करने में कई प्रमुख मानदंड शामिल हैं। यहाँ कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिएः

व्याकरण और वाक्य विन्यास (Grammar and syntax): व्याकरण, विराम चिह्न और वाक्य संरचना का सही उपयोग।

शब्दावली (Vocabulary): विविध और उचित शब्दावली का उपयोग।

स्पष्टता और सुसंगति (Clarity and coherence): विचारों की स्पष्ट अभिव्यक्ति और सामग्री का तार्किक प्रवाह।

संगठन (Organization): स्पष्ट परिचय, मुख्य भाग और निष्कर्ष के साथ अच्छी तरह से संरचित लेखन।

विषय और प्रासंगिकता (Theme and relevance): विषय के लिए सामग्री की प्रासंगिकता और गहराई।

शैली और लहजा (Style and tone): इच्छित दर्शकों और उद्देश्य के लिए उपयुक्त शैली और लहजा।

वर्तनी और यांत्रिकी (Spelling and mechanics): सही वर्तनी और लेखन यांत्रिकी का उचित उपयोग।

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.3. लेखन कौशल के उद्देश्य का वर्णन कीजिए।

....

प्र0.4. लेखन कौशल के चरण कौन–२ से है?

....

....

7.9 लेखन प्रक्रिया

7.9.1 लेखन के चरण

पूर्व–लेखन (Pre-Writing): लेखन का पहला चरण है जो योजना बनाने से शुरू होता है। इस चरण में विषय के बारे में गहन पृष्ठभूमि ज्ञान और लेखन योजनाओं के निष्पादन की दिशा में उचित दिशा की आवश्यकता होती है।

लेखन (Writing): यह विषय नियोजन की सहायता से विचारों को पेपर में डालने का वास्तविक चरण है, जिसमें पर्याप्त शब्दावली और व्याकरणिक व्यवस्था का उपयोग किया जाता है। इसमें परिचय, केंद्रीय विषय और विषय के समापन के साथ विषय के संदर्भ का उचित संयोजन भी आवश्यक है। लेखन के अंतिम चरण में लेखन के अंतिम मसौदे पर आने से पहले संपादन और प्रूफ रीडिंग शामिल है।

प्रकाशन (Publication): प्रकाशन लेखन का अंतिम चरण है जो लिखित पाठ के संपादित संस्करण के बाद किया जाता है। इसके लिए प्रकाशन गृहध्एजेंसी से परामर्श करने और सार्वजनिक उपयोग के लिए लिखित पाठ के मुद्रित संस्करण को लाने की आवश्यकता होती है।

7.9.2 लेखन की प्रक्रिया

लेखन को भाषा की अभिव्यक्ति में एक प्रक्रिया के साथ–साथ उत्पाद भी माना जाता है। एक सीखने वाले को लेखन कार्य पूर्ण करने से पहले नीचे दिए गए चरणों का पालन करना होगा।

विचार की कल्पना करें (Imagine the idea): विचार की कल्पना करना लेखन शुरू करने की पहली प्रक्रिया है, जिसमें लेखक के पिछले ज्ञान और लेखन के लिए प्रस्तावित विषय को मिलाया जाता है।

लेखन को क्रियान्वित करने की योजना बनाना (Plan to execute writing): यह वह प्रक्रिया है जिसके तहत लेखक लेखन के विभिन्न भागों का वर्णन करने की योजना बनाता है। इसमें परिचय के लिए संरचना, विषय का मुख्य भाग और निष्कर्ष शामिल हैं जो पैराग्राफ और चरण बद्ध तरीके से किए जाते हैं।

वास्तविक लेखन (Real Writing): यह प्रारूप का वह चरण है जिसके तहत लेखक वास्तव में शब्दावली और व्याकरण के पर्याप्त उपयोग की मदद से लिखता है। इसमें विचारों को निबंध या लेख के रूप में विषय गत रूप से जोड़ना होता है। यह चरण लेखन का एक कच्चा मसौदा होता है जिसे अगले भाग में संशोधित किया जाता है।

समीक्षा और संपादन (Review&Editing): यह लेखन की सबसे महत्वपूर्ण प्रक्रिया है क्योंकि इसमें भाषा और सामग्री संपादन और मसौदे को अंतिम रूप देना भी शामिल है। इसे प्रकाशन के लिए पूर्व–चरण भी माना जा सकता है।

अंतिम प्रारूप (Final Format): यह प्रकाशन के लिए भेजे जाने वाले लेख या निबंध को अंतिम रूप देने, संशोधित करने और सुंदर बनाने की प्रक्रिया है।

7.10 लेखन की पूर्वापेक्षाएँ और उभरते लेखन कौशल

लेखन कौशल विकसित करने के लिए बच्चों को छोटी उम्र से ही विभिन्न गतिविधियाँ दी जानी चाहिए। कुछ पूर्वापेक्षाएँ हैं:

अच्छा अवलोकन: कम उम्र से ही अच्छे अवलोकन कौशल विकसित करने की आवश्यकता होती है। उन्हें घर, पर्यावरण आदि की विभिन्न चीजों से अवगत कराया जाना चाहिए। उन्हें अपने आसपास की चीजों से जुड़ने और समझने के लिए विभिन्न चित्रों, कहानी की किताबों से अवगत कराया जाना चाहिए। चित्र में क्या कमी है उसका पता लगाना, चित्र में क्या गलत है उसका पता लगाना, दिए गए चित्र को पूरा करना आदि के लिए विभिन्न अभ्यास दिए जा सकते हैं।

आंखों और हाथों का अच्छा समन्वय: अच्छे लेखन कौशल के लिए आंखों और हाथों का अच्छा समन्वय विकसित किया जाना चाहिए। छोटे बच्चों को विभिन्न गतिविधियाँ दी जा सकती हैं। जैसे पानी का खेल,

मोतियों को एक साथ पिरोना, लेस और स्विंग बोर्ड, बटिंग और जिपिंग आदि।

बारीक मोटर कौशल का विकासः बच्चों में सकल और बारीक मोटर कौशल विकसित किया जाना चाहिए ताकि वे पेंसिल पकड़ सकें और ठीक से लिख सकें ब्लॉकों को ढेर करना, मोतियों को पिरोना, चीनी की गांठें उठाना जैसी गतिविधियाँ। दाल और चने को छांट कर ले सकते हैं.

इसके अलावा खेलने, नम रेत, मिट्टी और प्लास्टिक में ट्रेस करने से सकल और बढ़िया मोटर कौशल विकसित करने में मदद मिलेगी। बच्चों को खूब लिखने और रंग भरने का अभ्यास भी कराना चाहिए।

पैटर्न धारणा का विकासः लिखना सीखने के लिए पैटर्न धारणा का विकास भी बहुत महत्वपूर्ण पहलू है, आकार, रंग, आकार के अनुसार ब्लॉक, आई मोतियों आदि को छांटने जैसी गतिविधियाँ की जा सकती हैं, वस्तुओं को क्रम में रखकर, दिए गए पैटर्न को पूरा किया जा सकता है बच्चों को दिया गया. बच्चों को किसी दी गई रेखा के साथ चीजों को स्थानांतरित करने या दिए गए पैटर्न के साथ अपनी उंगलियों को स्थानांतरित करने के लिए भी कहा जा सकता है।

अच्छी याददाश्तः लिखने के लिए अच्छी याददाश्त, याददाश्त और दोबारा दोहराने की क्षमता की भी आवश्यकता होती है। इनके बिना बच्चे स्वयं नहीं लिख पाएंगे। इसके लिए स्मृति खेलों का सहारा लिया जा सकता है जैसे चीजों को एक ही क्रम में रखना, क्रम याद रखना, विभिन्न क्रियाओं को याद रखना, पैटर्न लिखना आदि।

नियमित अभ्यासः लेखन कौशल विकसित करने के लिए बच्चों को नियमित रूप से स्कूल और घर पर अभ्यास करना चाहिए। आंखों और हाथों का अच्छा समन्वय, बढ़िया मोटर कौशल, याददाश्त आदि विकसित करने के लिए उन्हें घर पर भी विभिन्न गतिविधियां करनी चाहिए। केवल नियमित अभ्यास और दोहराव से ही बच्चे परिपूर्ण होंगे। एच.आई. वाले बच्चों में कम उम्र से ही यह आदत विकसित करना बहुत महत्वपूर्ण है, क्योंकि वे बहुत तेजी से भूल जाते हैं।

भाषा विकासः लेखन के लिए यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण शर्त है। बच्चा लेखन के माध्यम से स्वयं को पर्याप्त रूप से तभी अभिव्यक्त कर सकता है जब उसके पास अच्छी भाषा का आधार हो, इसलिए इसे शुरू से ही पर्याप्त रूप से विकसित करना होगा

पढ़ने की समझः पढ़ने की समझ का होना भी जरूरी है बच्चे का विकास हो. पढ़ने का कौशल विकसित होने पर ही बच्चे लिख सकेंगे।

7.11 पूर्व–लेखन कौशल

लेखन अधिगम में प्रयुक्त होने वाले विभिन्न कौशलों को पूर्व–लेखन कौशल कहा जाता है।

पूर्व–लेखन कौशलों में वो कौशल शामिल है जो एक बच्चे को पेंसिल पकड़ने, चित्र बनाने, कॉपी करने और रंग भरने में मदद करते हैं।

आप चाहते हैं कि आपके बच्चे चित्र बनाएं तो रेखा या आकृति सिखाने के कई तरीके हैं, इसमे शामिल हैः

1.अनुकरण

बच्चा पहले आपको रेखा खींचते हुए या आकार देते हुए देखता है, फिर वे जो आपको करते हुए देखते है ,उसकी नकल करते हैं

2. अनुरेखण

इसमें बच्चा अपनी पेंसिल को कागज पर पूर्व अंकित रेखा या चित्र पर घुमाता है।

3. नकल / कॉपी

बच्चे को आकृति का चित्र दिखाया जाता है और फिर वे स्वयं उस आकृति को देख के बनाते हैं। एक बार जब वे आकृतियों की नकल करना सीख जाते हैं, तो वे याद रखना शुरू कर सकते हैं कि आकृति या चित्र को स्वयं कैसे बनाना है।

बच्चे अक्सर इस क्रम में चित्र बनाना सीखते हैं:

1. ऊपर और नीचे की लाइनें
2. अगल–बगल की रेखाएँ
3. वृत्त
4. धन चिह्न ()
5. झुकी हुई रेखाएँ (/)
6. क्रॉस (•)

एक बार जब बच्चा इन रेखाओं को खींचने में सक्षम हो जाता है तो वह अन्य आकृतियाँ बनाने में प्रगति कर सकता है, जैसे कि वर्ग, त्रिकोण और आयत, इसके बाद और अधिक पेचीदा आकृतियाँ बना सकते है।

कौन सी गतिविधियाँ लेखन तत्परता (लेखन–पूर्व) कौशल को बेहतर बनाने में मदद कर सकती हैं?

- विभिन्न आकार के फीतों से धागा पिरोना और लेस लगाना।
- प्ले–डोह गतिविधियाँ जिसमें हाथ या बेलन से रोल करना, प्ले–डो में सिक्के जैसी वस्तुएँ छिपाना या सिर्फ रचनात्मक निर्माण करना शामिल हो सकता है।
- कैंची से बनाई जाने वाली परियोजनाएँ जिसमें ज्यामितीय आकृतियों को काटना और फिर उन्हें एक साथ चिपकाकर रोबोट, ट्रेन या घर जैसी तस्वीरें बनाना शामिल हो सकता है।
- कागज को उंगलियों से मोड़कर कागज की गेंदें बनाना और उन्हें ज्यादातर बड़ी–छोटी तस्वीरों पर चिपकाना।
- खड़ी सतह पर स्क्रिबलिंग (घसीटना) या चित्र बनाना या लिखना।
- उंगलियों की पकड़ विकसित करने के लिए बड़े क्रेयॉन से चित्रों को रंगना।
- रोजमर्रा की गतिविधियाँ जिनमें उंगलियों की ताकत की जरूरत होती है जैसे कि कंटेनर और जार खोलना।
- लिखने से पहले की आकृतियाँ: लिखने से पहले की आकृतियाँ (स, कृ, O , /, वर्ग, ?, X, और Δ) बनाने का अभ्यास करें।
- उंगलियों के खेल: जिसमें उंगलियों की खास हरकतों का अभ्यास होता है जैसे कि 'इन्सी विन्सी स्पाइडर'।
- शिल्प: पुराने बक्से, अंडे के डिब्बे, ऊन, कागज और मास्किंग टेप का उपयोग करके चीजें बनाएं।
- निर्माण: खिलौनों के साथ निर्माण करना।

7.12 लेखन कौशल विकसित करने के सिद्धांत

रणनीतिक:

छात्रों को शब्द या चिन्ह प्रक्रियात्मक सुविधा प्रदाताओं के उपयोग के माध्यम से विशेषज्ञ लेखकों की प्रक्रियाओं का अनुसरण स्पष्ट रूप करना चाहिए ।

इंटरैक्टिव:

छात्र और शिक्षक विचारों को साझा करते हैं और सहकारी रूप से लेखन क्रियाओं का निर्धारण करते हैं। इस प्रक्रिया के माध्यम से, छात्र अपने विचारों को इस तरह से व्यक्त करता है कि वह उसके साथियों के लिए सुलभ

हो।

भाषाई (Linguistic) :

व्यक्तियों के पास दूसरी भाषा में क्षमता विकसित करने के दो अलग–अलग मार्ग हैं– निहित रूप से प्राप्त करना और स्पष्ट रूप से सीखना।

संतुलितः

समूह में लिखते समय, शिक्षक अपने छात्रों के लिए संतुलित साक्षरता उद्देश्यों की पहचान करता है जो छात्रों द्वारा स्वतंत्र रूप से किए जा सकने वाले कार्यों से थोड़ा परे होते हैं। शिक्षक शब्द, वाक्य और निबंध स्तर के लेखन कौशल के मिश्रण को लक्षित करने के लिए माहिर होते है, जिस पर समूह निर्देशित लेखन के दौरान जोर दिया जाता है।

स्वतंत्र होने के लिए निर्देशित (Guided to be independent):

जब शिक्षक के पास निर्देशित लेखन के दौरान छात्रों को लेखन स्तर के उद्देश्यों (जैसे, पाठ संरचना की मांग) पर नियंत्रण स्थानांतरित करने और पीछे हटने की क्षमता होती है, तो वह छात्रों को युग्मित लेखन में ले जाएगा। शिक्षक कमरे में घूमकर यह देखेगा कि कम समर्थित वातावरण में छात्र क्या कर सकते हैं। यदि छात्र उद्देश्यों पर अच्छा नियंत्रण प्रदर्शित करते हैं, तो शिक्षक छात्रों को स्वतंत्र लेखन में ले जाता है।

दृश्य मंच (Visual platform):

दृश्य मंच, अधिक जानकारध्दूसरों के ज्ञान तक पहुँचने का एक और तरीका प्रदान करता हैं। छात्र नई लेखन रणनीतियों या कौशल को पहचानने और लागू करने के लिए दृश्य मंच का उपयोग करते हैं जो वे सीखने की प्रक्रिया में हैं।

प्रामाणिक (Authentic):

छात्र और शिक्षक, दर्शकों के लिए पूर्व निर्धारित और प्रामाणिक पाठ के टुकड़े बनाते संशोधित, और प्रकाशित करते हैं। लेखन निर्देश और अभ्यास हमेशा उद्देश्यपूर्ण और सार्थक लेखन गतिविधि के भीतर अंतर्निहित होते हैं।?

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.5. पूर्व–लेखन कौशल किसे कहते है?

....

प्र0.6. लेखन कौशल विकसित करने के सिद्धांत कौन–२ से है?

....

....

7.13 इकाई सारांश

- लेखन कौशल संचार का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं।
- लेखन मदद करता हैः
    - किसी के व्यक्तित्व को व्यक्त करने में।
    - संचार को बढ़ावा देना।
    - चिंतन कौशल विकसित करने में।
    - तार्किक और प्रेरक तर्क देने में।

- स्कूल और रोजगार की तैयारी करने में।

- लेखन कौशल में महारत हासिल करके, लोग दुनिया भर के लोगों के साथ अधिक आसानी से संवाद करने, विचारों को साझा करने, वार्ताकारों के साथ जानकारी साझा करने और तकनीकी उपकरणों में महारत हासिल करने में सक्षम होंगे।

- लेखन के चरण– पूर्व लेखन, लेखन, प्रकाशन।

7.14 बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र0.1. लेखन कौशल की परिभाषा बताइए।

उ0.1. हार्मर (2001) का कहना है कि लेखन विचार प्रदान करने या लिखित रूप से भावना व्यक्त करने के लिए संचार का एक रूप है।

प्र0.2. एफएलएन से आप क्या समझते है?

उ0.2. मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.), पढ़ने, लिखने और गणित में बुनियादी कौशल को संदर्भित करता है। यह एक बुनियादी पाठ को पढ़ने और समझने एवं कक्षा 3 के अंत तक सरल गणितीय गणना करने की क्षमता है।

प्र0.3. लेखन कौशल के उद्देश्य का वर्णन कीजिए स

उ0.3. लेखन कौशल का उद्देश्य

- विभिन्न रूपों में लेखन के माध्यम से विचारों को स्पष्ट रूप से संप्रेषित करना।
- सुनिश्चित करना कि पाठक मुख्य बिंदुओं को समझते हैं और वांछित कार्रवाई करते हैं।
- कार्य स्थल के लिए उपयोगी मानव संसाधन बनाना।
- व्याकरण और शब्दावली कौशल में सुधार करना।
- विचारों को व्यवस्थित करना और प्रभावी निर्णय लेना।

प्र0.4. लेखन कौशल के चरण कौन–२ से है?

उ0.4. लेखन कौशल के चरण– पूर्व–लेखन कौशल, लेखन कौशल, प्रकाशन

प्र0.5. पूर्व–लेखन कौशल किसे कहते है?

उ0.5. लेखन का पहला चरण है जो योजना बनाने से शुरू होता है। इस चरण में विषय के बारे में गहन पृष्ठभूमि ज्ञान और लेखन योजनाओं के निष्पादन की दिशा में उचित दिशा की आवश्यकता होती है।

प्र0.6. लेखन कौशल विकसित करने के सिद्धांत कौन–२ से है?

उ0.6. लेखन कौशल विकसित करने के सिद्धांत–रणनीतिक, इंटरैक्टिव, भाषाई, संतुलित

7.15 अभ्यास कार्य

प्र0.1. एफएलएन का महत्व लिखिए

प्र0.2. लेखन कौशल के पहलूध्आयामों की व्यख्या कीजिए

प्र0.3. लेखन कौशल के मानदंड का वर्णन कीजिए

7.16 चर्चा के बिन्दु/स्पष्टीकरण

प्र0.1. लेखन कौशल की प्रक्रिया का वर्णन कीजिए

प्र0.2. कौन सी गतिविधियाँ लेखन तत्परता (लेखन–पूर्व) कौशल को बेहतर बनाने में मदद कर सकती हैं?

7.17 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

अपने सहपाठियों के साथ श्रवण दिव्यांग बच्चो के अनुरूप उपयुक्त लेखन कौशल विकसित करने पर चर्चा करे

7.18 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Akamatsu, C. T.,&Andrews, J. F. (1993). It takes two to be literate: Literacy interactions between parent and child. Sign Language Studies, 81, 333-360.
- Baisov, A. S. (2021). The effectiveness of the method talks for writing in developing the writing skills of all students. Academic research in educational sciences, 2(2).
- Birinci, F. G.,&Sarıçoban, A. (2021). The effectiveness of visual materials in teaching vocabulary to deaf students of EFL. Journal of Language and Linguistic Studies, 17(1).
- Clay, M. M. (1979). The early detection of reading difficulties (3rd ed.). Portsmouth, NH: Heinemann Educational Books.
- Evans, M. A., Shaw, D.,&Bell, M. (2000). Home literacy activities and their influence on early literacy skills. Canadian Journal of Experimental Psychology, 54, 65-75.
- Gioia, B. (2001). The emergent language and literacy experiences of three deaf preschoolers. International Journal of Disability, 48, 411-428.
- Goswami, U. (2001). Early phonological development and the acquisition of literacy. In S. B. Neuman& D. K. Dickinson (Eds.), Handbook of early literacy research (pp. 111-124). New York: Guilford Press.
- Hayes, J. R. (2012). Modeling and remodeling writing. Written communication, 29(3), 369-388.
- Hayes, J. R. (2012). Modeling and remodeling writing. Written Communication,29(3),369–388. https://doi.org/10.1177/0741088312451260.
- Marschark, M., Lang, H. G., &Albertini, J. A. (2002). Educating deaf students: From research to practice. New York: Oxford University Press.
- Sénéchal, M., &LeFevre, J. L. (2002). Parental involvement in the development of children's reading skill: A five-year longitudinal study. Child Development, 73, 445- 460.
- Sénéchal, M., LeFevre, J., Hudson, E.,&Lawson, P. E. (1996). Knowledge of storybooks as a predictor of young children's vocabulary. Journal of Educational Psychology, 88, 520-536.
- Sulzby, E., &Teale, W. (1996). Emergent literacy. In R. Barr, M. L. Kamil, P. B. Mosenthal,&P. D. Pearson (Eds.), Handbook of reading research (Vol. II, pp. 727-757). Mahwah, NJ: Erlbaum.
- Swanwick, R.,&Watson, L. (2007). Parents sharing books with young deaf children in spoken English and in BSL: The common and diverse features of different language settings. Journal of Deaf Studies and Deaf Education, 12, 385-405.
- Whitehurst, G. J., &Lonigan, C. J. (1998). Child development and emergent literacy. Child Development, 69, 848-872

इकाई–8 लेखन के घटक और प्रकार

इकाई संरचना

8.1 परिचय

8.2 उद्देश्य

8.3 प्रभावी लेखन के घटक एवं तत्व

8.4 लेखन कौशल के प्रकार

- व्याख्यात्मक,
- कथात्मक,
- वर्णनात्मक,
- प्रेरक
- रचनात्मक

8.5 लेखन के विभिन्न प्रकार

- फॉर्म भरना
- सूचना हस्तांतरण
- रचना
- डायरी
- संवाद
- पत्र
- पैराग्राफधनिबंध
- रिपोर्ट

8.6 विभिन्न प्रकार के लेखन कौशल विकसित करना

- पैराग्राफ लेखन
- निबंध लेखन
- पत्र लेखन
- रिपोर्ट लेखन

8.7 लेखन कौशल को तेज करना

8.8 इकाई सारांश

8.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

8.10 अभ्यास कार्य

8.12 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

8.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

8.1 परिचय

लेखन संभवतः छात्रों के बीच सबसे कम लोकप्रिय कौशल है। हालाँकि, यह हाल ही में संचार युग्म के एक महत्वपूर्ण तत्व के रूप में उभरा है, जिसमें बोलना भी शामिल है, यानी सामाजिक संपर्क और सूचना के

आदान–प्रदान की मौखिक अभिव्यक्ति। संचार करने के लिए लिखना एक जटिल कौशल है: यह अक्षरों और शब्दों की यांत्रिक नकल करने या यहाँ तक कि सरल वाक्य बनाने के कार्य से भी आगे निकल जाता है। इसके लिए शिक्षार्थियों को सक्रिय रूप से और आलोचनात्मक रूप से लक्ष्य भाषा का उपयोग करके, जटिल संज्ञानात्मक कौशल का उपयोग करके, सूचना का विश्लेषण करके और मूल कार्य का निर्माण करके एक लेखन उत्पाद बनाने की आवश्यकता होती है।इससे भी अधिक, संचारात्मक घटना अक्सर ऐसे दर्शकों के साथ बातचीत द्वारा दर्शाई जाती है जो विशिष्ट रूप से अनुपस्थित होते हैं।

लेखन को साक्षरता के बुनियादी उपकरणों में से एक माना जाता है। लेखन कौशल समाज और शैक्षणिक संस्थानों दोनों में भागीदारी की सुविधा प्रदान करता है। यह भावनाओं, विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने के लिए आवश्यक एक महत्वपूर्ण कौशल है (रोड्रिगेज–मैलागा, क्यूली, और रोड्रिगेज, 2021)। एक सक्षम लेखक होने के लिए न केवल प्रतिलेखन कौशल (जैसे, लिखावट और वर्तनी) की योग्यता की आवश्यकता होती है (हेस, 2012) बल्कि उच्च–स्तरीय संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं की स्थिति, उच्च–स्तरीय नियंत्रण और आत्म–नियमन भी आवश्यक है जैसे कि योजना बनाना, मसौदा तैयार करना और विचारों को उनके सटीक भाषाई रूप के अनुसार संशोधित करना, संशोधन करना और संपादन करना (केलॉग, 2018)।

8.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त अधिगमकर्ता / विद्यार्थी

- प्रभावी लेखन के घटक एवं तत्व को समझ पाएंगे।
- लेखन कौशल के प्रकार के बारे में जान पाएंगे।
- लेखन के विभिन्न प्रकार को समझ सकेंगे।
- विभिन्न प्रकार के लेखन कौशल विकसित करना सीख सकेंगे।
- लेखन कौशल को तेज करने के गतिविधियों के बारे में जान सकेंगे।

8.3 प्रभावी लेखन के घटक एवं तत्व

शिक्षकों को साप्ताहिक लेखन पाठों में लेखन के सभी घटकों को एकीकृत करने का तरीका दिखाता है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि कौशल निर्देश में कोई अंतराल न हो। परिणामतः, स्कूलों को अन्य कार्यक्रमों के साथ निर्देश को पूरक करने की आवश्यकता नहीं है, जिससे उन्हें पैसे और समय की बचत होती है। लेखन के सभी छह घटक निम्न है:

1. भाषा की संरचनाएँ – मॉडलिंग और स्पष्ट निर्देश के साथ, छात्र रंगीन वाक्य घटक आकृतियों का उपयोग करके सरल, मिश्रित, जटिल और मिश्रित–जटिल वाक्य संरचनाएँ बनाना सीखते हैं। परिणामस्वरूप छात्र बोलने और लिखने में अधिक स्पष्ट रूप से संवाद करते हैं और उच्च स्तरीय पाठों को पढ़ने में सक्षम होते हैं।

2. व्याकरण–प्रत्येक सोमवार को शिक्षक एक नई भाषा, व्याकरण या लेखक के शिल्प कौशल का प्रशिक्षण देते हैं, जिसमें कई शिक्षण चौनल शामिल होते हैं। पूरे सप्ताह के दौरान उस कौशल का दैनिक बोलने, लिखने, वाक्य शैली और संशोधन में अभ्यास किया जाता है। व्याकरण कौशल प्रत्येक ग्रेड स्तर पर एक निर्धारित दायरे और अनुक्रम का पालन करते हैं।

3. प्रक्रिया–निर्देश वाक्य से शुरू होता है, इसे व्यावहारिक वाक्य आकृतियों के साथ पढ़ाया जाता है ताकि छात्रों को पढ़ने और लिखने में वाक्य संरचनाओं के घटकों और महत्व को समझने में मदद मिल सके। छात्र अपने लेखन को पैराग्राफ, रचनाएँ, कहानियाँ और निबंधों तक ले जाते हैं। शिक्षक और छात्र साप्ताहिक रूप से लेखन को जीवित रखने के लिए निर्देशित परस्पर संवादात्मक लेखन प्रक्रिया का पालन करते हैं।

- **योजना बनाएं** – विचारों को योजनाकारों में व्यवस्थित करें।

- **मौखिक रूप से अभ्यास करें**–छात्र अपने योजनाकार से अपने लेखन का अभ्यास करते हैं।
- **लेखन मॉडल दिखाएं और लक्ष्य निर्धारित करें** – रुब्रिक या चेकलिस्ट से लक्ष्य निर्धारित करें।
- **ड्राफ्ट**–प्रारूप को टुकड़ों में बांटें और साझा करें।
- **मूल्यांकन करें** – रूब्रिक का उपयोग करके लक्ष्यों का मूल्यांकन करें।
- **संशोधन**–संशोधन पाठ सिखाएंः छात्र स्वतंत्र रूप से संशोधन स्ट्रिप्स का उपयोग करते हैं।
- **संपादन**–काइनेस्टेटिक संपादन तकनीकों का उपयोग करके परंपराओं को सही करें।
- **अंतिम लेखन**–छात्र अंतिम प्रतिलिपि बनाने के लिए तीन पूर्ण ड्राफ्ट में से एक का चयन करते हैं।

4. **विधाएँ और शैलियाँ**–शिक्षक यह मॉडल बनाते हैं कि कथा और गैर–कथा विधाओं का विश्लेषण कैसे किया जाए। छात्र कथात्मक, सूचनात्मक, व्याख्यात्मक, राय, विश्लेषणात्मक और तर्कपूर्ण लेखन के लिए विचार–मंथन और योजनाकारों में अपने विचारों को व्यवस्थित करते हैं। चूँकि छात्र मॉडल से लिखना सीखते हैं, इसलिए लेखन को जीवित रखने के विधाओं में साप्ताहिक लेखन मॉडल, संपादकीय और लेख प्रदान करता है जिनमें वे लिखेंगे। प्रत्येक सप्ताह एक सुझाए गए संरक्षक पाठ से शुरू होता है। छात्र पाठ्यक्रम में अपने लेखन कौशल का उपयोग करना सीखते हैं।

5. **विशेषताएँ**–दैनिक वाक्य शैली छात्रों को संशोधन रणनीतियों में महारत हासिल करने के अवसर प्रदान करती है जो संगठन, विचार, सामग्री, शब्द चयन, आवाज, प्रवाह, शैली और परंपराओं को बेहतर बनाती हैं। स्पष्ट निर्देश और मॉडल छात्रों को उनके लेखन में विशेषताओं को व्यक्तिगत करने और सुधारने के लिए सुसज्जित करते हैं।

6. **मूल्यांकन**–विकास जानबूझकर किया जाता है! छात्र बुनियादी, कुशल और उन्नत लेखन मॉडल देखते हैं, प्रारूप से पहले निदान रूब्रिक पर लक्ष्य निर्धारित करते हैं और अपने संशोधन को निर्देशित करने के लिए प्रारूपण के बाद लक्ष्यों का आकलन करते हैं। छात्र सफलता का जश्न मनाते हैं क्योंकि वे अपने स्कोर का ग्राफ बनाते हैं और अपनी लेखन प्रगति का स्वामित्व लेते हैं!

लेखन कौशल विकसित करने के छह दृष्टिकोण जैसा कि पहले ही चर्चा की जा चुकी है, एक उत्पादक कौशल के रूप में लेखन एक जटिल तंत्र है जिसे समझने, सिखाने और सीखने के लिए इसके सबसे आवश्यक तत्वों में विघटित करने की आवश्यकता है। निम्नलिखित आरेख दिखाता है कि लेखकों को लेखन का एक टुकड़ा बनाते समय किन बातों को ध्यान में रखना चाहिएः

चित्र : लेखन के तत्व (Source: ResearchGate-net)

लेखन को एक उत्पादक कौशल के रूप में प्रमाणित करने वाले कई सिद्धांतों के बावजूद, लेखन कैसे सिखाया जाए इस सवाल का कोई जवाब नहीं है। शिक्षकों, छात्रों, शिक्षण शैलियों और सीखने की शैलियों के समान ही कई उत्तर हैं। हालाँकि, सबसे उपयुक्त तकनीकों और सबसे उपयुक्त दृष्टिकोण को चुनने के लिए लेखन के क्या, क्यों और कैसे को समझना आवश्यक है।

8.4 लेखन कौशल के प्रकार

लेखन के पाँच मुख्य प्रकार हैंः व्याख्यात्मक, वर्णनात्मक, कथात्मक, प्रेरक और रचनात्मक। (कैलेला, 2001)

1. **व्याख्यात्मक लेखन** एक व्याख्यात्मक निबंध एक सूचनात्मक लेखन है, जहाँ लेखक तथ्यों, आँकड़ों और उदाहरणों का उपयोग करके किसी विषय की व्याख्या करता है। एक व्याख्यात्मक निबंध कभी भी व्यक्तिगत टिप्पणियों, और विचारों का उपयोग नहीं करता है। यह केवल तथ्यों का उपयोग करता है। उदाहरणः दवा प्रयोग से जुड़े जोखिम विभिन्न कारकों पर निर्भर करते हैं, जैसे मात्रा, उपयोग की आवृत्ति, उपयोग किए जाने वाले संयोजन और किसी निश्चित दवा को लेने का तरीका।

2. **वर्णनात्मक लेखन** में बहुत सारे बेहतरीन दृश्य शब्दों का उपयोग किया जाता है ताकि आपको उस व्यक्ति, स्थान या चीज को देखने में मदद मिल सके जिसके बारे में वे लिख रहे हैं। लेखन कई बार काव्यात्मक हो सकता है और चीजों को बहुत विस्तार से समझा सकता है। जब आप वर्णनात्मक लेखन पढ़ रहे होते हैं तो आपको ऐसा लगता है जैसे आप वहाँ मौजूद हैं या आप वास्तव में अपने मन में चित्र बना सकते हैं कि वे क्या वर्णन कर रहे हैं। रूपकों, उपमाओं और प्रतीकों का उपयोग अक्सर वर्णनात्मक लेखन में किया जाता है। उदाहरणः शांत झील को देखने में बहुत ही शांति मिलती है, इसकी सतह कांच की तरह चिकनी होती है, जो गर्मियों के खूबसूरत आसमान को दर्शाती है।

3. **कथात्मक लेखन** उपन्यासों, कविताओं और आत्मकथाओं में बहुत आम है। लेखक खुद को अपने पात्रों के स्थान पर रखता है और ऐसे लिखता है जैसे कि वह वही व्यक्ति हो। वे जीवन की कहानियाँ बताते हैं और कथानक और कहानी को शामिल करते हैं। कथात्मक लेखन पढ़ने में मजेदार होता है क्योंकि आप लेखक की जगह खुद को रख सकते हैं और ऐसा लगेगा जैसे कहानी आपके साथ घटित हो रही है। यानी कथात्मक निबंध आमतौर पर पहले व्यक्ति (मैं, मुझे) में लिखे जाते हैं। लेखक अपनी यादों, जीवन, विचारों पर ध्यान केंद्रित करता है। उदाहरणः मुझे हमेशा पानी से डर लगता था, लेकिन मैंने फैसला किया कि तैरना एक महत्वपूर्ण कौशल है जिसे मुझे सीखना चाहिए। मुझे यह भी लगा कि यह एक अच्छा व्यायाम होगा। मुझे यह एहसास नहीं था कि तैरना सीखने से मैं और भी ज़्यादा आत्मविश्वासी बन जाऊँगा।

4. **प्रेरक लेखन** प्रेरक लेखन एक प्रकार का लेखन है जिसमें किसी व्यक्ति को उसके दृष्टिकोण से किसी मुद्दे को समझाने के लिए औचित्य और कारण शामिल होते हैं। इसे पक्षपाती सामग्री माना जाता है और यह अक्सर विज्ञापनों में पाया जाता है। क्या आप उन सभी विज्ञापनों को जानते हैं जो आप टेलीविजन पर देखते हैं? सभी बातों और संदेशों के पीछे एक प्रेरक लेखक होता है। हमेशा सुनिश्चित करें कि इस प्रकार की सामग्री पढ़ते समय आप पृष्ठभूमि अनुसंधान करें, क्योंकि हर कहानी के दो पहलू होते हैं। उदाहरणः अब, तकनीकी क्रांतियों और खोजों के साथ, जिन्होंने हमारे अतीत को इतिहास बना दिया है, हम प्रकृति पर कम ध्यान देते हैं, हर दिन इससे और अधिक अलग होते जा रहे हैं। हालाँकि, प्रकृति के साथ हमारे संबंध गायब नहीं हो सकते। इस अवधारणा के पक्ष में कई प्रमुख कारण हैं कि लोगों को आज की तुलना में प्रकृति से अधिक जुड़ने की कोशिश करनी चाहिए।

5. **रचनात्मक लेखन** यह सबसे मजेदार प्रकार का लेखन है। आप अपने दिमाग में जो भी सोचते हैं, उसे रचनात्मक लेखन में बदला जा सकता है। रचनात्मक लेखन अक्सर विचारोत्तेजक, मनोरंजक और प्रेरक लेखन की तुलना में पढ़ने में अधिक दिलचस्प होता है। लघु कथाएँ, कविताएँ, उपन्यास और नाटक अक्सर रचनात्मक लेखन की श्रेणी में आते हैं। इसमें तथ्यों की किसी पंक्ति का पालन करना जरूरी नहीं है, बस इसे पढ़ना दिलचस्प होना चाहिए। संक्षेप में, लेखन के उद्देश्य और लेखक द्वारा पाठ लिखने के तरीके के आधार पर अलग–अलग प्रकार होते हैं। वर्तमान अध्ययन में, वर्णनात्मक पाठ लेखन को इसलिए चुना गया क्योंकि वर्णनात्मक पाठ लेखन एक प्रकार का पाठ है जो जूनियर हाई स्कूल पाठ्यक्रम में शामिल है। वर्णनात्मक पाठ छात्रों के लिए भी उपयोगी है क्योंकि जूनियर हाई स्कूल स्तर पर, छात्रों को नई जानकारी प्राप्त करने की

आवश्यकता होती है जिसे वे कक्षा में अपने दोस्तों के साथ वर्णनात्मक पाठ के बारे में साझा करके प्राप्त कर सकते हैं।

बोध प्रश्नः— नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.1 प्रभावी लेखन के घटक बताएये।

....

प्र0.2 लेखन कौशल के विभिन्न प्रकारों के नाम बताइए।

....
....

प्र0.3 सबसे मजेदार लेखन किस प्रकार को कहते है ?

....
....

8.5 लेखन के विभिन्न प्रकार

फॉर्म भरना

कई मौकों पर हमें अलग–अलग उद्देश्यों के लिए फॉर्म भरने की जरूरत पड़ती है, जैसे आवेदन फॉर्म, ट्रेन में आरक्षण के लिए फॉर्म, ऑर्डर फॉर्म, चेक इत्यादि। कई लोग फॉर्म भरने से डरते हैं और उन्हें भरने के लिए हमेशा किसी की मदद की जरूरत होती है। अक्सर हमारे फॉर्म इसलिए काट दिए जाते हैं क्योंकि वे ठीक से नहीं भरे जाते। इसे सबसे बुनियादी लेखन कौशलों में से एक माना जाता है, जहाँ शब्दावली की सटीकता महत्वपूर्ण होती है। आप सोच सकते हैं कि क्या स्कूल में बच्चों को इस कौशल की जरूरत होती है। हाँ, उन्हें इसकी जरूरत होती है। और अगर हम उन्हें शुरू से ही सही तरीके से प्रशिक्षित करें, तो उनमें बहुत आत्मविश्वास आएगा। अब हम इस कौशल की जरूरत वाले कुछ बहुत ही सरल कार्यों पर नजर डालेंगे।

कार्य 1ः यहाँ एक लेबल है जिसे आप अपनी इतिहास की नोटबुक पर लगाना चाहते हैं। इसे भरें।

कक्षा

विद्यालयः

अब वी.आर. प्राथमिक विद्यालय में एक लड़की के लेबल को देखेंः

नामः रुपाली वर्मा

कक्षाः 10—बी

विद्यालयः वी .आर. प्राथमिक विद्यालय

उपविषयः इतिहास

रुपाली एक छोटी लड़की है। उसका का उपनाम वर्मा है। वह वी.आर. प्राथमिक विद्यालय में कक्षा 10—बी में पढ़ती है। इतिहास उसका एक विषय है।

अब, अपने पड़ोसी की नोटबुक पर लेबल देखें, और उसके बारे में चार वाक्य लिखें

सूचना स्थानांतरण

''सूचना स्थानांतरण'' से हमारा क्या तात्पर्य है? सरल शब्दों में कहें तो इसका अर्थ है, सूचना को एक रूप से दूसरे रूप में स्थानांतरित करना, जैसे कि ग्राफ के आधार पर पैराग्राफ लिखना या दिए गए डेटा के आधार पर

तालिका बनाना। जीवन के लगभग हर क्षेत्र में हमें इस कौशल का उपयोग करना पड़ता है। जबकि तालिकाओं और चार्ट जैसे गैर–मौखिक संचार को मौखिक संचार (यानी पैराग्राफ या रिपोर्ट) में बदलने से रचना कौशल विकसित होता है, विपरीत प्रक्रिया से शिक्षार्थियों को अपनी समझ कौशल विकसित करने में मदद मिलती है। यह एक महत्वपूर्ण अध्ययन कौशल है जो बच्चों को गणित, विज्ञान, इतिहास आदि जैसे विषयों के अध्ययन में उपयोगी होगा। वास्तव में, फॉर्मिंग भी एक प्रकार का सूचना अनुवादक है।

रचना

चित्र हमेशा से ही अंग्रेजी के अच्छे शिक्षकों के बीच लोकप्रिय रहे हैं। एंड्रयू राइट (1989) ने भाषा सीखने में चित्रों की कई भूमिकाएँ सूचीबद्ध की हैं।

1. चित्र छात्रों को प्रेरित करते हैं। वे उन्हें ध्यान देने और भाग लेने के लिए प्रेरित करते हैं।
2. चित्र वास्तविक दुनिया को कक्षा में लाते हैं और सीखने के लिए एक संदर्भ ख्या भाषा, प्रदान करते हैं।
3. चित्रों के प्रति अलग–अलग प्रतिक्रियाएँ संभव हैं। उन्हें वस्तुनिष्ठ तरीके से वर्णित किया जा सकता है, या व्याख्या की जा सकती है, या वस्तुनिष्ठ रूप से प्रतिक्रिया दी जा सकती है।
4. चित्र लेख को संक्षिप्त कर सकते हैं, जो बातचीत, चर्चा और कहानी कहने में संदर्भित किया जा सकता है।

चित्र तैयार करना आसान है, और व्यवस्थित करना भी आसान है। वे भाषा के सार्थक और प्रामाणिक उपयोग के लिए गुंजाइश प्रदान करेंगे। चित्रों का उपयोग सभी स्तरों के छात्रों के साथ किया जा सकता है–शुरुआती से लेकर उन्नत शिक्षार्थियों तक, बच्चों से लेकर वयस्कों तक। एक बार शिक्षक के पास चित्रों का संग्रह हो जाता है, और वह उन तरीकों की पहचान कर लेता है जिनसे उनका उपयोग किया जा सकता है। उसे तैयारी के लिए बहुत कम समय की आवश्यकता होती है। 'यानी, एक बार जब उसके पास चित्रों का एक समूह हो जाता है, तो वह उन्हें जब चाहे खींच सकती है। इसके अलावा, हमारे जैसे विकासशील देश में जहाँ उच्च तकनीक, शैक्षिक सहायता व्यावहारिक नहीं है, चित्र एक किफायती लेकिन दिलचस्प संसाधन प्रदान करते हैं। अब हम कुछ ऐसे कार्यों पर नजर डालेंगे जहाँ लेखन कौशल विकसित करने के लिए चित्रों का उपयोग किया जाता है।

कार्य 1: इस कार्य को विभिन्न स्तरों पर इस्तेमाल किया जा सकता है। यहाँ हमें ऐसे चित्रों की आवश्यकता है जहाँ चीजें गलत हैं।

a) उदाहरण के लिए एक आदमी ने एक पैर में जूता और दूसरे में चप्पल पहना हुआ है।

b) एक महिला कंधे पर एक बैग लेकर चल रही है, जिसमें कोई पट्टा नहीं है।

c) एक घड़ी है, जिसमें घंटे की सुई नहीं है।

d) यहाँ एक नोटिस है जो उल्टा है, आदि।

बच्चों को चित्र को ध्यान से देखना है और गलतियों को पहचानना है।

डायरी

डायरी एक व्यक्तिगत रिकॉर्ड है। इसलिए जिस तरह से हम डायरी लिखते हैं वह सामान्य रूप से अंग्रेजी लिखने के तरीके से अलग है। हमें सामान्य रूप से अंग्रेजी लिखने की जरूरत नहीं है। हमें पूरे वाक्य लिखने की भी जरूरत नहीं है और ना ही हमें निरंतरता के बारे में चिंता करने की जरूरत है। विचार और भावनाएँ अक्सर एक असंबद्ध तरीके से व्यक्त की जाती हैं, क्योंकि वे दिमाग में कौंधती हैं। हम अपने खुद के संक्षिप्तीकरण का उपयोग कर सकते हैं। डायरी की भाषा टेलीग्राम की भाषा के करीब है।

कार्य 1: निम्नलिखित शीला की डायरी का एक पृष्ठ है।

7 बजे उठी–माँ घर पर नहीं थी–दादी ने कहा कि वह अस्पताल गई है। मैं चिंतित हूँ। पिताजी 8

बजे घर लौटते हैं मुझे स्कूल छोड़ते हैं। मैं अस्पताल जाना चाहती हूँ–पिताजी कहते हैं 'नहीं'–शाम को पिताजी मुझे स्कूल से लेने आते हैं। खुशी की बात हैं–मुझे 2 चोकलेट देते हैं–हम सीधे अस्पताल जाते हैं – माँ को देखकर कितना अच्छा लगा वाह। वो मेरा भाई है। बहुत कोमल और प्यारा–बिल्कुल गुड़िया जैसा। मैं उसे जोजो कहने जा रही हूँ। वो मुझे 'दीदी ' कहेगा–आज मेरे जीवन का सबसे खुशी का दिन है।

इस डायरी प्रविष्टि को एक निरंतर पैराग्राफ के रूप में पुनः लिखें।

संवाद

संवाद बोली जाने वाली व्यावहारिक भाषा से संबंधित हैं। लेकिन अक्सर उन्हें पाठ्यक्रम में शामिल नहीं किया जाता क्योंकि बोली जाने वाली व्यावहारिक भाषा को समझना काफी मुश्किल होता है। संवाद बहुत सरल या तथ्यात्मक हो सकते हैं, जैसे कि दैनिक बातचीत में। वे साहित्यिक ग्रंथों–खासकर उपन्यासों में अत्यधिक कलात्मक और कल्पनाशील भी हो सकते हैं। प्राथमिक और माध्यमिक स्तर पर हम सरल संवादों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं।

संवाद को स्वाभाविक क्या बनाता है–यानी, हम जिस तरह से रोज बोलते हैं, उससे बहुत मिलता–जुलता हैं।

- संवाद हमेशा पूरे वाक्य में नहीं होना चाहिए।
- सरल शब्दावली का उपयोग करना पर्याप्त है।
- बहुत सारे संक्षिप्ताक्षरों का उपयोग किया जाता है जैसे कि can't, don't आदि।
- बोलचाल के भावों की अनुमति है जैसे कि tummy, oops, wow! dad, आदि।

कार्य 1: निम्नलिखित अहमद और शरीफ के बीच टेलीफोन पर हुई बातचीत का एक हिस्सा है।

पूरी बातचीत को फिर से बनाएँ।

अहमद :

शरीफः

अहमदः और आप जानते हैं, गणित की शिक्षिका भी आज छुट्टी पर थी।

शरीफः तो आपके पास दो खाली पीरियड थे? तो मैंने आखिरकार ज्यादा कुछ मिस नहीं की!

अहमदः ओह, हमने बहुत बढ़िया समय बिताया! मैं चाहता था कि आप आज स्कूल आते।

आप और आपके "चुटकुले"।

अहमद :

शरीफः

पत्र

हम सभी विभिन्न कारणों से पत्र लिखते हैं। पत्र हमें उन लोगों से संवाद करने में सक्षम बनाते हैं जो हमसे दूर रहते हैं। हम जिन उद्देश्यों के लिए पत्र लिखते हैं उनमें से कुछ हैंः आमंत्रित करना, आमंत्रित करना, पूछताछ करना, शिकायत करना, बातचीत करना, सहानुभूति व्यक्त करना आदि। प्रत्येक पत्र में एक लेखक, एक पाठक और एक परिस्थिति होती है।

पत्र दो प्रकार के होते हैंः

क) औपचारिक पत्र आमतौर पर व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए लिखे जाते हैं जो आमतौर पर दूसरों से जुड़े होते हैं

ख) अनौपचारिक पत्रों में परिवार के सदस्यों, रिश्तेदारों आदि के बीच सभी पत्राचार शामिल होते हैं।

पत्र के मुख्य भाग हैं।

लेखक का पता, तिथि, प्राप्तकर्ता का पता, अभिवादन, पत्र का मुख्य भाग, सदस्यता, हस्ताक्षर और हस्ताक्षर के नीचे लेखक का पूरा नाम। एक अनौपचारिक पत्र के महत्वपूर्ण भाग हैं: लेखक का पता, तारीख, अभिवादन, पत्र का मुख्य भाग, सदस्यता और हस्ताक्षर।

कार्य 1: **उलझा हुआ पत्र**

आशा द्वारा अपनी माँ को लिखे गए इस पत्र को पढ़ें। आशा छात्रावास में अपने जीवन का वर्णन कर रही है। लेकिन पैराग्राफ उलझे हुए हैं। उन्हें सही क्रम में रखें।

रात में हम खाने में चपाती और एक गिलास दूध भी खाते हैं। हम रात 10 बजे तक पढ़ते हैं। फिर लाइट बंद करनी पड़ती है। आप जानते हैं कि यह मेरे लिए कितना मुश्किल है।

मैं घर पर कितनी देर रात फिल्में देखती थी?

छात्रावास में हम चार लोग एक कमरे में रहते हैं। प्रत्येक के पास एक खाट, एक मेज, एक डेस्क और एक अलमारी है। मेरी रूममेट शन्निला (कलकत्ता से), सपना (दिल्ली से) और नंदिता (केरल से) हैं। मैं कुछ बंगाली और मलयालम भी सीख रही हूँ। हम रात में बैठकर काफी देर तक बातें करते हैं। हम हमेशा सब कुछ साथ में करते हैं।

प्यारी माँ, आशा है कि आपके साथ सब ठीक होगा। आपने मुझसे छात्रावास के बारे में पूछा था। अब मैं आपको अपने विवरण से बोर करने जा रही हूँ।

क्या तुम यकीन कर सकती हो माँ, कि तुम्हारी साफ–सुथरी बेटी सुबह 5 बजे उठ जाती है? हाँ, हॉस्टल ने मुझे बहुत बदल दिया है। छह बजे तक बिस्तर पर कॉफी नहीं मिलती, लेकिन बाथरूम के लिए पागलों की तरह भागना पड़ता है। अगर हम शाम तक डाइनिंग हॉल में नहीं पहुँचते तो नाश्ता भी नहीं मिलता! ऐसा मत सोचो कि तुम्हारी बेटी तकलीफ में है। मुझे तुम्हें अपने दोस्तों के बारे में बताना चाहिए।

अनुच्छेद / निबंध

अनुच्छेद, लेखन के किसी भी सतत भाग का हिस्सा होते हैं जैसे निबंध, रिपोर्ट, पत्र आदि। इसलिए हमारे विद्यार्थियों को अच्छे अनुच्छेद लिखना सिखाना आवश्यक है।

एक अच्छी तरह से लिखे गए अनुच्छेद की विशेषताएँ क्या हैं?

क) इसमें एक विषय वस्तु होती है, यानी एक वाक्य जिसमें अनुच्छेद का मुख्य विचार होता है।

ख) एक अनुच्छेद अच्छी तरह से व्यवस्थित होता है– इसमें एक विस्तृत योजना होती है। इसमें अनुच्छेद संगठन के विभिन्न रूप होते हैं जैसे किसी विचार का उदाहरण, कथन, यानी घटनाओं का एक क्रमबद्ध संगठनय तुलना–विरोधाभास, आदि।

ग) एक पैराग्राफ में सुसंगति होती है–प्रत्येक वाक्य तार्किक रूप से पिछले वाक्य का अनुसरण करता है, और अगले वाक्य की आशा करता है।

जब हम बच्चों को पैराग्राफ लेखन सिखाते हैं, तो हम उन पर एकता, सुसंगति और विचारों के उचित संगठन के इन विचारों को प्रभावित करना चाहिए।

कार्य 1: प्राथमिक स्तर में हम एक आदर्श पैराग्राफ बना सकते हैं और बच्चों से उसका बारीकी से अनुकरण करने के लिए कह सकते हैं।

किरण ने अपना पेंसिल बॉक्स खो दिया है और उसने निम्नलिखित सूचना बताई है:

"मेरा पेंसिल बॉक्स लाल रंग का है। इस पर मिकी माउस की तस्वीर है। इसमें दो पेंसिल हैं। एक पेंसिल काली है और दूसरी नीली। इसमें एक गुलाबी रंग का रबर भी है। बॉक्स के अंदर एक सुपरमैन स्टिकर है। मैंने उसमे दो रुपये का सिक्का रखा है।"

अब अपनी स्कूल बैग के बारे में एक पैराग्राफ इसी तरीके से लिखें।

रिपोर्ट

रिपोर्ट किसी घटना या अनुभव का वर्णन करती है।

रिपोर्टें सामान्य निम्न प्रकार की होती हैंः समाचार पत्र रिपोर्ट, वैज्ञानिक रिपोर्ट या रिपोर्ट।

रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएँ निम्नलिखित हैं।

1. रिपोर्ट संक्षिप्त और पूर्ण होती है।
2. यह आमतौर पर तीसरे व्यक्ति में लिखी जाती है।
3. इसमें केवल प्रासंगिक विवरण शामिल होते हैं—कोई विषयांतर नहीं होता। यह सटीक होती है।
4. इसमें भावनात्मक ओवरटोन नहीं होते। यह स्पष्ट होती है।
5. विचार तार्किक रूप से व्यवस्थित होते हैं

कार्य I)

आपको स्कूल समाचार पत्र 'स्कूल टाइम्स' के संपादक नियुक्त किया गया है। आपको गणतंत्र दिवस समारोह की रिपोर्ट करनी है। निम्नलिखित लिंक का उपयोग करें और एक रिपोर्ट लिखें।

"२६ जनवरी १६६८—सुबह 7.00 बजे—सभी छात्र सफेद कपड़े पहने, ध्वज स्तंभ के नीचे एकत्रित हुए—मुख्य अतिथि, पुलिस आयुक्त सुबह 7.30 बजे पहुंचे—ध्वजारोहण किया गया—सभी ने ध्वज गीत गाए—मुख्य अतिथि को एन.सी.सी. द्वारा गार्ड ऑफ ऑनर दिया गया। छात्रों की बैठक—''भारत माता के प्रति युवाओं के कर्तव्य"——विद्यालय के प्रधानाचार्य द्वारा धन्यवाद प्रस्ताव—सभी के लिए चाय।"

बोध प्रश्नः— नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.4 डायरी किस प्रकार का रिकॉर्ड है?

....

प्र0.5 संवाद किस प्रकार की भाषा है?

....

....

प्र0.6 अनुच्छेद क्या होते है?

....

....

8.6 विभिन्न प्रकार के लेखन कौशल विकसित करना

लिखित रचना लेखन कौशल के प्रमुख प्रकार हैंः

- पैराग्राफ / अनुच्छेद लेखन कौशल

- निबंध लेखन कौशल
- पत्र लेखन कौशल
- रिपोर्ट लेखन कौशल

हम नीचे इनमें से प्रत्येक लेखन के प्रकार और संबंधित कौशल पर चर्चा करेंगे।

1. पैराग्राफ / अनुच्छेद लेखन कौशल

अनुच्छेद किसी भी निरंतर लेखन का हिस्सा होते हैं, जैसे निबंध, रिपोर्ट, पत्र आदि। अच्छी तरह से लिखे गए पैराग्राफ की विशेषताएँ हैं।

- **एकता–** प्रत्येक पैराग्राफ विशिष्ट विचार से संबंधित होता है। आम तौर पर अधिकांश पैराग्राफ में एक विषय वाक्य होता है जिसमें पैराग्राफ का मुख्य विचार होता है।
- **सम्मेलन**– प्रत्येक वाक्य एक पैराग्राफ होता है, जो तार्किक रूप से पिछले वाक्य का अनुसरण करता है, और अगले वाक्य की आशा करता है।
- **संगठित**– प्रत्येक पैराग्राफ की एक निश्चित योजना होती है। अनुच्छेद संगठन के विभिन्न प्रकार हो सकते हैं: कथन, अर्थात् घटनाओं का समय क्रम या संगठन, तुलना और विरोधाभास आदि।

अनुच्छेद लिखते समय लेखक को विचारों की एकता, सुसंगति और उचित संगठन के विचारों को ध्यान में रखना चाहिए।

2. निबंध लेखन कौशल

निबंध लेखन लिखित रचना का एक महत्वपूर्ण रूप है। इस रूप में हम किसी भी विषय के बारे में अपने विचारों और अनुभवों को सुव्यवस्थित और प्रभावी तरीके से व्यक्त करते हैं। कविता आदि की पंक्तियों द्वारा समर्थित होने पर अभिव्यक्ति तीव्र हो जाती है। आमतौर पर एक निबंध के तीन भाग होते हैं–परिचय, मुख्य भाग और निष्कर्ष। हम निबंध के मुख्य भाग में व्यक्त मुख्य विचार या घटना का परिचय देकर निबंध लिखना शुरू करते हैं। एक निबंध की गुणवत्ता एक प्रभावी और दिलचस्प परिचय से आंकी जाती है। निबंध के मुख्य भाग में विषय के विभिन्न पहलुओं की व्याख्या और चर्चा करने वाले कई सुव्यवस्थित और सुसंगत अंश होते हैं। निबंध का समापन करते समय, लेखक संपूर्ण रचना का सार इस तरह से प्रस्तुत करता है कि वह पाठक पर स्थायी प्रभाव छोड़ता है।

3. पत्र लेखन कौशल

पत्र हमें उन लोगों से संवाद करने में सक्षम बनाता है जो हमसे दूर हैं।

हर पत्र में एक लेखक, एक पाठक और एक परिस्थिति होती है। कुछ उद्देश्य जिनके लिए हम पत्र लिखते हैं, वे हैं सूचित करना, आमंत्रित करना, पूछताछ करना, शिकायत करना, सहानुभूति व्यक्त करना, बधाई देना, आदि।

पत्र दो प्रकार के होते हैं:

- **औपचारिक**
- **अनौपचारिक**

औपचारिक पत्र आमतौर पर अजनबियों के बीच व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए लिखे जाते हैं।

अनौपचारिक पत्रों में परिवार के सदस्यों, दोस्तों, रिश्तेदारों आदि के बीच सभी पत्राचार शामिल होते हैं।

पत्र के महत्वपूर्ण भाग हैं:

- लेखक का पता,

- लेखन की तिथि,
- प्राप्त कर्ता का पता,
- अभिवादन,
- पत्र का मुख्य भाग,
- लेखक का हस्ताक्षर और
- पूरा नाम।

4. रिपोर्ट लेखन कौशल

एक रिपोर्ट किसी घटना या अनुभव का वर्णन करती है।

रिपोर्ट कई तरह की होती हैं।

–समाचार पत्र की रिपोर्ट,

–सामाजिक, राजनीतिक या धार्मिक समारोह की घटनाओं की प्रतिवेदन,

–राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय खेलध्खेल प्रतियोगिताएं,

–वैज्ञानिक आविष्कार,

–व्यावसायिक मीटिंग आदि।

रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं।

1) रिपोर्ट संक्षिप्त और पूर्ण होती है।
2) यह आमतौर पर तीसरे व्यक्ति में लिखी जाती है।
3) इसमें केवल प्रासंगिक विवरण शामिल होते हैं।
4) यह सटीक होती है और इसमें कोई विषयांतर नहीं होता।
5) विचारों को तार्किक रूप से व्यवस्थित किया जाता है।
6) इसमें भावनात्मक अतिशयोक्ति नहीं होती।

8.7 लेखन कौशल को तेज करना

यदि आपको लेखन के लिए सही शब्द या अभिव्यक्ति खोजने में कठिनाई हो रही है, तो ऐसा न सोचें कि आप अकेले हैं। मजबूत लेखन कौशल विकसित करने के लिए अभ्यास और धैर्य की आवश्यकता होती है। कई लोगों के लिए स्पष्ट और संक्षिप्त रूप से लिखना हमेशा आसान नहीं होता। हालाँकि, ऐसे सामान्य तरीके हैं जिनसे आप अपने कौशल को तेज कर सकते हैं। कुछ सुझाव हैं।

- हर रोज या कम से कम जितनी बार संभव हो, लिखें। एक दैनिक पत्रिका रखें। यहाँ विषय–वस्तु महत्वपूर्ण नहीं है, बल्कि लिखने का कार्य महत्वपूर्ण है। जब आप अपने लेखन कौशल को विकसित करते हैं तो निरंतरता महत्वपूर्ण होती है।
- जितना संभव हो उतना पढ़ें। दूसरों ने जो लिखा है, उसे खुद के सामने लाना एक बढ़िया साधन है। किताबें, समाचार–पत्र और पत्रिकाएँ पढ़ें। इससे आपको शैली, वाक्य संरचना और शब्द उपयोग के बारे में अधिक समझने में मदद मिलेगी।
- अपने लेखन कौशल को विकसित करने में मदद के लिए पेशेवर लेखन कक्षा या ऑनलाइन पाठ्यक्रम में शामिल हों।

- बुनियादी व्याकरण के नियम सीखें। लेखन मार्गदर्शिकाएँ किसी भी पुस्तकालय के संदर्भ अनुभाग में पाई जा सकती हैं। एक बार जब आप मूल बातों में महारत हासिल कर लेते हैं, तो लेखन कौशल विकसित करना आसान हो जाएगा।
- एक से अधिक ड्राफ्ट लिखने की तैयारी करें। पहली बार में किसी का भी लेखन सही नहीं होता। आपने जो लिखा है उसे जोर से पढ़ें, इससे उन त्रुटियों को पकड़ने में मदद मिल सकती है जिन्हें आपने अन्यथा नहीं देखा होगा। किसी भरोसेमंद सहकर्मी से अपने काम की प्रूफरीडिंग करने के लिए भी कह सकते हैं।

बोध प्रश्नः— नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।
प्र0.7 रिपोर्ट क्या करती है?

....

प्र0.8 पैराग्राफ की मुख्य विशेषता बताये।

....

....

प्र0.9 पत्र लेखन कितने प्रकार के होते है?

....

....

प्र0.10 रिपोर्ट की मुख्य विशेषताए बताये।

....

....

8.8 इकाई सारांश

- लेखन के सभी छह घटक निम्न हैः भाषा की संरचनाएँ ,व्याकरण, प्रक्रिया, विधाएँ और शैलियाँ , विशेषताएँ , मूल्यांकन
- लेखन के पाँच मुख्य प्रकार हैंः व्याख्यात्मक, वर्णनात्मक, कथात्मक, प्रेरक और रचनात्मक।
- लेखन के विभिन्न प्रकारः— फॉर्म भरना, सूचना स्थानांतरण, रचना, डायरी, संवाद, पत्र, अनुच्छेद निबंध, रिपोर्ट
- लिखित रचना / लेखन कौशल के प्रमुख प्रकार हैं।
  - पैराग्राफ अनुच्छेद लेखन कौशल
  - निबंध लेखन कौशल
  - पत्र लेखन कौशल
  - रिपोर्ट लेखन कौशल
- पत्र दो प्रकार के होते हैं।
  - औपचारिक
  - अनौपचारिक
- एक रिपोर्ट किसी घटना या अनुभव का वर्णन करती है।

8.9 बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र0.1 प्रभावी लेखन के घटक बताएये ।

उ0.1 लेखन के सभी छह घटक निम्न है।

1. भाषा की संरचनाएँ
2. व्याकरण
3. प्रक्रिया
4. विधाएँ और शैलियाँ
5. विशेषताएँ
6. मूल्यांकन

प्र0. 2 लेखन कौशल के विभिन्न प्रकारों के नाम बताइए।

उ0. 2 लेखन कौशल के प्रकार

- व्याख्यात्मक,
- कथात्मक,
- वर्णनात्मक,
- प्रेरक
- रचनात्मक

प्र0. 3 सबसे मजेदार लेखन किस प्रकार को कहते है ?

उ0. 3 रचनात्मक लेखन सबसे मजेदार प्रकार का लेखन है।

प्र0.4 डायरी किस प्रकार का रिकॉर्ड है?

उ0.4 डायरी एक व्यक्तिगत रिकॉर्ड है।

प्र0.5 संवाद किस प्रकार की भाषा है?

उ0.5 संवाद बोली जाने वाली व्यावहारिक भाषा से संबंधित हैं।

प्र0.6 अनुच्छेद क्या होते है?

उ0.6 अनुच्छेद, लेखन के किसी भी सतत भाग का हिस्सा होते हैं जैसे निबंध, रिपोर्ट, पत्र आदि।

प्र0.7 रिपोर्ट क्या करती है?

उ0.7 एक रिपोर्ट किसी घटना या अनुभव का वर्णन करती है।

प्र0.8 पैराग्राफ की मुख्य विशेषताए बताये।

उ0.8 अच्छी तरह से लिखे गए पैराग्राफ की विशेषताएँ हैं:

- ंएकता– प्रत्येक पैराग्राफ विशिष्ट विचार से संबंधित होता है। आम तौर पर अधिकांश पैराग्राफ में एक विषय वाक्य होता है जिसमें पैराग्राफ का मुख्य विचार होता है।
- सम्मेलन– प्रत्येक वाक्य एक पैराग्राफ होता है, जो तार्किक रूप से पिछले वाक्य का अनुसरण करता है, और अगले वाक्य की आशा करता है।
- संगठित– प्रत्येक पैराग्राफ की एक निश्चित योजना होती है। अनुच्छेद संगठन के विभिन्न प्रकार हो सकते हैं: कथन, अर्थात् घटनाओं का समय क्रम या संगठन, तुलना और विरोधाभास आदि।

प्र0.9 पत्र लेखन कितने प्रकार के होते है?

उ0.9 पत्र दो प्रकार के होते हैं:

- औपचारिक
- अनौपचारिक

औपचारिक पत्र आमतौर पर अजनबियों के बीच व्यावसायिक उद्देश्यों के लिए लिखे जाते हैं।

अनौपचारिक पत्रों में परिवार के सदस्यों, दोस्तों, रिश्तेदारों आदि के बीच सभी पत्राचार शामिल होते हैं।

प्र0.10 रिपोर्ट की मुख्य विशेषताए बताये।

उ0.10 रिपोर्ट की मुख्य विशेषताएं निम्नलिखित हैं:

1) रिपोर्ट संक्षिप्त और पूर्ण होती है।
2) यह आमतौर पर तीसरे व्यक्ति में लिखी जाती है।
3) इसमें केवल प्रासंगिक विवरण शामिल होते हैं।
4) यह सटीक होती है और इसमें कोई विषयांतर नहीं होता।
5) विचारों को तार्किक रूप से व्यवस्थित किया जाता है।
6) इसमें भावनात्मक अतिशयोक्ति नहीं होती।

8.10 अभ्यास कार्य

प्र0.1. लेखन कौशल के विभिन्न प्रकारों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्र0.2. लेखन के प्रकारों पर प्रकाश डाले।

8.11 अधिन्यास/कियाकलाप

प्र0.1. रिपोर्ट की मुख्य विशेषताऐ लिखिए।

प्र0.2. लेखन कौशल को तेज करने के लिए सुझाव लिखे।

8.12 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

प्र0.1. अपने सहपाठियों के साथ श्रवण दिव्यांग बच्चो के अनुरूप उपयुक्त लेखन कौशल घटकों को विकसित करने पर चर्चा करे।

8.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Ausubel, D. P. (1968). Educational psychology: A cognitive view. New York: Holt, Rinehard, and Winston, Inc.
- Balasundaram, P. (2005). The Journey towards Inclusive Education in India. Presented at Seisa University, Ashibetsu Shi, Hokkaido, Japan.
- Cole, E.,&Flexer, C. (2015). Children with hearing loss: Developing listening and talking, birth to 6 (3rd edition). San Diego, CA: Plural Publishing, Inc.
- IEDSS, (2009). Inclusive Education of the Disabled at Secondary Stage. Retrieved on 5/5/2019 from http://mhrd.gov.in/iedss
- Moeller, M.P., Tomblin, J.B., Yoshinaga-Itano, C., Connor, C.M.,&Jerger, S. (2007). Current state of knowledge: language and literacy of children with hearing impairment. Ear Hear. 28(6), 740-753.

- Moeller, M. P. (2000). Early intervention and language development in children who are deaf and hard of hearing. Pediatrics, 106(3), e43-e43. Retrieved from https://doi.org/10.1542/peds.106.3.e43
- Ormrod, J., Anderson, E.,&Anderson, L. (2017). Educational psychology. Developing learners (9th ed.). Pearson Education Limited. England.
- Rights of Persons with Disabilities Act, Rights of Persons with Disabilities Act. (RPWD. 2016). Retrieved from
- http://www.disabilityaffairs.gov.in/upload/uploadfiles/files/ RPWD%20ACT%202016.Pdf
- Right to Education, (2009). (27 October, 2017) Retrieved from http://mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/upload_document/RTE_2nd.pdf
- Sarva Siksha Abhiyan, (2000). Manual for District- Level Functionaries – Level Functionaries. Retrieved from https://darpg.gov.in/sites/default/ files /Sarva%20Siksha%20Abhiyan.pdf

इकाई–9 लेखन को विकसित करने के चरण, चुनौतियाँ और रणनीतियाँ

इकाई संरचना

9.1 परिचय

9.2 उद्देश्य

9.3 दृष्टिकोण (Approaches)–नियंत्रित से मुक्त, मुक्त लेखन, पैराग्राफ पैटर्न, व्याकरण वाक्य विन्यास दृष्टिकोण, संचार दृष्टिकोण और प्रक्रिया दृष्टिकोण

9.4 लेखन कौशल विकसित करने के लिए गतिविधियाँ

- पत्र लिखना सीखना
- एक साफ और सुपाठ्य लिखावट विकसित करना
- लेखन के यांत्रिक तत्व
- सही ढंग से वर्तनी सीखना
- लेखन कौशल विकसित करने की तकनीक के रूप में श्रुतलेख

9.5 लिखित रचना

- पैराग्राफिंग
- कहानी
- लिखित सामग्री की समझ
- निबंध
- पत्र
- संवाद

9.6 योजना बनाने, प्रारूप तैयार करने, मूल्यांकन करने, पुनरीक्षण करने, संपादन करने में संघर्ष।

9.7 लेखन रणनीतियाँय माइंड–मैपिंग, रूपरेखा बनाना, शोध करना,

9.8 लेखन कौशल विकसित करने के मॉडल

9.9 इकाई सारांश

9.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

9.11 अभ्यास कार्य

9.12 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

9.13 कुछ उपयोगी पुस्तके

9.1 परिचय

भाषा सीखने के मूल क्रम में सुनना, बोलना और पढ़ना के बाद लेखन का स्थान सबसे अंतिम है। फिर भी लेखन के महत्व को कभी कम नहीं आंकना चाहिए। प्रख्यात लेखकों, दार्शनिकों और वैज्ञानिकों की महान कृ तियाँ लिखित रूप में सुरक्षित रहती हैं। लिखित पहलू के बिना भाषा का कोई महत्व नहीं रह जाता। लेखन के माध्यम से व्यक्ति अपने विचार या विचार दूसरों तक पहुँचाने में सक्षम होता है जो लेखक के सामने मौजूद नहीं

होते। इसके अलावा, लेखन रिकॉर्ड को स्थायी बनाता है। जो कुछ भी एक बार लिखा जाता है वह हमेशा के लिए रहता हैय जब तक कि उसे जानबूझकर नष्ट न कर दिया जाए। लिखते समय व्यक्ति को बहुत सटीक होना चाहिए।

9.2 उद्देश्य इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त अधिगमकर्ता / विद्यार्थी

- लेखन के विभिन्न दृष्टिकोणों को समझ पाएंगे।
- लेखन कौशल विकसित करने के लिए गतिविधियाँ को जान पाएंगे।
- लिखित रचना के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कर पाएंगे।
- योजना बनाने, प्रारूप तैयार करने, मूल्यांकन करने, पुनरीक्षण करने, संपादन करने में आनेवाले संघर्षो से अवगत हो पाएंगे।
- लेखन रणनीतियाँ को समझ पाएंगे।
- लेखन कौशल विकसित करने के मॉडल के बारे में जान पाएंगे।

9.3 दृष्टिकोण–नियंत्रित से मुक्त, मुक्त लेखन, पैराग्राफ पैटर्न, व्याकरण वाक्य विन्यास दृष्टिकोण और संचार दृष्टिकोण (Approaches&controlled to free free writing, paragraph pattern, grammar syntax approach and communicative approach)

लेखन को एक उत्पादक कौशल के रूप में प्रमाणित करने वाले कई सिद्धांतों के बावजूद, लेखन कैसे सिखाया जाए इस सवाल का कोई जवाब नहीं है। शिक्षकों, छात्रों, शिक्षण शैलियों और सीखने की शैलियों के समान ही कई उत्तर हैं। हालाँकि, सबसे उपयुक्त तकनीकों और सबसे उपयुक्त दृष्टिकोण को चुनने के लिए लेखन के क्या, क्यों और कैसे को समझना आवश्यक है।

नियंत्रित से मुक्त दृष्टिकोण

इस दृष्टिकोण को सबसे पहले रैम्स (1983) द्वारा पेश किया गया था और यह ऑडियो–भाषाई दृष्टिकोण पर आधारित है, जिसने 1950 और 1960 के दशक की शुरुआत में दूसरी भाषा सीखने पर अपना दबदबा बनाया था। यह लेखन के लिए एक अनुक्रमिक दृष्टिकोण है, जिसमें पाठों की नकल करना, हेरफेर करना या बदलना शामिल है। छात्र पहले शब्दों और वाक्यों के साथ अभ्यास करते हैं, फिर पैराग्राफ और लंबी रचनाओं पर आगे बढ़ते हैं। उन्हें दिए गए इनपुट में व्याकरणिक रूप से हेरफेर करने की आवश्यकता होती है, उदाहरण के लिए, वाक्यों को बदलना (कथनों को प्रश्नों में या प्रश्नों को कथनों में, नकारात्मक को सकारात्मक में), काल को बदलना (वर्तमान को भूतकाल में, वर्तमान को भविष्य में) और आवाज को (सक्रिय को निष्क्रिय में) या संख्या को (एकवचन को बहुवचन में)। यह दृष्टिकोण व्याकरण, वाक्य विन्यास और यांत्रिकी पर ध्यान केंद्रित करता है, और प्रवाह के बजाय सटीकता पर जोर देता है। यह रचनात्मकता पर नहीं बल्कि सामग्री और प्रारूप के पहले से मौजूद नमूनों की नकल, मॉडलिंग और अनुकूलन पर केंद्रित है।

मुक्त लेखन दृष्टिकोण

बायर्न का तर्क है कि "कई छात्र खराब लिखते हैं क्योंकि वे पर्याप्त नहीं लिखते हैं":7 (बायर्न, 1988,)। इस चेतावनी को ध्यान में रखते हुए, मुक्त लेखन दृष्टिकोण गुणवत्ता के बजाय मात्रा पर ध्यान केंद्रित करता है। यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि किसी भी दिए गए विषय पर बहुत अधिक लेखन हो सकता है, जिसे स्वतंत्र रूप से, प्रचुर मात्रा में और न्यूनतम त्रुटि सुधार के साथ प्रवाहित किया जाना चाहिए। स्क्रिवेनर (2005) के अनुसार, इस तरह के लेखन में बहुत अधिक अपशिष्ट हो सकता है, लेकिन इस प्रक्रिया में पैदा होने वाले मूल्यवान विचार बाद में वास्तविक लेखन कार्य के लिए उपयोगी साबित हो सकते हैं।

पैराग्राफ–पैटर्न दृष्टिकोण

यह दृष्टिकोण संगठन के महत्व पर जोर देता है। यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि संचार विभिन्न संस्कृतियों में और विभिन्न संदर्भों के अनुसार अलग–अलग तरीके से निर्मित और व्यवस्थित होता है, क्योंकि यह दृष्टिकोण संगठनात्मक पैटर्न पर केंद्रित है। छात्र पैराग्राफ के साथ काम करते हैं जिन्हें वे कॉपी, विश्लेषण और अनुकरण करते हैं। अभ्यास में अव्यवस्थित वाक्यों को फिर से व्यवस्थित करना (एक पैराग्राफ में), मिश्रित पैराग्राफ (एक लंबी रचना में), सामान्य और विशिष्ट जानकारी की पहचान करना, पैराग्राफ के लिए उपयुक्त विषय वाक्य लिखना, मुख्य विचार के लिए सहायक विवरण लिखना, या मुख्य विचार की पहचान करना शामिल हो सकता है जो विवरणों की गणना को कवर करता है।

व्याकरण–वाक्य विन्यास दृष्टिकोण

1983 में रैम्स द्वारा प्रस्तुत, यह दृष्टिकोण एक साथ ध्यान में रखे जाने वाले तत्वों की वकालत करता हैः व्याकरण, वाक्य विन्यास और संगठन। इस आधार से शुरू करते हुए कि सफल लेखन असतत भाषा कौशल के प्रभावी संयोजन से उपजा है, व्याकरण–वाक्य विन्यास दृष्टिकोण लेखन कार्यों के आसपास डिजाइन किया गया है जिसमें छात्रों को व्याकरण की सटीकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए संगठन पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। स्पष्ट संगठन उपयुक्त शब्दावली से अधिक कुशल उपयोग से प्राप्त होता है। इसके लिए एक सुसंगत पैराग्राफ बनाने के लिए क्रिया और काल संरचना, उपकरण को जोड़ने और यहां तक कि वाक्य संरचना के बारे में सूचित ज्ञान की आवश्यकता होती है। छात्रों को किसी कार्य को संबोधित करने के लिए तैयार करने में, सभी उल्लिखित तत्वों को या तो पहली बार पढ़ाया जाना चाहिए या अलग–अलग तत्वों के रूप में समीक्षा की जानी चाहिए, और उसके बाद ही उन्हें बड़े लिखित परिणाम में डाला जाना चाहिए। अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि इस तरह का दृष्टिकोण लेखन के उद्देश्य को संबंधित संदेश को व्यक्त करने के लिए आवश्यक भाषा उपकरणों से जोड़ता है (चावेज, एस्पिनोसा और टैपिया, 2011)।

संचारात्मक दृष्टिकोण

संचार पद्धति दो आवश्यक तत्वों को जोड़ती हैः उद्देश्य और दर्शक। इसके अलावा, इस तरह का दृष्टिकोण लेखन कार्य और उसके उत्पाद में प्रामाणिकता जोड़ता है, क्योंकि छात्रों को वास्तविक जीवन के संदर्भों में लेखकों की तरह व्यवहार करने और खुद से कुछ महत्वपूर्ण प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जो उनके लेखन का मार्गदर्शन करेंगेः मैं यह क्यों लिख रहा हूँ? (उद्देश्य) इसे कौन पढ़ेगा? (दर्शक)। हालाँकि शिक्षक ही पारंपरिक रूप से छात्रों के लिखित उत्पादों के लिए श्रोता रहे हैं, लेकिन यह दृष्टिकोण पाठकों को अधिक प्रामाणिक संचार लक्ष्य के अनुरूप विस्तारित करके (कुछ हद तक) बाँझ शिक्षण उद्देश्य से ध्यान हटाता है। कार्य का निर्माण वह स्थान है जहाँ बड़ा दर्शक वर्ग स्थित होता है और परिणामस्वरूप छात्रों को उनके लेखन के लिए एक प्रासंगिक उद्देश्य प्रदान किया जाता है, जो उन्हें सबसे उपयुक्त भाषा, सामग्री और औपचारिकता के स्तर का चयन करने में मदद करता है। यह दृष्टिकोण–कारण और श्रोता पर विशेष ध्यान देने के साथ–बर्न (1988) के इस विश्वास को दर्शाता है कि लेखन कार्य यथासंभव प्रामाणिक होने चाहिए और वास्तविक जीवन का संदर्भ छात्रों को बेहतर लिखने के लिए प्रेरित करता है।

प्रक्रिया दृष्टिकोण

जैसा कि वाक्य विन्यास द्वारा संकेत दिया गया है, प्रक्रिया दृष्टिकोण लेखन संसाधनों को उत्पाद की बजाय प्रक्रिया की ओर पुनः आवंटित करता है (हार्मर, 2001)। यह एक व्यापक दृष्टिकोण है जो सामग्री को व्यवस्थित रूप से व्यवस्थित करते हुए लेखन के क्यों, कौन और कैसे को सफलतापूर्वक जोड़ता है। यह एक जटिल तकनीक है, जिसमें शोध के विभिन्न चरण शामिल हैं और प्रभावी रूप से पूर्व–लेखन चरण (पढ़ना, सुनना) में मौखिक (चर्चा, बहस) और फिर लिखित प्रतिक्रियाओं के साथ ग्रहणशील कौशल को जोड़ती है (गोलकोवा और हुबैकोवा, 2014)। व्यापक और अधिक अमूर्त विषयों का विस्तार से पता लगाया जाता है, भाषा (शब्दावली और व्याकरण) पर विशेष ध्यान दिया जाता है और शोध को प्रोत्साहित किया जाता है ताकि विषय–वस्तु का निर्माण किया जा सके और विचार उत्पन्न किए जा सकें। इस दृष्टिकोण का मुख्य लाभ यह है कि यह रचनात्मकता (1991) के शब्दों में, "इस दृष्टिकोण का लक्ष्य उन कौशलों का पोषण करना है जिनके साथ को बढ़ावा देता है,

छात्रों को अपनी गति से काम करने की अनुमति देता है और उन्हें अपने काम को फिर से देखने और प्रक्रिया के साथ–साथ इसे सुधारने का मौका देता है। व्हाइट और आर्डेंट लेखक अपने द्वारा निर्धारित समस्याओं के लिए अपने स्वयं के समाधान तैयार करते हैं, जिसके साथ वे कच्चे माल को एक सुसंगत संदेश में आकार देते हैं, और जिसके साथ वे इसे व्यक्त करने के लिए एक स्वीकार्य और उपयुक्त रूप की दिशा में काम करते हैं।"

बोध प्रश्नः—नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.1 नियंत्रित से मुक्त दृष्टिकोण दृष्टिकोण को सबसे पहले किसके द्वारा और कब पेश किया गया था ?

....

....

प्र0.2"कई छात्र खराब लिखते हैं क्योंकि वे पर्याप्त नहीं लिखते हैं" यह तर्क किसने दिया था ?

....

....

प्र0.3 पैराग्राफ– पैटर्न दृष्टिकोण किस सिद्धांत पर आधारित है?

....

प्र0.4 संचार पद्धति किन दो आवश्यक तत्वों को जोड़ती है ?

....

....

9.4 लेखन कौशल विकसित करने के लिए गतिविधियाँ(Activities to Develop Writing Skills)

भाषा, पढ़ने और लिखने के बीच गहरा संबंध है। सुनने वाले बच्चे आमतौर पर स्कूल के साथ अत्यधिक विकसित भाषा शुरू करते हैं। वे जानते हैं कि भाषा कैसे काम करती है, यह कैसे एक साथ फिट होकर सही वाक्य बनाती है, वे भाषा के उद्देश्य को जानते हैं और उनके पास खुद को अभिव्यक्त करने के लिए कई शब्द हैं। भाषा ने उन्हें बाहरी दुनिया से जोड़ा है और भाषा के माध्यम से उन्होंने सामान्य ज्ञान का एक मजबूत आधार विकसित किया होगा। वे सवाल कर सकते हैं, बहस कर सकते हैं, तर्क–वितर्क कर सकते हैं और अपने आसपास की दुनिया को नियंत्रित करने के लिए भाषा का उपयोग कर सकते हैं।

लेकिन सुनने में कमी के कारण, श्रवण बाधित छात्रों को भाषा और लिखित अभिव्यक्ति में काफी देरी होती है। कई शिक्षकों को पैराग्राफ लिखते समय अपने छात्रों की सहायता करने के तरीकों से संघर्ष करना पड़ा है। अक्सर छात्र पूर्वलेखन कौशल के साथ संघर्ष करते हैं जहां उन्हें लिखने से पहले अपने विचारों को तैयार और व्यवस्थित करना होता है। लेखन प्रक्रिया में यह सबसे रचनात्मक कदम है।

कभी–कभी श्रवण बाधित छात्रों में व्याकरण, काल और शब्द के अंत में त्रुटियाँ होंगी। सही वाक्य संरचना के साथ वाक्य लिखना इस बात की समझ पर निर्भर करता है कि हमारी भाषा एक साथ कैसे फिट बैठती है। वे अपने लिखित कार्य के माध्यम से दिखाते हैं कि भाषा कैसे काम करती है, इसकी समझ में उनकी कमी हो सकती है। श्रवण बाधित कई छात्रों के पास अद्‌भुत विचार होते हैं और इस स्तर पर वे लिखने के लिए प्रेरित होते हैं। एक बार जब उनके विचार व्यवस्थित हो जाते हैं, तो वे लिखने के लिए तैयार हो जाते हैं, लेकिन अंग्रेजी वाक्यविन्यास, व्याकरण और शब्द क्रम इस प्रक्रिया को जटिल बना देते हैं, जिससे अक्सर छात्रों को निराशा होती है और लिखने में रुचि कम हो जाती है। श्रवण बाधित छात्रों को अक्सर विभिन्न वाक्य संरचनाओं के सही उपयोग की पुनरावृत्ति की आवश्यकता होगी ताकि वे यह स्पष्ट समझ प्राप्त कर सकें कि वाक्यों को सही ढंग से बनाने के लिए शब्द एक साथ कैसे फिट होते हैं।

उन्हें प्रोत्साहन की आवश्यकता होगी ताकि वे लिखित अभिव्यक्ति में आत्मविश्वास हासिल कर सकें।

अक्सर श्रवण बाधित छात्र अपनी कल्पना का उपयोग करने के बजाय उन तथ्यों के बारे में लिखना पसंद करते हैं जिन्हें वे जानते हैं। इस बात के कुछ सबूत हैं कि श्रवण बाधित युवा छात्रों के पास काल्पनिक खेल के सीमित अवसर हो सकते हैं और इससे उनकी कल्पना का विकास सीमित हो जाता है। पढ़ने के लिए कल्पना की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रत्येक शब्द पाठक के दिमाग में चित्र निर्माण करता है।

यहाँ विभिन्न क्षेत्रों में लेखन कौशल विकसित करने में मदद करने के लिए कुछ गतिविधियाँ दी गई हैं:

- **अक्षर लिखना सीखना**

1. **अक्षर अनुरेखण**: प्रत्येक अक्षर को सही ढंग से बनाने का अभ्यास करने के लिए अक्षरों को अनुरेखित करने की अनुमति देने वाले वर्कशीट या ऐप का उपयोग करें।

2. **वर्णमाला खेल**: ऐसे खेलों में भाग लें जिनमें अक्षरों की पहचान करना और लिखना शामिल हो, जैसे कि वर्णमाला पहेलियाँ या फ्लैशकार्ड।

- **एक साफ और सुपाठ्य लिखावट विकसित करना**

1. **हस्तलेखन अभ्यास पत्रक**: नियमित रूप से अभ्यास पत्रक का उपयोग करें जो अक्षर निर्माण और रिक्तियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

2. **सुलेख अभ्यास**: नियंत्रण और साफ–सफाई में सुधार करने के लिए सरल सुलेख अभ्यास आजमाएँ।

- **लेखन के यांत्रिक तत्व**

1. **टाइपिंग अभ्यास**: टाइपिंग की गति और सटीकता में सुधार करने के लिए टाइपिंग गेम और सॉफ्टवेयर का उपयोग करें।

2. **लेखन उपकरण**: आरामदायक लेखन के लिए सबसे अच्छा काम करने वाले विभिन्न पेन, पेंसिल और ग्रिप के साथ प्रयोग करें।

- **सही ढंग से वर्तनी सीखना**

1. **स्पेलिंग क्विज**: वर्तनी सीखने को मजेदार और प्रतिस्पर्धी बनाने के लिए स्पेलिंग क्विज में भाग लें या उसका आयोजन करें।

2. **शब्द खेल**: शब्दावली और वर्तनी कौशल को बढ़ाने के लिए स्क्रैबल या बोगल जैसे खेल खेलें।

- **लेखन कौशल विकसित करने की तकनीक के रूप में श्रुतलेख**

1. **दैनिक श्रुतलेख**: दैनिक श्रुतलेख अभ्यास का अभ्यास करें जहाँ कोई व्यक्ति किसी अंश को जोर से पढ़ता है, और आप उसे लिखते हैं।

2. **रिकॉर्डिंग और प्रतिलेखन**: छोटी कहानियाँ या अंश रिकॉर्ड करें और फिर उन्हें सुनने और लिखने के कौशल का अभ्यास करने के लिए ट्रांसक्राइब करें।

ये गतिविधियाँ लेखन कौशल विकसित करने की प्रक्रिया को आकर्षक और प्रभावी बना सकती हैं।

9.5 लिखित रचना

लिखित रचना के विभिन्न पहलुओं में कौशल विकसित करने के लिए यहाँ कुछ गतिविधियाँ और सुझाव दिए गए हैं।

पैराग्राफिंग

1. **विषय वाक्य** (Topic Sentences): प्रत्येक पैराग्राफ के मुख्य विचार को सारांशित करने वाले स्पष्ट और संक्षिप्त विषय वाक्य लिखने का अभ्यास करें।
2. **सहायक विवरण** (Supporting Details): सुनिश्चित करें कि प्रत्येक पैराग्राफ में सहायक विवरण

शामिल हों जो विषय वाक्य पर विस्तार से प्रकाश डालते हों।

3. **संक्रमण** (Transition): पैराग्राफ के बीच विचारों को सुचारू रूप से जोड़ने के लिए संक्रमण शब्दों और वाक्यांशों का उपयोग करें।

कहानी लेखन

1. **कहानी संकेत** (Story Prompts): कहानी के विचारों को प्रेरित करने और छोटी कहानियाँ लिखने का अभ्यास करने के लिए रचनात्मक संकेतों का उपयोग करें।
2. **कथानक संरचना** (Plot Structure): कहानी के मूल तत्वों पर ध्यान केंद्रित करें: परिचय, बढ़ती कार्रवाई, चरमोत्कर्ष, घटती कार्रवाई और समाधान।
3. **चरित्र विकास** (Character Development): अपने पात्रों को अधिक यथार्थवादी और भरोसेमंद बनाने के लिए विस्तृत चरित्र प्रोफाइल बनाएँ।

लिखित सामग्री की समझ (Comprehension of Written Material)

1. **पढ़ने का अभ्यास** (Reading Practice): नियमित रूप से विभिन्न प्रकार के पाठ पढ़ें और मुख्य बिंदुओं का सारांश लिखें।
2. **प्रश्न और उत्तर** (Question and Answer): किसी अनुच्छेद को पढ़ने के बाद, समझ का परीक्षण करने के लिए विषय–वस्तु के बारे में प्रश्नों के उत्तर दें।
3. **चर्चा** (Discussion): समझ को गहरा करने और विभिन्न दृष्टिकोण प्राप्त करने के लिए दूसरों के साथ सामग्री पर चर्चा करें।

निबंध लेखन

1. **थीसिस कथन** (Thesis Statements): मजबूत थीसिस कथन लिखने का अभ्यास करें जो मुख्य तर्क को स्पष्ट रूप से प्रस्तुत करते हैं।
2. **रूपरेखा** (Outline): विचारों को व्यवस्थित करने और निबंध को तार्किक रूप से संरचित करने के लिए लिखने से पहले विस्तृत रूपरेखा बनाएँ।
3. **साक्ष्य और विश्लेषण** (Evidence and Analysis): अपने तर्कों का समर्थन करने के लिए साक्ष्य का उपयोग करें और यह समझाने के लिए विश्लेषण प्रदान करें कि यह आपके थीसिस का समर्थन कैसे करता है।

पत्र लेखन

1. **औपचारिक बनाम अनौपचारिक** (Formal vs- Informal): औपचारिक और अनौपचारिक पत्रों के बीच अंतर जानें और दोनों प्रकार के लेखन का अभ्यास करें।
2. **संरचना** (Structure): पत्र की मानक संरचना का पालन करें: शीर्षक, अभिवादन, मुख्य भाग, समापन और हस्ताक्षर।
4. **उद्देश्य और लहजा** (Purpose and Tone): पत्र के उद्देश्य और प्राप्तकर्ता के आधार पर उसके लहजे और विषय–वस्तु को समायोजित करें।

संवाद लेखन

1. **यथार्थवादी वार्तालाप** (Realistic Conversations): ऐसे संवाद लिखें जो स्वाभाविक लगें और यह दर्शाएँ कि लोग वास्तव में कैसे बोलते हैं।
2. **चरित्र की आवाज** (Character Voice): सुनिश्चित करें कि प्रत्येक चरित्र की आवाज और बोलने की शैली अलग हो।

3. **विराम चिह्न** (Punctuation): संवाद को स्पष्ट और पढ़ने में आसान बनाने के लिए सही विराम चिह्नों का उपयोग करें।

ये गतिविधियाँ विभिन्न प्रकार की लिखित रचनाओं में आपके लेखन कौशल को बेहतर बनाने में मदद कर सकती हैं।

9.6 योजना बनाने, प्रारूप तैयार करने, मूल्यांकन करने, पुनरीक्षण करने, संपादन करने में संघर्ष। (Struggles in planning, drafting, evaluating, revisiting, editing)

लेखन के विभिन्न चरणों से जूझना काफी आम है। इन चुनौतियों से पार पाने में आपकी मदद करने के लिए यहां कुछ रणनीतियाँ दी गई है।

योजना (Planning)

1. **ब्रेनस्टॉर्मिंग** (Brainstroming): लिखना शुरू करने से पहले विचारों पर मंथन करने के लिए समय निकालें। अपने विचारों को व्यवस्थित करने के लिए माइंड मैप या सूचियों का उपयोग करें।
2. **रूपरेखा बनाना** (Outlining): अपने लेखन को संरचित करने के लिए एक विस्तृत रूपरेखा बनाएँ। यह आपको केंद्रित रहने और अपने विचारों को तार्किक रूप से प्रवाहित करने में मदद कर सकता है।

प्रारूपण (Drafting)

1. **स्वतंत्र लेखन** (Free Writing): गलतियों की चिंता किए बिना खुद को स्वतंत्र रूप से लिखने दें। लक्ष्य अपने विचारों को कागज पर उतारना है।
2. **लक्ष्य निर्धारित करें** (Set Goals): प्रत्येक लेखन सत्र के लिए छोटे, प्राप्त करने योग्य लक्ष्य निर्धारित करें, जैसे कि एक निश्चित संख्या में शब्द या पैराग्राफ पूरे करना।

मूल्यांकन (Evaluating)

1. **स्व–मूल्यांकन** (Self Assessment): लिखने के बाद, एक ब्रेक लें और फिर अपने काम को नए दृ ष्टिकोण से पढ़ें। खुद से पूछें कि क्या आपका लेखन स्पष्ट है और क्या यह उद्देश्यों को पूरा करता है।
2. **चेकलिस्ट** (Checklist): यह सुनिश्चित करने के लिए चेकलिस्ट का उपयोग करें कि आपने सभी आवश्यक तत्व शामिल किए हैं, जैसे कि एक स्पष्ट थीसिस, सहायक विवरण और एक मजबूत निष्कर्ष।

पुर्नलोकन (Revisiting)

1. **प्रतिक्रिया** (Feedback): अपने काम को दूसरों के साथ साझा करें और रचनात्मक प्रतिक्रिया मांगें। यह नए दृष्टिकोण प्रदान कर सकता है और सुधार के लिए क्षेत्रों को उजागर कर सकता है।
2. **पुनः पढ़ना** (Re-reading): अपने काम को कई बार पढ़ें, हर बार अलग–अलग पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करें, जैसे कि सामग्री, संरचना और शैली।

संपादन (Editing)

1. **प्रूफ रीडिंग** (Proof reading): व्याकरण, वर्तनी और विराम चिह्नों की त्रुटियों की सावधानीपूर्वक जाँच करें। Grammarly जैसे उपकरण मददगार हो सकते हैं।
2. **संशोधन**(Revision): यदि आवश्यक हो तो महत्वपूर्ण परिवर्तन करने के लिए तैयार रहें। कभी–कभी, अनुभागों को फिर से लिखने से समग्र गुणवत्ता में काफी सुधार हो सकता है।

सामान्य सुझाव (General Tips)

1. **समय प्रबंधन** (Time Management): लेखन के प्रत्येक चरण के लिए विशिष्ट समय आवंटित करें ताकि आप अभिभूत महसूस न करें।

2. **अभ्यास** (Practice): नियमित अभ्यास से आपको लेखन प्रक्रिया के प्रत्येक चरण के साथ अधिक सहज होने में मदद मिल सकती है।

याद रखें, लेखन एक ऐसा कौशल है जो अभ्यास और धैर्य से बेहतर होता है।

9.7 लेखन रणनीतियाँय शोध करना, माइंड–मैपिंग, रूपरेखा बनाना

माइंड–मैपिंग, रूपरेखा बनाने और शोध करने में आपकी मदद करने के लिए यहाँ कुछ प्रभावी लेखन रणनीतियाँ दी गई हैं।

शोध करना

शोध करना आपके लेखन के लिए आवश्यक जानकारी और साक्ष्य प्रदान करता है। यहाँ कुछ सुझाव दिए गए हैं।

1. **स्रोतों की पहचान करें:** अकादमिक पत्रिकाओं, पुस्तकों और प्रतिष्ठित वेबसाइटों जैसे विश्वसनीय स्रोतों का उपयोग करें।
2. **नोट लेना:** मुख्य बिंदुओं, उद्धरणों और संदर्भों सहित विस्तृत नोट्स लें।
3. **सूचना व्यवस्थित करें:** अपने लेखन के विषयों या खंडों के आधार पर अपने नोट्स को वर्गीकृत करें।
5. **स्रोतों का मूल्यांकन करें:** सटीकता सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक स्रोत की विश्वसनीयता और प्रासंगिकता का आकलन करें।

माइंड–मैपिंग

माइंड–मैपिंग एक विजुअल टूल है जो विचारों और अवधारणाओं को व्यवस्थित करने में मदद करता है। माइंड मैप बनाने का तरीका यहाँ बताया गया है।

1. **केंद्रीय विचार:** अपने पेज के केंद्र में मुख्य विषय लिखें।
2. **शाखाएँ:** केंद्रीय विचार से उप–विषयों या संबंधित अवधारणाओं तक शाखाएँ बनाएँ।
3. **कीवर्ड:** विचारों को दर्शाने के लिए प्रत्येक शाखा पर कीवर्ड या छोटे वाक्यांशों का उपयोग करें।
4. **पदानुक्रम:** विचारों को और अधिक विभाजित करने के लिए उप–विषयों से अतिरिक्त शाखाएँ बनाएँ।
5. **विजुअल:** माइंड मैप को अधिक आकर्षक और समझने में आसान बनाने के लिए रंग, आइकन और छवियाँ शामिल करें।

रूपरेखा

रूपरेखा आपके लेखन को तार्किक रूप से संरचित करने में मदद करती है। इन चरणों का पालन करें।

1. **मुख्य बिंदु:** अपने लेखन के मुख्य बिंदुओं या खंडों की पहचान करें।
2. **उप–बिंदु:** प्रत्येक मुख्य बिंदु के अंतर्गत, उप–बिंदु या सहायक विवरण सूचीबद्ध करें।
3. **क्रम:** विचारों के स्पष्ट प्रवाह को सुनिश्चित करते हुए बिंदुओं को तार्किक क्रम में व्यवस्थित करें।
4. **विवरण:** अपनी रूपरेखा को स्पष्ट करने के लिए प्रत्येक उप–बिंदु के अंतर्गत अधिक विवरण जोड़ें।

इन रणनीतियों को संयोजित करने से आपकी लेखन प्रक्रिया में उल्लेखनीय सुधार हो सकता है।

बोध प्रश्न:—नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.5 लेखन के यांत्रिक तत्व के बारे में लिखिए।

....

....

प्र0.6 कहानी लेखन के लिए सुझाव दिजिये।

....

....

प्र0.7 माइंड–मैपिंग क्या है?

....

....

9.8 लेखन कौशल विकसित करने के रणनीति मॉडल

परस्पर संवादात्मक लेखन रणनीतियाँः

इंटरएक्टिव राइटिंग स्ट्रैटेजीज 1991 में ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी और कोलंबस, ओहियो (फाउंटस, मैककैरियर, और पिननेल 1994) के एक शोध समूह द्वारा बनाई गई थी। इंटरैक्टिव लेखन का विकास मोइरा मैकेन्सी के साझा लेखन के काम और एश्टन–वार्नर (कोलम, टॉमपकिंस 2004) के भाषा अनुभव दृष्टिकोण से किया गया था। साझा लेखन और भाषा अनुभव के दौरान शिक्षक छात्रों के लिए लेखक के रूप में कार्य करता है। इंटरएक्टिव लेखन इस मायने में भिन्न है कि शिक्षक और छात्र एक पाठ लिखने के लिए एक साथ काम करते हैं, या जैसा कि साहित्य इसे ''कलम साझा करना'' कहता है। यह छात्रों को लेखन प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका निभाने की अनुमति देता है जबकि शिक्षक छात्रों को दिए गए समर्थन का समर्थन करता है (बटन, जॉनसन, और फर्गरसन 1996)। इंटरएक्टिव राइटिंग के दौरान छात्र भाषा में अपने कौशल, प्रिंट की परंपराओं और सार्थक लेखन बनाने और सक्षम, स्वतंत्र लेखक बनने के लिए शब्द कैसे काम करते हैं, इसका उपयोग करते हैं (मैककैरियर, इम्नेल और फाउंटास, 2000)।

रणनीतिक और इंटरैक्टिव लेखन निर्देश (SIWI) रणनीतियाँः

SIWI में बड़े पैमाने पर निर्देशित और सहयोगात्मक लेखन शामिल है। छात्र किसी पाठ के सह–निर्माण, निगरानी और संपादन के लिए शिक्षक के साथ मिलकर काम करते हैं। जब समूह पाठ में एक वाक्यांश या एक वाक्य जोड़ने के लिए आम सहमति पर पहुंचता है, तो शिक्षक एक निबंध पर छात्रों की शब्द–दर–शब्द अभिव्यक्तियाँ (व्याकरण और अर्थ त्रुटियों सहित, जैसा कि उन्हें संप्रेषित किया जाता है) लिखता है। फिर शिक्षक विचारों की आगे की पीढ़ी, या संवाद को संशोधित करने या संपादित करने की शुरुआत के लिए मंच खोलता है। लेखन को एक पुनरावर्ती प्रक्रिया के रूप में प्रदर्शित किया जाता है, क्योंकि प्रतिभागी आदर्श पाठ निर्माण, संशोधन और संपादन के बीच आसानी से आगे–पीछे होते रहते हैं। शिक्षक छात्रों को उनके वर्तमान स्तर से परे कार्य करने में सहायता और समर्थन प्रदान करता है, इस उम्मीद के साथ कि छात्र धीरे–धीरे इन कौशलों और रणनीतियों को स्वतंत्र उपयोग के लिए उपयुक्त बनाएंगे। जैसे–जैसे छात्रों में आत्मविश्वास बढ़ता है, शिक्षक युग्मित या छोटे समूह लेखन और फिर स्वतंत्र लेखन की ओर बढ़ेंगे। एस0आई0डब्ल्यू0आई0 में दो प्रमुख शिक्षण घटक शामिल हैं।

- **लेखन प्रक्रिया रणनीतियों या रणनीतिक लेखन निर्देश** का उपयोग और
- **निर्देशित और इंटरैक्टिव अभ्यास या इंटरैक्टिव लेखन निर्देश** के माध्यम से लेखन में प्रशिक्षुता।
- **रणनीतिक लेखन निर्देशः** एसआईडब्ल्यूआई इस अर्थ में रणनीतिक है कि छात्रों को शब्द या प्रतीक प्रक्रियात्मक सुविधाकर्ताओं के उपयोग के माध्यम से विशेषज्ञ लेखकों के दृष्टिकोण से परिचित कराया जाता है। लेखन प्रक्रियाओं के इर्द–गिर्द छात्रों की सफल कार्रवाई की योजना बनाने में मार्गदर्शन के लिए ये अस्थायी समर्थन हैं। इसका उद्देश्य यह है कि छात्र लेखन प्रक्रिया के सभी भागों के दौरान विचारशील लेखक बनें।
- **इंटरएक्टिव लेखन निर्देशः** एस आई डब्ल्यू आई को छात्रों III को अनुकूलित प्रारूप के तुलनीय गतिविधि प्रारूप का उपयोग करके इंटरैक्टिव या विचार–विमर्श निर्देश के माध्यम से पाठ के निर्माण के

लिए डिजाइन किया गया है। एस आई डब्ल्यू आई का सहयोगात्मक प्रारूप शिक्षकों को लेखन प्रक्रियाओं और रणनीतियों का नियंत्रण छात्रों को हस्तांतरित करने का एक तरीका प्रदान करता है। छात्र गतिविधि के संदर्भ में अधिक ज्ञान वाले सक्षम लेखकों की सोच, शब्दों और कार्यों से अवगत होते हैं और समय के साथ, इन्हें अपने लिए उपयुक्त बनाते हैं।

शक्ति लेखन (Power Writing) रणनीतिः

यह जे.ई.स्पार्क्स राइट फॉर पावर से अनुकूलित एक लेखन रणनीति है। यह एक ढांचा है या ऐसी रणनीति जिसका उपयोग शिक्षकों द्वारा सभी ग्रेड स्तरों पर और सभी सामग्री क्षेत्रों में लिखना सिखाने के लिए किया जा सकता है। ग्राफिक या विजुअल आयोजकों के कार्यान्वयन के माध्यम से, पावर राइटिंग पैराग्राफ लिखने के लिए एक सुसंगत सूत्र प्रदान करते हुए संगठन और संचार कौशल विकसित करता है। प्रत्येक अनुच्छेद में शामिल हैं:

0—पृष्ठभूमि,

1—मुख्य विचार,

2—विवरण,

3—सहायक विवरण।

पावर राइटिंग में 4 चरण /लेखन स्तर होते हैं।

- **चरण 1, अनुच्छेद लेखन की शुरुआतः**

छात्र मुख्य विचार के बारे में लिखता है, तीन विस्तृत वाक्य जोड़ता है, और मुख्य विचार के बारे में एक समापन टिप्पणी के साथ समाप्त करता है। छात्र 1—2—2—2—1 प्रारूप का पालन करता है।

उदाहरणः

1 जंक फूड जिसका मैं आनंद लेता हूँ (मुख्य विचार)

2 ब्राउनीज (विस्तार से)

2 पिज्जा (विस्तार से)

2 पिज्जा हट (विस्तार)

1 पसंदीदा भोजन (मुख्य विचार पुनः बताया गया)

मुझे तीन तरह का जंक फूड बहुत पसंद है। मुझे ब्राउनी बहुत पसंद है. मुझे पिज्जा भी पसंद है. मुझे लगता है कि पिज्जा हट अद्भुत हैं। मुझे जंक फूड पसंद है।

- **चरण 2, अधिक विवरण जोड़नाः**

जब कोई छात्र चरण 1 में कुशल हो जाता हैय वह अपने लेखन में और अधिक विवरण जोड़ने के लिए तैयार हैं। चरण 2 पर जाने का समय आ गया है। चरण 2 में संख्या 3 का परिचय दिया गया है जो एक और सहायक विवरण है। यह 1—23—23—23—1 प्रारूप का अनुसरण करता है।

उदाहरणः

1 जंक फूड जिसका मैं आनंद लेता हूँ (मुख्य विचार)

2 ब्राउनीज (विस्तार से)

3 ढेर सारी चॉकलेट (सहायक विवरण)

2 पिज्जा (विस्तार से)

3 पनीर (सहायक विवरण)

2 पिज्ज़ा हट (विस्तार)

3 लाल वाले (सहायक विवरण)

1 पसंदीदा भोजन (मुख्य विचार पुनः बताया गया)

मुझे तीन तरह का जंक फूड बहुत पसंद है। मुझे ब्राउनी बहुत पसंद है. उनमें ढेर सारी चॉकलेट होती है. मुझे पिज्ज़ा भी पसंद है. पनीर पिज्ज़ा सर्वोत्तम है! मुझे लगता है कि पिज्ज़ा हट सुपर हैं। मैं हमेशा सबसे पहले लाल वाला खाता हूं। मुझे जंक फूड पसंद है।

- **चरण 3, पृष्ठभूमि जानकारी और अधिक विवरण जोड़नाः**

यह 001–233–233–233–133 प्रारूप का अनुसरण करता है।

0 रात (पृष्ठभूमि)

0 भूखा (पृष्ठभूमि)

1 जंक फूड 1 आनंद (मुख्य विचार)

2 ब्राउनीज (विस्तार से)

3 ढेर सारी चॉकलेट (सहायक विवरण)

3 अंदर से गर्म (समर्थन विवरण)

2 पिज्ज़ा (विस्तार से)

3 पनीर (सहायक विवरण)

3 मोटी परत (सहायक विवरण)

2 पिज्ज़ा हट (विस्तार)

3 लाल वाले (सहायक विवरण)

3 बैग और बैग (सहायक विवरण)

1 पसंदीदा भोजन (मुख्य विचार पुनः बताया गया)

3 पूरे दिन खाना (विस्तार से)

3 स्वाद बढ़िया (विवरण)

काफी रात हो चुकी थी. मैं सचमुच भूखा था. मैंने तीन प्रकार के जंक फूड के बारे में सोचा जो मुझे खाना पसंद है। मुझे ब्राउनी बहुत पसंद है. उनमें ढेर सारी चॉकलेट होती है. वे मुझे अंदर से गर्माहट का एहसास कराते हैं। मुझे पिज्ज़ा भी पसंद है. पनीर पिज्ज़ा सर्वोत्तम है. मुझे मोटी परत वाला पिज्ज़ा पसंद है। मुझे लगता है कि पिज्ज़ा हट सुपर हैं। मैं हमेशा सबसे पहले लाल वाला खाता हूं। मैं उनमें से दस बैग खा सकता था। मुझे जंक फूड पसंद है! मैं ये खाद्य पदार्थ पूरे दिन खा सकता था। इनका स्वाद बहुत अच्छा होता है।

- **चरण 4**

यह 001–2333–2333–2333–1333 प्रारूप का पालन करता है। यह अधिक कुशल लेखको के लिए होता है।

निष्कर्ष में, क्योंकि यह लेखन रणनीति इतनी दृश्यात्मक है और एक के बाद एक कहानी के समान प्रारूप का अनुसरण करती है, छात्र अद्भुत आसानी से पैराग्राफ लिखने में सक्षम हैं। साझा लेखन गतिविधि के रूप में शिक्षक मॉडलिंग के बाद, श्रवण बाधित छात्र जल्दी ही प्रारूप से परिचित हो जाते हैं।

9.9 इकाई सारांश

- लेखन के विभिन्न दृष्टिकोण (Approaches)–नियंत्रित से मुक्त, मुक्त लेखन, पैराग्राफ पैटर्न, व्याकरण

वाक्य विन्यास दृष्टिकोण, संचार दृष्टिकोण और प्रक्रिया दृष्टिकोण

- लेखन कौशल विकसित करने के लिए गतिविधियाँ
- पत्र लिखना सीखना
- एक साफ और सुपाठ्य लिखावट विकसित करना
- लेखन के यांत्रिक तत्व
- सही ढंग से वर्तनी सीखना
- लेखन कौशल विकसित करने की तकनीक के रूप में श्रुतलेख
- दैनिक जीवन में उपयुक्त होने वाले विभिन्न लिखित रचना निम्नलिखित होते है :–
- पैराग्राफिंग
- कहानी
- लिखित सामग्री की समझ
- निबंध
- पत्र
- संवाद
- योजना बनाने, प्रारूप तैयार करने, मूल्यांकन करने, पुनरीक्षण करने, संपादन करने में संघर्ष से होने वाली चुनौतियों से निपटने के लिए कुछ रणनीतियाँः
- योजना (Planning)
- प्रारूपण (Drafting)
- मूल्यांकन (Evaluating)
- पुर्नलोकन (Revisiting)
- संपादन (Editing)
- लेखन रणनीतियाँय माइंड–मैपिंग, रूपरेखा बनाना, शोध करना,

9.10 बोधात्मक प्रश्नों के उत्तर

प्र0.1 नियंत्रित से मुक्त दृष्टिकोण दृष्टिकोण को सबसे पहले किसके द्वारा और कब पेश किया गया था ?

उ0.1 नियंत्रित से मुक्त दृष्टिकोण दृष्टिकोण को सबसे पहले रैम्स (1983) द्वारा पेश किया गया था।

प्र0.2 "कई छात्र खराब लिखते हैं क्योंकि वे पर्याप्त नहीं लिखते हैं" यह तर्क किसने दिया था ?

उ0.2 बायर्न का तर्क है कि "कई छात्र खराब लिखते हैं क्योंकि वे पर्याप्त नहीं लिखते हैं। (बायर्न, 1988,)

प्र0.3 पैराग्राफ– पैटर्न दृष्टिकोण किस सिद्धांत पर आधारित है?

उ0.3 यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि संचार विभिन्न संस्कृतियों में और विभिन्न संदर्भों के अनुसार अलग–अलग तरीके से निर्मित और व्यवस्थित होता है।

प्र0.4 संचार पद्धति किन दो आवश्यक तत्वों को जोड़ती है ?

उ0.4 संचार पद्धति दो आवश्यक तत्वों को जोड़ती हैः उद्देश्य और दर्शक।

प्र0.5 लेखन के यांत्रिक तत्व के बारे में लिखिए ।

उ0.5 लेखन के यांत्रिक तत्व

1. टाइपिंग अभ्यासः टाइपिंग की गति और सटीकता में सुधार करने के लिए टाइपिंग गेम और सॉफ्टवेयर का उपयोग करें।
2. लेखन उपकरणः आरामदायक लेखन के लिए सबसे अच्छा काम करने वाले विभिन्न पेन, पेंसिल और ग्रिप के साथ प्रयोग करें।

प्र0.6 कहानी लेखन के लिए सुझाव दिजिये।

उ0.6 कहानी लेखन के लिए सुझावः–

1. कहानी संकेत (Story Prompts): कहानी के विचारों को प्रेरित करने और छोटी कहानियाँ लिखने का अभ्यास करने के लिए रचनात्मक संकेतों का उपयोग करें।
2. कथानक संरचना (Plot Structure): कहानी के मूल तत्वों पर ध्यान केंद्रित करेंः परिचय, बढ़ती कार्रवाई, चरमोत्कर्ष, घटती कार्रवाई और समाधान।
3. चरित्र विकास (Character Development): अपने पात्रों को अधिक यथार्थवादी और भरोसेमंद बनाने के लिए विस्तृत चरित्र प्रोफाइल बनाएँ।

प्र0.7 माइंड–मैपिंग क्या है?

उ0.7 माइंड–मैपिंग एक विजुअल टूल है जो विचारों और अवधारणाओं को व्यवस्थित करने में मदद करता है।

9.11 अभ्यास काय

प्र0.1 लेखन के विभिन्न दृष्टिकोणों का वर्णन कीजिए।

प्र0.2 लेखन कौशल विकसित करने के लिए किन गतिविधियों का प्रयोग होता है?

9.12 अधिन्यास/कियाकलाप

प्र0.4 लेखन की चुनौतियों से निपटने के लिए रणनीतिओं का वर्णन कीजिए।

प्र0.5 शक्ति लेखन (चवूमत तपजपदह) की रणनीतिओं का वर्णन कीजिए।

9.13 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

अपने सहपाठियों के साथ श्रवण दिव्यांग बच्चो के अनुरूप उपयुक्त लेखन कौशल में आने वाली चुनौतियों एवं उसके समाधान पर चर्चा करे।

9.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Brown, D., J. (2013). New Ways of Classroom Assessment (2nd ed). Alexandria: Teacher of English to Speaker of Other Languages, Inc.
- Brown, H., D. (2000). Principles of Language Learning&Teaching (4th ed). NewYork: Longman.
- Clark, D. M., Gilbert, G.,&Anderson, M. L. (2011). Morphological knowledge and decoding skills of deaf readers. Psychology, 2(2), 109–116. doi:10.4236/psych.2011.22018
- Englert, C. S.,&Dunsmore, K. (2002). A diversity of teaching and learning paths: Teaching

writing in situated activity. In J. Brophy (Ed.), Social constructivist teaching: Affordances and constraints (pp. 80–130). Boston, MA: JAI Press.

- Fiderer, A. (2002). Paragraph Power. New York: Scholastic Professional Books.
- Fitriani, F., Nur, H. R., Bustamin, B., Ali, M. S.,&Nurisman, N. (2019). Improving Students Descriptive Text Writing by Using Writing The here and now strategy at the Tenth Grade Students of Vocational High School. International Journal for Educational and Vocational Studies. doi: https://doi.org/10.29103/ijevs.v1i6.1802
- Hedge, T. (2005). Writing (Resource Books for Teachers). Oxford: Oxford University Press.
- Husna, L. (2017). An analysis of Students Writing Skill in Descriptive Text at Grade X1 IPA 1 of MAN 2 Padang. Journal Ilmiah Pendidikan Scholastic, 1(1),16-26.
- Klimova, B. (2013). The Importance of Writing. Paripex- Indian Journal of Research, 2(1), 9-11.doi:http://dx.doi.org/10.15373/22501991/JAN2013/4

इकाई–10 पाठ्यचर्या अनुकूलन– अर्थ, सिद्धांत, प्रकार और अनुकूलन की प्रक्रिया

इकाई संरचना

10.1 परिचय
10.2 उद्देश्य
10.3 पाठ्यचर्या अनुकूलन का अर्थ
10.4 पाठ्यचर्या अनुकूलन की परिभाषाएँ
10.5 समायोजन क्या है?
10.6 संशोधन क्या हैं?
10.7 पाठ्यचर्या अनुकूलन के सिद्धांत
10.8 पाठ्यचर्या अनुकूलन के प्रकार
10.9 पाठ्यचर्या अनुकूलन की प्रक्रिया
10.10 इकाई सारांश
10.11 बोधात्मक प्रश्नों के उत्तर
10.12 अभ्यास कार्य
10.13 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण
10.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

10.1 परिचय

समावेशन सुनिश्चित करता है कि सभी छात्रों को सीखने के अवसरों तक समान पहुँच प्राप्त हो। लंदन की क्वीन मैरी यूनिवर्सिटी में, प्रगतिशील और समावेशी पाठ्यक्रम बनाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। शिक्षक पहचानते हैं कि वे ऐसे वातावरण का पोषण कर सकते हैं जहाँ ज्ञान, पहचान और जानने के तरीकों के विविध रूप मूल्यवान हों। कमी–आधारित सोच से हटकर यह बदलाव व्यक्तिगत क्षमताओं और जरूरतों पर केंद्रित है, उन प्रथाओं का आलोचनात्मक मूल्यांकन करता है जो कुछ छात्रों को अलग–थलग कर सकती हैं। समावेशी शैक्षिक अभ्यास योजना, सीखने के वातावरण (चाहे व्यक्तिगत, ऑनलाइन या मिश्रित), सामग्री और निर्देशात्मक तरीकों पर विचार करता है। समावेशी उत्कृष्टता के लिए सालाजार एट अल. के ढांचे में पाँच आयाम शामिल हैं।

1. समानता और पहुँच
2. विविधता और समावेशन
3. पाठ्यक्रम परिवर्तन
4. मूल्यांकन और जवाबदेही
5. कैंपस का माहौल और अंतर–समूह संबंध।

एक समावेशी पाठ्यक्रम प्रत्येक छात्र को ज्ञान निर्माण में भागीदार के रूप में महत्व देता है! समावेशी शिक्षा को पाठ्यक्रम अनुकूलन पर विचार किए बिना प्रभावी ढंग से लागू नहीं किया जा सकता है। जब शिक्षक समावेशी पाठ्यक्रम बनाते हैं, तो वे सुनिश्चित करते हैं कि शिक्षण सामग्री, विधियाँ और मूल्यांकन बिना किसी भेदभाव के सभी छात्रों के लिए सुलभ हों। पाठ्यक्रम को अनुकूलित करके, शिक्षक विभिन्न छात्र सीखने की जरूरतों को पूरा करते हैं, जिससे प्रत्येक छात्र के लिए सीखने की प्रक्रिया में प्रभावी रूप से शामिल होना संभव हो जाता

है।

पाठ्यक्रम अनुकूलन में सभी छात्रों की जरूरतों को पूरा करने के लिए विभेदीकरण शामिल है। आज की विविधतापूर्ण और समावेशी कक्षाओं में, शिक्षक निर्देश और मूल्यांकन में विभेदीकरण के महत्व को पहचानते हैं। इसके अतिरिक्त, सार्वभौमिक डिजाइन के सिद्धांत उनके अभ्यासों का मार्गदर्शन करते हैं। विभेदीकरण और सार्वभौमिक डिजाइन दोनों ही लक्ष्य निर्धारित करने, लचीली सामग्री और मीडिया चुनने या बनाने और मूल्यांकन के लिए व्यवस्थित दृष्टिकोण प्रदान करते हैं। शिक्षकों को कई तरह के समायोजन (प्रतिनिधित्व, अभिव्यक्ति और जुड़ाव के कई तरीके) के बारे में पता होना चाहिए जो प्रत्येक छात्र को सफल होने में मदद करने के लिए आवश्यक हो सकते हैं। ये समायोजन अनुकूलन औरध्या संशोधनों का रूप ले सकते हैं।

पाठ्यचर्या अनुकूलन का तात्पर्य विकलांग बच्चों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मौजूदा पाठ्यक्रम में आवश्यक परिवर्तन करना है। ऐसा करके, ये छात्र अपने साथियों के साथ सामान्य पाठ्यक्रम तक पहुँच सकते हैं। ये अनुकूलन समायोजन (जो मौलिक रूप से मानकों को नहीं बदलते या कम नहीं करते) या संशोधन (जो मानकों को बदलते या कम करते हैं लेकिन फिर भी पहुँच प्रदान करते हैं) का रूप ले सकते हैं। समायोजन में शिक्षण रणनीतियों, परीक्षण प्रस्तुति या पर्यावरण संरचना को समायोजित करना शामिल हो सकता है, जबकि संशोधनों के लिए मानक पाठ्यक्रम से अलग व्यक्तिगत परिणामों की आवश्यकता हो सकती है।

10.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त अधिगमकर्ता/विद्यार्थी

- पाठ्यचर्या अनुकूलन को समझ सकेंगे।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन की आवश्यकता को समझ सकेंगे।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन के सिद्धंतो को समझ सकेंगे।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन के विभिन्न प्रकार को जान सकेंगे।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन के प्रक्रिया को जान सकेंगे।
- समायोजन एवं संशोधन के बारे में ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे।

10.3 पाठ्यचर्या अनुकूलन का अर्थ

पाठ्यचर्या अनुकूलन विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों सहित सभी छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या को संशोधित करने की प्रक्रिया को संदर्भित करता है। इसमें सामग्री, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन रणनीतियों और सीखने के माहौल में बदलाव शामिल हो सकते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि हर छात्र शैक्षिक कार्यक्रम तक पहुँच सके और उससे लाभ उठा सके।

पाठ्यचर्या अनुकूलन कक्षा में और दिव्यांग छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुकूल उन्हें अनुकूलित करने के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री में किए जाने वाले समायोजन और संशोधन हैं। इस प्रकार, यह कार्य इन छात्रों की सफलता को प्राप्त करने और यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाता है कि उन्हें उच्च–गुणवत्ता वाली शिक्षा तक पहुँच मिले। वे कक्षा में सम्मान और समावेश के माहौल को व्यक्त करने के लिए भी महत्वपूर्ण हैं, इसलिए, या विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए समान अवसरों की गारंटी देते हैं।

10.4 पाठ्यचर्या अनुकूलन की परिभाषाएँ

यहाँ उल्लेखनीय है की शिक्षकों द्वारा दी गई पाठ्यचर्या अनुकूलन की कुछ परिभाषाएँ दी गई हैं।

1. **हिल्डा ताबा**, ने पाठ्यचर्या अनुकूलन को छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या को संशोधित करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया

कि अनुकूलन छात्रों की जरूरतों और शैक्षिक लक्ष्यों की गहन समझ पर आधारित होना चाहिए।

2. **राल्फ टायलरः** पाठ्यचर्या विकास में अपने काम के लिए जाने, जाने वाले टायलर ने पाठ्यचर्या अनुकूलन को शैक्षिक कार्यक्रम में किए गए समायोजन के रूप में वर्णित किया ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी छात्र इच्छित शिक्षण परिणाम प्राप्त कर सकें। उन्होंने इन अनुकूलनों को समग्र शैक्षिक उद्देश्यों के साथ संरेखित करने के महत्व पर प्रकाश डाला।

3. **जॉन डेवीः** प्रगतिशील शिक्षा में एक अग्रणी व्यक्ति डेवी ने पाठ्यचर्या अनुकूलन को छात्रों के लिए सीखने को अधिक प्रासंगिक और सार्थक बनाने के तरीके के रूप में देखा। उनका मानना था कि पाठ्यचर्या लचीला होना चाहिए और शिक्षार्थियों की रुचियों और अनुभवों के प्रति उत्तरदायी होना चाहिए।

पाठ्यचर्या अनुकूलन विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अध्ययन के निर्धारित कार्यक्रम को समायोजित करने की चल रही प्रक्रिया है। इसमें यह सुनिश्चित करने के लिए विभेदीकरण शामिल है कि सभी छात्र कक्षा में सफलता प्राप्त कर सकें। ये परिभाषाएँ प्रत्येक छात्र की विशिष्ट आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या को तैयार करने के महत्व को रेखांकित करती हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि सभी शिक्षार्थियों को सफल होने का अवसर मिले।

बोध प्रश्नः—नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.1. पाठ्यचर्या अनुकूलन से आप क्या समझते है?

....

....

प्र0.2. पाठ्यचर्या अनुकूलन की परिभाषा लिखिए ?

....

....

पाठ्यचर्या अनुकूलन को लागू करने के लाभ

पाठ्यचर्या अनुकूलन को लागू करने से बहुत सारे लाभ हो सकते हैं जिन्हें उजागर करना महत्वपूर्ण है।

- **समावेश को बढ़ावा देनाः** विशेष जरूरतों वाले छात्रों के समावेश को पाठ्यचर्या अनुकूलन के साथ बढ़ावा दिया जाता है, जिससे उनकी जरूरतों के लिए समर्थन में सुधार होता है।
- **छात्र की अधिक स्वायत्तताः** पाठ्यचर्या अनुकूलन के लिए विशेष जरूरतों वाले छात्रों को अपनी स्वयं की सीखने की प्रक्रिया में अधिक स्वायत्तता रखने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान किए जाते हैं।
- **अधिक प्ररणाः** विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए पाठ्यचर्या तक पहुँच को आसान बनाकर आत्म—सम्मान और प्रेरणा बढ़ाई जा सकती है, क्योंकि यह उनकी शैक्षणिक सफलता का आधार है।

पाठ्यचर्या को क्यों अनुकूलित किया जाना चाहिए?

एक अनुकूलित पाठ्यचर्या छात्रों को निम्नलिखित अवसर प्रदान करता हैः

- प्रतिबिंबित करने और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी बनने में।
- रुचियों के आधार पर आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने में।
- शिक्षकों की भरपूर भागीदारी के साथ गहन, सार्थक बातचीत में शामिल होने में।
- पाठ्यचर्या सामग्री डोमेन में अवधारणाओं में महारत हासिल करने में।

- साझा कार्यों पर काम करने के लिए अन्य छात्रों के साथ सहयोग करने में।
- सामाजिक—भावनात्मक कौशल विकसित करने में।
- आत्मविश्वास और सफलता की भावना प्राप्त करने में।
- एक अनुकूलित पाठ्यचर्या शिक्षकों को निम्नलिखित के अवसर प्रदान करता हैः
- सीखने के तरीकों को व्यक्तिगत बनाने में।
- छात्रों से वहीं मिलें जहाँ वे हैं।
- सामग्री ज्ञान को व्यावहारिक तरीकों से लागू करने में।
- छात्रों को सीखना केवल परीक्षा तक ही सीमित ना रखने में । (फिगुएरस—डैनियल, 2019)

संशोधनों के रूप में समायोजन निर्देशात्मक और मूल्यांकन—संबंधी निर्णय हैं जो किसी छात्र की शैक्षिक आवश्यकताओं को समायोजित करने के लिए किए जाते हैं, जिसमें व्यक्तिगत सीखने के लक्ष्य और परिणाम शामिल होते हैं जो किसी पाठ्यचर्या या विषय के सीखने के परिणामों से अलग होते हैं।

पाठ्यचर्या अनुकूलन का तात्पर्य छात्रों की शैक्षिक आवश्यकताओं के समाधान प्रदान करने के लिए पाठ्यचर्या तत्वों के बारे में निर्णय लेने की प्रक्रिया से है। इस तरह के निर्णय निम्नलिखित अवधारणाओं के तहत लिए जाने चाहिए।

- सामान्यीकरण और महत्व की अवधारणाः नियमित पाठ्यचर्या प्रारंभिक और संदर्भ बिंदु है।
- संदर्भ के अनुकूल होने की अवधारणा (संदर्भीकरण): जहाँ तक संभव हो, छात्रों के स्कूल केंद्र और पर्यावरण को जानना।
- वास्तविकता की अवधारणाः इसका अर्थ है उन्हें सुझाए गए सभी यथार्थवादी और विशिष्ट लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आवश्यक संसाधन और तत्व प्रदान करना।
- भागीदारी और भागीदारी की अवधारणाः पूरा शिक्षण स्टाफ, यानी प्रत्येक छात्र का शिक्षक, ट्यूटर, सहायक शिक्षक और कोई भी पेशेवर या विशेषज्ञ जिसकी आवश्यकता हो सकती है, किसी भी पाठ्यचर्या अनुकूलन में शामिल है।

अनुकूलन में यह शामिल है कि क्या, कैसे और कब शिक्षण किया जाना चाहिएय साथ ही साथ क्या और कैसे विशिष्ट शैक्षिक प्रस्तावों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए। इसलिए, यह मामला बुनियादी कारकों को अनुकूलित करने से संबंधित हैः पाठ्यचर्या लक्ष्य, सामग्री, विधि और मूल्यांकन।

बोध प्रश्नः—नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0. 3. पाठ्यचर्या अनुकूलन के दो लाभ लिखिए।

....

....

प्र0. 4. पाठ्यचर्या अनुकूलित करना क्यों जरुरी है?

....

....

10.5 पाठ्यचर्या समायोजन (Curriculum Adaptation) क्या है?

पाठ्यचर्या समायोजन में ऐसे बदलाव शामिल हैं जो किसी छात्र को सीखने की अपेक्षाओं में बदलाव किए बिना पाठ्यचर्या तक पहुँचने की अनुमति देते हैं। इन बदलावों में परीक्षणों के लिए अतिरिक्त समय प्रदान करना, सामग्री के लिए अलग–अलग प्रारूपों का उपयोग करना या छात्र की जरूरतों के हिसाब से माहौल को बेहतर ढंग से बदलना शामिल हो सकता है।वे छात्रों के सीखने और उनके ज्ञान को प्रदर्शित करने के तरीके को बदलते हैं, न कि उनसे क्या सीखने की अपेक्षा की जाती है।

समायोजन के प्रकार

- **प्रस्तुति समायोजन** (Presentation Accommodations)

  वैकल्पिक प्रारूप (Alternative Formats): ब्रेल, बड़े प्रिंट या ऑडियो प्रारूप में सामग्री प्रदान करना।

  दृश्य सहायता (Visual Aids): समझ को बढ़ाने के लिए चार्ट, आरेख और अन्य दृश्य सहायता का उपयोग करना।

- **प्रतिक्रिया समायोजन** (Response Accommodations)

  सहायक प्रौद्योगिकी (Assistive Technology): अधिन्यास पूरा करने के लिए कंप्यूटर, स्पीच–टू–टेक्स्ट सॉफ्टवेयर या अन्य उपकरणों के उपयोग की अनुमति देना।

  वैकल्पिक प्रतिक्रिया विधियाँ (Alternative Response Methods): मौखिक प्रतिक्रिया या लेखक के उपयोग की अनुमति देना।

- **समायोजन सेट करना** (Setting Accommodations)

  अधिमान्य बैठने की व्यवस्था (Preferential Seating): छात्रों को ऐसे स्थान पर रखना जहाँ विकर्षण कम से कम हो। शांत स्थान (Quiet Spaces): छात्रों को काम करने या परीक्षा देने के लिए एक शांत क्षेत्र प्रदान करना।

- **समय और शेड्यूलिंग समायोजन** (Timing and Scheduling Accommodations)

  विस्तारित समय (Extended Time): अधिन्यास या परीक्षाएँ पूरी करने के लिए अतिरिक्त समय देना। ब्रेक (Breaks): शिक्षण अवधि या मूल्यांकन के दौरान ब्रेक प्रदान करना।

- **सुविधाओं को लागू करना** (Implementing Accommodations)

  व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (आईईपी): छात्र के आईईपी में अक्सर सुविधाओं का विस्तृत विवरण दिया जाता है, जो छात्र की सफलता के लिए आवश्यक विशिष्ट सहायता और सेवाओं की रूपरेखा तैयार करता है।

- **सहयोग** (Collaboration): प्रभावी कार्यान्वयन के लिए शिक्षकों, विशेष शिक्षा कर्मचारियों, अभिभावकों और स्वयं छात्रों के बीच सहयोग की आवश्यकता होती है।

सुविधाओं के लाभ

- समान पहुँच (Equal Access): यह सुनिश्चित करता है कि सभी छात्रों को सीखने और अपने ज्ञान का प्रदर्शन करने का अवसर मिले।
- बढ़ी हुई भागीदारी (Increased Participation): कक्षा और अन्य शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है।
- बर्धित अधिगम (Enhanced Learning): विविध सीखने की जरूरतों का समर्थन करता है और छात्रों को उनके शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है

10.6 संशोधन (Modification) क्या हैं

संशोधन वे परिवर्तन हैं जो सीखने की अपेक्षाओं या पाठ्यचर्या को ही बदल देते हैं। इसमें विषय–वस्तु को सरल बनाना, निर्देशात्मक रणनीतियों को बदलना या छात्र की क्षमताओं के अनुरूप मूल्यांकन मानदंड को समायोजित करना शामिल हो सकता है। पाठ्यचर्या संशोधन में सभी छात्रों, विशेष रूप से विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या में बदलाव करना शामिल है। समायोजन के विपरीत, जो छात्रों के "कैसे" सीखने के तरीके को बदल देता है, संशोधन छात्रों के "क्या" सीखने के तरीके को बदल देता है। पाठ्यचर्या संशोधन के कुछ मुख्य पहलू इस प्रकार हैं।

पाठ्यचर्या संशोधन के प्रकार

- **सामग्री को सरल बनाना**

भाषा का सरलीकरणः पाठ्यों के सरलीकृत संस्करण प्रदान करना या जटिल अवधारणाओं को छोटे, अधिक प्रबंधनीय भागों में तोड़ना।कम जटिलताः छात्र की क्षमताओं से मेल खाने के लिए अधिन्यास और गतिविधियों के कठिनाई स्तर को समायोजित करना।

- **वैकल्पिक अधिन्यास**

संशोधित कार्यः वैकल्पिक अधिन्यास बनाना जो समान अवधारणाओं को कवर करते हैं लेकिन छात्र के कौशल स्तर के अनुरूप होते हैं। परियोजना–आधारित शिक्षणः छात्रों को पारंपरिक परीक्षणों के बजाय परियोजनाओं के माध्यम से अपनी समझ प्रदर्शित करने की अनुमति देना।

- **गति समायोजन**

विस्तारित समयः छात्रों को अधिन्यास और आकलन पूरा करने के लिए अधिक समय देना। लचीली समय सीमाः व्यक्तिगत सीखने की गति को समायोजित करने के लिए समय सीमा में समायोजन की अनुमति देना।

- **निर्देशात्मक रणनीतिया**

विभेदित निर्देशः विभिन्न शिक्षण शैलियों और क्षमताओं को पूरा करने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करना। स्कैफोल्डेड सहायताः अतिरिक्त सहायता प्रदान करना और छात्र के अधिक स्वतंत्र होने पर इसे धीरे–धीरे कम करना।

- **मूल्यांकन संशोधन**

वैकल्पिक मूल्यांकनः पारंपरिक लिखित परीक्षणों के बजाय मौखिक परीक्षा, व्यावहारिक प्रदर्शन या पोर्टफोलियो का उपयोग करना। संशोधित ग्रेडिंगः छात्र के प्रदर्शन के बजाय उसकी प्रगति और प्रयास को दर्शाने के लिए ग्रेडिंग मानदंड को समायोजित करना।

पाठ्यचर्या संशोधनों को लागू करना

व्यक्तिगत शिक्षा कार्यक्रम (IEP): संशोधनों को अक्सर छात्र के प्म्च में विस्तृत रूप से बताया जाता है, जो छात्र की सफलता के लिए आवश्यक विशिष्ट सहायता और सेवाओं को रेखांकित करता है।

सहयोगः प्रभावी कार्यान्वयन के लिए शिक्षकों, विशेष शिक्षा कर्मचारियों, अभिभावकों और स्वयं छात्रों के बीच सहयोग की आवश्यकता होती है।

निरंतर निगरानीः संशोधनों की प्रभावशीलता का नियमित रूप से मूल्यांकन करें और यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यकतानुसार समायोजन करें कि वे छात्र की जरूरतों को पूरा कर रहे हैं।

पाठ्यचर्या संशोधन के लाभ

बढ़ी हुई पहुँचः यह सुनिश्चित करता है कि सभी छात्र पाठ्यचर्या में भाग ले सकें और उससे लाभ उठा सकें।

बढ़ी हुई शिक्षाः विविध शिक्षण आवश्यकताओं का समर्थन करता है और छात्रों को उनके शैक्षिक लक्ष्यों को

प्राप्त करने में मदद करता है।

बेहतर जुड़ावः सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और अधिक समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देता है।

बोध प्रश्नः—नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0. 5. पाठ्यचर्या समायोजन से आप क्या समझते है?

....

....

प्र0. 6. पाठ्यचर्या संशोधन से आप क्या समझते है?

....

....

प्र0. 7. पाठ्यचर्या संशोधन के क्या लाभ है?

....

....

10.7 पाठ्यचर्या अनुकूलन के सिद्धांत

1. **समावेशीपनः** यह सुनिश्चित करना कि सभी छात्र, चाहे उनकी क्षमताएँ कुछ भी हों, सीखने की प्रक्रिया में भाग ले सकें।
2. **विभेदीकरणः** छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निर्देश को अनुकूलित करना।
3. **लचीलापनः** विभिन्न सीखने की शैलियों और आवश्यकताओं को समायोजित करने के लिए शिक्षण विधियों, सामग्रियों और मूल्यांकनों में अनुकूलनीय होना।

10.8 पाठ्यचर्या अनुकूलन के प्रकार

1. **विषय—वस्तु अनुकूलनः** जो पढ़ाया जा रहा है उसे संशोधित करना।
2. **प्रक्रिया अनुकूलनः** विषय—वस्तु को पढ़ाने के तरीके को बदलना।
3. **उत्पाद अनुकूलनः** छात्रों द्वारा अपने सीखने के प्रदर्शन के तरीके को बदलना।
4. **पर्यावरणीय अनुकूलनः** सीखने में सहायता के लिए भौतिक या सामाजिक वातावरण को समायोजित करना।

10.9 पाठ्यचर्या अनुकूलन की प्रक्रिया

1. **मूल्यांकनः** छात्र की विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करना।
2. **योजना बनानाः** ऐसी योजना बनाना जिसमें आवश्यक अनुकूलन शामिल हों।
3. **कार्यान्वयनः** कक्षा में अनुकूलन लागू करना।
6. **आंकलनः** अनुकूलन की प्रभावशीलता का आकलन करना और आवश्यक समायोजन करना।

10.10 इकाई सारांश

- पाठ्यचर्या अनुकूलन कक्षा में और दिव्यांग छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुकूल उन्हें अनुकूलित करने के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री में किए जाने वाले समायोजन और संशोधन हैं।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन को लागू करने के लाभ– समावेश को बढ़ावा देना, छात्र की अधिक स्वायत्तता, अधिक प्रेरणा।
- पाठ्यचर्या समायोजन में ऐसे बदलाव शामिल हैं जो किसी छात्र को सीखने की अपेक्षाओं में बदलाव किए बिना पाठ्यचर्या तक पहुँचने की अनुमति देते हैं।
- पाठ्यचर्या संशोधन में सभी छात्रों, विशेष रूप से विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या में बदलाव करना शामिल है।
- पाठ्यचर्या संशोधन के लाभ– बढ़ी हुई पहुँच, बढ़ी हुई शिक्षा, बेहतर जुड़ाव।

10.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

उ0.1. पाठ्यचर्या अनुकूलन कक्षा में और दिव्यांग छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुकूल उन्हें अनुकूलित करने के लिए उपयोग की जाने वाली सामग्री में किए जाने वाले समायोजन और संशोधन हैं।

उ0.2. हिल्डा ताबा, ने पाठ्यचर्या अनुकूलन को छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या को संशोधित करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अनुकूलन छात्रों की जरूरतों और शैक्षिक लक्ष्यों की गहन समझ पर आधारित होना चाहिए।

उ0.3. पाठ्यचर्या अनुकूलन को लागू करने से बहुत सारे लाभ हो सकते हैं जिन्हें उजागर करना महत्वपूर्ण है।

- समावेश को बढ़ावा देनाः विशेष जरूरतों वाले छात्रों के समावेश को पाठ्यचर्या अनुकूलन के साथ बढ़ावा दिया जाता है, जिससे उनकी जरूरतों के लिए समर्थन में सुधार होता है।
- छात्र की अधिक स्वायत्तताः पाठ्यचर्या अनुकूलन के लिए विशेष जरूरतों वाले छात्रों को अपनी स्वयं की सीखने की प्रक्रिया में अधिक स्वायत्तता रखने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान किए जाते हैं।

उ0. 4. एक अनुकूलित पाठ्यचर्या छात्रों को निम्नलिखित अवसर प्रदान करता है।

- प्रतिबिंबित करने और सांस्कृतिक रूप से उत्तरदायी बनने में।
- रुचियों के आधार पर आलोचनात्मक सोच को बढ़ावा देने में।
- शिक्षकों की भरपूर भागीदारी के साथ गहन, सार्थक बातचीत में शामिल होने में।
- पाठ्यचर्या सामग्री डोमेन में अवधारणाओं में महारत हासिल करने में।
- साझा कार्यों पर काम करने के लिए अन्य छात्रों के साथ सहयोग करने में।
- सामाजिक–भावनात्मक कौशल विकसित करने में।
- आत्मविश्वास और सफलता की भावना प्राप्त करने में।

एक अनुकूलित पाठ्यचर्या शिक्षकों को निम्नलिखित के अवसर प्रदान करता हैः

- सीखने के तरीकों को व्यक्तिगत बनाने में।
- छात्रों से वहीं मिलें जहाँ वे हैं।

- सामग्री ज्ञान को व्यावहारिक तरीकों से लागू करने में।
- छात्रों को सीखना केवल परीक्षा तक ही सीमित ना रखने में । (फिगुएरस–डैनियल, 2019)

उ0.5. पाठ्यचर्या समायोजन में ऐसे बदलाव शामिल हैं जो किसी छात्र को सीखने की अपेक्षाओं में बदलाव किए बिना पाठ्यचर्या तक पहुँचने की अनुमति देते हैं। इन बदलावों में परीक्षणों के लिए अतिरिक्त समय प्रदान करना, सामग्री के लिए अलग–अलग प्रारूपों का उपयोग करना या छात्र की जरूरतों के हिसाब से माहौल को बेहतर ढंग से बदलना शामिल हो सकता है।वे छात्रों के सीखने और उनके ज्ञान को प्रदर्शित करने के तरीके को बदलते हैं, न कि उनसे क्या सीखने की अपेक्षा की जाती है।

उ0. 6. पाठ्यचर्या संशोधन में सभी छात्रों, विशेष रूप से विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की आवश्यकताओं को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए पाठ्यचर्या में बदलाव करना शामिल है। समायोजन के विपरीत, जो छात्रों के "कैसे" सीखने के तरीके को बदल देता है, संशोधन छात्रों के "क्या" सीखने के तरीके को बदल देता है।

उ0. 7. पाठ्यचर्या संशोधन के लाभ

- बढ़ी हुई पहुँचः यह सुनिश्चित करता है कि सभी छात्र पाठ्यचर्या में भाग ले सकें और उससे लाभ उठा सकें।
- बढ़ी हुई शिक्षाः विविध शिक्षण आवश्यकताओं का समर्थन करता है और छात्रों को उनके शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है।
- बेहतर जुड़ावः सक्रिय भागीदारी को प्रोत्साहित करता है और अधिक समावेशी शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देता है।

10.12 अभ्यास कार्य

प्र0.1. पाठ्यचर्या अनुकूलन का निर्णय किन अवधारणाओ के अन्तर्गत लेना चाहिए?

प्र0.2. पाठ्यचर्या अनुकूलन के सिद्धांतो का वर्णन कीजिए ।

प्र0.3. पाठ्यचर्या अनुकूलन के विभिन्न प्रकार को बताएं ।

प्र0.4. पाठ्यचर्या अनुकूलन के प्रक्रिया को समझायिए।

प्र0.5. पाठ्यचर्या अनुकूलन करने से छात्रों को कौन से अवसर प्राप्त होते है?

प्र0.6. पाठ्यचर्या समायोजन के विभिन्न प्रकारों का विस्तृत वर्णन कीजिए ।

प्र0.7. पाठ्यचर्या संशोधन में सामग्री को सरल बनाने के लिए क्या–२ कर सकते है?

10.14 चर्चा के बिन्दु /स्पष्टीकरण

अपने सहपाठियों के साथ श्रवण दिव्यांग बच्चो के अनुरूप अपनी कक्षा के पाठ्यचर्या संशोधन में क्या–२ बदलाव किया जा सकता है, इसपर एक सामूहिक चर्चा करे।

10.15 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Bauer, A. M.,&Shea, T. M. (1999). Inclusion 101: How to teach all learners.

  Baltimore: Paul H. Brookes.
- Castagnera, E., Fisher, D., Rodifer, K.,&Sax, C. (1998). Deciding what to teach and how to teach it: Connecting students through curriculum and instruction. Colorado Springs, CO: PEAK Parent Center.
- Chalmers, L. (1992). Modifying curriculum for the special needs student in the regular

classroom. Moorhead, MN: Practical Press.

- Janney, R.,&Snell, M. E. (2000). Teachers' guides to inclusive practices:Modifying schoolwork. Baltimore: Paul H. Brookes.
- Katz, L., Sax, C.,&Fisher, D. (1998). Activities for a diverse classroom: Connecting students. Colorado Springs, CO: PEAK Parent Center.
- Loreman,T, Deppeler, J. and Harvey, D. (2005) Inclusive Education: A Practical Guide to supporting diversity in the Classroom.
- Raj, Farida .(2010) Breaking Through: A handbook for Parents and Teachers of Children with Specific Learning Disabilities,VIFA Publications, Secunderabad.
- Udvari-Solner, A. (1993). Curricular adaptations: Accommodating the instructional needs of diverse learners in the context of general education. (Rev.). Topeka, KS: Kansas State Board of Education.

Websites

http://www.mcps.k12.md.us/curriculum/pep/

http://eric.ed.gov/ERICWebPortal/Home.portal

http://www.pacificnet.net/~mandel/

http://www.teachersfirst.com

www.MeritNation.com

www.teachertrainingindia.com

इकाई–11 अनुकूलन के लिए मूल्यांकन और निर्णय लेना Assessment and Decision Making for Adaptation

इकाई संरचना

11.1 परिचय
11.2 उद्देश्य
11.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्या है
11.4 आवश्यकताओं की पहचान
11.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की प्रक्रिया
11.6 पाठ्यचर्या अनुकूलन
11.7 पाठ्यचर्या अनुकूलन के मॉडल
11.8 वुल्फ की पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया का संयोजन
11.9 निर्णय पथ
11.10 निर्णय लेने की प्रक्रिया
11.11 निर्देश की संरचना की जांच
11.12 सीखने के माहौल की जांच
11.13 सामग्री की जांच
11.14 संरचना मूल्यांकन का समर्थन करें
11.15 वैकल्पिक गतिविधियों की व्यवस्था करें जो भागीदारी और बातचीत को बढ़ावा दें
11.16 इकाई सारांश
11.17 बोधात्मक प्रश्नों के उत्तर
11.18 अभ्यास कार्य
11.19 चर्चा के बिन्दु स्पष्टीकरण
11.20 कुछ उपयोगी पुस्तकें

11.1 परिचय

अनुकूलन में यह शामिल है कि क्या, कैसे और कब शिक्षण किया जाना चाहिएय साथ ही साथ विशिष्ट शैक्षिक प्रस्तावों का क्या और कैसे मूल्यांकन किया जाना चाहिए। इसलिए, मामला बुनियादी कारकों को अनुकूलित करने से संबंधित हैः पाठ्यक्रम के लक्ष्य, सामग्री, विधि और मूल्यांकन। स्वायत्त रूप से कार्य करने के बावजूद, इन चार कारकों में से किसी एक का पाठ्यक्रम अनुकूलन अनिवार्य रूप से अन्य को संशोधित करने का तात्पर्य है। शिक्षा में, मूल्यांकन को अनुकूलित करना यह सुनिश्चित करने के लिए महत्वपूर्ण है कि विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्र समान रूप से भाग ले सकें। इसमें व्यक्तिगत आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए मूल्यांकन विधियों और समायोजन को अनुकूलित करना शामिल है।

11.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त अधिगमकर्ता / विद्यार्थी

- पाठ्यचर्या मूल्यांकन को समझ सकेंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकताओं की पहचान कर सकेंगे।

- पाठ्यचर्या मूल्यांकन की प्रक्रिया को जान सकेंगे।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन के बारे में ज्ञान प्राप्त क्र सकेंगे।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन के मॉडल एवं वुल्फ की पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया के संयोजन के बारे में विश्लेषण कर सकेंगे।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन में निर्णय पथ एवं निर्णय लेने की प्रक्रिया को समझ सकेंगे।

11.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन क्या है

पाठ्यचर्या मूल्यांकन में अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना शामिल है। यह प्रक्रिया शिक्षकों को यह समझने में मदद करती है कि छात्र कितनी अच्छी तरह सीख रहे हैं और कहाँ सुधार किए जा सकते हैं। पाठ्यचर्या मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो यह सुनिश्चित करता है कि पाठ्यचर्या छात्रों की सीखने की जरूरतों को प्रभावी ढंग से पूरा करता है। इसमें सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने और शैक्षिक लक्ष्यों के साथ संरेखण सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यचर्या की सामग्री, वितरण और परिणामों का मूल्यांकन करना शामिल है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन की परिभाषाएँ

पाठ्यचर्या–आधारित मूल्यांकन (CBA): यह एक रचनात्मक दृष्टिकोण है जो किसी छात्र के प्रदर्शन और प्रगति का मूल्यांकन उनके दैनिक कक्षा पाठ्यचर्या के संदर्भ में करता है। यह निर्देश को सूचित करने और छात्र परिणामों को बेहतर बनाने के लिए वास्तविक समय के तथ्य पर ध्यान केंद्रित करता है।

योगात्मक मूल्यांकनः इस प्रकार का मूल्यांकन किसी सेमेस्टर या स्कूल वर्ष के अंत जैसे निर्देशात्मक अवधि के अंत में पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है। इसमें अक्सर मानकीकृत परीक्षण या अंतिम परीक्षाएँ शामिल होती हैं। योगात्मक मूल्यांकन के उदाहरणः इनमें अंतिम परीक्षाएँ, मानकीकृत परीक्षण और टर्म के अंत में परियोजनाएँ शामिल हैं। उदाहरण के लिए, स्कूल वर्ष के अंत में एक मानकीकृत परीक्षण यह निर्धारित करने में मदद कर सकता है कि छात्रों ने पाठ्यचर्या में निर्धारित सीखने के उद्देश्यों को पूरा किया है या नहीं।

रचनात्मक मूल्यांकनः इनमें क्विज, कक्षा चर्चाएँ और होमवर्क अधिन्यास शामिल हैं जो छात्रों और शिक्षकों दोनों को निरंतर प्रतिक्रिया प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, एक शिक्षक छात्र की समझ को मापने और उसके अनुसार निर्देश को समायोजित करने के लिए साप्ताहिक क्विज का उपयोग कर सकता है।

11.4 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

पाठ्यचर्या मूल्यांकन कई कारणों से आवश्यक है, यह सुनिश्चित करना कि शैक्षिक कार्यक्रम प्रभावी, प्रासंगिक और छात्रों और समाज की आवश्यकताओं के अनुरूप हों। पाठ्यचर्या मूल्यांकन आवश्यक क्यों है, इसके कुछ प्रमुख कारण इस प्रकार हैं।

शक्तियों और कमजोरियों की पहचान करना

पाठ्यचर्या मूल्यांकन यह पहचानने में मदद करता है कि पाठ्यचर्या के कौन से पहलू अच्छी तरह से काम कर रहे हैं और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। यह शिक्षकों को आवश्यक परिवर्तनों के बारे में सूचित निर्णय लेने की अनुमति देता है।

मानकों के साथ संरेखण सुनिश्चित करना

नियमित मूल्यांकन यह सुनिश्चित करता है कि पाठ्यचर्या राष्ट्रीय या राज्य शैक्षिक मानकों के अनुरूप हो, यह सुनिश्चित करते हुए कि छात्रों को एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले जो स्थापित मानदंडों को पूरा करती हो।

छात्र सीखने के परिणामों में सुधार

पाठ्यचर्या का आकलन करके, शिक्षक छात्र सीखने में अंतराल की पहचान कर सकते हैं और सभी छात्रों की जरूरतों को बेहतर ढंग से पूरा करने के लिए निर्देशात्मक रणनीतियों को समायोजित कर सकते हैं। इससे

छात्रों के प्रदर्शन और उपलब्धि में सुधार होता है।

निरंतर सुधार के लिए प्रतिक्रिया प्रदान करना

पाठ्यचर्या मूल्यांकन शिक्षकों, प्रशासकों और नीति निर्माताओं को मूल्यवान प्रतिक्रिया प्रदान करता है, जिससे उन्हें शैक्षिक कार्यक्रम में निरंतर सुधार करने में मदद मिलती है। यह प्रतिक्रिया लूप उच्च शैक्षिक मानकों को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

मान्यता और जवाबदेही की आवश्यकताओं को पूरा करना

कई शैक्षणिक संस्थानों को मान्यता मानकों को पूरा करने और माता–पिता, छात्रों और वित्त पोषण निकायों सहित हितधारकों के प्रति जवाबदेही प्रदर्शित करने के लिए नियमित पाठ्यचर्या मूल्यांकन से गुजरना पड़ता है।

बदलती जरूरतों के अनुकूल होना

छात्रों और समाज की जरूरतें लगातार विकसित हो रही हैं। पाठ्यचर्या मूल्यांकन यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि शैक्षिक कार्यक्रम इन परिवर्तनों के लिए प्रासंगिक और उत्तरदायी बना रहे, छात्रों को भविष्य की चुनौतियों और अवसरों के लिए तैयार करे।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो शैक्षिक कार्यक्रमों के निरंतर सुधार का समर्थन कर है। पाठ्यचर्या का नियमित रूप से मूल्यांकन और समायोजन करके, शिक्षक यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि यह छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करता है, मानकों के साथ संरेखित होता है, और शिक्षार्थियों को लगातार बदलती दुनिया में सफलता के लिए तैयार करता है। मूल्यांकन और अनुकूलन की यह सतत प्रक्रिया उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने की कुंजी है जो सभी छात्रों को लाभान्वित करती है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन में आवश्यकताओं की पहचान

आवश्यकताओं की पहचान में शामिल है:

- कमजोरियों के क्षेत्रों को इंगित करने के लिए छात्र प्रदर्शन तथ्य का विश्लेषण करना।
- छात्रों, शिक्षकों और हितधारकों से प्रतिक्रिया एकत्र करना।
- संरेखण सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यचर्या मानकों और बेंचमार्क की समीक्षा करना।

11.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की प्रक्रिया

- **योजना** (Planning): सर्वप्रथम मूल्यांकन के लक्ष्यों और उद्देश्यों को परिभाषित करेंगें एवं निर्धारित करें कि आप क्या मापना चाहते हैं और आप इसे कैसे मापेंगे।
- **कार्यान्वयन** (Implementation): मूल्यांकन का प्रबंधन करें और डेटा एकत्र करें। इसमें परीक्षण, सर्वेक्षण, अवलोकन और छात्र कार्य नमूने शामिल हो सकते हैं।
- **विश्लेषण** (Analysis): रुझानों, शक्तियों और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए डेटा का मूल्यांकन करें। इस चरण में निर्धारित उद्देश्यों के विरुद्ध छात्र के प्रदर्शन की तुलना करना शामिल है।
- **क्रिया** (Action): पाठ्यचर्या समायोजन के बारे में सूचित निर्णय लेने के लिए निष्कर्षों का उपयोग करें। इसमें पाठ योजनाओं को संशोधित करना, नई सामग्री पेश करना या छात्रों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करना शामिल हो सकता है।

बोध प्रश्नः—नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.1. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की परिभाषा लिखिए।

....

....

प्र0.2. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की किन्ही दो आवश्यकता के बारे में लिखिए।

....

....

प्र0.3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की प्रक्रिया के बारे में वर्णन कीजिए।

....

....

11.6 पाठ्यचर्या अनुकूलन

पाठ्यचर्या अनुकूलन समावेशी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो यह सुनिश्चित करता है कि सभी छात्रों को, उनकी योग्यताओं या पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, सार्थक सीखने के अनुभवों तक पहुँच प्राप्त हो। पाठ्यचर्या में आवश्यक समायोजन करके, शिक्षक ऐसा वातावरण बना सकते हैं जहाँ हर छात्र सफल हो सके और आगे बढ़ सके।

पाठ्यचर्या अनुकूलन की परिभाषाएँ

सामान्य परिभाषाः पाठ्यचर्या अनुकूलन में छात्रों की विविध सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए मौजूदा पाठ्यचर्या में बदलाव करना शामिल है। इसमें सामग्री, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन रणनीतियों और सीखने के वातावरण में संशोधन शामिल हो सकते हैं।

विशेष शिक्षा परिप्रेक्ष्यः पाठ्यचर्या अनुकूलन का अर्थ है बच्चों की सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए मौजूदा पाठ्यचर्या में आवश्यक बदलाव करना, जिससे उन्हें सामान्य पाठ्यचर्या तक पहुँच मिल सके। समावेशी शिक्षाः पाठ्यचर्या अनुकूलन शैक्षिक वातावरण में स्वीकार्य परिवर्तन हैं जो छात्रों को पहुँच, परिणाम, लाभ और उपलब्धि के स्तर प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान करते हैं। इन अनुकूलन में समायोजन और संशोधन दोनों शामिल हैं।

11.7 पाठ्यचर्या अनुकूलन के मॉडल

पाठ्यचर्या अनुकूलन में शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शैक्षिक सामग्री, शिक्षण विधियों और मूल्यांकन प्रथाओं को संशोधित करना शामिल है। पाठ्यचर्या अनुकूलन के कुछ सामान्य मॉडल इस प्रकार हैं।

1. **विभेदित निर्देश** (Differentiated Instruction): यह मॉडल विभिन्न शिक्षण शैलियों, क्षमताओं और रुचियों को समायोजित करने के लिए शिक्षण विधियों और सामग्रियों को तैयार करता है। शिक्षक सभी छात्रों को शामिल करने के लिए समूह कार्य, व्यावहारिक गतिविधियाँ या प्रौद्योगिकी एकीकरण जैसी विभिन्न निर्देशात्मक रणनीतियों का उपयोग कर सकते हैं।

2. **यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग** (UDL): UDL का उद्देश्य एक लचीला शिक्षण वातावरण बनाना है जो व्यक्तिगत सीखने के अंतर को समायोजित कर सके। इसमें प्रतिनिधित्व, अभिव्यक्ति और जुड़ाव के कई साधन प्रदान करना शामिल है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि सभी छात्र पाठ्यचर्या तक पहुँच सकें और उसमें भाग ले सकें।

3. **हस्तक्षेप के लिए प्रतिक्रिया** Response to Intervention (RTI): RTI सीखने और व्यवहार की जरूरतों वाले छात्रों की पहचान करने और उनका समर्थन करने के लिए एक बहु–स्तरीय दृष्टिकोण है। इसमें नियमित निगरानी और मूल्यांकन शामिल है, जिसमें हस्तक्षेप छात्र की प्रगति के आधार पर अधिक लक्षित और गहन होते जाते हैं।

4. **लचीला और समावेशी शिक्षण** Flexible and Inclusive Teaching (FIT): ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में विकसित यह मॉडल ऐसे पाठ्यचर्या तैयार करने पर जोर देता है जो बदलती परिस्थितियों के अनुकूल हों और सभी छात्रों को शामिल करें। यह शिक्षण विधियों में लचीलेपन और सामग्री वितरण में

समावेशिता पर ध्यान केंद्रित करता है।

5. **एड–टेक संवर्धित मॉडल** Ed&Tech Enhanced Models: चौथी औद्योगिक क्रांति के उदय के साथ, पाठ्यचर्या में शैक्षिक प्रौद्योगिकियों (एड–टेक) को एकीकृत करना आवश्यक हो गया है। यह मॉडल सीखने के अनुभवों को बढ़ाने और विशेष शैक्षिक आवश्यकताओं वाले छात्रों के लिए पाठ्यचर्या अनुकूलन सुनिश्चित करने के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाता है।

इन मॉडलों का उद्देश्य सभी छात्रों के लिए एक समावेशी और प्रभावी शिक्षण वातावरण बनाना है।

- **किर्कपैटिक के चार स्तर मूल्यांकन**

किर्कपैट्रिक के मूल्यांकन के चार स्तर प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए एक व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त मॉडल है। डॉ. डोनाल्ड किर्कपैट्रिक द्वारा विकसित, यह मॉडल चार अलग–अलग स्तरों पर प्रशिक्षण का मूल्यांकन करता है।

1. **प्रतिक्रिया** (Reaction): यह स्तर मापता है कि प्रतिभागी प्रशिक्षण पर कैसे प्रतिक्रिया देते हैं। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम के साथ उनके शुरुआती प्रभाव, संतुष्टि और जुड़ाव का आकलन करता है। इस स्तर पर प्रश्न शामिल हो सकते हैं: क्या उन्हें प्रशिक्षण उपयोगी लगा? क्या यह दिलचस्प था?
2. **सीखना** (Learning): यह स्तर इस बात का मूल्यांकन करता है कि प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण से इच्छित ज्ञान, कौशल, दृष्टिकोण, आत्मविश्वास और प्रतिबद्धता किस हद तक हासिल की है। इसमें सीखने के परिणामों को मापने के लिए आकलन या परीक्षण शामिल हैं।
3. **व्यवहार** (Behaviour): यह स्तर जांचता है कि प्रतिभागी अपनी कार्य पर लौटने पर जो सीखा है उसे कितनी अच्छी तरह लागू करते हैं। यह व्यवहार में बदलावों को देखता है और क्या प्रशिक्षण का उनके कार्य प्रदर्शन पर व्यावहारिक प्रभाव पड़ा है।
4. **परिणाम** (Results): अंतिम स्तर संगठनात्मक लक्ष्यों और परिणामों पर प्रशिक्षण के व्यापक प्रभाव को मापता है। इसमें उत्पादकता, गुणवत्ता, दक्षता और समग्र व्यावसायिक परिणामों में सुधार का मूल्यांकन करना शामिल है।

प्रत्येक स्तर पिछले स्तर पर आधारित है, जो प्रशिक्षण कार्यक्रमों की प्रभावशीलता के मूल्यांकन के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करता है।

11.8 वुल्फ की पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया को अन्य मॉडलों के साथ संयोजन

वुल्फ की पाठ्यचर्या विकास प्रक्रिया को अन्य मॉडलों के साथ संयोजित करने से पाठ्यचर्या डिजाइन और अनुकूलन के लिए एक व्यापक और प्रभावी दृष्टिकोण तैयार किया जा सकता है। वुल्फ की प्रक्रिया में आम तौर पर निम्नलिखित चरण शामिल होते हैं।

1. **विश्लेषण:** पाठ्यचर्या के संदर्भ, आवश्यकताओं और लक्ष्यों को समझना।
2. **डिजाइन:** संरचना, सामग्री और वितरण विधियों की योजना बनाना।
3. **विकास:** पाठ्यचर्या सामग्री और संसाधन बनाना।
4. **कार्यान्वयन:** पाठ्यचर्या को व्यवहार में लाना।
5. **मूल्यांकन:** प्रभावशीलता का आकलन करना और आवश्यक समायोजन करना।
6. **समीक्षा और संशोधन**

इसे अन्य मॉडलों के साथ संयोजित करने के लिए, आप विभेदित निर्देश, सीखने के लिए सार्वभौमिक डिजाइन (UDL), और हस्तक्षेप के प्रति प्रतिक्रिया (RTI) से तत्वों को एकीकृत कर सकते हैं। यहाँ बताया गया है कि आप इसे कैसे कर सकते हैं।

1. **आवश्यकताओं का आकलन (विश्लेषण):**

– वुल्फः शैक्षिक संदर्भ और आवश्यकताओं का गहन विश्लेषण करें।

– यूडीएलः विविध शिक्षण आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं की पहचान करें।

– आरटीआईः डेटा का उपयोग करके उन छात्रों की पहचान करें जिन्हें अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता है।

2. **लक्ष्य और उद्देश्य निर्धारित करना (डिजाइन):**

– वुल्फः स्पष्ट लक्ष्य और उद्देश्य निर्धारित करें।

– विभेदित निर्देशः सुनिश्चित करें कि लक्ष्य विभिन्न शिक्षण शैलियों को समायोजित करने के लिए लचीले हों।

– यूडीएलः ऐसे लक्ष्य बनाएँ जो जुड़ाव और अभिव्यक्ति के कई साधन प्रदान करें।

3. **अनुकूलन डिजाइन करना (विकास):**

– वुल्फः पाठ्यचर्या सामग्री और संसाधन विकसित करें।

– विभेदित निर्देशः विविध निर्देशात्मक रणनीतियाँ और सामग्री शामिल करें।

– यूडीएलः सुनिश्चित करें कि सामग्री सभी छात्रों के लिए सुलभ हो।

– आरटीआईः अतिरिक्त सहायता की आवश्यकता वाले छात्रों के लिए स्तरित हस्तक्षेप विकसित करें।

4. **कार्यान्वयनः**

– वुल्फः पाठ्यचर्या को लागू करें।

– विभेदित निर्देशः सभी छात्रों तक पहुँचने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करें।

– यूडीएलः प्रतिनिधित्व और जुड़ाव के कई साधन प्रदान करें।

– आरटीआईः छात्र की प्रगति की निगरानी करें और आवश्यकतानुसार हस्तक्षेपों को समायोजित करें।

5. **निगरानी और मूल्यांकनः**

– वुल्फः पाठ्यचर्या की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करें।

– विभेदित निर्देशः छात्रों और शिक्षकों से प्रतिक्रिया एकत्र करें।

– यूडीएलः पाठ्यचर्या की पहुँच और समावेशिता का आकलन करें।

– आरटीआईः हस्तक्षेप और समर्थन को परिष्कृत करने के लिए डेटा का उपयोग करें।

6. **समीक्षा और संशोधनः**

– वुल्फः समय–समय पर पाठ्यचर्या की समीक्षा और संशोधन करें।

– विभेदित निर्देशः प्रतिक्रिया और प्रदर्शन डेटा के आधार पर समायोजन करें।

– यूडीएलः निरंतर पहुँच और समावेशिता सुनिश्चित करें।

– आरटीआईः छात्रों के परिणामों के आधार पर हस्तक्षेपों में निरंतर सुधार करें।

इन दृष्टिकोणों को मिलाकर, आप एक मजबूत और अनुकूलनीय पाठ्यचर्या बना सकते हैं जो सभी शिक्षार्थियों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करता है।

11.9 पाठ्यचर्या अनुकूलन में निर्णय पथ (Decision Path in Curriculum Adaptation)

पाठ्यचर्या अनुकूलन में निर्णय पथ यह सुनिश्चित करने के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया है कि पाठ्यचर्या सभी छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करता है। यहाँ आम तौर पर शामिल प्रमुख चरण दिए गए हैं।

1. **आवश्यकताओं का आकलन** (Needs Assessment): या सीखने की चुनौतियों वाले छात्रों सहित छात्रों की विशिष्ट आवश्यकताओं की पहचान करें। इसमें शिक्षकों, अभिभावकों और विशेषज्ञों जैसे हितधारकों के साथ आकलन, अवलोकन और परामर्श के माध्यम से डेटा एकत्र करना शामिल है।
2. **लक्ष्य और उद्देश्य निर्धारित करना** (Setting Goals and Objectives): स्पष्ट, मापने योग्य लक्ष्य और सीखने के उद्देश्य निर्धारित करें जो पहचानी गई आवश्यकताओं को संबोधित करते हैं। इन्हें शैक्षिक मानकों के साथ संरेखित किया जाना चाहिए और सभी छात्रों के लिए प्राप्त करने योग्य होना चाहिए।
3. **अनुकूलन डिजाइन करना** (Designing Adaptations): पाठ्यचर्या सामग्री, शिक्षण विधियों, सामग्रियों और आकलन के लिए विशिष्ट अनुकूलन विकसित करें। इसमें भौतिक वातावरण, निर्देशात्मक रणनीतियों और सहायक प्रौद्योगिकियों के उपयोग में संशोधन शामिल हो सकते हैं।
4. **कार्यान्वयन** (Implementation): अनुकूलित पाठ्यचर्या को व्यवहार में लाना। इसमें शिक्षकों को प्रशिक्षित करना, आवश्यक संसाधन प्रदान करना और यह सुनिश्चित करना शामिल है कि सभी तार्किक पहलू मौजूद हैं। इस चरण में शिक्षकों, विशेषज्ञों और परिवारों के बीच सहयोग महत्वपूर्ण है।
5. **निगरानी और मूल्यांकन** (Monitoring and Evaluation): छात्र प्रदर्शन डेटा, शिक्षकों और छात्रों से फीडबैक और अन्य प्रासंगिक मेट्रिक्स के माध्यम से अनुकूलन की प्रभावशीलता का लगातार आकलन करें। पाठ्यचर्या में सुधार के लिए इस मूल्यांकन के आधार पर समायोजन किए जाते हैं।
6. **समीक्षा और संशोधन** (Review and Revision): यह सुनिश्चित करने के लिए कि यह प्रासंगिक और प्रभावी बना रहे, संपूर्ण अनुकूलन प्रक्रिया की समय–समय पर समीक्षा करें। इस चरण में नए शैक्षिक शोध, मानकों में बदलाव और मूल्यांकन प्रक्रिया से फीडबैक के आधार पर आवश्यक संशोधन करना शामिल है।

यह निर्णय पथ सुनिश्चित करता है कि पाठ्यचर्या लचीला और समावेशी हो, जिससे सभी छात्रों को सफल होने का अवसर मिले।

11.10 निर्णय लेने की प्रक्रिया (Process of decision Making)

निर्णय लेने की प्रक्रिया में सूचित और प्रभावी विकल्प सुनिश्चित करने के लिए कई महत्वपूर्ण चरण शामिल हैं:

1 .**निर्णय की पहचान करें** (Identify the Decision): पहचानें कि कहां निर्णय लेने की आवश्यकता है।

2. **प्रासंगिक जानकारी एकत्र करें** (Gather Relevant Information): स्थिति और संभावित विकल्पों को समझने के लिए डेटा और जानकारी एकत्र करें।

3. **विकल्पों की पहचान करें** (Identify Alternatives): विचार–मंथन करें और संभावित विकल्पों की एक श्रृंखला तैयार करें।

4. **विकल्पों का मूल्यांकन करें** (Evaluate Alternatives): प्रत्येक विकल्प के पक्ष और विपक्ष का आकलन करें।

5 .**निर्णय लें** (Make the Decision): सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।

6 .**निर्णय को लागू करें** (Implement the Decision): चुने गए विकल्प को कार्रवाई में लाएँ।

7. **निगरानी करें और मूल्यांकन करें** (Monitor and Evaluate): निर्णय की प्रभावशीलता का लगातार आकलन करें और आवश्यकतानुसार समायोजन करें।

11.11 निर्देश की संरचना की जांच (Examination of Structure of Instruction)

शिक्षण की संरचना की जाँच में यह विश्लेषण करना शामिल है कि शिक्षण कैसे व्यवस्थित और वितरित किया जाता है।

– **शिक्षण डिजाइन**: पाठ्यचर्या डिजाइन, पाठ योजना और शिक्षण विधियों की समीक्षा करें।

– **शिक्षण रणनीतियाँ**: विभिन्न शिक्षण रणनीतियों, जैसे प्रत्यक्ष निर्देश, सहयोगी शिक्षण और पूछताछ–आधारित

शिक्षण की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करें।

– **मूल्यांकन विधियाँ**: छात्र सीखने और प्रगति को मापने के लिए उपयोग किए जाने वाले मूल्यांकन के प्रकारों का विश्लेषण करें।

11.12 सीखने के माहौल की जाँच (Examination of Learning Environment)

सीखने का माहौल छात्र परिणामों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है।

– **भौतिक वातावरण**: कक्षा के लेआउट, संसाधनों और सुविधाओं का आकलन करें।

– **भावनात्मक माहौल**: शिक्षकों और छात्रों के बीच और छात्रों के बीच संबंधों का मूल्यांकन करें।

– **संलग्नता और सहभागिता**: पाठों के दौरान छात्र की सहभागिता और सहभागिता के स्तर का निरीक्षण करें।

11.13 सामग्री की जांच (Examination of Materials)

शैक्षणिक सामग्री का मूल्यांकन यह सुनिश्चित करता है कि वे प्रभावी और उपयुक्त हैं:

– **सामग्री की गुणवत्ता**: पाठ्यपुस्तकों, डिजिटल संसाधनों और अन्य सामग्रियों की सटीकता, प्रासंगिकता और व्यापकता का आकलन करें।

– **पहुंच** (Accessibility): सुनिश्चित करें कि सामग्री सभी छात्रों के लिए सुलभ हो, जिसमें छात्र भी शामिल हैं।

– **विविधता और समावेश**: जाँच करें कि क्या सामग्री विविध दृष्टिकोणों को दर्शाती है और सभी छात्रों को शामिल करती है।

11.14 समर्थन संरचना मूल्यांकन (Support Structure Assessment)

समर्थन संरचनाओं का मूल्यांकन करने में छात्रों और शिक्षकों का समर्थन करने के लिए मौजूद प्रणालियों का मूल्यांकन करना शामिल है:

– **छात्र सहायता सेवाएँ**: परामर्श, ट्यूशन और विशेष शिक्षा सेवाओं की उपलब्धता और प्रभावशीलता की समीक्षा करें।

– **पेशेवर विकास**: शिक्षक प्रशिक्षण और पेशेवर विकास के अवसरों का आकलन करें।

– **माता–पिता और समुदाय की भागीदारी**: माता–पिता और समुदाय से जुड़ाव और समर्थन के स्तर का मूल्यांकन करें।

11.15 वैकल्पिक गतिविधियों की व्यवस्था करें जो बातचीत और भागीदारी बढ़ावा दें (Arrange Alternative Activities that Foster Participation and Interaction)

वैकल्पिक गतिविधियाँ बनाने से छात्र भागीदारी और बातचीत को बढ़ाया जा सकता है:

– समूह परियोजनाएँ: समूह अधिन्यास के माध्यम से सहयोग और टीमवर्क को प्रोत्साहित करें।

– परस्पर संवादात्मक पाठ: पाठों को अधिक आकर्षक बनाने के लिए प्रौद्योगिकी और व्यावहारिक गतिविधियों का उपयोग करें।

– सहकर्मी शिक्षण: छात्रों को एक–दूसरे को पढ़ाने की अनुमति दें, जिससे सामग्री की गहरी समझ बढ़े।

– चर्चा और बहस: संरचित चर्चाओं और बहसों के माध्यम से आलोचनात्मक सोच और संचार कौशल को बढ़ावा दें।

बोध प्रश्नः—नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.4. पाठ्यचर्या अनुकूलन की परिभाषा लिखिए।

....

....

प्र0.5. सामग्री की जांच से आप क्या समझते है?

....

....

प्र0.6. समर्थन संरचना मूल्यांकन से आप क्या समझते है?

....

....

11.16 इकाई सारांश

- पाठ्यचर्या अनुकूलन एक समावेशी शैक्षिक वातावरण बनाने के बारे में है जहाँ सभी छात्र अपनी पूरी क्षमता हासिल कर सकें। विभिन्न अनुकूलनों को समझकर और उन्हें लागू करके, शिक्षक यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उनकी शिक्षण विधियाँ और सामग्री हर शिक्षार्थी के लिए सुलभ और प्रभावी हों। अनुकूलन की यह सतत प्रक्रिया एक न्यायसंगत और सहायक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक है।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि शैक्षिक कार्यक्रम प्रभावी हों और छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करें। पाठ्यचर्या का नियमित रूप से मूल्यांकन और समायोजन करके, शिक्षक छात्र सीखने के परिणामों को बढ़ा सकते हैं और यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि सभी छात्रों को सफल होने का अवसर मिले। रचनात्मक और योगात्मक दोनों प्रकार के मूल्यांकनों के माध्यम से, शिक्षक मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं जो शैक्षिक प्रक्रिया में निरंतर सुधार को प्रेरित करती है।

11.17 बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र0.1. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की परिभाषा लिखिए

उ0.1. पाठ्यचर्या—आधारित मूल्यांकन (CBA): यह एक रचनात्मक दृष्टिकोण है जो किसी छात्र के प्रदर्शन और प्रगति का मूल्यांकन उनके दैनिक कक्षा पाठ्यचर्या के संदर्भ में करता है। यह निर्देश को सूचित करने और छात्र परिणामों को बेहतर बनाने के लिए वास्तविक समय के तथ्य पर ध्यान केंद्रित करता है।

प्र0.2. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की किन्ही दो आवश्यकता के बारे में लिखिए।

उ0.2. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की दो आवश्यकताः—

शक्तियों और कमजोरियों की पहचान करना

पाठ्यचर्या मूल्यांकन यह पहचानने में मदद करता है कि पाठ्यचर्या के कौन से पहलू अच्छी तरह से काम कर रहे हैं और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। यह शिक्षकों को आवश्यक परिवर्तनों के बारे में सूचित निर्णय लेने की अनुमति देता है।

मानकों के साथ संरेखण सुनिश्चित करना

नियमित मूल्यांकन यह सुनिश्चित करता है कि पाठ्यचर्या राष्ट्रीय या राज्य शैक्षिक मानकों के अनुरूप हो, यह सुनिश्चित करते हुए कि छात्रों को एक गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिले जो स्थापित मानदंडों को पूरा करती हो।

प्र0.3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की प्रक्रिया के बारे में वर्णन कीजिए।

उ0.3. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की प्रक्रिया

योजना(Planning): सर्वप्रथम मूल्यांकन के लक्ष्यों और उद्देश्यों को परिभाषित करेंगें एवं निर्धारित करें कि आप क्या मापना चाहते हैं और आप इसे कैसे मापेंगे।

कार्यान्वयन(Implementation): मूल्यांकन का प्रबंधन करें और डेटा एकत्र करें। इसमें परीक्षण, सर्वेक्षण, अवलोकन और छात्र कार्य नमूने शामिल हो सकते हैं।

विश्लेषण(Analysis): रुझानों, शक्तियों और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए डेटा का मूल्यांकन करें। इस चरण में निर्धारित उद्देश्यों के विरुद्ध छात्र के प्रदर्शन की तुलना करना शामिल है।

क्रिया (Action): पाठ्यचर्या समायोजन के बारे में सूचित निर्णय लेने के लिए निष्कर्षों का उपयोग करें। इसमें पाठ योजनाओं को संशोधित करना, नई सामग्री पेश करना या छात्रों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करना शामिल हो सकता है।

प्र0.4. पाठ्यचर्या अनुकूलन की परिभाषा लिखिए।

उ0.4. पाठ्यचर्या अनुकूलन में छात्रों की विविध सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए मौजूदा पाठ्यचर्या में बदलाव करना शामिल है। इसमें सामग्री, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन रणनीतियों और सीखने के वातावरण में संशोधन शामिल हो सकते हैं।

प्र0.5. सामग्री की जांच से आप क्या समझते है?

उ0.5. शैक्षणिक सामग्री का मूल्यांकन यह सुनिश्चित करता है कि वे प्रभावी और उपयुक्त हैं:

– सामग्री की गुणवत्ता: पाठ्यपुस्तकों, डिजिटल संसाधनों और अन्य सामग्रियों की सटीकता, प्रासंगिकता और व्यापकता का आकलन करें।

– पहुंच (Accessibility): सुनिश्चित करें कि सामग्री सभी छात्रों के लिए सुलभ हो, जिसमें छात्र भी शामिल हैं।

– विविधता और समावेश: जाँच करें कि क्या सामग्री विविध दृष्टिकोणों को दर्शाती है और सभी छात्रों को शामिल करती है।

प्र0.6. समर्थन संरचना मूल्यांकन से आप क्या समझते है?

उ0.6. समर्थन संरचनाओं का मूल्यांकन करने में छात्रों और शिक्षकों का समर्थन करने के लिए मौजूद प्रणालियों का मूल्यांकन करना शामिल है।

– छात्र सहायता सेवाएँ: परामर्श, ट्यूशन और विशेष शिक्षा सेवाओं की उपलब्धता और प्रभावशीलता की समीक्षा करें।

– पेशेवर विकास: शिक्षक प्रशिक्षण और पेशेवर विकास के अवसरों का आकलन करें।

– माता–पिता और समुदाय की भागीदारी: माता–पिता और समुदाय से जुड़ाव और समर्थन के स्तर का मूल्यांकन करें।

11.18 अभ्यास कार्य

प्र0.1. पाठ्यचर्या मूल्यांकन से आप क्या समझते है?

प्र0.2. पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों होती है?

प्र0.3 पाठ्यचर्या अनुकूलन के मॉडल के बारे में लिखिए।

प्र0.4. किर्कपैट्रिक के चार स्तर मूल्याकंन का वर्णन कीजिए।

प्र0.5 पाठ्यचर्या अनुकूलन में निर्णय लेने की प्रक्रिया का वर्णन करिए।

प्र0.6. वैकल्पिक गतिविधियों जो बातचीत और भागीदारी को बढ़ावा दें, उनका वर्णन कीजिए।

11.19 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

प्रश्न 01–अपने सहपाठियों के साथ श्रवण दिव्यांग बच्चो के अनुरूप अपनी कक्षा के पाठ्यचर्या के मूल्यांकन पर एक सामूहिक चर्चा करे।

11.20 कुछ उपयोगी पुस्तकें / संदर्भ सूची

- Government of India MHRD: National Policy on Education and its Program of Action 1992.
- Jangira, N.K., Ahuja, A. et al (1990) Functional Assessment Guide, PIED Resource Centre, NCERT
- Julka, Anita. Index for Developing Inclusive Schools. DEGSN, NCERT. National Curriculum Framework (NCF, 2005); NCERT
- Mohan, S. (2000). Effective Concept learning in Science Education: A Theoretical instructional mode. NCERT, Fifth Survey of Education Research, Vol. II, NCERT page 1252
- Mohanty, S. (2000). An Appraisal of teaching science in the high schools of Cuttack city, NCERT, Fifth Survey of Education Research, Vol. II, NCERT. P. 1253.
- National Council of Teachers of Mathematics (NCTM, 1991); www.netm. org. dated: 26.10.2016

इकाई–12 पाठ्यचर्या को अनुकूलित करना– सामग्री, शिक्षण, सीखने की सामग्री और निर्देश Adapting Curriculum& Content, Teaching-Learning Material and Instruction

इकाई संरचना

12.1 परिचय

12.2 उद्देश्य

12.3 पाठ्यचर्या अनुकूलन की अवधारणा

12.4 मुख्यधारा की कक्षाओं में श्रवण बाधित बच्चों को पढ़ाने के लिए अनुकूलन

12.5 यूडीएल की अवधारणा

12.6 सामग्री अनुकूलन (कठिनाई, आकार जटिलता आदि)

12.7 शिक्षण सामग्री का अनुकूलन (अनुकूलित शिक्षण सहायक सामग्री की तैयारी और उपयोग, अनुकूलन तकनीक, आईसीटी का उपयोग)

12.8 निर्देश का अनुकूलन (निर्देशात्मक व्यवस्था, व्यक्तिगत सहायता, विधियाँ, जुड़ाव के कई साधन)

12.9 प्रदर्शन माप का उपयोग करके छात्रों का मूल्यांकन

12.10 इकाई सारांश

12.11 बोध प्रश्नों का उत्तर

12.12 अभ्यास कार्य

12.13 चर्चा के बिन्दु स्पष्टीकरण

12.14 कुछ उपयोगी पुस्तकं

12.1 परिचय

पाठ्यक्रम को अनुकूलित करना एक सतत गतिशील प्रक्रिया है जो विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अध्ययन के कार्यक्रम को संशोधित और अनुकूलित करती है। यह शिक्षण टीम को सभी क्षमताओं के शिक्षार्थियों का स्वागत करने में सक्षम बनाता है और यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक छात्र को सीखने के लिए चुनौती दी जाए। इसके अतिरिक्त, अनुकूली पाठ्यक्रम शिक्षकों को व्यक्तिगत छात्रों की आवश्यकताओं और रुचियों के अनुसार निर्देश तैयार करने की अनुमति देकर छात्र की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह व्यक्तिगत दृष्टिकोण छात्र–संचालित सीखने को बढ़ावा देता है, जहाँ शिक्षक छात्रों के बारे में अपने ज्ञान और सीखने की उनकी तत्परता के आधार पर बच्चों को क्या और कैसे सीखना है, इसका मार्गदर्शन करते हैं। अंततः, एक अनुकूली पाठ्यक्रम छात्रों को निर्देशात्मक सामग्री और विधियों के बारे में सूचित निर्णय लेने के लिए शिक्षकों पर निर्भर करते हुए अपनी सीखने की यात्रा का स्वामित्व लेने का अधिकार देता है।

12.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त अधिगमकर्ता / विद्यार्थी

- पाठ्यचर्या अनुकूलन की अवधारणा को समझ सकेंगे।
- मुख्यधारा की कक्षाओं में श्रवण बाधित बच्चों को पढ़ाने के लिए अनुकूलन की आवश्यकता को समझ पाएंगे।

- यूडीएल की अवधारणा की व्यख्या कर सकेंगे।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन में आईसीटी का उपयोगिता को जान पाएंगे।
- प्रदर्शन माप का उपयोग करके छात्रों का मूल्यांकन कर पाएंगे।

12.3 पाठ्यचर्या अनुकूलन की अवधारणा

पाठ्यचर्या अनुकूलन

पाठ्यचर्या अनुकूलन समावेशी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो यह सुनिश्चित करता है कि सभी छात्रों को, उनकी योग्यताओं या पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, सार्थक सीखने के अनुभवों तक पहुँच प्राप्त हो। पाठ्यचर्या में आवश्यक समायोजन करके, शिक्षक ऐसा वातावरण बना सकते हैं जहाँ हर छात्र सफल हो सके और आगे बढ़ सके।

पाठ्यचर्या अनुकूलन की परिभाषाएँ

सामान्य परिभाषा: पाठ्यचर्या अनुकूलन में छात्रों की विविध सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए मौजूदा पाठ्यचर्या में बदलाव करना शामिल है। इसमें सामग्री, शिक्षण विधियों, मूल्यांकन रणनीतियों और सीखने के वातावरण में संशोधन शामिल हो सकते हैं।

विशेष शिक्षा परिप्रेक्ष्य : पाठ्यचर्या अनुकूलन का अर्थ है बच्चों की सीखने की जरूरतों को पूरा करने के लिए मौजूदा पाठ्यचर्या में आवश्यक बदलाव करना, जिससे उन्हें सामान्य पाठ्यचर्या तक पहुँच मिल सके। समावेशी शिक्षाः पाठ्यचर्या अनुकूलन शैक्षिक वातावरण में स्वीकार्य परिवर्तन हैं जो छात्रों को पहुँच, परिणाम, लाभ और उपलब्धि के स्तर प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान करते हैं। इन अनुकूलन में समायोजन और संशोधन दोनों शामिल हैं।

12.4 मुख्यधारा की कक्षाओं में श्रवण बाधित बच्चों को पढ़ाने के लिए अनुकूलन

मुख्यधारा की कक्षाओं में श्रवण बाधित बच्चों को पढ़ाने के लिए विचारशील अनुकूलन की आवश्यकता होती है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे पाठ्यचर्या तक पहुँच सकें और उसमें प्रभावी रूप से भाग ले सकें। यहाँ कुछ प्रमुख रणनीतियाँ दी गई हैं।

संचार रणनीतिया

1. **बोलते समय छात्रों का सामना करें:** हमेशा छात्रों का सामना करें और आँख से संपर्क बनाए रखें ताकि वे होंठ पढ़ सकें और चेहरे के भाव देख सकें।
2. **स्पष्ट भाषण का उपयोग करें:** स्पष्ट और मध्यम गति से बोलें। बात करते समय अपना मुँह ढकने या मुँह मोड़ने से बचें।
3. **सांकेतिक भाषा और दुभाषिया:** यदि छात्र सांकेतिक भाषा का उपयोग करते हैं, तो सुनिश्चित करें कि एक दुभाषिया उपलब्ध हो। संचार को सुविधाजनक बनाने के लिए बुनियादी संकेतों को सीखें।

कक्षा का वातावरण

1. **बैठने की व्यवस्था:** छात्रों को ऐसी जगह बैठाएँ जहाँ वे शिक्षक और किसी भी दृश्य सहायक को स्पष्ट रूप से देख सकें। सामने के पास बैठने की प्राथमिकता लाभदायक हो सकती है।
2. **पृष्ठभूमि शोर कम करें:** वेंटिलेशन सिस्टम, हॉलवे और अन्य स्रोतों से शोर को कम करें। ध्वनि की गुणवत्ता सुधारने के लिए कालीन और ध्वनिक टाइलों का उपयोग करें।

अनुदेशात्मक रणनीतिया

1. **दृश्य सहायताः** मौखिक संचार को पूरक बनाने के लिए चार्ट, आरेख और लिखित निर्देश जैसे दृश्य सहायता का उपयोग करें।
2. **पूर्व–शिक्षण शब्दावली:** छात्रों को अधिक आसानी से अनुसरण करने में मदद करने के लिए पाठ से

पहले नई शब्दावली और अवधारणाएँ पेश करें।

3 .**लिखित सामग्री प्रदान करें**: छात्रों को लिखित नोट्स, अध्ययन मार्गदर्शिकाएँ और पाठों की रूपरेखा पहले से दें।

प्रौद्योगिकी और सहायक उपकरण

1. **श्रवण सहायता और कोक्लियर प्रत्यारोपण**: सुनिश्चित करें कि छात्रों के श्रवण उपकरण ठीक से काम कर रहे हैं और उनका लगातार उपयोग किया जा रहा है।

2 .**सहायक श्रवण उपकरण**: शिक्षक की आवाज को सीधे छात्र के श्रवण उपकरण तक पहुँचाने के लिए FM सिस्टम या अन्य सहायक श्रवण उपकरणों का उपयोग करें।

3. **कैप्शनिंग सेवाएँ**: वीडियो और मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों के लिए वास्तविक समय में कैप्शनिंग प्रदान करें।

समर्थन और सहयोग

1. **बडी सिस्टम**: सुनने में अक्षम छात्रों को ऐसे सहपाठियों के साथ जोड़ें जो उन्हें छूटी हुई जानकारी को पकड़ने में मदद कर सकें।
2. **नियमित जाँच**: समझ के लिए बार–बार जाँच करें और छात्रों को प्रश्न पूछने के अवसर प्रदान करें।
3. **व्यावसायिक विकास**: सुनने में अक्षम छात्रों की सहायता के लिए प्रभावी रणनीतियों पर शिक्षकों और कर्मचारियों को प्रशिक्षित करें।

वैकल्पिक गतिविधिया

1. **इंटरैक्टिव पाठ**: छात्रों को सक्रिय रूप से शामिल करने के लिए व्यावहारिक गतिविधियाँ और समूह कार्य शामिल करें।
2. **सहकर्मी शिक्षण**: बातचीत और भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए सहकर्मी शिक्षण और सहयोगी शिक्षण को प्रोत्साहित करें।

ये अनुकूलन सुनने में अक्षम छात्रों के लिए अधिक समावेशी और सहायक शिक्षण वातावरण बना सकते हैं।

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.1. पाठ्यचर्या अनुकूलन से आप क्या समझते है?

....

....

प्र0.2. मुख्यधारा में श्रवण बाधित बच्चों को पढ़ाने के लिए संचार रणनीतियों में किन–२ अनुकुलन की आवश्यकता होती है?

....

....

12.5 यूडीएल की अवधारणा

यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग (UDL) एक शैक्षिक ढाँचा है जिसे सभी लोगों के लिए शिक्षण और सीखने को बेहतर बनाने और अनुकूलित करने के लिए डिजाइन किया गया है, जो इस बात पर आधारित है कि मनुष्य कैसे सीखते हैं। यहाँ UDL के मुख्य सिद्धांत और अवधारणाएँ दी गई हैं।

UDL के मुख्य सिद्धांत

प्रतिनिधित्व के कई साधनः

क्याः यह सिद्धांत छात्रों को सूचना और सामग्री प्रस्तुत करने के विभिन्न तरीके प्रदान करने पर केंद्रित है। यह

स्वीकार करता है कि छात्र सूचना को अलग–अलग तरीके से समझते और समझते हैं।

कैसेः विभिन्न मीडिया (पाठ, ऑडियो, वीडियो) का उपयोग करें, सूचना तक पहुँचने के लिए विकल्प प्रदान करें (जैसे, ब्रेल, बड़े प्रिंट), और भाषा और प्रतीकों (जैसे, अनुवाद, शब्दावलियाँ) के लिए विकल्प प्रदान करें ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि सभी छात्र सामग्री को समझ सकें।

कार्रवाई और अभिव्यक्ति के कई साधनः

क्याः यह सिद्धांत छात्रों को यह प्रदर्शित करने के लिए अलग–अलग तरीके देने पर जोर देता है कि वे क्या जानते हैं। यह मानता है कि छात्र अपने ज्ञान को विभिन्न तरीकों से व्यक्त करते हैं।

कैसेः छात्रों को अधिन्यास पूरा करने के लिए विभिन्न तरीकों का उपयोग करने की अनुमति दें (जैसे, लिखित रिपोर्ट, मौखिक प्रस्तुतियाँ, परियोजनाएँ), उपकरण और सहायता प्रदान करें (जैसे, सहायक तकनीकें, ग्राफिक आयोजक), और विभिन्न क्षमताओं को समायोजित करने के लिए शारीरिक क्रिया (जैसे, टाइपिंग, बोलना) के विकल्प प्रदान करें।

जुड़ाव के कई साधनः

क्याः यह सिद्धांत छात्रों की रुचियों को समझने, उचित चुनौतियाँ देने और प्रेरणा बढ़ाने पर केंद्रित है। यह स्वीकार करता है कि छात्र अलग–अलग चीजों से प्रेरित और जुड़े होते हैं।

कैसेः सीखने की गतिविधियों में विकल्प प्रदान करें, सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक और आयु–उपयुक्त सामग्री का उपयोग करें, अलग–अलग स्तरों की चुनौती पेश करें, और सभी छात्रों को जोड़ने के लिए एक सहायक और सहयोगी शिक्षण वातावरण बनाएँ ।

यूडीएल के लक्ष्य

- यूडीएल का अंतिम लक्ष्य ''विशेषज्ञ शिक्षार्थी'' बनाना है जो ।
- उद्देश्यपूर्ण और प्रेरितः सीखने के लिए लगे और प्रेरित हों।
- संसाधन संपन्न और जानकारः संसाधनों को प्रभावी ढंग से खोजने और उनका उपयोग करने में सक्षम हों।
- रणनीतिक और लक्ष्य–निर्देशितः लक्ष्य निर्धारित करने और उन्हें प्राप्त करने की योजना बनाने में सक्षम

यूडीएल का कार्यान्वयन

- **सक्रिय योजनाः** शुरू से ही सभी छात्रों की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ और गतिविधियाँ डिजाइन करें।
- **लचीले तरीके और सामग्रीः** विभिन्न शिक्षण शैलियों और क्षमताओं को समायोजित करने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों और सामग्रियों का उपयोग करें।
- **निरंतर सुधारः** छात्रों की प्रतिक्रिया और प्रदर्शन के आधार पर शिक्षण रणनीतियों और सामग्रियों का नियमित रूप से मूल्यांकन और समायोजन करें.

यूडीएल एक शक्तिशाली दृष्टिकोण है क्योंकि यह शिक्षकों को उनकी कक्षाओं में परिवर्तनशीलता का अनुमान लगाने और योजना बनाने में मदद करता है, यह सुनिश्चित करता है कि सभी छात्रों को सफल होने के समान अवसर मिलें।

12.6 सामग्री अनुकूलन (कठिनाई, आकार जटिलता आदि)

सामग्री अनुकूलन में छात्रों की विविध आवश्यकताओं और क्षमताओं से मेल खाने के लिए शैक्षिक सामग्री को संशोधित करना शामिल है। इसमें सामग्री की कठिनाई, आकार और जटिलता को समायोजित करना शामिल हो सकता है। सामग्री अनुकूलन के लिए यहाँ कुछ रणनीतियाँ दी गई हैं।

कठिनाई को समायोजित करना

भाषा को सरल बनानाः

- सामग्री को अधिक सुलभ बनाने के लिए सरल शब्दावली और वाक्य संरचनाओं का उपयोग करें।
- जटिल शब्दों के लिए परिभाषाएँ और स्पष्टीकरण प्रदान करें।

स्कैफोल्डिंगः

- जटिल कार्यों को छोटे, अधिक प्रबंधनीय चरणों में विभाजित करें।
- सहायता प्रदान करें और जैसे–जैसे छात्र अधिक कुशल होते जाएँ, इसे धीरे–धीरे कम करें।

स्तरित अधिन्यासः

- अधिन्यास के विभिन्न स्तर बनाएँ जो समान सामग्री को कवर करते हों लेकिन कठिनाई में भिन्न हों।
- छात्रों को उनके कौशल स्तर से मेल खाने वाले कार्य चुनने या उन्हें सौंपे जाने दें।

आकार को समायोजित करना

- सूचना को खंडित करना।
- बड़ी मात्रा में जानकारी को छोटे, अधिक पचने योग्य खंडों में विभाजित करें।
- सामग्री को व्यवस्थित करने के लिए शीर्षकों, बुलेट पॉइंट और क्रमांकित सूचियों का उपयोग करें।

सारांश बनानाः

- छात्रों को विवरणों से अभिभूत हुए बिना मुख्य विचारों को समझने में मदद करने के लिए मुख्य बिंदुओं का सारांश प्रदान करें।

पाठों को संक्षिप्त करनाः

- मूल संदेश को बनाए रखते हुए गैर–आवश्यक जानकारी को हटाकर पाठों को छोटा करें।
- सूचना को संक्षेप में व्यक्त करने के लिए दृश्यों और आरेखों का उपयोग करें।

जटिलता को समायोजित करना

- दृश्य सहायता का उपयोग करना।
- जटिल अवधारणाओं को समझाने में मदद करने के लिए चार्ट, आरेख और छवियों को शामिल करें।
- वीडियो और इंटरैक्टिव सिमुलेशन जैसे मल्टीमीडिया संसाधनों का उपयोग करें।

उदाहरण प्रदान करनाः

- अमूर्त अवधारणाओं को चित्रित करने के लिए ठोस उदाहरणों का उपयोग करें।
- नई जानकारी को छात्रों के पूर्व ज्ञान और अनुभवों से जोड़ें।

विभेदित निर्देशः

- छात्रों की विविध सीखने की शैलियों और क्षमताओं को पूरा करने के लिए निर्देश को अनुकूलित करें।
- विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करें, जैसे कि हाथों से की जाने वाली गतिविधियाँ, चर्चाएँ और प्रौद्योगिकी एकीकरण।

अनुकूलन को लागू करना

- निरंतर मूल्यांकनः छात्रों की समझ का नियमित रूप से मूल्यांकन करें और आवश्यकतानुसार सामग्री को समायोजित करें।
- प्रतिक्रिया और सहयोगः छात्रों से प्रतिक्रिया प्राप्त करें और अनुकूलन को परिष्कृत करने के लिए अन्य शिक्षकों के साथ सहयोग करें।
- पेशेवर विकासः सामग्री अनुकूलन के लिए नई रणनीतियाँ सीखने के लिए चल रहे व्यावसायिक विकास में संलग्न हों।

12.7 शिक्षण सामग्री का अनुकूलन (अनुकूलित शिक्षण सहायक सामग्री की तैयारी और उपयोग, अनुकूलन तकनीक, आईसीटी का उपयोग)

छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए शिक्षण सामग्री को अनुकूलित करना आवश्यक है। अनुकूलित शिक्षण सहायक सामग्री, अनुकूलन तकनीक और आईसीटी (सूचना और संचार प्रौद्योगिकी) को शामिल करने के लिए कुछ रणनीतियाँ इस प्रकार हैं।

अनुकूलित शिक्षण सहायक सामग्री की तैयारी और उपयोग

दृश्य सहायक सामग्रीः

- चार्ट और आरेखः अवधारणाओं को चित्रित करने के लिए स्पष्ट, बड़े दृश्यों का उपयोग करें।
- ग्राफिक आयोजकः छात्रों को माइंड मैप और फ्लोचार्ट जैसी जानकारी को नेत्रहीन रूप से व्यवस्थित करने में मदद करें।

मैनिपुलेटिवः

- हाथों से इस्तेमाल की जाने वाली सामग्रीः छात्रों को अमूर्त अवधारणाओं को समझने में मदद करने के लिए ब्लॉक, मॉडल और इंटरैक्टिव किट जैसी भौतिक वस्तुओं का उपयोग करें।

सहायक तकनीकः

- श्रवण सहायक उपकरण और एफएम सिस्टमः श्रवण बाधित छात्रों के लिए, सुनिश्चित करें कि ये उपकरण उपलब्ध हैं और ठीक से काम कर रहे हैं।
- ब्रेल सामग्रीः दृष्टिबाधित छात्रों के लिए पाठों के ब्रेल संस्करण प्रदान करें।

अनुकूलन तकनीक

सामग्री को सरल बनानाः

- भाषा सरलीकरणः सरल शब्दावली और वाक्य संरचनाओं का उपयोग करें।
- सूचना को खंडित करनाः बड़ी मात्रा में जानकारी को छोटे, प्रबंधनीय भागों में विभाजित करें।

स्तरित अधिन्यासः

- अधिन्यास के विभिन्न स्तर बनाएँ जो समान विषय–वस्तु को कवर करते हों, लेकिन कठिनाई में भिन्न हों, जिससे छात्र अपनी गति से काम कर सकें।
- लचीला समूहीकरण।
- छात्रों को उनकी जरूरतों और क्षमताओं के आधार पर समूहबद्ध करें, और लक्षित सहायता प्रदान करने के लिए आवश्यकतानुसार समूह बदलें।

स्कैफ्फोल्डिंगः

- छात्रों को धीरे–धीरे अपने सीखने में स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद करने के लिए रूपरेखा, सारांश और निर्देशित प्रश्न जैसी सहायता संरचनाएँ प्रदान करें।

आईसीटी का उपयोग

- इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड।
- मल्टीमीडिया सामग्री प्रदर्शित करने, छात्रों को इंटरैक्टिव पाठों में शामिल करने और तत्काल प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड का उपयोग करें।

शैक्षिक सॉफ्टवेयर और ऐपः

- ऐसे सॉफ्टवेयर और ऐप शामिल करें जो व्यक्तिगत सीखने के अनुभव प्रदान करते हैं, जैसे कि अनुकूली शिक्षण प्लेटफॉर्म जो छात्र के प्रदर्शन के आधार पर सामग्री को समायोजित करते हैं।

ऑनलाइन संसाधनः

- विविध सीखने के अनुभव प्रदान करने और विभिन्न सीखने की शैलियों को समायोजित करने के लिए वीडियो, सिमुलेशन और वर्चुअल लैब जैसे ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करें।

सहायक प्रौद्योगिकियाँः

- छात्रों की सहायता करने के लिए टेक्स्ट–टू–स्पीच सॉफ्टवेयर, स्क्रीन रीडर और अन्य सहायक तकनीकों का उपयोग करें।

कार्यान्वयन युक्तियाँ

- **निरंतर मूल्यांकनः** छात्रों की समझ का नियमित रूप से मूल्यांकन करें और आवश्यकतानुसार सामग्री को समायोजित करें।
- **प्रतिक्रिया और सहयोगः** छात्रों से प्रतिक्रिया प्राप्त करें और अनुकूलन को परिष्कृत करने के लिए अन्य शिक्षकों के साथ सहयोग करें।
- **पेशेवर विकासः** सामग्री अनुकूलन के लिए नई रणनीतियाँ सीखने के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास में संलग्न हों।

ये रणनीतियाँ सभी छात्रों के लिए अधिक समावेशी और प्रभावी शिक्षण वातावरण बनाने में मदद कर सकती हैं।

12.8 निर्देश का अनुकूलन (निर्देशात्मक व्यवस्था, व्यक्तिगत सहायता, विधियाँ, जुड़ाव के कई साधन)

- छात्रों की विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए निर्देश को अनुकूलित करने में कई रणनीतियाँ शामिल हैं, जिनमें शिक्षण व्यवस्था में बदलाव, व्यक्तिगत सहायता प्रदान करना, विभिन्न शिक्षण विधियों का उपयोग करना और जुड़ाव के कई साधनों को नियोजित करना शामिल है। यहाँ कुछ प्रमुख रणनीतियाँ दी गई हैं।

निर्देशात्मक व्यवस्था

लचीला समूहीकरणः

- **छोटे समूहः** छात्रों को उनकी जरूरतों और क्षमताओं के आधार पर छोटे समूहों में व्यवस्थित करें। इससे ज्यादा लक्षित निर्देश और सहकर्मी सहायता मिलती है।
- **सहकर्मी भागीदारः** सहयोगी शिक्षण और आपसी सहायता के लिए छात्रों को सहकर्मी भागीदार के

साथ जोड़ें।

भौतिक वातावरणः

- **बैठने की व्यवस्थाः** विकर्षणों को कम करने के लिए बैठने की व्यवस्था को समायोजित करें और सुनिश्चित करें कि सभी छात्र शिक्षक को स्पष्ट रूप से देख और सुन सकें।
- **शांत स्थानः** उन छात्रों के लिए शांत क्षेत्र प्रदान करें जिन्हें ध्यान केंद्रित करने के लिए कम उत्तेजक वातावरण की आवश्यकता होती है।

व्यक्तिगत सहायता

पैराप्रोफेशनलः

आवश्यकता वाले छात्रों को अतिरिक्त सहायता प्रदान करने के लिए शिक्षण सहायकों या पैराप्रोफेशनल का उपयोग करें।

- सुनिश्चित करें कि उन्हें विशिष्ट आवश्यकताओं, जैसे नोट लेने या व्यवहार प्रबंधन में सहायता करने के लिए प्रशिक्षित किया गया है।

सहकर्मी ट्यूटरिंगः

- सहकर्मी ट्यूटरिंग कार्यक्रम लागू करें जहाँ छात्र एक–दूसरे को सामग्री समझने में मदद करें।
- यह सीखने को सुदृढ़ करने और सामाजिक कौशल बनाने के लिए विशेष रूप से प्रभावी हो सकता है।

शिक्षण विधियाँ

विभेदित निर्देशः

- विभिन्न शिक्षण शैलियों और क्षमताओं को समायोजित करने के लिए शिक्षण विधियों को तैयार करें।
- विभिन्न प्रकार की अनुदेशात्मक रणनीतियों का उपयोग करें, जैसे कि व्यावहारिक गतिविधियाँ, चर्चाएँ और प्रौद्योगिकी एकीकरण।

स्कैफ्फोल्डिंगः

- छात्रों को धीरे–धीरे अपने सीखने में स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद करने के लिए रूपरेखा, सारांश और निर्देशित प्रश्न जैसे सहायक संरचनाएँ प्रदान करें. जैसे–जैसे छात्र अधिक कुशल होते जाते हैं, धीरे–धीरे सहायता कम करते जाएँ।

जुड़ाव के कई साधन

- शिक्षण के लिए सार्वभौमिक डिजाइन (UDL)।
- छात्रों को सामग्री से जुड़ने के लिए कई तरीके प्रदान करें, जैसे कि दृश्य, श्रवण और गतिज गतिविधियों के माध्यम से।
- प्रेरणा और जुड़ाव बढ़ाने के लिए सीखने की गतिविधियों में विकल्प प्रदान करें।

इंटरैक्टिव पाठः

- पाठों को अधिक आकर्षक बनाने के लिए इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड, मल्टीमीडिया प्रस्तुतियाँ और व्यावहारिक गतिविधियों का उपयोग करें।
- विविध शिक्षण अनुभव प्रदान करने के लिए शैक्षिक ऐप और ऑनलाइन संसाधनों जैसी तकनीक को शामिल करें।

सांस्कृतिक रूप से प्रासंगिक सामग्री

- सीखने को अधिक प्रासंगिक और आकर्षक बनाने के लिए छात्रों की विविध पृष्ठभूमि और अनुभवों को दर्शाने वाली सामग्री का उपयोग करें।

बोध प्रश्न :– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.3. यूडीएल की अवधारणा को समझायिए।

....
....
....

प्र0.4. यूडीएल की कार्यान्वयन कैसे कर सकते है?

....
....
....

प्र0.5. अनुकूलन को लागू करने के लिए ICT के उपयोग के बारे में चर्चा करे।

....
....

12.9 प्रदर्शन माप का उपयोग करके छात्रों का मूल्यांकन

प्रदर्शन मापकों का उपयोग करके छात्रों का मूल्यांकन करने में वास्तविक दुनिया या व्यावहारिक संदर्भों में ज्ञान और कौशल को लागू करने की उनकी क्षमता का मूल्यांकन करना शामिल है। प्रदर्शन मापकों का उपयोग करने के लिए कुछ प्रमुख पहलू और रणनीतियाँ इस प्रकार हैं।

प्रदर्शन मापक

प्रदर्शन मापक छात्रों की जानकारी को याद करने के बजाय कार्य करने या कौशल प्रदर्शित करने की क्षमता का आकलन करते हैं। ये आकलन अक्सर पारंपरिक परीक्षणों की तुलना में अधिक व्यापक और प्रामाणिक होते हैं।

प्रदर्शन मापकों के प्रकार

1. **प्रदर्शन कार्य:**

– **परियोजनाएँ:** छात्र ऐसी परियोजनाएँ पूरी करते हैं, जिनमें उन्हें उत्पाद बनाने या समस्या हल करने के लिए सीखी गई बातों को लागू करना होता है।

– **प्रस्तुतियाँ:** छात्र अपने निष्कर्षों को प्रस्तुत करते हैं या दर्शकों के सामने अपने कौशल का प्रदर्शन करते हैं।

2. **पोर्टफोलियो:**

– **कार्य का संग्रह:** छात्र समय के साथ अपने काम का एक पोर्टफोलियो संकलित करते हैं, जिसमें उनकी प्रगति और उपलब्धियाँ प्रदर्शित होती हैं।

– **प्रतिबिंब:** छात्र अपनी सीखने की प्रक्रिया और परिणामों पर प्रतिबिंब शामिल करते हैं।

3. **सिमुलेशन और रोल–प्लेइंग:**

– **वास्तविक दुनिया के परिदृश्य:** छात्र सिमुलेशन या रोल–प्लेइंग गतिविधियों में संलग्न होते हैं जो वास्तविक दुनिया की स्थितियों की नकल करते हैं।

– **समस्या–समाधानः** इन गतिविधियों के लिए छात्रों को समस्याओं को हल करने के लिए अपने ज्ञान और कौशल को लागू करने की आवश्यकता होती है।

प्रदर्शन माप के लाभ

– **प्रामाणिक मूल्यांकनः** छात्रों की क्षमताओं और समझ का अधिक सटीक प्रतिनिधित्व प्रदान करता है।

– **उच्च–क्रम सोचः** विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन जैसे उच्च–क्रम सोच कौशल के उपयोग को प्रोत्साहित करता है।

– **संलग्नताः** अक्सर छात्रों के लिए अधिक आकर्षक होती है क्योंकि इसमें सक्रिय भागीदारी और वास्तविक दुनिया की प्रासंगिकता शामिल होती है।

प्रदर्शन मापदंड लागू करना

1. **स्पष्ट मानदंडः**

– **रूब्रिक्सः** स्पष्ट रूब्रिक्स विकसित करें जो सफलता के लिए मानदंड की रूपरेखा तैयार करें और प्रदर्शन स्तरों का विस्तृत विवरण प्रदान करें।

– **अपेक्षाएँः** छात्रों को कार्य शुरू करने से पहले अपेक्षाओं के बारे में स्पष्ट रूप से बताएं।

2. **चल रही प्रतिक्रियाः**

– **रचनात्मक मूल्यांकनः** छात्रों को उनके काम को बेहतर बनाने और परिष्कृत करने में मदद करने के लिए कार्य के दौरान निरंतर प्रतिक्रिया प्रदान करें।

– **सहकर्मी और स्व–मूल्यांकनः** छात्रों को अपने स्वयं के काम और अपने साथियों के काम का मूल्यांकन करने के लिए प्रोत्साहित करें।

3. **पाठ्यचर्या के साथ एकीकरणः**

– **संरेखणः** सुनिश्चित करें कि प्रदर्शन कार्य पाठ्यचर्या लक्ष्यों और सीखने के उद्देश्यों के साथ संरेखित हैं।

– **विविधताः** विभिन्न कौशल और ज्ञान क्षेत्रों का आकलन करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रदर्शन मापदंड का उपयोग करें।

प्रदर्शन माप के उदाहरण

– **विज्ञान प्रयोगः** छात्र प्रयोगों को डिजाइन और संचालित करते हैं, फिर अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं।

– **लेखन पोर्टफोलियोः** छात्र अपने लेखन अधिन्यास का एक पोर्टफोलियो संकलित करते हैं, जिसमें ड्राफ्ट और अंतिम संस्करण शामिल हैं।

– **गणित परियोजनाएँः** छात्र वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए गणितीय अवधारणाओं को लागू करते हैं और उनके समाधान प्रस्तुत करते हैं।

प्रदर्शन माप का उपयोग करने से छात्र सीखने का अधिक समग्र दृष्टिकोण प्रदान किया जा सकता है और भविष्य की सफलता के लिए आवश्यक कौशल विकसित करने में मदद मिल स कती है।

बोध प्रश्न :– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.6. प्रदर्शन मापक क्या है?

....

....

....

प्र0.7. प्रदर्शन माप के लाभ बताइए।

....
....
....

प्र0.8. प्रदर्शन माप के उदाहरण लिखिए।

....
....

12.10 इकाई सारांश

- पाठ्यक्रम को अनुकूलित करना एक सतत गतिशील प्रक्रिया है जो विशेष आवश्यकताओं वाले छात्रों की सीखने की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अध्ययन के कार्यक्रम को संशोधित और अनुकूलित करती है।
- पाठ्यचर्या अनुकूलन समावेशी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो यह सुनिश्चित करता है कि सभी छात्रों को, उनकी योग्यताओं या पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, सार्थक सीखने के अनुभवों तक पहुँच प्राप्त हो। पाठ्यचर्या में आवश्यक समायोजन करके, शिक्षक ऐसा वातावरण बना सकते हैं जहाँ हर छात्र सफल हो सके और आगे बढ़ सके।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन शैक्षिक प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण घटक है, जो यह सुनिश्चित करता है कि पाठ्यचर्या छात्रों की सीखने की जरूरतों को प्रभावी ढंग से पूरा करता है। इसमें सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने और शैक्षिक लक्ष्यों के साथ संरेखण सुनिश्चित करने के लिए पाठ्यचर्या की सामग्री, वितरण और परिणामों का मूल्यांकन करना शामिल है।
- यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग (UDL) एक शैक्षिक ढाँचा है जिसे सभी लोगों के लिए शिक्षण और सीखने को बेहतर बनाने और अनुकूलित करने के लिए डिजाइन किया गया है, जो इस बात पर आधारित है कि मनुष्य कैसे सीखते हैं।
- प्रदर्शन मापक छात्रों की जानकारी को याद करने के बजाय कार्य करने या कौशल प्रदर्शित करने की क्षमता का आकलन करते हैं। ये आकलन अक्सर पारंपरिक परीक्षणों की तुलना में अधिक व्यापक और प्रामाणिक होते हैं।

12.11 बोध प्रश्नों का उत्तर

प्र0.1. पाठ्यचर्या अनुकूलन से आप क्या समझते है?

उ0.1. पाठ्यचर्या अनुकूलन समावेशी शिक्षा का एक महत्वपूर्ण पहलू है, जो यह सुनिश्चित करता है कि सभी छात्रों को, उनकी योग्यताओं या पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना, सार्थक सीखने के अनुभवों तक पहुँच प्राप्त हो। पाठ्यचर्या में आवश्यक समायोजन करके, शिक्षक ऐसा वातावरण बना सकते हैं जहाँ हर छात्र सफल हो सके और आगे बढ़ सके।

प्र0.2. मुख्यधारा में श्रवण बाधित बच्चों को पढ़ाने के लिए संचार रणनीतियों में किन–२ अनुकुलन की आवश्यकता होती है?

उ0.2. संचार रणनीतियाँ

1. बोलते समय छात्रों का सामना करेंः हमेशा छात्रों का सामना करें और आँख से संपर्क बनाए रखें ताकि वे होंठ पढ़ सकें और चेहरे के भाव देख सकें।

2. स्पष्ट भाषण का उपयोग करें: स्पष्ट और मध्यम गति से बोलें। बात करते समय अपना मुँह ढकने या मुँह मोड़ने से बचें।

3 दुभाषिया उपलब्ध हो। संचार को सुविधाजनक बनाने के लिए बुनियादी संकेतों को सीखें।

प्र0.3. यूडीएल की अवधारणा को समझायिए ।

उ0.3. यूनिवर्सल डिजाइन फॉर लर्निंग (UDL) एक शैक्षिक ढाँचा है जिसे सभी लोगों के लिए शिक्षण और सीखने को बेहतर बनाने और अनुकूलित करने के लिए डिजाइन किया गया है, जो इस बात पर आधारित है कि मनुष्य कैसे सीखते हैं।

प्र0.4. यूडीएल की कार्यान्वयन कैसे कर सकते है?

उ0.4. यूडीएल का कार्यान्वयन

सक्रिय योजनाः शुरू से ही सभी छात्रों की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए पाठ और गतिविधियाँ डिजाइन करें।

लचीले तरीके और सामग्रीः विभिन्न शिक्षण शैलियों और क्षमताओं को समायोजित करने के लिए विभिन्न शिक्षण विधियों और सामग्रियों का उपयोग करें।

निरंतर सुधारः छात्रों की प्रतिक्रिया और प्रदर्शन के आधार पर शिक्षण रणनीतियों और सामग्रियों का नियमित रूप से मूल्यांकन और समायोजन करें।

प्र0.5. अनुकूलन को लागू करने के लिए ICT के उपयोग के बारे में चर्चा करे।

उ0.5. आईसीटी का उपयोग

इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड:

मल्टीमीडिया सामग्री प्रदर्शित करने, छात्रों को इंटरैक्टिव पाठों में शामिल करने और तत्काल प्रतिक्रिया प्रदान करने के लिए इंटरैक्टिव व्हाइटबोर्ड का उपयोग करें।

शैक्षिक सॉफ्टवेयर और ऐप।

ऐसे सॉफ्टवेयर और ऐप शामिल करें जो व्यक्तिगत सीखने के अनुभव प्रदान करते हैं, जैसे कि अनुकूली शिक्षण प्लेटफॉर्म जो त्र के प्रदर्शन के आधार पर सामग्री को समायोजित करते हैं।

ऑनलाइन संसाधन।

विविध सीखने के अनुभव प्रदान करने और विभिन्न सीखने की शैलियों को समायोजित करने के लिए वीडियो, सिमुलेशन और वर्चुअल लैब जैसे ऑनलाइन संसाधनों का उपयोग करें।

प्र0.6. प्रदर्शन मापक क्या है?

उ0.6. प्रदर्शन मापक छात्रों की जानकारी को याद करने के बजाय कार्य करने या कौशल प्रदर्शित करने की क्षमता का आकलन करते हैं। ये आकलन अक्सर पारंपरिक परीक्षणों की तुलना में अधिक व्यापक और प्रामाणिक होते हैं।

प्र0.7. प्रदर्शन माप के लाभ बताइए।

उ0.7. प्रदर्शन माप के लाभ

– प्रामाणिक मूल्यांकनः छात्रों की क्षमताओं और समझ का अधिक सटीक प्रतिनिधित्व प्रदान करता है।

– उच्च–क्रम सोचः विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन जैसे उच्च–क्रम सोच कौशल के उपयोग को प्रोत्साहित करता है।

– संलग्नताः अक्सर छात्रों के लिए अधिक आकर्षक होती है क्योंकि इसमें सक्रिय भागीदारी और वास्तविक दुनिया की प्रासंगिकता शामिल होती है।

प्र0.8. प्रदर्शन माप के उदाहरण लिखिए ।

उ0.8. प्रदर्शन माप के उदाहरण

– विज्ञान प्रयोगः छात्र प्रयोगों को डिजाइन और संचालित करते हैं, फिर अपने निष्कर्ष प्रस्तुत करते हैं।

– लेखन पोर्टफोलियोः छात्र अपने लेखन अधिन्यास का एक पोर्टफोलियो संकलित करते हैं, जिसमें ड्राफ्ट और अंतिम संस्करण शामिल हैं।

– गणित परियोजनाएँः छात्र वास्तविक दुनिया की समस्याओं को हल करने के लिए गणितीय अवधारणाओं को लागू करते हैं और उनके समाधान प्रस्तुत करते हैं।

12.12 अभ्यास प्रश्न

प्र0.1. पाठ्यचर्या अनुकूलन की अवधारणा को समझायिए।

प्र0.2. यूडीएल के बारे में विस्तृत वर्णन कीजिए।

प्र0.3. प्रदर्शन मापक के विभिन्न प्रकारों का वर्णन कीजिए।

प्र0.4. यूडीएल के कार्यान्वयन को विस्तृत में वर्णन करे।

प्र0.5. प्रदर्शन माप का उपयोग करके छात्रों का मूल्यांकन कैसे करेंगे?

12.13 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

प्र0.1. अपने सहपाठियों के साथ श्रवण दिव्यांग बच्चो के अनुरूप अपनी कक्षा के लिए एक यूडीएल विकसित करने पर चर्चा करे।

12.15 कुछ उपयोगी पुस्तकें / संदर्भ सूची

- Dymond, S. K.,&Russell, D. L. (2004). Impact of grade and disability on the instructional context of inclusive classrooms. Education and Training in Developmental Disabilities, 39, 127–140.
- Education for All Handicapped Children Act, PL 94-142, U.S. Statutes at Large. 899. 777–796, Pub. L. No. 94-142 (1975 August 23, 1977).
- Individuals With Disabilities Education Improvement Act, H.R. 1350, Pub. L. No. P.L. 108–446 (2004).
- Lee, S. H., Amos, B. A., Gragadous, S., Lee, Y., Shogren, K. A., Theoharris, R.,&Wehmeyer, M. L. (2006). Curriculum augmentation and adaptation strategies to promote access to the general curriculum for students with intellectual and developmental disabilities. Education and Training in Developmental Disabilities, 41, 199–212.
- Lee, S. H., Wehmeyer, M. L., Soukup, J. H.,&Palmer, S. B. (2010). Impact of curriculum modifications on access to the general education curriculum for students with disabilities. Exceptional Children, 76, 213–233.
- Leyser, Y.,&Kirk, R. (2004). Evaluating Inclusion: An examination of parent views and factors influencing their perspectives. International Journal of Disability, Development and Education, 51, 271–285.

इकाई–13 पाठ्यचर्या मूल्यांकनः अवधारणा और आवश्यकता (Curricular Evaluation: Concept and Need)

इकाई संरचना

13.1 परिचय

13.2 उद्देश्य

13.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन

13.4 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की परिभाषाएँ

13.4.1 सीखने के परिणामों का मूल्यांकन (ईएलओ)

13.4.2 सीखने की प्रणालियों का मूल्यांकन (ईएलएस)

13.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन से जुड़े कारक

13.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता

13.7 पाठ्यचर्या मूल्यांकन का उद्देश्य (Purpose)

13.8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लक्ष्य (objectives)

13.9 इकाई सारांश

13.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

13.11 अभ्यास कार्य

13.12 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

13.13 कुछ उपयोगी पुस्तके

13.1 परिचय

पाठ्यचर्या मूल्यांकन शैक्षिक लक्ष्यों और उस समाज की जरूरतों को पूरा करने में पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन करने की प्रक्रिया है जिसमें इसे लागू किया जाता है। इसमें जानकारी एकत्र करना, निर्णय लेना और मूल्यांकन परिणामों के आधार पर निर्णय लेना शामिल है। मूल्यांकन मॉडल, जैसे हैमंड मॉडल, का उपयोग पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करने और पाठ्यक्रम विकास अध्ययन के लिए एक व्यापक रूपरेखा प्रदान करने के लिए किया जा सकता है। कक्षा शिक्षण की गुणवत्ता का मूल्यांकन करने और पाठ्यक्रम सुधार की प्रभावशीलता का परीक्षण करने के लिए पाठ्यक्रम मूल्यांकन महत्वपूर्ण है। इसमें विभिन्न स्तरों पर मूल्यांकन प्रणाली स्थापित करना शामिल है, जैसे सूक्ष्म मूल्यांकन सूचकांक प्रणाली, व्यापक मूल्यांकन सूचकांक प्रणाली और मैक्रो मूल्यांकन सूचकांक प्रणाली। प्रधानाध्यापक पाठ्यक्रम मूल्यांकन में अनुदेशक नेताओं के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन प्रशासनिक कार्य उनकी प्रभावशीलता में बाधा बन सकते हैं। सफल शिक्षण नेतृत्व के लिए अकादमिक प्रमुखों और शिक्षकों के लिए सहयोगात्मक पाठ्यक्रम मूल्यांकन और व्यावसायिक विकास महत्वपूर्ण हैं। पाठ्यक्रम मूल्यांकन मॉडल यह आकलन करने के लिए विकसित किए गए हैं कि कोई कार्यक्रम अपने परिभाषित उद्देश्यों को पूरा करता है या नहीं। एक उपयुक्त मूल्यांकन मॉडल का चुनाव संदर्भ, उद्देश्य और मूल्यांकन के अपेक्षित परिणाम पर निर्भर करता है।

13.2 उद्देश्य

- अपने सहपाठियों के साथ श्रवण दिव्यांग बच्चो के अनुरूप पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता पर चर्चा करे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन का अर्थ समझ पाएंगे।

- पाठ्यचर्या मूल्यांकन को परिभाषासित कर सकेंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन से जुड़े कारक के बारे में जान सकेंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता को समझ सकेंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन का उद्देश्य (Purpose) बता पाएंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लक्ष्य (objectives) को समझ पाएंगे।

13.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन (Curriculam evaluation)

पाठ्यचर्या मूल्यांकन उन कार्यक्रमों, प्रक्रियाओं और पाठ्यचर्या उत्पादों का मूल्यांकन है जो संसाधन हैं, बल्कि लोग नहीं (ओलिवा, 2009)। पाठ्यक्रम निर्देश प्रक्रिया के मूल्यांकन के दो भाग हैं। पहला छात्रों का मूल्यांकन है (अक्सर मानकों को पूरा करने में) जो निर्देश से पहले, उसके दौरान और बाद में होता है। सवाल यह है कि क्या उद्देश्य पूरे हो गये? शिक्षक यह देखने के लिए छात्र मूल्यांकन डेटा का विश्लेषण करते हैं कि कितने छात्रों ने उद्देश्यों को पूरा किया है या नहीं, और प्रदर्शन किस स्तर पर है। दूसरा मार्गदर्शकों और संसाधनों और प्रशिक्षक या शिक्षक की प्रभावशीलता का मूल्यांकन है। यह अक्सर समूहों में और एक निश्चित अवधि में किया जाता है।

पाठ्यचर्या मूल्यांकन एक शैक्षिक पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता, गुणवत्ता और प्रभाव को निर्धारित करने के लिए जानकारी एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने की व्यवस्थित प्रक्रिया है। इसमें किसी पाठ्यक्रम के सुधार या संशोधन के बारे में सूचित निर्णय लेने के लिए उसके लक्ष्यों, सामग्री, शिक्षण विधियों और परिणामों का आकलन करना शामिल है। पाठ्यक्रम मूल्यांकन के प्रमुख पहलुओं में शामिल हैं।

- पाठ्यक्रम के उद्देश्यों, सामग्री और मूल्यांकन के बीच संरेखण का मूल्यांकन करना।
- छात्रों के सीखने, उपलब्धि और कौशल विकास को मापना।
- अनुदेशात्मक रणनीतियों और सामग्रियों की प्रभावशीलता का विश्लेषण करना।
- पाठ्यक्रम के भीतर ताकत, कमजोरियों और वृद्धि के क्षेत्रों की पहचान करना।
- लक्षित दर्शकों के लिए पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता और उपयुक्तता का निर्धारण करना।
- विद्यार्थियों के सीखने और विकास पर पाठ्यक्रम के समग्र प्रभाव का आकलन करना।

पाठ्यक्रम मूल्यांकन शिक्षकों और प्रशासकों को शैक्षिक कार्यक्रम की गुणवत्ता और प्रभावशीलता को बढ़ाने के लिए साक्ष्य–आधारित निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। यह यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि पाठ्यक्रम अद्यतन रहे, सीखने के मानकों के अनुरूप रहे और छात्रों की बढ़ती जरूरतों के प्रति उत्तरदायी रहे।

13.4 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की परिभाषाएँ (Definitions of curriculum evaluation)

पाठ्यचर्या मूल्यांकन, दिए गए क्षेत्रों में प्रदर्शन का विश्लेषण करके यह स्थापित करने की एक प्रक्रिया है कि किसी कार्यक्रम के उद्देश्यों को किस हद तक प्राप्त किया गया है। इस प्रकार, मूल्यांकन निर्णय लेने के उद्देश्य से एक निर्णयात्मक प्रक्रिया है। **डॉल** (1992) भी मूल्यांकन को स्पष्ट रूप से परिभाषित लक्ष्यों को पूरा करने के लिए शैक्षिक सामग्री और प्रक्रिया के उपयोग के प्रभावों की जांच करने के व्यापक और निरंतर प्रयास के रूप में परिभाषित करता है।

(शिउंडु और ओमुलांडो, 1992) फिर भी एक अन्य परिभाषा में कहा गया है कि ''मूल्यांकन पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न चरणों में निर्णय लेने की सुविधा के लिए डेटा के संग्रह और प्रावधान की एक प्रक्रिया है''।

(ओलुच, 2006) मूल्यांकन किसी कार्यक्रम के मूल्य या मूल्य को निर्धारित करने के लिए उस पर डेटा एकत्र करने की प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य यह तय करना है कि कार्यक्रम को अपनाया जाए, अस्वीकार किया जाए या

संशोधित किया जाए। विभिन्न पक्षों के प्रश्नों और प्रसंगो का उत्तर देने के लिए कार्यक्रमों का मूल्यांकन किया जाता है। जन–साधारण जानना चाहती है कि क्या लागू किए गए पाठ्यक्रम ने अपने लक्ष्य और उद्देश्य हासिल कर लिए हैंय शिक्षक जानना चाहते हैं कि वे कक्षा में जो कर रहे हैं वह प्रभावी है या नहीं और डेवलपर या योजनाकार जानना चाहता है कि पाठ्यक्रम उत्पाद को कैसे बेहतर बनाया जाए।

मैकनील (1977) का कहना है कि ''पाठ्यचर्या मूल्यांकन दो प्रश्नों पर प्रकाश डालने का एक प्रयास हैः क्या योजनाबद्ध सीखने के अवसर, कार्यक्रम, पाठ्यक्रम और गतिविधियां विकसित और व्यवस्थित रूप से वांछित परिणाम देती हैं? पाठ्यक्रम की पेशकशों को सर्वोत्तम तरीके से कैसे बेहतर बनाया जा सकता है"?

ऑर्नस्टीन और हंकिन्स (1998) पाठ्यक्रम मूल्यांकन को ''एक प्रक्रिया या प्रक्रियाओं का समूह के रूप में परिभाषित करते हैं जो लोग डेटा इकट्ठा करने के लिए करते हैं जो उन्हें यह तय करने में सक्षम करेगा कि क्या कुछ स्वीकार करना, बदलना या खत्म करना है–सामान्य रूप से पाठ्यक्रम या एक शैक्षिक पाठ्यपुस्तक विशेष"।

वर्थेन और सैंडर्स (1987) पाठ्यक्रम मूल्यांकन को ''किसी कार्यक्रम, उत्पाद, परियोजना, प्रक्रिया, उद्देश्य या पाठ्यक्रम की गुणवत्ता, प्रभावशीलता या मूल्य का औपचारिक निर्धारण'' के रूप में परिभाषित करते हैं ।

गे (1985) का तर्क है कि पाठ्यक्रम मूल्यांकन का उद्देश्य इसकी कमजोरियों और शक्तियों के साथ–साथ कार्यान्वयन में आने वाली समस्याओं की पहचान करना है। पाठ्यक्रम विकास प्रक्रिया में सुधार करना। पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता और आवंटित वित्त पर रिटर्न का निर्धारण करना।

ओलिवा (1988) ने पाठ्यक्रम मूल्यांकन को निर्णय विकल्पों का मूल्यांकन करने के लिए उपयोगी जानकारी को चित्रित करने, प्राप्त करने और प्रदान करने की प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया है। मूल्यांकन परिणामों के आधार पर विचार करने के लिए प्राथमिक निर्णय विकल्प हैंः पाठ्यक्रम को यथावत बनाए रखनाय पाठ्यक्रम को संशोधित करनाय या पाठ्यक्रम को खत्म करना।

13.4.1 सीखने के परिणामों का मूल्यांकन (ईएलओ) Evaluation of Learning Outcomes (ELO)

- ईएलओ विशिष्ट अनुदेशात्मक उद्देश्यों (पहले से पहचाने और परिभाषित) को किस सीमा तक प्राप्त किया गया है, यह निर्धारित करने की व्यवस्थित प्रक्रिया को संदर्भित करता है।
- इसमें यह आकलन करना शामिल है कि क्या छात्रों ने इच्छित सीखने के परिणामों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया है।
- एलओ शिक्षकों की मदद कर सकता है।
- छात्रों के सीखने का आकलन करें।
- शिक्षकों के रूप में उनकी प्रभावशीलता का मूल्यांकन करें।
- उन क्षेत्रों की पहचान करें जिन्हें फिर से पढ़ाने की आवश्यकता है।
- चयनित पाठ्यक्रम की उपयुक्तता का आकलन करें।
- निर्देश के कार्यक्रम के भीतर छात्रों की उचित नियुक्ति सुनिश्चित करें।

13-4-2 (ईएलएस) सीखने की प्रणालियों का मूल्यांकन Evaluation of Learning Systems (ELS)

- ईएलएस अनुदेशात्मक विधियों, सामग्रियों और पाठ्यक्रम सहित संपूर्ण सीखने की प्रणालियों की प्रभावशीलता का आकलन करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
- यह छात्रों के सीखने पर शैक्षिक प्रणाली के समग्र प्रभाव पर विचार करता है।
- ELS शिक्षण दृष्टिकोण, पाठ्यक्रम डिजाइन और शैक्षिक नीतियों की सफलता के बारे में सवालों के

जवाब देने में मदद करता है।

संक्षेप में, ELO व्यक्तिगत सीखने के परिणामों का आकलन करता है, जबकि ELS शैक्षिक प्रणालियों की व्यापक प्रभावशीलता का मूल्यांकन करता है। शिक्षा में निरंतर सुधार के लिए दोनों आवश्यक हैं।

बोध प्रश्न:– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.1 पाठ्यचर्या मूल्यांकन से आप क्या समझते है?

....
....
....

प्र0.2 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की परिभाषा लिखिए।

....

.प्र0.3 ELO से आप क्या समझते है?

....

प्र0.4 ELS से आप क्या समझते है?

....
....

13.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन से जुड़े कारक

पाठ्यक्रम मूल्यांकन शैक्षिक कार्यक्रमों की प्रभावशीलता का आकलन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस प्रक्रिया से जुड़े कुछ प्रमुख कारक।

- **मानकों के साथ संरेखण** (Alignment with Standards): मूल्यांकनकर्ता इस बात पर विचार करते हैं कि पाठ्यक्रम शैक्षिक मानकों और सीखने के उद्देश्यों के साथ कितनी अच्छी तरह से संरेखित है। एक पाठ्यक्रम जो स्थापित मानकों के साथ निकटता से संरेखित होता है, उसके प्रभावी होने की अधिक संभावना होती है।
- **उद्दश्यों के साथ संगति** (Consistency with Objectives): पाठ्यक्रम अपने इच्छित उद्देश्यों को किस हद तक पूरा करता है, यह एक और महत्वपूर्ण कारक है। मूल्यांकनकर्ता यह आकलन करते हैं कि पाठ्यक्रम वांछित सीखने के परिणामों को सफलतापूर्वक संबोधित करता है या नहीं।
- **व्यापकता** (Comprehensiveness): एक व्यापक पाठ्यक्रम में आवश्यक विषय, कौशल और ज्ञान शामिल होते हैं। मूल्यांकनकर्ता यह जांचते हैं कि क्या पाठ्यक्रम सभी आवश्यक सामग्री क्षेत्रों को पर्याप्त रूप से कवर करता है।
- **प्रासंगिकता** (Relevance): छात्रों की जरूरतों, रुचियों और वास्तविक दुनिया के संदर्भों के लिए पाठ्यक्रम की प्रासंगिकता आवश्यक है। एक प्रभावी पाठ्यक्रम को शिक्षार्थियों के साथ प्रतिध्वनित होना चाहिए और उनके अनुभवों से जुड़ना चाहिए।
- **निरंतरता** (Continuity): मूल्यांकनकर्ता इस बात पर विचार करते हैं कि पाठ्यक्रम पिछले शिक्षण पर कितना अच्छा आधारित है। एक सुसंगत और निरंतर पाठ्यक्रम ग्रेड स्तरों और विषयों के बीच सहज संक्रमण सुनिश्चित करता है।

याद रखें कि पाठ्यक्रम मूल्यांकन किसी कार्यक्रम को जारी रखने, संशोधित करने या बंद करने के बारे में निर्णय लेने में मदद करता है। यह शिक्षण और सीखने के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए एक मूल्यवान प्रक्रिया है।

13.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता (Need of curriculum evaluation)

यदि कार्यक्रम की सफलता का मूल्यांकन किया जाना है तो मूल्यांकन आवश्यक है। कार्यक्रम के कई पहलू, जैसे प्रत्येक घटक की उपयुक्तता, अनुक्रमण, इनपुटप्रोसेस–आउटपुट को आंका जाना चाहिए। मूल्यांकन कई उद्देश्यों की पूर्ति करता है। इससे शिक्षकों के लिए अपने शिक्षण की गुणवत्ता का मूल्यांकन करना बहुत आसान हो जाता है। स्व–मूल्यांकन एक शिक्षक को पाठ्यक्रम की सामग्री को व्यवस्थित करने और छात्रों की जरूरतों और क्षमताओं के अनुरूप सामग्री को समायोजित करने में अपनी स्वयं की दक्षता का आकलन करने में मदद करता है।

पाठ्यक्रम मूल्यांकन की प्रक्रिया और परिणामों में कई पक्ष या हित धारक रुचि रखते हैं।

- माता–पिता रुचि रखते हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि उनके बच्चों को रचनात्मक, प्रभावी शिक्षा मिले।
- शिक्षक रुचि रखते हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि वे कक्षा में जो पढ़ा रहे हैं वह उनके आदर्शों को पूरा करने और परिणाम प्राप्त करने में प्रभावी रूप से मदद करे ताकि वे माता–पिता और प्रशासन को बता सकें कि क्या अपेक्षित है।
- आम जनता रुचि रखती है क्योंकि उन्हें यह सुनिश्चित करने की आवश्यकता है कि उनके स्थानीय स्कूल अपना काम कर रहे हैं और बच्चों के लिए सर्वोत्तम कार्यक्रम के लिए ठोस और प्रभावी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं।
- धार्मिक संगठन रुचि रखते हैं क्योंकि उन्हें अपनी पाठ्यपुस्तकों के निर्णयों पर प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है।
- पाठ्यक्रम प्रकाशक रुचि रखते हैं क्योंकि वे पाठ्यक्रम मूल्यांकन से डेटा और कल्पना का उपयोग परिवर्तन करने और उपलब्ध सामग्रियों को संग्रहीत करने के लिए कर सकते हैं

13.7 पाठ्यचर्या मूल्यांकन का उद्देश्य (Purpose)

पाठ्यचर्या मूल्यांकन का उद्देश्य बहुआयामी है और शिक्षा में कई महत्वपूर्ण कार्य करता है:

- **गुणवत्ता आश्वासन** (Quality Assurance): पाठ्यक्रम मूल्यांकन सुनिश्चित करता है कि शैक्षिक कार्यक्रम उच्च मानकों को बनाए रखें। हम क्या पढ़ाते हैं और कैसे पढ़ाते हैं, इसका आकलन करके हम सुधार के क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं और शिक्षा की समग्र गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं।
- **प्रासंगिकता और अनुकूलनशीलता** (Relevance and Adaptability): जैसे–जैसे समय बदलता है, वैसे–वैसे शिक्षार्थियों की जरूरतें भी बदलती हैं। मूल्यांकन हमें यह निर्धारित करने में मदद करता है कि पाठ्यक्रम प्रासंगिक बना हुआ है या नहीं और बदलते संदर्भों के अनुकूल है या नहीं। यह सुनिश्चित करता है कि छात्र हमेशा बदलती दुनिया में सफलता के लिए तैयार हैं।
- **जवाबदेही** (Accountability): शैक्षणिक संस्थान विभिन्न हितधारकों–छात्रों, अभिभावकों, नीति निर्माताओं और जनता के प्रति जवाबदेह हैं। पाठ्यक्रम मूल्यांकन परिणामों का प्रमाण प्रदान करता है, संस्थानों को उनकी प्रभावशीलता प्रदर्शित करने और संसाधन आवंटन को उचित ठहराने में मदद करता है।
- **निर्णय लेना** (Decision&Making): मूल्यांकन पाठ्यक्रम को अपनाने, संशोधित करने या बंद करने के बारे में निर्णय लेने में मदद करता है। यह शैक्षिक नेताओं को डेटा और साक्ष्य के आधार पर सूचित विकल्प बनाने में मदद करता है।
- **उद्दश्यों की पूर्ति** (Meeting Objectives): यह आकलन करके कि क्या पाठ्यक्रम इच्छित परिणाम देता है और अपने उद्देश्यों को पूरा करता है, मूल्यांकन शैक्षिक लक्ष्यों के साथ संरेखण सुनिश्चित करता है।

संक्षेप में, निरंतर सुधार, प्रासंगिकता और प्रभावी शिक्षण के लिए पाठ्यक्रम मूल्यांकन आवश्यक है।

13.8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लक्ष्य (Objectives)

पाठ्यक्रम मूल्यांकन के उद्देश्य निम्नलिखित हैं।

- परिणामों का निर्धारण (Determine Outcomes): पाठ्यक्रम मूल्यांकन किसी कार्यक्रम के परिणामों को निर्धारित करने में मदद करता है। छात्र सीखने और प्रदर्शन का आकलन करके, शिक्षक पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन कर सकते हैं।
- निर्णय लेना (Decision Making): यह किसी कार्यक्रम को स्वीकार या अस्वीकार करने के बारे में निर्णय लेने में सहायता करता है। मूल्यांकन पाठ्यक्रम को अपनाने, संशोधित करने या बंद करने के बारे में विकल्पों को सूचित करने के लिए साक्ष्य प्रदान करता है।
- सामग्री का संशोधन (Revision of Content): पाठ्यक्रम का मूल्यांकन संशोधन की आवश्यकता का पता लगाने में मदद करता है। यदि कुछ सामग्री या शिक्षण विधियाँ अप्रभावी हैं, तो पाठ्यक्रम को बेहतर बनाने के लिए समायोजन किए जा सकते हैं।
- निरंतर सुधार (Continuous Improvement): पाठ्यक्रम मूल्यांकन शैक्षिक सामग्री के निरंतर सुधार में योगदान देता है। सुधार के क्षेत्रों की पहचान करके, शिक्षक शिक्षण विधियों और निर्देशात्मक तकनीकों को परिष्कृत कर सकते हैं।
- संक्षेप में, पाठ्यक्रम मूल्यांकन शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाने और वांछित परिणामों के साथ संरेखण सुनिश्चित करने के लिए एक मूल्यवान उपकरण के रूप में कार्य करता है।

बोध प्रश्नः— नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के दो उद्देश्य लिखिए।

....

....

....

प्र0.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के दो लक्ष्य लिखिए।

....

....

13.9 इकाई सारांश

- पाठ्यचर्या मूल्यांकन एक शैक्षिक पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता, गुणवत्ता और प्रभाव को निर्धारित करने के लिए जानकारी एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने की व्यवस्थित प्रक्रिया है।
- ईएलओ विशिष्ट अनुदेशात्मक उद्देश्यों (पहले से पहचाने और परिभाषित) को किस सीमा तक प्राप्त किया गया है, यह निर्धारित करने की व्यवस्थित प्रक्रिया को संदर्भित करता है।
- ईएलएस अनुदेशात्मक विधियों, सामग्रियों और पाठ्यक्रम सहित संपूर्ण सीखने की प्रणालियों की प्रभावशीलता का आकलन करने पर ध्यान केंद्रित करता है।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन से जुड़े कारक—मानकों के साथ संरेखण, उद्देश्यों के साथ संगति, व्यापकता, प्रासंगिकता, निरंतरता।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन का उद्देश्य— गुणवत्ता आश्वासन, प्रासंगिकता और अनुकूलनशीलता, जवाबदेही, निर्णय लेना, उद्देश्यों की पूर्ति।

- पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लक्ष्य– परिणामों का निर्धारण, निर्णय लेना, सामग्री का संशोधन, निरंतर सुधार।

13.10 बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र0.1 पाठ्यचर्या मूल्यांकन से आप क्या समझते है?

उ0.1 पाठ्यचर्या मूल्यांकन एक शैक्षिक पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता, गुणवत्ता और प्रभाव को निर्धारित करने के लिए जानकारी एकत्र करने और उसका विश्लेषण करने की व्यवस्थित प्रक्रिया है।

प्र0.2 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की परिभाषा लिखिए।

उ0.2 (शिउंडु और ओमुलांडो, 1992) फिर भी एक अन्य परिभाषा में कहा गया है कि ''मूल्यांकन पाठ्यक्रम विकास के विभिन्न चरणों में निर्णय लेने की सुविधा के लिए डेटा के संग्रह और प्रावधान की एक प्रक्रिया है।''

प्र0.3 ELO से आप क्या समझते है?

उ0.3 ईएलओ विशिष्ट अनुदेशात्मक उद्देश्यों (पहले से पहचाने और परिभाषित) को किस सीमा तक प्राप्त किया गया है, यह निर्धारित करने की व्यवस्थित प्रक्रिया को संदर्भित करता है।

प्र0.4 ELS से आप क्या समझते है?

उ0.4 ईएलएस अनुदेशात्मक विधियों, सामग्रियों और पाठ्यक्रम सहित संपूर्ण सीखने की प्रणालियों की प्रभावशीलता का आकलन करने पर ध्यान केंद्रित करता है।

प्र0.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के दो उद्देश्य लिखिए।

उ0.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन का उद्देश्य

- गुणवत्ता आश्वासन (Quality Assurance): पाठ्यक्रम मूल्यांकन सुनिश्चित करता है कि शैक्षिक कार्यक्रम उच्च मानकों को बनाए रखें। हम क्या पढ़ाते हैं और कैसे पढ़ाते हैं, इसका आकलन करके हम सुधार के क्षेत्रों की पहचान कर सकते हैं और शिक्षा की समग्र गुणवत्ता को बढ़ा सकते हैं।
- प्रासंगिकता और अनुकूलनशीलता (Relevance and Adaptability): जैसे–जैसे समय बदलता है, वैसे–वैसे शिक्षार्थियों की जरूरतें भी बदलती हैं। मूल्यांकन हमें यह निर्धारित करने में मदद करता है कि पाठ्यक्रम प्रासंगिक बना हुआ है या नहीं और बदलते संदर्भों के अनुकूल है या नहीं। यह सुनिश्चित करता है कि छात्र हमेशा बदलती दुनिया में सफलता के लिए तैयार हैं।

प्र0.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के दो लक्ष्य लिखिए।

उ0.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के लक्ष्य

- परिणामों का निर्धारण (Determine Outcomes): पाठ्यक्रम मूल्यांकन किसी कार्यक्रम के परिणामों को निर्धारित करने में मदद करता है। छात्र सीखने और प्रदर्शन का आकलन करके, शिक्षक पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन कर सकते हैं।
- निरंतर सुधार (Continuous Improvement): पाठ्यक्रम मूल्यांकन शैक्षिक सामग्री के निरंतर सुधार में योगदान देता है। सुधार के क्षेत्रों की पहचान करके, शिक्षक शिक्षण विधियों और निर्देशात्मक तकनीकों को परिष्कृत कर सकते हैं।

13.11 अभ्यास कार्य

प्र0.1 पाठ्यचर्या मूल्यांकन से जुड़े कारको का वर्णन कीजिए।

प्र0.2 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता क्यों होती है?

प्र0.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उद्देश्यों एवं लक्ष्यों का विस्तृत वर्णन कीजिए ।

13.12 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

प्र0.1 अपने सहपाठियों के साथ श्रवण दिव्यांग बच्चो के अनुरूप पाठ्यचर्या मूल्यांकन की आवश्यकता पर चर्चा करे।

13.13 कुछ उपयोगी पुस्तकें / संदर्भ सूची

- Chapter 5: Evaluating and Measuring Learning - SAGE Publications Inc. https://www.sagepub.com/sites/default/files/upm-binaries/11693_G05.pdf.
- Curriculum evaluation - 2 Evaluation of Learning Outcomes (ELO) 1.2 .... https://www.studocu.com/in/document/lakshmibai-national-institute-of-physical-education/computer-science-50/curriculum-evaluation/57007884.
- Evaluating the Core Curriculum: Embedded Learning Outcomes. https://www.purdue.edu/provost/documents/students-curriculum-outcomes.pdf.
- AssessingLearningOutcomeSpringerLink. https://link.springer.com/chapter/10.1007/978-3-030-36119-8_25.
- Factors That Influence Curriculum and Curriculum Evaluation .... https://oer.pressbooks.pub/curriculumessentials/chapter/chapter-factors-that-influence-curriculum-and-curriculum-evaluation/.
- UNIT 5: CURRICULAR EVALUATION - Special Education Notes. https://www.specialeducationnotes.co.in/HIC13UNIT5.htm.
- Framework for Evaluating Curricular Effectiveness | On Evaluating .... https://nap.nationalacademies.org/read/11025/chapter/5.
- CHAPTER 12 Curriculum Evaluation - SAGE Publications Inc. https://www.sagepub.com/sites/default/files/upm-binaries/44333_12.pdf.
- Vitalizing the evaluation of curricular implementation:aSpringer. https://link.springer.com/article/10.1007/s10459-021-10083-6.

  en.wikipedia.org. https://en.wikipedia.org/wiki/Curriculum.
- Objectives of curriculum evaluation | PPT - SlideShare. https://www.slideshare.net/slideshow/objectives-of-curriculum-evaluation/29679555.

इकाई–14 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के तरीके, उपकरण और क्षेत्र (Methods, Tools and Areas of Curricular Evaluation)

इकाई संरचना

14.1 परिचय

14.2 उद्देश्य

14.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार

14.4 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण

14.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के दृष्टिकोण

14.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के मॉडल

14.7 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उपकरण

14.8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की तकनीकें

14.9 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के क्षेत्र

14.10 इकाई सारांश

14.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

14.12 अभ्यास कार्य

14.13 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

14.14 कुछ उपयोगी पुस्तकें

14.1 परिचय

संपूर्ण पाठ्यक्रम का नियमित मूल्यांकन यह सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक है कि लिखित और वितरित पाठ्यक्रम छात्रों पर वांछित प्रभाव डाल रहा है। पाठ्यक्रम मूल्यांकन एक व्यापक मूल्यांकन प्रणाली से एकत्रित जानकारी पर आधारित होना चाहिए जो जवाबदेही के लिए डिजाइन किया गया है और इस अवधारणा के लिए प्रतिबद्ध है कि सभी छात्र उच्च स्तर पर हासिल करेंगे, मानक–आधारित है, और ऐसे निर्णयों को सूचित करता है जो शिक्षण और छात्र सीखने में महत्वपूर्ण और स्थायी सुधार को प्रभावित करते हैं।

किसी भी विशिष्ट पाठ्यक्रम का मूल्यांकन उससे संबंधित सभी शैक्षिक परिणामों से संबंधित होता है, जबकि मापन विशेष रूप से उन विशेषताओं से संबंधित होता है जिन्हें आसानी से मापा जा सकता है। मूल्यांकन में, ऐसी तकनीकों को विकसित करना पड़ सकता है जो शिक्षकों को किसी भी पाठ्यक्रम की खूबियों और कमियों का विश्लेषण और आकलन करने में मदद कर सकती हैं। इसके अलावा, पाठ्यक्रम को सफलतापूर्वक लागू करने में शामिल किसी भी समस्या की पहचान की जानी चाहिए और उसके शैक्षिक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए उसका समाधान किया जाना चाहिए। पाठ्यक्रम मूल्यांकन की प्रक्रियाओं में कुछ चरण शामिल होते हैं, जिन्हें समय–समय पर उत्पन्न होने वाली आवश्यकताओं के अनुसार समायोजित करने के लिए पर्याप्त लचीला होना चाहिए। ये प्रक्रियाएँ मूल्यांकन करने वालों की सोच को निर्देशित करने में उपयोगी होती हैं। चरण, जिन्हें शामिल कार्यों के प्रकारों के सावधानीपूर्वक और गहन विश्लेषण द्वारा विकसित किया जाना चाहिए। जबकि पाठ्यक्रम मूल्यांकन की रणनीति को विचाराधीन विशेष समस्याओं और स्थितियों के अनुसार समायोजित किया जाना चाहिए, इस इकाई में वर्णित कुछ मॉडल इस प्रक्रिया में बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। पाठ्यक्रम मूल्यांकन न केवल शैक्षिक प्रभावशीलता को आंकने का एक साधन होना चाहिए, बल्कि यदि इसे आलोचनात्मक और बुद्धिमानी से लागू किया जाए, तो इससे उपयोगी निर्णय लिए जा सकते हैं जो शैक्षिक प्रक्रिया को बेहतर बनाने के लिए एक शक्तिशाली बल के रूप में भी काम कर सकते हैं।

14.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त अधिगमकर्ता / विद्यार्थी

- पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न प्रकारों के बारे में जान सकेंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न चरणों के बारे में समझ सकेंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन के दृष्टिकोणों को जान पाएंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न मॉडलो की व्यख्या कर पाएंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उपकरण के बारे में जान पाएंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन की तकनीकों को समझ पाएंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन के क्षेत्र को जान पाएंगे।

14.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकार (Types of curricular evaluation)

मूल्यांकन के तीन प्रकार हैं जो किसी शैक्षणिक संस्थान में छात्रों और शिक्षकों के लिए प्रासंगिक हैं।

- निर्माणात्मक / रचनात्मक मूल्यांकन
- योगात्मक मूल्यांकन
- नैदानिक मूल्यांकन

1. **निर्माणात्मक / रचनात्मक मूल्यांकन:** यह पाठ्यक्रम विकास के दौरान होता है। यह डेवलपर्स को पाठ्यक्रम बनाते समय खामियों की पहचान करने और उन्हें ठीक करने की अनुमति देता है।
2. **योगात्मक मूल्यांकन:** योगात्मक मूल्यांकन में, पाठ्यक्रम के अंतिम प्रभावों का मूल्यांकन उसके घोषित उद्देश्यों के आधार पर किया जाता है। यह पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का समग्र निर्णय प्रदान करता है।
3. **निदानात्मक मूल्यांकन:** निदानात्मक मूल्यांकन पाठ्यक्रम के भीतर विशिष्ट शक्तियों और कमजोरियों की पहचान पर केंद्रित है। यह शिक्षकों को सुधार के क्षेत्रों को इंगित करने में मदद करता है।

14.4 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण

पाठ्यक्रम मूल्यांकन में कई चरण शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक शैक्षिक कार्यक्रमों के व्यापक मूल्यांकन में योगदान देता है। आइए इन चरणों का पता लगाएं।

1. **प्रारंभिक फोकस** (Initial Focus): यह चरण मूल्यांकन के लिए आधार तैयार करता है। इसमें मूल्यांकन प्रक्रिया के उद्देश्य, दायरे और उद्देश्यों को परिभाषित करना शामिल है।
2. **डिजाइन** (डिजाइन): यहाँ, हम मूल्यांकन के लिए खाका तैयार करते हैं। डेटा संग्रह विधियों, गुणवत्ता मूल्यांकन के मानदंडों और समग्र मूल्यांकन रूपरेखा के बारे में निर्णय लिए जाते हैं।
3. **संग्रह** (Collection): पाठ्यक्रम से संबंधित डेटा एकत्र किया जाता है। इसमें छात्र प्रदर्शन, शिक्षण विधियों और अन्य प्रासंगिक कारकों के बारे में जानकारी शामिल है।
4. **संगठन** (Organization): एकत्र किए गए डेटा को विश्लेषण के लिए व्यवस्थित और संरचित किया जाता है। यह चरण सुनिश्चित करता है कि प्रासंगिक जानकारी सुलभ और व्याख्या योग्य है।

5. **विश्लेषण** (Analysis): विशेषज्ञ स्थापित मानदंडों के आधार पर परिणामों की व्याख्या करते हैं। यह चरण ताकत, कमजोरियों और सुधार के क्षेत्रों की पहचान करने में मदद करता है।

6. **रिपोर्टिंग** (Reporting): निष्कर्षों को हितधारकों, जिसमें शिक्षक, नीति निर्माता और आम जनता शामिल हैं, के साथ साझा किया जाता है। पारदर्शिता और जवाबदेही के लिए परिणामों का स्पष्ट संचार महत्वपूर्ण है।

7. **पुनर्चक्रण** (Recycling): डेटा को पुनर्चक्रित करके निरंतर सुधार प्राप्त किया जाता है। मूल्यांकन से प्राप्त फीडबैक पाठ्यक्रम में समायोजन की जानकारी देता है, जिससे निरंतर प्रभावशीलता सुनिश्चित होती है।

याद रखें कि पाठ्यक्रम मूल्यांकन शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाने और कार्यक्रमों को वांछित परिणामों के साथ संरेखित करने के लिए एक मूल्यवान उपकरण के रूप में कार्य करता है।

14.5 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के दृष्टिकोण (Approaches of Curricular Evaluation)

पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न दृष्टिकोण इस प्रकार है।

1. वैज्ञानिक आदर्श दृष्टिकोण

- यह दृष्टिकोण प्रयोग पर जोर देता है और वैज्ञानिक तरीकों पर निर्भर करता है। यह नियंत्रित अध्ययन, डेटा संग्रह और सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करना चाहता है।
- इस दृष्टिकोण के अधिवक्ताओं का मानना है कि कठोर शोध पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता में वस्तुनिष्ठ अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।

2. मानवतावादी आदर्श दृष्टिकोण

- वैज्ञानिक दृष्टिकोण के विपरीत, मानवतावादी दृष्टिकोण प्रयोग पर निर्भर नहीं करता है।
- यह विशिष्ट अनुप्रयोगों के भीतर पाठ्यक्रम के संदर्भ और मूल्य पर विचार करता है। इस संदर्भ में, मूल्य, किसी विशेष संस्थान या लोगों के समूह के लिए व्यावहारिक मूल्य या लाभ को संदर्भित करता है।

याद रखें कि दोनों दृष्टिकोणों की अपनी खूबियाँ हैं, और एक संतुलित मूल्यांकन प्रक्रिया दोनों के तत्वों को शामिल कर सकती है।

बोध प्रश्नः— नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.1 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकारों के नाम लिखिए।

....

....

प्र0.2 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरणों के नाम लिखिए।

....

प्र0.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के वैज्ञानिक आदर्श दृष्टिकोण के बारे में लिखिए।

....

....

14.6 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के मॉडल (Models of curricular evaluation)

टायलर मॉडलः उद्देश्य–केंद्रित दृष्टिकोण

टायलर मॉडल, जिसका नाम राल्फ टायलर के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने इसे 1940 के दशक में विकसित किया था, पाठ्यक्रम मूल्यांकन के लिए सबसे शुरुआती और सबसे व्यापक रूप से अपनाए गए ढाँचों में से एक है। यह चार मूलभूत प्रश्नों पर आधारित है।

- विद्यालय को कौन से शैक्षिक उद्देश्य प्राप्त करने चाहिए?–स्पष्ट उद्देश्यों को परिभाषित करना।
- कौन से शैक्षिक अनुभव प्रदान किए जा सकते हैं जो इन उद्देश्यों को प्राप्त करने की संभावना रखते हैं?–निर्देशात्मक रणनीतियों और गतिविधियों को डिजाइन करना।
- इन शैक्षिक अनुभवों को प्रभावी ढंग से कैसे व्यवस्थित किया जा सकता है?–पाठ्यक्रम को तार्किक रूप से संरचित करना।
- हम कैसे निर्धारित कर सकते हैं कि ये उद्देश्य प्राप्त हो रहे हैं या नहीं?–परिणामों का आकलन और मूल्यांकन करना।

यह मॉडल स्पष्ट उद्देश्यों को निर्धारित करने, प्रासंगिक शैक्षिक अनुभव प्रदान करने, उन्हें प्रभावी ढंग से व्यवस्थित करने और उन उद्देश्यों की उपलब्धि को मापने के लिए मूल्यांकन का उपयोग करने के महत्व पर जोर देता है।

टायलर मॉडल के लाभ और नुकसान

टायलर मॉडल की प्रशंसा इसके संरचित दृष्टिकोण और स्पष्ट उद्देश्यों पर जोर देने के लिए की जाती है। हालाँकि, आलोचकों का तर्क है कि यह बहुत कठोर हो सकता है और सीखने की प्रक्रिया की जटिलताओं या छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों को ध्यान में नहीं रख सकता है।

स्टेक का मुख मॉडलः विवरण और निर्णय

रॉबर्ट स्टेक ने 1960 के दशक में काउंटेनेंस मॉडल की शुरुआत की, जिसमें विवरण और निर्णय पर ध्यान केंद्रित किया गया। स्टेक ने न केवल परिणामों को मापने बल्कि शैक्षिक प्रक्रिया को समझने के महत्व पर भी जोर दिया।

विवरण–इसमें पाठ्यक्रम, इनपुट (संसाधन और इरादे), प्रक्रिया (निर्देश के दौरान वास्तव में क्या होता है) और परिणामों (शैक्षणिक प्रक्रिया के परिणाम) के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र करना शामिल है।

निर्णय–इस चरण में वास्तविक परिणामों की तुलना इच्छित परिणामों से करना और दोनों के बीच सामंजस्य के आधार पर मूल्यांकन करना शामिल है।

स्टेक का मॉडल गतिशील और लचीला है, जो टायलर मॉडल की तुलना में शैक्षिक प्रक्रिया का अधिक समग्र दृष्टिकोण प्रदान करता है।

स्टेक के काउंटेनेंस मॉडल के पक्ष और विपक्ष

जबकि काउंटेनेंस मॉडल की व्यापक प्रकृति और शिक्षा की प्रक्रिया और उत्पाद दोनों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रशंसा की जाती है, इसकी जटिलता इसे व्यवहार में लागू करना चुनौतीपूर्ण बना सकती है, और पूर्ण मूल्यांकन करने के लिए पर्याप्त संसाधनों की आवश्यकता हो सकती है।

CIPP मॉडलः संदर्भ, प्रसंस्करण, प्रक्रिया और उत्पाद

1960 के दशक में डैनियल स्टफलबीम द्वारा विकसित :– **CIPP** मॉडल का अर्थ संदर्भ, प्रसंस्करण, प्रक्रिया और उत्पाद है। यह एक निर्णय लेने वाला मॉडल है जो मूल्यांकन के लिए कई सिद्धांतों पर विचार करने के लिए दिशानिर्देश देता है।

संदर्भ मूल्यांकन–यह आकलन करना कि किसी पाठ्यक्रम को विशिष्ट आवश्यकताओं और अपेक्षाओं को शामिल करने के लिए कैसे डिजाइन किया गया है।

संस्थागत मूल्यांकन–कार्यान्वयन से पहले रणनीति, संस्थागत और परिभाषा का आकलन करना।

प्रक्रियात्मक मूल्यांकन–पाठ्यक्रम के वास्तविक कार्यान्वयन का सारांश और दस्तावेजीकरण करना।

उत्पाद मूल्यांकन–मूल्यों को मापना और ग्राहकों से मिलने के लिए अपने स्वयं के मित्र बनाना।

CIPP मॉडल विशेष रूप से चल रहे मूल्यांकन के लिए उपयोगी है जो पाठ्यक्रम विकास और कार्यान्वयन प्रक्रिया के दौरान निर्णय लेने की जानकारी देता है।

CIPP मॉडल के लाभ और नुकसान

CIPP मॉडल मूल्यांकन के लिए अपने व्यापक, विस्तृत और सुरक्षित दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है, जो इसे बड़े पैमाने के कार्यक्रम के लिए आदर्श बनाता है। हालांकि, इसे प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने के लिए काफी समय और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है, जो कि छोटे ढांचे या कार्यक्रम के लिए एक बड़ी कमी हो सकती है।

अन्य उल्लेखनीय पाठ्यचर्या मूल्यांकन मॉडल

उल्लेख के लायक कई अन्य मॉडल हैं जो पाठ्यक्रम मूल्यांकन में मूल्यवान दृष्टिकोण भी योगदान देते हैं।

विसंगति मॉडल–सुधारात्मक कार्रवाई पर जोर देते हुए वांछित परिणामों और वास्तविक परिणामों के बीच अंतर पर ध्यान केंद्रित करता है।

लक्ष्य मुक्त मूल्यांकन मॉडल–पूर्वाग्रह से बचने के लिए किसी कार्यक्रम का मूल्यांकन उसके इच्छित लक्ष्यों के बजाय उसके वास्तविक परिणामों के आधार पर करने का प्रस्ताव करता है।

उत्तरदायी मूल्यांकन मॉडल–छात्रों और शिक्षकों जैसे पाठ्यक्रम से सीधे तौर पर प्रभावित होने वाले लोगों की चिंताओं और मुद्दों को प्राथमिकता देता है।

इनमें से प्रत्येक मॉडल एक अलग लेंस नजरिया प्रदान करता है जिसके माध्यम से पाठ्यक्रम मूल्यांकन को देखा जा सकता है, जो शैक्षिक मूल्यांकन की बहुमुखी प्रकृति पर प्रकाश डालता है।

बोध प्रश्नः– नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.4 टायलर मॉडल के लाभ एवं हानि के बारे में बताइए ।

....

....

प्र0.5 **CIPP** मॉडल के लाभ एवं हानि के बारे में बताइए।

....

....

14.7 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उपकरण (Tools of curricular evaluation)

मूल्यांकन की प्रक्रिया में व्यक्तियों, परियोजनाओं या परिणामों का व्यापक मूल्यांकन करने के लिए डिजाइन किए गए उपकरणों और तकनीकों की एक बहुमुखी श्रृंखला शामिल है। इन उपकरणों और तकनीकों का रणनीतिक एकीकरण बहुआयामी और सूक्ष्म मूल्यांकन की अनुमति देता है, जिससे जांच के तहत विषय की समग्र समझ सुनिश्चित होती है। प्रारंभिक स्तर पर पाठ्यक्रम मूल्यांकन में अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करना शामिल है। पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करते समय, आप कई उपकरण और दृ ष्टिकोणों का उपयोग कर सकते हैं। यहाँ कुछ हैं।

1. **पाठ्यक्रम ऑडिट फ्रेमवर्क** (Curriculum Audit Framework)

– यह फ्रेमवर्क स्कूलों को उनके मौजूदा पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करने में मदद करता है, इसके उद्देश्य, विषय–वस्तु, विस्तार, वितरण और मूल्यांकन के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न पूछकर।

– यह स्कूलों को पाठ्यक्रम सुधार के लिए कार्य योजनाओं की जानकारी देते हुए, ताकत और विकास के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

2. **परिणाम संरेखण कार्यपत्रक** (Outcomes Alignment Worksheet)

– यह सुनिश्चित करने में मदद करता है कि पाठ्यक्रम के परिणाम कार्यक्रम–स्तरीय लक्ष्यों और संस्थागत मिशन के साथ संरेखित हों।

– यह आकलन करने के लिए उपयोगी है कि पाठ्यक्रम इच्छित शिक्षण परिणामों को पूरा करता है या नहीं।

3. **पाठ्यक्रम मूल्यांकन कार्यपत्रक** (Syllabus fAssessment Worksheet)

– कार्यक्रम के उद्देश्यों और पाठ्यक्रमों में एकरूपता के साथ संरेखण की जाँच करने के लिए व्यक्तिगत पाठ्यक्रम के पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करता है।

4. **पाठ्यक्रम मानचित्र** (Curriculum Maps)

– पाठ्यक्रम के दृश्य निरूपण, यह दिखाते हैं कि पाठ्यक्रम कैसे जुड़ते हैं और प्रगति करते हैं।

– अंतराल, अतिरेक और संरेखण मुद्दों की पहचान करने के लिए उपयोगी है।

5. **कार्यक्रम–स्तरीय रूब्रिक्स** (Program Level Rubrics)

– कार्यक्रम स्तर पर छात्र के प्रदर्शन का आकलन करें।

– कार्यक्रम के परिणामों के विरुद्ध छात्र के काम का मूल्यांकन करने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है।

6. **पूर्व छात्र सर्वेक्षण** (Alumni Surveys)

– स्नातकों से उनकी तैयारी और अनुभवों के बारे में प्रतिक्रिया एकत्र करें।

– पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता का आकलन करने में मदद करता है।

7. **ग्रेड वितरण रिपोर्ट** (Grade Distribution Reports)

– पाठ्यक्रमों में ग्रेड वितरण का विश्लेषण करें।

– सुधार के लिए पैटर्न और संभावित क्षेत्रों की पहचान करें।

8. **कार्यक्रम प्रतिधारण और पूर्णता दर कार्यपत्रक** (Program Retention and Completion Rate Worksheets)

– पाठ्यक्रम के भीतर छात्र प्रतिधारण और पूर्णता दरों को ट्रैक करें।

– कार्यक्रम प्रभावशीलता का आकलन करने और चुनौतियों की पहचान करने के लिए उपयोगी।

याद रखें, उपकरणों का चुनाव आपके विशिष्ट संदर्भ और लक्ष्यों पर निर्भर करता है।

14.8 पाठ्यचर्या मूल्यांकन की तकनीकें (Techniques of curricular evaluation)

पाठ्यचर्या का मूल्यांकन करते समय, आप इसकी प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग कर सकते हैं।

1. **प्रश्नावली और सर्वेक्षण** (Questionnaires and Surveys)

– छात्रों, शिक्षकों और अन्य हितधारकों से प्रतिक्रिया एकत्र करें।

– संतुष्टि, सीखने के अनुभव और लक्ष्यों के साथ संरेखण का आकलन करने के लिए संरचित प्रश्नावली का उपयोग करें।

2. **साक्षात्कार** (Interviews)

– शिक्षकों, छात्रों और प्रशासकों के साथ आमने–सामने या समूह साक्षात्कार आयोजित करें।

– पाठ्यक्रम कार्यान्वयन, चुनौतियों और सुधार के क्षेत्रों में अंतर्दृष्टि प्राप्त करें।

3. **अवलोकन** (Observations)

– कक्षा निर्देश, छात्र जुड़ाव और शिक्षण प्रथाओं का निरीक्षण करें।

– मूल्यांकन करें कि क्या पाठ्यक्रम प्रभावी ढंग से वितरित किया गया है और सीखने के उद्देश्यों को पूरा करता है।

4. **पाठ्यचर्या मानचित्रण** (Curriculum Mapping)

– पाठ्यक्रमों में विषयों और कौशल के अनुक्रम को दर्शाने वाले दृश्य मानचित्र बनाएं।

– अंतराल, अतिरेक और संरेखण मुद्दों की पहचान करें।

5. **छात्र कार्य विश्लेषण** (Student Work Analysis)

– छात्र असाइनमेंट, प्रोजेक्ट और आकलन का मूल्यांकन करें।

– निर्धारित करें कि क्या सीखने के परिणाम मिले हैं और तदनुसार समायोजन करें।

6. **बाहरी समीक्षा** (External Review)

– निष्पक्ष मूल्यांकन प्रदान करने के लिए बाहरी विशेषज्ञों या एजेंसियों को शामिल करें।

– गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों डेटा पर विचार करें।

14.9 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के क्षेत्र (Scope/Areas of curriculum evaluation)

पाठ्यक्रम मूल्यांकन के दायरे पर विचार करते समय, हम शैक्षिक कार्यक्रमों से संबंधित विभिन्न आयामों का पता लगाते हैं। यहाँ मुख्य क्षेत्र दिए गए हैं।

1. **अध्ययन मूल्यांकन कार्यक्रम** (Program of Study Evaluation)

– शिक्षार्थियों के एक विशिष्ट समूह के लिए बहुवर्षीय अवधि में सभी नियोजित शिक्षण अनुभवों के मूल्य का आकलन करें।

– संपूर्ण पाठ्यक्रम कार्यक्रम की प्रभावशीलता और संरेखण पर ध्यान केंद्रित करें।

2. **अध्ययन मूल्यांकन का क्षेत्र** (Field of Study Evaluation)

– किसी दिए गए अनुशासन या अध्ययन के क्षेत्र के भीतर बहुवर्षीय अवधि में सभी नियोजित शिक्षण अनुभवों का मूल्यांकन करें।

– अध्ययन के क्षेत्र के समग्र प्रभाव और सुसंगतता पर विचार करें।

3. **अध्ययन मूल्यांकन का पाठ्यक्रम** (Course of Study Evaluation)

– एक वर्ष या पाठ्यक्रम के लिए सभी नियोजित शिक्षण अनुभवों की जाँच करें।

– व्यक्तिगत पाठ्यक्रमों की गुणवत्ता, प्रासंगिकता और परिणामों का आकलन करें।

याद रखें, पाठ्यक्रम मूल्यांकन का उद्देश्य शैक्षिक गुणवत्ता और प्रासंगिकता को बढ़ाना है!

बोध प्रश्नः— नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.6 पाठ्यक्रम ऑडिट फ्रेमवर्क से क्या समझते है ?

....

....

प्र0.7 पाठ्यक्रम मानचित्र क्या है?

....

....

14.10 इकाई सारांश

- मूल्यांकन के तीन प्रकार हैं जो किसी शैक्षणिक संस्थान में छात्रों और शिक्षकों के लिए प्रासंगिक हैं।
  - निर्माणात्मकध्रचनात्मक मूल्यांकन
  - योगात्मक मूल्यांकन
  - नैदानिक मूल्यांकन
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण
  - प्रारंभिक फोकस
  - डिजाइन
  - संग्रह
  - संगठन
  - विश्लेषण
  - रिपोर्टिंग
  - पुनर्चक्रण
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन के दृष्टिकोण
  - वैज्ञानिक आदर्श दृष्टिकोण
  - मानवतावादी आदर्श दृष्टिकोण
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन के मॉडल
  - टायलर मॉडलः उद्देश्य—केंद्रित दृष्टिकोण
  - स्टेक का मुख मॉडलः विवरण और निर्णय
  - CIPP मॉडलः संदर्भ, प्रसंस्करण, प्रक्रिया और उत्पाद
  - पाठ्यचर्या मूल्यांकन के उपकरण
  - पाठ्यक्रम ऑडिट फ्रेमवर्क
  - परिणाम संरेखण कार्यपत्रक

- पाठ्यक्रम मूल्यांकन कार्यपत्रक
- पाठ्यक्रम मानचित्र
- कार्यक्रम–स्तरीय रूब्रिक्स
- पूर्व छात्र सर्वेक्षण
- ग्रेड वितरण रिपोर्ट
- कार्यक्रम प्रतिधारण और पूर्णता दर कार्यपत्रक

• पाठ्यचर्या मूल्यांकन की तकनीकें

- प्रश्नावली और सर्वेक्षण
- साक्षात्कार
- अवलोकन
- पाठ्यचर्या मानचित्रण
- छात्र कार्य विश्लेषण
- बाहरी समीक्षा

• पाठ्यचर्या मूल्यांकन के क्षेत्र

- अध्ययन मूल्यांकन कार्यक्रम
- अध्ययन मूल्यांकन का क्षेत्र
- अध्ययन मूल्यांकन का पाठ्यक्रम

14.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र0.1 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रकारों के नाम लिखिए।

उ0.1 मूल्यांकन के तीन प्रकार हैं जो किसी शैक्षणिक संस्थान में छात्रों और शिक्षकों के लिए प्रासंगिक हैं।

- निर्माणात्मक / रचनात्मक मूल्यांकन
- योगात्मक मूल्यांकन
- नैदानिक मूल्यांकन

प्र0.2 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरणों के नाम लिखिए।

उ0.2 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के चरण

- प्रारंभिक फोकस
- डिजाइन
- संग्रह
- संगठन
- विश्लेषण

- रिपोर्टिंग
- पुनर्चक्रण

प्र0.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के वैज्ञानिक आदर्श दृष्टिकोण के बारे में लिखिए।

उ0.3 वैज्ञानिक आदर्श दृष्टिकोण

- यह दृष्टिकोण प्रयोग पर जोर देता है और वैज्ञानिक तरीकों पर निर्भर करता है। यह नियंत्रित अध्ययन, डेटा संग्रह और सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करना चाहता है।
- इस दृष्टिकोण के अधिवक्ताओं का मानना है कि कठोर शोध पाठ्यक्रम की प्रभावशीलता में वस्तुनिष्ठ अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकता है।

प्र0.4 टायलर मॉडल के लाभ एवं हानि के बारे में बताइए।

उ0.4 टायलर मॉडल की प्रशंसा इसके संरचित दृष्टिकोण और स्पष्ट उद्देश्यों पर जोर देने के लिए की जाती है। हालाँकि, आलोचकों का तर्क है कि यह बहुत कठोर हो सकता है और सीखने की प्रक्रिया की जटिलताओं या छात्रों की व्यक्तिगत जरूरतों को ध्यान में नहीं रख सकता है।

प्र0.5 CIPP मॉडल के लाभ एवं हानि के बारे में बताइए।

उ0.5 CIPP मॉडल मूल्यांकन के लिए अपने व्यापक, विस्तृत और सुरक्षित दृष्टिकोण के लिए जाना जाता है, जो इसे बड़े पैमाने के कार्यक्रम के लिए आदर्श बनाता है। हालांकि, इसे प्रभावी ढंग से क्रियान्वित करने के लिए काफी समय और विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है, जो कि छोटे ढांचे या कार्यक्रम के लिए एक बड़ी कमी हो सकती है।

प्र0.6 पाठ्यक्रम ऑडिट फ्रेमवर्क से क्या समझते है ?

उ0.6 पाठ्यक्रम ऑडिट फ्रेमवर्क (Curriculum Audit Framework)

- यह फ्रेमवर्क स्कूलों को उनके मौजूदा पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करने में मदद करता है, इसके उद्देश्य, विषय–वस्तु, विस्तार, वितरण और मूल्यांकन के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न पूछकर।
- यह स्कूलों को पाठ्यक्रम सुधार के लिए कार्य योजनाओं की जानकारी देते हुए, ताकत और विकास के क्षेत्रों की पहचान करने के लिए प्रोत्साहित करता है।

प्र0.7 पाठ्यक्रम मानचित्र क्या है?

उ0.7 पाठ्यक्रम मानचित्र (Curriculum Maps)

- पाठ्यक्रम के दृश्य निरूपण, यह दिखाते हैं कि पाठ्यक्रम कैसे जुड़ते हैं और प्रगति करते हैं।
- अंतराल, अतिरेक और संरेखण मुद्दों की पहचान करने के लिए उपयोगी है।

14.12 अभ्यास कार्य

प्र0.1 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न मॉडलों का वर्णन कीजिए।

प्र0.2 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न उपकरणों का वर्णन कीजिए।

प्र0.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न तकनीकों का वर्णन कीजिए।

प्र0.4 पाठ्यचर्या मूल्यांकन के विभिन्न क्षेत्रों का विस्तृत वर्णन कीजिए।

14.13 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

प्र0.1 अपने सहपाठियों के साथ श्रवण दिव्यांग बच्चो के अनुरूप पाठ्यचर्या मूल्यांकन की विभिन्न मॉडलों को विकसित करने पर चर्चा करे।

14.15 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Framework for Evaluating Curricular Effectiveness | On Evaluating .... https://nap.nationalacademies.org/read/11025/chapter/5.en.wikipedia.org. https://en.wikipedia.org/wiki/Curriculum.
- What is curriculum evaluation and its types? – Heimduo. https://heimduo.org/what-is-curriculum-evaluation-and-its-types/.
- CHAPTER 12 Curriculum Evaluation - SAGE Publications Inc. https://www.sagepub.com/sites/default/files/upm-binaries/44333_12.pdf.
- Factors That Influence Curriculum and Curriculum Evaluation. https://oer.pressbooks.pub/curriculumessentials/chapter/chapter-factors-that-influence-curriculum-and-curriculum-evaluation/.
- Curriculum Evaluation in Education | Importance, Models&Example .... https://study.com/academy/lesson/curriculum-evaluation-process-models.html.
- Approaches to Curriculum Evaluation - Prep With Harshita. https://prepwithharshita.com/approaches-to-curriculum-evaluation/.
- Exploring Models for Effective Curriculum Evaluation. https://bing.com/search?q=Approaches+of+Curricular+Evaluation.
- Evaluating your Curriculum - Pearson. https://www.pearson.com/content/dam/one-dot-com/one-dot-com/uk/documents/educator/schools/campaign/curriculum/Evaluate-your-Curriculum-Handy-Guide.pdf.
- Ten Curriculum Assessment Tools Every Dean Needs: 10. Student course .... https://www.wabashcenter.wabash.edu/2016/08/ten-curriculum-assessment-tools-every-dean-needs-10-student-course-evaluations-that-are-worth-the-trouble/.
- Evaluating curriculum implementation - NSW Department of Education. https://education.nsw.gov.au/teaching-and-learning/curriculum/leading-curriculum-k-12/support-for-school-planning/evaluating-curriculum-implementation.
- Unit 5: Curriculum Evaluation - Special Education Notes. https://www.specialeducationnotes.co.in/C13unit5.htm.
- Curricular Review Evaluation Methods - Western University. https://teaching.uwo.ca/pdf/curriculum/CurricularReviewEvaluationMethods.pdf.
- CHAPTER **12** Curriculum Evaluation - SAGE Publications Inc. https://www.sagepub.com/sites/default/files/upm-binaries/**44333_12.**pdf.
- The Scope of Curriculum and Development of Curriculum – Curriculum .... https://oer.pressbooks.pub/curriculumessentials/chapter/the-scope-of-curriculum-and-development-of-curriculum/.
- Factors That Influence Curriculum and Curriculum Evaluation .... https://oer.pressbooks.pub/curriculumessentials/chapter/chapter-factors-that-influence-curriculum-and-curriculum-evaluation/.

इकाई–15 पाठ्यचर्या मूल्यांकन में चुनौतियाँ Challenges in curricular valuation

इकाई सारांश

15.1 परिचय
15.2 उद्देश्य
15.3 स्कूल से जुड़ी चुनौतियाँ
15.4 छात्रों से जुड़ी चुनौतियाँ
15.5 शिक्षकों से जुड़ी चुनौतियाँ
15.6 प्रशिक्षण एवं कार्यान्वयन से जुड़ी चुनौतियाँ
15.7 समाज से जुड़ी चुनौतियाँ
15.8 चुनौती 1: खराब योजना
15.9 चुनौती 2: तैयारी की कमी
15.10 चुनौती 3: अप्रभावी दृष्टिकोण
15.11 इकाई सारांश
15.12 बोध प्रश्नों के उत्तर
15.13 अभ्यास कार्य
15.14 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण
15.16 कुछ उपयोगी पुस्तकें

15.1 परिचय

पाठ्यचर्या का मूल्यांकन पाठ्यक्रम–विकास प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण चरण है। भले ही विकास प्रक्रिया में सभी चरणों का पालन किया जाता है, लेकिन पाठ्यक्रम लागू होने पर ही यह स्पष्ट होता है कि उद्देश्य पूरे हुए हैं या नहीं और छात्रों ने अकादमिक रूप से किस हद तक प्रगति की है। यह एक सार्थक, लेकिन जटिल प्रक्रिया है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन के प्रक्रिया में बहुत सारे चुनौतियाँ का सामना करना पड़ता है। यह चुनौतियाँ हर एक स्तर एवं हर चरण में आती है। हम इस इकाई में इससे जुड़ी चुनौतियाँ के विषय में पढेंगे।

15.2 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के उपरान्त अधिगमकर्ता / विद्यार्थी

- पाठ्यचर्या मूल्यांकन से संबंधित स्कूल से जुड़ी चुनौतियाँ को समझ सकेंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन से संबंधित छात्रों से जुड़ी चुनौतियाँ को जान पाएंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन से संबंधित शिक्षकों से जुड़ी चुनौतियाँ को समझ सकेंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन से संबंधित प्रशिक्षण से जुड़ी चुनौतियाँ को जान पाएंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन से संबंधित कार्यान्वयन से जुड़ी चुनौतियाँ को समझ सकेंगे।
- पाठ्यचर्या मूल्यांकन से संबंधित समाज से जुड़ी चुनौतियाँ को जान पाएंगे।

15.3 स्कूल से जुड़ी चुनौतियाँ (Challenges related to school)

स्कूल के संदर्भ में पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करते समय, कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। आइए इनमें से कुछ कारकों का पता लगाते हैं।

1. **राजनीतिक हस्तक्षेप** (Political Intervention)

 प्रभाव (Influence): राजनीतिक निर्णय पाठ्यक्रम की सामग्री, उद्देश्यों और कार्यान्वयन को प्रभावित कर सकते हैं।

 संतुलन कार्य (Balancing Act): राजनीतिक जनादेश और शैक्षिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण है।

2. **शैक्षणिक सिद्धांत** (Educational Theories):

 विविध दृष्टिकोण (Diverse Perspectives): पाठ्यक्रम में विभिन्न शैक्षिक सिद्धांतों (रचनावाद, व्यवहारवाद, आदि) को शामिल करना।

 अनुकूलन (Adaptation): वर्तमान शोध और शैक्षणिक दृष्टिकोणों के साथ संरेखण सुनिश्चित करना।

3. **विवादित हितधारक** (Conflicted Stakeholders):

 भिन्न दृष्टिकोण (Differing Views): शिक्षकों, अभिभावकों, प्रशासकों और समुदाय के सदस्यों के परस्पर विरोधी विचार हो सकते हैं।

 आम सहमति बनाना (Consensus Building): पाठ्यक्रम विकास के दौरान इन विविध दृष्टिकोणों को समझना।

4. **समावेश और बहिष्करण** (Inclusion and Exclusion):

 प्रतिनिधित्व (Representation): पाठ्यक्रम में किसे और क्या शामिल करना है (ऐतिहासिक व्यक्ति, सांस्कृतिक दृष्टिकोण, आदि) यह तय करना।

 समानता (Equity): अंतराल को संबोधित करना और सभी शिक्षार्थियों के लिए प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सहयोग, अनुकूलनशीलता और छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

15.4 छात्रों से जुड़ी चुनौतियाँ (Challenges related to students)

पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करते समय, छात्रों से संबंधित कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। आइए इनमें से कुछ चुनौतियों का पता लगाते हैं।

1. **छात्र मूल्यांकन** (Student Assessment)

 निगरानी बनाम मूल्यांकन (Monitoring vs- Evaluation): निगरानी (निर्देश के दौरान चल रहा मूल्यांकन) और मूल्यांकन (समग्र प्रभावशीलता का आकलन) के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है।

 उद्देश्यों को पूरा करना (Meeting Objectives): मानकों के विरुद्ध छात्र के प्रदर्शन का विश्लेषण करके यह मूल्यांकन करना कि पाठ्यक्रम के उद्देश्य पूरे हुए हैं या नहीं।

 डेटा संग्रह (Data Collection): निर्णय लेने और पाठ्यक्रम सुधार को सूचित करने के लिए मूल्यांकन डेटा एकत्र करना।

2. **समानता और समावेशन** (Equity and Inclusion)

 असमानताएँ (Inequalities): सामाजिक–आर्थिक स्थिति, भाषा प्रवीणता और सीखने की अक्षमताओं जैसे

कारकों के कारण शिक्षार्थी के मूल्यांकन में असमानताओं को संबोधित करना।

प्रतिभा मूल्यांकन (Talent Assessment): सह–पाठयक्रम गतिविधियों और विविध छात्र क्षमताओं का निष्पक्ष मूल्यांकन सुनिश्चित करना।

3. **अनुकूलनीयता** (Adaptability)

बदलते संदर्भ (Changing Contexts): जनसांख्यिकीय बदलाव, नीतिगत परिवर्तन, उभरती हुई तकनीकें, वैश्वीकरण और आव्रजन मुद्दों पर विचार करना।

कोविड–19 प्रभाव (COVID-19 Impact): महामारी के कारण होने वाले व्यवधानों के दौरान मूल्यांकन विधियों को अपनाना।

प्रभावी पाठ्यक्रम मूल्यांकन निर्णय लेने में मदद करता है और शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाता है।

15.5 शिक्षकों से जुड़ी चुनौतिया (Challenges related to Teachers)

पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करते समय, शिक्षकों को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जो पाठ्यक्रम कार्यान्वयन की प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं। आइए इनमें से कुछ चुनौतियों का पता लगाएं।

1. **छात्र मूल्यांकन** (Student Assessment):

निगरानी बनाम मूल्यांकन (Monitoring vs- Evaluation): चल रही निगरानी (निर्देश के दौरान) और औपचारिक मूल्यांकन (समग्र प्रभावशीलता का आकलन) के बीच अंतर करना आवश्यक है।

उद्देश्य उपलब्धि (Objective Achievement): शिक्षक यह निर्धारित करने के लिए छात्र मूल्यांकन डेटा का विश्लेषण करते हैं कि क्या पाठ्यक्रम के उद्देश्य पूरे हुए हैं। वे मूल्यांकन करते हैं कि कितने छात्रों ने उद्देश्यों को प्राप्त किया है और किस प्रदर्शन स्तर पर।

2. **समानता और समावेशन** (Equity and Inclusion):

निष्पक्षता (Fairness): विविध छात्र आबादी (सामाजिक–आर्थिक स्थिति, भाषा प्रवीणता और सीखने के अंतर पर विचार करते हुए) के लिए समान मूल्यांकन प्रथाओं को सुनिश्चित करना।

प्रतिभा मूल्यांकन (Talent Assessment): सह–पाठयक्रम गतिविधियों का निष्पक्ष मूल्यांकन करना और विविध छात्र क्षमताओं को पहचानना।

3. **अनुकूलनशीलता** (Adaptability):

बदलते संदर्भ (Changing Contexts): जनसांख्यिकीय बदलावों, नीतिगत बदलावों, उभरती प्रौद्योगिकियों, वैश्वीकरण और आव्रजन मुद्दों पर प्रतिक्रिया करना।

कोविड–19 प्रभाव (COVID-19 Impact): महामारी के कारण होने वाले व्यवधानों के दौरान मूल्यांकन विधियों को अपनाना।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सहयोग, अनुकूलनशीलता और छात्र–केंद्रित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है।

बोध प्रश्न :–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.1 स्कूल से जुड़ी चुनौतियों में राजनितिक हस्तक्षेप कैसे प्रभावित करते है?

....

प्र0.2 छात्रों से जुड़ी चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

....

....

15.6 प्रशिक्षण एवं कार्यान्वयन से जुड़ी चुनौतियाँ (Challenges related to training and Implementation)

पाठ्यचर्या कार्यान्वयन का मूल्यांकन करना जटिल हो सकता है, लेकिन प्रभावी शैक्षिक कार्यक्रम सुनिश्चित करने के लिए यह महत्वपूर्ण है। पाठ्यचर्या मूल्यांकन से संबंधित कुछ चुनौतियाँ इस प्रकार हैं।

1. **टाइप III त्रुटिया** (Type III Errors): कई मूल्यांकन अध्ययन कार्यान्वयन प्रक्रिया पर विचार किए बिना केवल सारांश कार्यक्रम परिणामों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इससे टाइप III त्रुटियाँ हो सकती हैं, जहाँ परिणाम मूल्यांकन पाठ्यचर्या गतिविधियों को कैसे कार्यान्वित किया गया, इस बारे में असत्यापित मान्यताओं पर आधारित होते हैं।
2. **राजनीतिक हस्तक्षेप** (Political Intervention): राजनीतिक प्रभावों के कारण पाठ्यचर्या विकास चुनौतियों का सामना करता है। पाठ्यक्रम में क्या शामिल करना है या क्या नहीं, इस बारे में निर्णय विभिन्न हितधारकों द्वारा प्रभावित हो सकते हैं, जिससे संघर्ष और जटिलताएँ पैदा होती हैं।
3. **व्यावहारिक कौशल विकास** (Practical Skills Development): स्नातक स्तर पर शिक्षण कार्यक्रम मूल्यांकन अक्सर सीमित समय सीमा के भीतर व्यावहारिक कौशल विकास को शामिल करने के साथ संघर्ष करता है।
4. **सामग्री मुद्दे और सुधार पाठ्यक्रम** (Content Issues and Reform Curricula): सुधार पाठ्यक्रम को लागू करने के लिए व्यवहार में महत्वपूर्ण बदलाव की आवश्यकता हो सकती है। विषय–वस्तु से संबंधित विशिष्ट विषय–वस्तु मुद्दों को संबोधित करना तथा कठोर मापन और शोध डिजाइन सुनिश्चित करना आवश्यक है।
5. **निर्णय लेना और संशोधन** (Decision-Making and Modification): मूल्यांकन डेटा, विषय–वस्तु, शिक्षण विधियों, सामग्रियों और मूल्यांकन दृष्टिकोणों को संशोधित करने के निर्णयों को सूचित करके पाठ्यक्रम विकास का मार्गदर्शन कर सकता है।

   याद रखें कि पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करने में न केवल परिणामों का आकलन करना शामिल है, बल्कि यह समझना भी शामिल है कि पाठ्यचर्या गतिविधियों को कैसे लागू किया जाता है। निर्धारित–प्रस्तावित–अधिनियमित–स्थायी (PIES) ढांचा पाठ्यचर्या नवाचारों पर सार्थक मूल्यांकन अनुसंधान के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है।

15.7 समाज से जुड़ी चुनौतियाँ (Challenges related to society)

पाठ्यक्रम कार्यान्वयन का मूल्यांकन करने में उन सामाजिक कारकों पर विचार करना शामिल है जो शैक्षिक कार्यक्रमों को आकार देते हैं। पाठ्यक्रम पर समाज के प्रभाव से संबंधित कुछ चुनौतियाँ इस प्रकार हैं।

1. **समानता और न्याय के मुद्दे** (Equality and Equity Issues): वर्ग प्रणाली, नस्लीय या जातीय असमानताएँ, और शिक्षा तक लिंग–संबंधी पहुँच पाठ्यक्रम डिजाइन को प्रभावित करती हैं। निष्पक्षता सुनिश्चित करना और इन मुद्दों को संबोधित करना महत्वपूर्ण है।
2. **स्वास्थ्य चुनौतियाँ** (Health Challenges): स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ, जैसे कि एचआईवी/एड्स, नशीली दवाओं का दुरुपयोग और पर्यावरण प्रदूषण, पाठ्यक्रम की सामग्री को प्रभावित करते हैं। शिक्षकों को कल्याण को बढ़ावा देने के लिए इन मुद्दों को संबोधित करना चाहिए।
3. **आर्थिक विचार** (Economic Considerations): पाठ्यक्रम को शिक्षार्थियों को व्यक्तिगत और राष्ट्रीय आर्थिक विकास के लिए ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण से लैस करना चाहिए। आर्थिक दृष्टिकोण को शामिल करना आवश्यक है।
4. **राजनीतिक आयाम** (Political Dimension): शिक्षा स्वाभाविक रूप से राजनीतिक है। प्रचलित राजनीतिक माहौल स्कूली शिक्षा और पाठ्यक्रम निर्णयों को प्रभावित करता है। विचारधाराएँ और संसाधन आवंटन पाठ्यक्रम को आकार देने में भूमिका निभाते हैं।

पाठ्यक्रम विकास एक गतिशील प्रक्रिया है जो सामाजिक परिवर्तनों, सांस्कृतिक बदलावों और राजनीतिक संदर्भों से प्रभावित होती है।

15.8 चुनौती 1: खराब योजना (Challenge 1- Poor Planning)

खराब नियोजन पाठ्यक्रम मूल्यांकन की प्रभावशीलता को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर सकता है। मूल्यांकन प्रक्रिया में खराब नियोजन से संबंधित कुछ चुनौतियाँ इस प्रकार हैं।

1. **अपर्याप्त समय** (Insufficient Time): अपर्याप्त नियोजन के परिणामस्वरूप संपूर्ण मूल्यांकन करने के लिए अपर्याप्त समय हो सकता है। जल्दबाजी में किए गए मूल्यांकन डेटा संग्रह और विश्लेषण की गुणवत्ता से समझौता कर सकते हैं।

2. **दिशा–निर्देश का अभाव** (Lack of Direction): उचित नियोजन के बिना, मूल्यांकनकर्ताओं के पास मूल्यांकन के वांछित परिणामों के बारे में स्पष्ट दिशा–निर्देश का अभाव हो सकता है। सार्थक मूल्यांकन के लिए उद्देश्यों और अपेक्षित परिणामों पर स्पष्टता आवश्यक है।

3. **संसाधन की कमी** (Resource Constraints): खराब नियोजन के कारण मूल्यांकन के लिए अपर्याप्त संसाधन (जैसे कि धन, कार्मिक या स्थान) हो सकते हैं। व्यापक मूल्यांकन के लिए पर्याप्त संसाधन महत्वपूर्ण हैं।

4. **कार्यान्वयन निष्ठा मुद्दे** (Implementation Fidelity Issues): अपर्याप्त नियोजन इस बात को प्रभावित कर सकता है कि किसी कार्यक्रम या हस्तक्षेप का कितनी अच्छी तरह से पालन किया जाता है (कार्यान्वयन निष्ठा–implementation fidelity)। यह मूल्यांकन की अखंडता को प्रभावित करता है और अनपेक्षित परिणामों को जन्म दे सकता है।

इन चुनौतियों पर काबू पाने के लिए सावधानीपूर्वक योजना बनाना, हितधारकों की सहमति, प्रभावी डेटा संग्रह विधियां, अच्छी तरह से तैयार किए गए मूल्यांकन प्रश्न और डेटा की गुणवत्ता पर ध्यान देना आवश्यक है।

15.9 चुनौती 2: तैयारी की कमी (Challenge 2- Lack of Readiness)

जब पाठ्यचर्या मूल्यांकन की बात आती है, तो तैयारी की कमी महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कर सकती है। आइए इनमें से कुछ का पता लगाते हैं।

1. **सहभागिता की कमी** (Lack of Buy-In): यदि मूल्यांकन को प्राथमिकता के रूप में नहीं देखा जाता है, तो कर्मचारियों और हितधारकों से सीमित सहभागिता हो सकती है। इसका परिणाम संसाधनों की कमी, असहयोगी कर्मचारियों और मूल्यांकन क्यों आवश्यक है, इस बारे में समझ की कमी हो सकती है।

2. **छात्रों की क्षमताओं की विस्तृत श्रृंखला** (Wide Range of Student Abilities): सीखने की संपत्तियों और आवश्यकताओं के मामले में कक्षाएँ तेजी से विविधतापूर्ण होती जा रही हैं। शिक्षक अक्सर अलग–अलग पृष्ठभूमि और क्षमताओं वाले छात्रों को मानक–संरेखित, ग्रेड–स्तरीय निर्देश प्रदान करने के लिए संघर्ष करते हैं। उदाहरण के लिए, लाखों छात्र विशेष शिक्षा सेवाएँ प्राप्त करते हैं या अंग्रेजी भाषा सीखने वाले होते हैं, जिससे कार्यान्वयन और भी जटिल हो जाता है।

3. **शिक्षक सीखना और समझना** (Teacher Learning and Understanding): पूरी तरह से समर्थित होने पर भी, शिक्षकों को चुनौतीपूर्ण कार्य स्थितियों का सामना करना पड़ता है जो मानक–आधारित सुधार को लागू करने के उनके प्रयासों में बाधा डालते हैं। यह सुनिश्चित करना कि शिक्षक कॉलेज– और करियर–तैयारी मानकों और संशोधनों को समझते हैं, सफल कार्यान्वयन के लिए महत्वपूर्ण है।

4. **जवाबदेही और पाठ्यक्रम को सीमित करना** (Accountability and Curriculum Narrowing): जवाबदेही प्रणालियों का संदेश कभी–कभी परीक्षण की गई सामग्री पर ध्यान केंद्रित करने के लिए पाठ्यक्रम को सीमित कर देता है, जो संभावित रूप से व्यापक शैक्षिक लक्ष्यों को कमजोर करता है।

5. **बाहरी व्यावसायिक विकास निर्भरता** (External Professional Development Reliance): जबकि शिक्षकों को पाठ्यक्रम, मानकों और नेतृत्व लक्ष्यों के बीच संबंधों को गहराई से जानने के लिए निरंतर,

प्रासंगिक अवसरों की आवश्यकता होती है, नेता अक्सर बाहरी व्यावसायिक विकास पर भरोसा करते हैं, जो विशिष्ट कार्यान्वयन चुनौतियों को पूरी तरह से संबोधित नहीं कर सकता है।

इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए सहयोगी प्रयासों, निरंतर व्यावसायिक विकास और छात्र की सफलता के लिए प्रतिबद्धता की आवश्यकता होती है।

15.10 चुनौती 3: अप्रभावी दृष्टिकोण (Challenge 3- Ineffective Approaches)

पाठ्यक्रम कार्यान्वयन का मूल्यांकन करने में कई चुनौतियाँ शामिल हैं, खासकर जब अप्रभावी दृष्टिकोणों का उपयोग किया जाता है। आइए इनमें से कुछ का पता लगाते हैं।

1. **सहभागिता की कमी** (Lack of Buy-In): जब मूल्यांकन को प्राथमिकता के रूप में नहीं देखा जाता है, तो कर्मचारियों और हितधारकों से सीमित सहभागिता हो सकती है। इसका परिणाम सीमित संसाधन, असहयोगी कर्मचारी और मूल्यांकन के मूल्य के बारे में समझ की कमी है।
2. **अपर्याप्त डेटा संग्रह विधियाँ** (Inadequate Data Collection Methods): गलत या अपर्याप्त डेटा संग्रह विधियों का उपयोग प्रभावी मूल्यांकन में बाधा डाल सकता है। डेटा की सही पहचान करना, आउटपुट और परिणामों को समझना और सही मूल्यांकनकर्ता का चयन करना महत्वपूर्ण है।
3. **इच्छित और कार्यान्वित पाठ्यक्रम के बीच बेमेल** (Misalignment Between Intended and Implemented Curricula): कभी–कभी कार्यान्वित पाठ्यक्रम इच्छित डिजाइन के साथ संरेखित नहीं होता है। इस बेमेल को संबोधित करने के लिए रणनीतिक समाधानों की आवश्यकता है।

   याद रखें कि प्रभावी मूल्यांकन के लिए विचारशील योजना, हितधारक जुड़ाव और सार्थक परिणामों पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता होती है।

बोध प्रश्न :–नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

प्र0.3 टाइप III त्रुटिया कैसे होती है?

....

प्र0.2 छात्रों से जुड़ी चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

....

....

15.11 इकाई सारांश

- स्कूल से जुड़ी चुनौतियाँ
  - राजनीतिक हस्तक्षेप
  - शैक्षणिक सिद्धांत
  - विवादित हितधारक
  - समावेश और बहिष्करण
- छात्रों से जुड़ी चुनौतियाँ
  - छात्र मूल्यांकन
  - समानता और समावेशन
  - अनुकूलनीयता

- शिक्षकों से जुड़ी चुनौतियाँ
    - छात्र मूल्यांकन
    - समानता और समावेशन
    - अनुकूलनशीलता
- प्रशिक्षण एवं कार्यान्वयन से जुड़ी चुनौतियाँ
    - टाइप III त्रुटियाँ
    - राजनीतिक हस्तक्षेप
    - व्यावहारिक कौशल विकास
    - सामग्री मुद्दे और सुधार पाठ्यक्रम
    - निर्णय लेना और संशोधन
- समाज से जुड़ी चुनौतियाँ
    - समानता और न्याय के मुद्दे
    - स्वास्थ्य चुनौतियाँ
    - आर्थिक विचार
    - राजनीतिक आयाम
- चुनौती 1: खराब योजना
    - अपर्याप्त समय
    - दिशा–निर्देश का अभाव
    - संसाधन की कमी
    - कार्यान्वयन निष्ठा मुद्दे
- चुनौती 2: तैयारी की कमी
    - सहभागिता की कमी
    - छात्रों की क्षमताओं की विस्तृत श्रृंखला
    - शिक्षक सीखना और समझना
    - जवाबदेही और पाठ्यक्रम को सीमित करना
    - बाहरी व्यावसायिक विकास निर्भरता
- चुनौती 3: अप्रभावी दृष्टिकोण
    - सहभागिता की कमी
    - अपर्याप्त डेटा संग्रह विधियाँ

- इच्छित और कार्यान्वित पाठ्यक्रम के बीच बेमेल

15.12 बोध प्रश्नों के उत्तर

प्र0.1 स्कूल से जुड़ी चुनौतियों में राजनितिक हस्तक्षेप कैसे प्रभावित करते है?

उ0.1 स्कूल के संदर्भ में पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करते समय, राजनीतिक हस्तक्षेप इस प्रकार प्रभावित करती हैं।

1. राजनीतिक हस्तक्षेप (Political Intervention)

   प्रभाव (Influence): राजनीतिक निर्णय पाठ्यक्रम की सामग्री, उद्देश्यों और कार्यान्वयन को प्रभावित कर सकते हैं।

   संतुलन कार्य (Balancing Act): राजनीतिक जनादेश और शैक्षिक आवश्यकताओं के बीच संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण है।

प्र0.2 छात्रों से जुड़ी चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

उ0.2 छात्रों से जुड़ी चुनौतियाँ (Challenges related to students)

पाठ्यक्रम का मूल्यांकन करते समय, छात्रों से संबंधित कई चुनौतियाँ सामने आती हैं। आइए इनमें से कुछ चुनौतियों का पता लगाते हैं:

1. **छात्र मूल्यांकन** (Student Assessment)

   निगरानी बनाम मूल्यांकन (Monitoring vs- Evaluation): निगरानी (निर्देश के दौरान चल रहा मूल्यांकन) और मूल्यांकन (समग्र प्रभावशीलता का आकलन) के बीच अंतर करना महत्वपूर्ण है।

   उद्देश्यों को पूरा करना (Meeting Objectives): मानकों के विरुद्ध छात्र के प्रदर्शन का विश्लेषण करके यह मूल्यांकन करना कि पाठ्यक्रम के उद्देश्य पूरे हुए हैं या नहीं।

   डेटा संग्रह (Data Collection): निर्णय लेने और पाठ्यक्रम सुधार को सूचित करने के लिए मूल्यांकन डेटा एकत्र करना।

2. **समानता और समावेशन** (Equity and Inclusion)

   असमानताएँ (Inequalities): सामाजिक–आर्थिक स्थिति, भाषा प्रवीणता और सीखने की अक्षमताओं जैसे कारकों के कारण शिक्षार्थी के मूल्यांकन में असमानताओं को संबोधित करना।

   प्रतिभा मूल्यांकन (Talent Assessment): सह–पाठयक्रम गतिविधियों और विविध छात्र क्षमताओं का निष्पक्ष मूल्यांकन सुनिश्चित करना।

3. **अनुकूलनीयता** (Adaptability)

   बदलते संदर्भ (Changing Contexts): जनसांख्यिकीय बदलाव, नीतिगत परिवर्तन, उभरती हुई तकनीकें, वैश्वीकरण और आव्रजन मुद्दों पर विचार करना।

   कोविड–19 प्रभाव (COVID-19 Impact): महामारी के कारण होने वाले व्यवधानों के दौरान मूल्यांकन विधियों को अपनाना।

   प्रभावी पाठ्यक्रम मूल्यांकन निर्णय लेने में मदद करता है और शैक्षिक गुणवत्ता को बढ़ाता है ।

प्र0.3 टाइप ससस त्रुटिया कैसे होती है?

उ0.3 टाइप III त्रुटियाँ (Type III Errors): कई मूल्यांकन अध्ययन कार्यान्वयन प्रक्रिया पर विचार किए बिना केवल सारांश कार्यक्रम परिणामों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। इससे टाइप III त्रुटियाँ हो सकती हैं, जहाँ परिणाम मूल्यांकन पाठ्यचर्या गतिविधियों को कैसे कार्यान्वित किया गया, इस बारे में असत्यापित मान्यताओं पर आधारित होते हैं।

प्र0.4 समाज से जुड़ी चुनौतियों में स्वास्थ्य चुनौतियाँ क्या होती है?

उ0.4 स्वास्थ्य चुनौतियाँ (Health Challenges): स्वास्थ्य संबंधी चिंताएँ, जैसे कि एचआईवीएड्स, नशीली दवाओं का दुरुपयोग और पर्यावरण प्रदूषण, पाठ्यक्रम की सामग्री को प्रभावित करते हैं। शिक्षकों को कल्याण को बढ़ावा देने के लिए इन मुद्दों को संबोधित करना चाहिए

15.13 अभ्यास कार्य

प्र0.1 पाठ्यचर्या मूल्यांकन में शिक्षको से जुड़ी चुनौतियों का वर्णन कीजिए।

प्र0.2 पाठ्यचर्या मूल्यांकन में खराब योजना की वजह से होने वाली चुनौतियों के बारे में वर्णन कीजिए।

प्र0.3 पाठ्यचर्या मूल्यांकन में तैयारी की कमी की वजह से होने वाली चुनौतियों के बारे में वर्णन कीजिए।

15.14 चर्चा के बिन्दु / स्पष्टीकरण

प्र0.1 अपने सहपाठियों के साथ श्रवण दिव्यांग बच्चो के अनुरूप पाठ्यचर्या मूल्यांकन में आनेवाली विभिन्न चुनौतियों पर चर्चा करे।

15.15 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Challenges and Opportunities in Curriculum Monitoring and Evaluation .... https://serek.or.ke/conferencejournals/index.php/AJESSR/article/download/77/pdf.
- Meeting the Challenges of Curriculum and Instruction in School ... - ed. https://files.eric.ed.gov/fulltext/EJ1162276.pdf.
- CRITICAL ANALYSIS OF NEP 2020 AND ITS IMPLEMENTATION. https://www.ijnrd.org/papers/IJNRD2306594.pdf.en.wikipedia.org. https://en.wikipedia.org/wiki/Curriculum.
- Curriculum Development: Complexity and Challenges in Shaping the Future. https://magis-projects.sfo3.digitaloceanspaces.com/APJCS/issues/vol-1-issue-1/articles/4/7Ek0flD1wg7RR4e1n5BoQTS3T99sUYv3zBJVVfA2.pdf.
- Factors That Influence Curriculum and Curriculum Evaluation .... https://oer.pressbooks.pub/curriculumessentials/chapter/chapter-factors-that-influence-curriculum-and-curriculum-evaluation/.
- On Current and Critical Issues in Curriculum, Learning and Assessment. https://www.gcedclearinghouse.org/sites/default/files/resources/210024eng.pdf.
- Teachers, Resources, Assessment Practices: Role and Impact ... - Springer. https://link.springer.com/chapter/10.1007/978-3-031-13548-4_18.
- (PDF) Educational Program and Curriculum Evaluation Models: A Mini .... https://www.academia.edu/44398859/Educational_Program_and_Curriculum_Evaluation_Models_A_Mini_Systematic_Review_of_the_Recent_Trends.
- Framework for Evaluating Curricular Effectiveness | On Evaluating .... https://nap.nationalacademies.org/read/11025/chapter/5.
- Sociological and Political Issues That Affect Curriculum. https://oer.pressbooks.pub/curriculumessentials/chapter/sociological-and-political-issues-that-affect-curriculum/.